



Acc. No.

11071



अथ पद्मावत ॥

स्तुतिखण्ड ॥

चौपाई ॥

सुमिरो आदि एक करताहै । जें जिवदीन्ह कीन्ह संसारू ॥  
कीन्हसिप्रथम ज्योतिपरकाशू । कीन्हसितिनहिंप्रीतिकैलाशू ॥  
कीन्हसिअग्निपवनजलखेहां । कीन्हसि बहुतेरंग औरेहां ॥  
कीन्हसिधरती स्वर्ग पताहू । कीन्हसिवरणबरण अवताहू ॥  
कीन्हसिदिनदिनेशशशि राती । कीन्हसिनखततरायन पाती ॥  
कीन्हसि धूपसेव औधांहा । कीन्हसि मेघ बीज तेहिमांहा ॥  
कीन्हसि संसर्ग महीत्रहंडौ । कीन्हसि भवन चौदहोखंडौ ॥  
दो० कीन्ह सब अस जाकर दूसर आजन काहि ।  
पहिले ताकर नाउलै, कथाकरो अवगाहि ॥  
कीन्हसि सात समंदर पारा । कीन्हसि मेरे खखंडे पहारा ॥  
कीन्हसि नदी नार औ भरना । कीन्हसिमगरमच्छबहुवर्ना ॥  
कीन्हसि सीप मोति तह भरे । कीन्हसि बहुते नग निरमरे ॥

याद करना १ सब से पहिले २ परमेश्वर ३ पहिले ४ उजियारा ५ नाम  
पहाड़ तथा स्वर्गलोक ६ आग ७ हवा ८ माटी ९ चित्रकारी १० जमीन ११-२२  
आसमान १२-२३ रंगवरंग २३ पैदायश २४ सूर्य २५ चांद २६ छोटे नखत २७  
जाड़ा २८ बादल २९ बिजुली २० सात २१ सातपरदा आसमान सातपरदा  
जमीन २४ शुरु २५ बीहड़ २६ राह मुशिकल २७ क्रिस्म २८ जवाहिरसाफ २९ ॥

कीन्हेसि बनखँडँ औजड़मूरी । कीन्हेसि तरवरँ तार खजूरी ॥

कीन्हेसि सावजँ आरणँ रहँ । कीन्हेसि पंख उडँ जहँ चहँ ॥

कीन्हेसि बरणँ श्वेतँ औश्याभा । कीन्हेसि भूखनींद विशरामाँ ॥

कीन्हेसि पान फूल बहु भोगू । कीन्हेसि बहु औपधँ बहुरोगू ॥

दो० निमिषँ न लाग करत वह, सबै कीन्ह पल एक ।

गगनँ अंतरिक्षँ राखा, वाजँ खंभ विन टेक ॥

कीन्हेसि अगारकस्तूरी<sup>१३</sup> बीनीँ । कीन्हेसि भीमसेनँ औचीनीँ ॥

कीन्हेसि नागँ जो मुखविषँ वसाँ । कीन्हेसि मंत्र हरे जेहि डसा ॥

कीन्हेसि अमृतँ जिये जो पाई । कीन्हेसि विषँ मीचँ जेहि खाई ॥

कीन्हेसि ऊख मीठ रस भरी । कीन्हेसि करू वेल बहु फरी ॥

कीन्हेसि मधुँ लावै लै माखी । कीन्हेसि भँवरपँखँ औपाखी ॥

कीन्हेसि लोवाँ अंदर चांटी<sup>१४</sup> । कीन्हेसि बहुतरहहिँ घनमांटी ॥

कीन्हेसि राक्षसँ भूत परेता । कीन्हेसि भूकसँ देवदयँताँ ॥

दो० कीन्हेसि सहसँ अठारह, वरणवरणँ उपराज ।

भुक्तिदिहिस पुनि सवनकहँ, सकलँ साजनासाज ॥

कीन्हेसि मानुषँ दिहिसि वड़ाई । कीन्हेसि अन्नभुक्तिँ तहँ पाई ॥

कीन्हेसि राजा भोजहिँ राजू । कीन्हेसि हास्तिँ घोरतहँ साजू ॥

कीन्हेसि तेहिकहँ बहुत विरासूँ । कीन्हेसि कोइ ठाकुरँ कोइ दामूँ ॥

जंगल १ पेंड २ जंगली जानवर ३ जंगल ४ रंग ५ सफ़ेद-सियाह ६ आ-

राम ७ इलाज ८ पलकमारने में ९ आसमान १० बीचो बीच ११ नाम जानवर-

परिन्द १२ मुयक १३ किस्म काफूर १४-१५-१६ सांप १७ जहर १८-२०

जिसके पीने से मुरदा ज़िन्दा होजाय १६ मौत २१ शहद २२ उड़नेवाले

जानवर २३ लांबड़ी २४ चींवटी २५ शैतानकी किस्म २६-२७-२८ हजार २६

तरह तरह की पैदायश ३० सब ३१ आदमी ३२ रोजी ३३ हाथी ३४

सामान ३५ आराम ३६ मालिक ३७ गुलाम ३८ ॥

कीन्हेसिद्रव्यं गर्वं जेहिहोई । कीन्हेसिलोभं अघाइनकोई ॥

कीन्हेसिजियनं सदासब चहा । कीन्हेसि मीचं न कोई रहा ॥

कीन्हेसिसुख औ कोटि अनंद । कीन्हेसि दुखचिंतां औदंद ॥

कीन्हेसिकोइभिखारिकोइधनी । कीन्हेसिसंपति<sup>११</sup> विपति<sup>१२</sup> पुनिघनी<sup>१३</sup> ॥

दो० कीन्हेसिकोइनिमरोसी<sup>१४</sup> । कीन्हेसि कोइ बरियारै ।

छारहि<sup>१५</sup> ते सब कीन्हेसि, पुनि<sup>१६</sup> कीन्हेसि सबछार ॥

धनपति<sup>१७</sup> वही जेहेक संसारु । सबदेइनिंतं घटन भंडारु ॥

जानवतं जगतहस्तिं औचाटो । सबकहँ भुक्तिं रातिदिनवांटा ॥

ताकरदृष्टिं जो सब उपराही । मित्रं शत्रुं कोइ बिसरे नाही ॥

पंख पतंग न बिसरे कोई । परगटं गुप्तं जहांलग होई ॥

भोग भुक्तिं बहुभांति<sup>१८</sup> उपाई । सबे खवाइ आप नहि खाई ॥

ताकर वही जो खाना पीना । सब कहँ देइ भुक्ति औ चैना ॥

सबे आशं ताकर हरिखांसा । बहुन काहुकी आशनिरासा ॥

दो० युग युग देत घटा नहि, उभयं हाथ अस कीन्ह ।

औ जो दीन्ह जगत महँ, सो सब ताकर दीन्ह ॥

आदि<sup>१९</sup> एकवरणो<sup>२०</sup> सोराजा । आदिनअंत राजजेहि ब्याजा ॥

सदा सखदो राज सो करै । और जेहि चहै राज तेहि दरे ॥

छत्रहि<sup>२१</sup> अर्धतं निछत्रहिछावा । दूसरनाहिं जो सरवरं पावा ॥

दोलत १ गुरुर २ लालच ३ जीना ४ मौत ५ खुशी ६ क्रिक ७ शम ८  
 गरीब ९ अमीर १० दौलत ११ दुःख १२ बहुत १३ कमजोर १४ जोरवाला  
 १५ माटी १६ फिरि १७ दौलतमन्द १८ जिसका १९ हमेशा २० खजाना २१  
 जहांतक २२ दुनिया २३ हाथी २४ लींघटी २५ खुराक २६—३१ निगाह २७  
 दोस्त २८ दुश्मन २९ जाहिर ३० छिपा ३१ बहुत तरह पैदा किया ३२  
 उम्मेद ३३ नाउम्मेद ३४ दोनों ३५ सबसे पहिले ३७ बयान करना ३८  
 अब्बल नाआखिर ३९ हमेशा ४० छत्रधारी ४१ चिदूनछत्र ४२ बराबरो ४३ ॥



परबत ढहिदेखत सबलोगू । चांढहि करहिहस्त सरयोगू ॥

बज्रहि तिनकाहि मार उड़ाई । तिनै वज्र करि देइ वड़ाई ॥

ताकर कीन्ह न जानै कोई । करै सोइ जो मनचिन्तन होई ॥

काहू भोगभुक्ति सुख सारा । काहू भूख बहुत दुख मारा ॥

दो० सबै नाशँ वह इस्थिर, ऐसो साज जेहिकेर ।

एक सांजी औ भाजी, चहै सवारै फेर ॥

अलख अरूप अवरन सो कर्ता । वह सबसो सब वह सो बर्ता ॥

प्रकट गुप्त सो सर्वव्यापी । धर्मी चीन्ह न चीन्है पापी ॥

नावह पूत नहि पिता न माता । नावहकुटुंबन कोइसंगनाता ॥

जनों न काहि न कोइवैजनों । जहँलगसव ताकी सिरजनों ॥

वै सब कीन्ह जहांलग कोई । वहनहि कीन्हकाहुकर होई ॥

हति पहिले औ अबहै सोई । पुनि सो रहै रहै नहि कोई ॥

और जो होय सो बावरअन्धा । दिन दुइचारि मरैकर धन्धा ॥

दो० जो वह चहा सो कीन्हेसि, करै जो चाहै कीन्ह ।

बरजनहारं न कोई, सबै चाहि जेउ दीन्ह ॥

बिनबुंधि चहिजोकरहोय ज्ञानू । जसपुराणमहि लिखावखानू ॥

जीव नाहि पै जिये गुसाई । करं नाहीं पै करै सवाँई ॥

जीभ नाहि पै सबकुछ बोला । तन नाहीं सब ठहरै डोला ॥

श्रवणै नाहि पै सबकुछ सुना । हियौ नाहि पै सबकुछ गुना ॥

पहाड़ १ चींवटी २ हाथी ३ पत्थर ४—५ रोजी ६ नाश होनेवाला ७

क्रायम ८ वनाना और विगाड़ना ९ जिसको कोई न देखसके १० नज़दीक

११ जाहिर १२ छिपा १३ सब चीज़में बिराजमान और सब चीज़ उसमें

मौजूद १४ पैदाहोना १५—१६ पैदायश १७ पहिले था १८ मना करने

वाला १९ अज्ञ २० हाथ २१ सब २२ जगह २३ कान २४ दिल २५ ॥

नयन नाहि पै सबकुछ देखा । कौनभाति असजाय विशेषा ॥

ना कोई है वह की रूपा । नावहसोकोइ आहिअनूपी ॥

ना वह ठाँउ न वह बिनठाऊँ । रूपरेख बिन निरमल नाऊँ ॥

दो० ना वह मिला न बेहरा, ऐसो रहा भरिपूर ।

॥ १० ॥ दृष्टवन्तं कहे नरे, अथहि मूरुख दूर ॥

औरजो दीन्हेसिरतन अमोला । ताकर मर्म न जानि भोला ॥

दीन्हेसिरसना औ रसभोगू । दीन्हेसिदर्शनजोविहसे योगू ॥

दीन्हेसिजगदेखनकहँनयना । दीन्हेसिश्रवणसुनेकहँवयना ॥

दीन्हेसिकण्ठबोलजेहिमाहां । दीन्हेसि करपल्लव बरबाहां ॥

दीन्हेसिचरण अनूप चलाही । सोजानैजेहि दीन्हेसि नाही ॥

यौवनं मर्म जानिपै बूढा । मिलान तरुणाया जग बूढा ॥

सुखं कर मर्म न जानै राजा । दुखीजानि जाकहँ दुख बाजा ॥

दो० कार्या कामर्म जानिपै रोगी, भोगी रहै निचन्त ।

॥ ११ ॥ सबकर मर्म गुसाई जानै जो घटघट रहै तन्त ॥

अति अपार करताकर करना । बरणन कोई पावै बरना ॥

सात स्वर्ग जो कागद करै । धरती समंदर मस भरे ॥

जानवन्तजगसाखावनढांखा । जानवन्तकेशी रदनोपखपांखा ॥

जानवन्त खेह रेह दुनयाई । मेघ बूढ औ गगन तराई ॥

सबलिखनीकीलिखसंसारा । लिखिनजायगतिसमुद्रअपारा ॥

आंख १ कौन तरह २ मुक्ताविल जिसका कोई नहीं ३ जगह ४ पाकसाफ ५ अलग ६ देखनेवाला ७ नादान ८ जवाहिर ९ भेद १० जीभ ११ दांत १२ हँसने के लिये १३ आंख १४ कान १५ आवाज १६ हाथ की अंगुली व हथेली १७ पैर १८ जिसकी मिसाल न हो १९ जवानी २०-२२ क्रूर २१ भेद २३ २५-२७ बदन २४ बेफिक्र २६ ईश्वर २८ जिसका पारोवार न हो २९ बयान करना ३० आसमान ३१ जमीन ३२ सियाही ३३ बाल ३४ दांत ३५ बाल ३६ माटी ३७ बादल ३८ आसमान ३९ नखत ४० ॥

## पद्मावत ।

एतो कीन्ह सबगुण प्रकटा । अबहुँ समुद्र महँ बूंद न घटा ॥

ऐसी जानि मन गर्ब न होय । गर्ब करै मन बाँवर सोय ॥

दो० बड़ गुणवंत गुसाई चही सँवारी बेग ॥

श्री असगुणी सँवारी, जो गुण चही अनेग ॥

कीन्हेसि पुरुष एक निरमरौ नाम मुहम्मद पूनों करा ॥

प्रथम ज्योतिविधिता कीसाजी । औतेहि प्रीति सृष्टिपराजी ॥

दीपक लेश जगत कहि दीन्हा । अनिरमल जग मारग चीन्हा ॥

जो न होत अस पुरुष उज्यारा । सूफिन परत पंथ अधियारा ॥

दूसरे ठाँउ दीखी लिखी । वही धर्मी जो पादत सीखी ॥

जेहि न लीन्ह जन्म सो नाउँ । ताकहँ दीन्ह नरक महँ ठाँउ ॥

जग बसीठ दईव कीन्ही । दुइ जग तरानाउँ तेहिलीन्ही ॥

दो० गुण अवगुण विधि पूछत, होय लेखँ औ जोख ॥

वेहिं बिनवब आगे होय, करै जगत कर मोख ॥

चार मीत जो मुहम्मद ठाँउ । जेहि कदीन्ह जग निरमल नाउँ ॥

अबूबक्र सदीक सयाने । पहिले सिदक दीन वहि आने ॥

पुनि सो उमर खिताब सुहाये । भाजग अदल दीन जो आये ॥

पुनि उसमान बड़ पशिडत गुनी । लिलापुराण जो आयत सुनी ॥

चौथे अलीसिंह बरियारू । सौहिं नाकोइ रहा जुभारू ॥

चाखो एक मते, एक बाना । एक पंथ औ एक संघाना ॥

जाहिर करना १ शरूर २-३ ईश्वर ४ जल्द ५ बहुत ६ शरूस ७ पाक ८  
चौदहों रातिका चांद ९ पहिले १० ईश्वर ११ मुहम्मद १२ दुनिया पैदाकी १३  
बिरय १४ दुनिया १५ पाक १६ संसार १७ राह १८-१९ जगह २०-२१  
दुनियाका कालिद २२ दोनों जहान २३ पाप और पुरय २४ ईश्वर २५  
हिसाब २६ दुनिया २७ बन्द से छोड़ना २८ दोस्त २९ जगह ३० दुनिया ३१  
पवित्र ३२ संसार ३३ न्याय ३४ शेर ३५ जबरदस्त ३६ सामना करनेवाला ३७  
लड़नेवाला ३८ एकसत्ताह ३९ राह ४० ॥

बचन एक जो सुनायहि सांचा । वही पुराण दुहुं जग बांचा ॥

दो० जो पुराण विधि पठवा, सोई पदति ग्रंथ ।

और जो भूली आवत, सो सुन लागै पंथ ॥

शेरशाह देहली सुलतान । चारहु खंड तपी जसमान ॥

ओही आज छाति औ पाट । सब राजें भुइंधरा खिलोटां ॥

जात शूर औ खांडे शूर । औ बुधवन्त सब गुण पूरा ॥

शूर नवाई नर्वखंड वुहे । सातद्वीप दुनी सब नये ॥

तहलगराज खड्ग करिलीन्हा । इसक दरजुल करनयन जो कीन्हा ॥

हाथ सुलेमान केर अंगूठी । जग कहदान दीन भरि मूठी ॥

औ अतिगरु भूमिपति भारी । टेक भूमि सब सृष्टि सभारी ॥

दो० देहि अशीश मुहम्मद, करहु युग युग राज ।

बादशाह तुम जगते के, जग तुम्हार सुहताज ॥

वरनों शूर भूमिपति राजा । भूमि न भार सहै जो साजा ॥

हयमयसयन चल्य जग पूरी । परवत दूटि उड़हि होय धूरी ॥

परिरेणु होय रवि ही आसा । मानुष पेललेहि फिरि बासा ॥

भुइउड अंतरिक्ष गइमृतमंडा । ऊपर होय छावा महिमंडा ॥

डोलै गगन इन्द्रदर काँषा । बासुंकि जाय पतालहि चाँपा ॥

मेरु धसमसे समुद्र सुखाई । बनखंड दूटिखेह मिलिजाई ॥

अगलहि कह पानी गहिबांटा । पिछलेहि कह नहि काँदू आंटा ॥

घात १ दुनिया २ पदना ३ ईश्वर ४ किताब ५ राह ६ तरफ ७ सूर्य ८ तहत ९  
माथा १० पठान ११ तलवार बहादुर १२ बहादुर १३ सारी दुनिया १४ मुल्क १५  
तलवार १६ नाम बादशाह १७-१८ दुनिया १९ खरात २० बादशाह २१  
जमीन २२ दुनिया २३-२४-२५ तारीफ करना २६ बहादुर २७ चान्दशाह २८  
जमीन २९ घोड़े से भरी हुई फौज ३० दुनिया ३१ पहाड़ ३२ धूरि ३३  
सूर्य ३४ बीच ३५ आसमान ३६-३८ जमीन ३९ नाम राजा साँपाका ३६  
पहाड़ ४० जंगल ४१ राख ४२ चहला ४३ ॥

दो० जोगदं नयनहि काहू, चलतहोय संव चूर ।

जो वह चढै भूमिपति, शेरशाह जगशूर ॥

अदल कहां प्रथमै जसहोय । चाँटा चलत न दुखवैकोय ॥

नौशेरवां जो आदिल कहा । शाहअदल सरै सौहिनरहा ॥

अदल जोकीन्ह उमरै कीनाई । भई यहां संगरी दुनियाई ॥

परी नार्थे कोई छुवै न पारा । मारगै मानुषसे उजियारा ॥

गऊ सिंह रंगहि एक बाटाँ । दोनों पानिपियै एक घाटाँ ॥

नीरक्षीर छानै दरबारा । दूध पानि सब करै निराराँ ॥

धर्म न्याव चलै सतं भाषा । दूबर वरी एक समै राखा ॥

दो० सबै पृथिवी अशीशै, जोरि जोरिकै हाथ ।

गङ्ग यमुन जौलहि जल, तौलहि अमरनाथ ॥

पुनि रूपवंत बखानों काहा । जानवन्तजगंतसबेमुखजाहा ॥

शांशि चौदहजोदई सँवारा । तवहूँ जाहि रूप उजियारा ॥

पापजाय जो दरशन दीशा । जगै जुहारके दैत अशीशा ॥

जैसो भातुं जगै ऊपर तपान । सबै रूप वह आगे छिपा ॥

असभा शूरै पुरुषै निरमराँ । शूरै जाहि दशआकरै कराँ ॥

सौहिदाँष्टि की हेरै न जाई । जेहिदेखा सो रहा शिरनाई ॥

रूपसवाई दिन दिन चढा । बिधि<sup>३</sup> सुरूप जगै ऊपरगढा ॥

दो० रूपवन्त मनमाथे, चन्द्रघाट वह बाढि ।

किला १ इट्टना २ बादशाह ३ दुनिया का सूर्य ४ न्याव ५ पहिले ६ चाँवटी ७ नाम बादशाह ८ न्याव करनेवाला ९ न्याव १०-१२ बराबर ११ नाम खलीफा १३ नाथना १४ राह १५-१७ शेर १६ दूधपानी १८ अलग १९ सच्चा २० जबरदस्त २१ बराबर २२ हमेशाजिंदा २३ खूबसूरत २४ बयान करना २५ दुनिया २६-२८ चाँद २७ ईश्वर २८ सूर्य ३० संसार ३१ बहादुर ३२-३५ मर्द ३३ पाकसाफ़ ३४ दशगुना ३५ सूर्यतिगाह ३७ देखना ३८ ईश्वर ३६ दुनिया ४० खूबसूरत ४१ ॥

मेदनं द्रश लुभानी, अस्तुति विनवै ठादि ॥

पुनि दातारं देई जगं कीन्हा । असजगं दान न काहूदीन्हा ॥

बलिं श्रीविक्रमदानिवडकहे हातिमकरणं वतागीअहे ॥

शेरशाह सरपोचं न कोऊ । समुद्र सुमेरं भंडारी दोऊ ॥

दान दांगं बाजे दरबारा । कीरतिं गई समुन्दर पारा ॥

कंचनंपरस शूरं जगं भयो । दारिद्रभाग दशन्तरं गयो ॥

जो कोइ जाय एक बेर मांगा । जन्मन होय न भूखा नांगा ॥

दशअश्वमेधजगंतजोकीन्हा । दानपुण्यसरं सौहिनचीन्हा ॥

दो० एसो दानि जगं उपजां, शेरशाह सुलतान ।

ना अस भयो न होय ना, कोई दै अरुदान ॥

तारीफसध्यदअशरफजहांगीरकी ॥

सय्यद अशरफ पीर पियारा । जेहिमोहिपथं दीन्हउजियारा ॥

लेसाहिये प्रेम करि दिया । उठीज्योति भानिरमलं हियां ॥

मारंगं होत जो अंधेरा भूझा । भा उजेर सब जाना भूझा ॥

खारसमुद्र पाप मोर मेल्ला । वोहितं धर्म लीन्ह कै चेल्ला ॥

उन मोर करं वूडिं कै गंहा । पायो तीरं घाट जो अहा ॥

जाके एसो होय कंधारं । तुरत बेगिं सो पावै पारा ॥

दस्तगीर गाढे कै साथे । वह अवगाहिदीन्हजेहिहाथे ॥

दो० जहांगीर वयविष्टी, निहकलंक जस चाँद ।

वियमखदूम जगंतके हो वह घरकी बाँद ॥

आदमी १ तारीफदान देनेवाला २-६ ईश्वर ४ दुनिया ५-६-१७-२०-२२-३४

नाम राजा ७-८ नामसखी १० बराबर ११ पहाड़ का नाम १२ नगाड़ा १३

नेकनामी १४ पारसपत्थर १५ बहादुर १६ नाम जगह १८ घोड़ाकी यज्ञ १९

बराबर २१ पैदा हुआ २३ राह २४-२८ (दिल २५-२७ पाक २६ नाव २६

हाथ ३० किनारा ३१ मझाह ३२ जल्द ३३ ॥

## तारीफ़ सय्यदअशरफ़जहांगीरकेबेटेकी ॥

उनकर रतन एक निरमरा । हाजी शेख सभा गुण भरा ॥

तेहिघर दुइ दीपक उजियारे । पन्थ दये कहँ दई सँवारे ॥

शेख मुहम्मद पून्यों करा । शेखकमाल जगत निरमरा ॥

दोउ अचल ध्रुव डोलै नाहीं । मेरखै-खरड न भवाउपराहीं ॥

दीन्हरूप अरु ज्योति गुसाई । कीन्हखम्भ दुइजग की ताई ॥

दोऊ खम्भ टके सब महीं । दोनों के भारसृष्टि सबरही ॥

जिन दरशन औ परशनपाया । पापहरा निरमल भइ कार्या ॥

दो० मुहम्मद तहानिचंतपथै, जिन्ह संगसुरशदपीर ।

भाहिरीनाव औखेवकँ, बेगि लागिसो तीर ॥

गुरु मुहदी खेवकँ मै सेवा । चली उताहल जेहिके खेवा ॥

अगुवा भयो शेख बुरहानू । पथ लाय म्वहिं दीन्होज्ञानू ॥

अलहदाद भलतिन्हकर गुरु । दीन दुनी रोशन सुखुरु ॥

सैद मुहम्मद के वै चेला । सिद्धपुरुष संगमं जिनखेला ॥

दानपाल गुरुपन्थै लखाई । हजरतखाजाखिजिरतेहिंप्राई ॥

भये प्रसन्न वै हजरत खाजे । ऐ मेरे जिये सय्यद राजे ॥

वै सेवन मै पाय करते । अखरी जीभ प्रेम कब बरते ॥

दो० वे सुगुरु हों चेला, नितै बिनवों भा चेर ।

उन हुत देखी पाउँ, दरश गुसाई कर ॥

एक नयन कबि मुहम्मदकने । सोई बिमोहाँ जे कबि सुने ॥

जवाहिर १ साक्र २-११ राह ३-१३ चांद ४ संसार ५ पाकसाफ़ ६ नाम  
सितारा ७ बीहड़ ८ दुनिया जहान ९-१० वदन १२ मझाह १४ जल्द १५ कि-  
नारा १६ नावखेनेवाला १७ राह १८-२१ मर्दकामिल १६ सत्संगत २० खुश २२  
हमेशा बिनती करना २३ ईश्वर २४ आँखें २५ मोहजाना २६ ॥

चांदजैसोजगं विधि अवतारी। दीन्ह कलंककीन्ह उजियारा ॥

जगं सूझा एके नयनाहां। उआमूक जस नखतनमाहां ॥

जौलहि अंवहि डाभ नहोय। तौलहिसुगंध वसाय न कोय ॥

कीन्हि समुद्र जो पानी सारा। तौ अतिभयोअसूफिअपारीं ॥

जो मुमेरुं त्रिशूल विनाशा। भा कंचनगढ़ लाग अकाशा ॥

जौ लहिघरी कलंक नहि परा। कांच होय नहि कंचन करा ॥

॥ दो० एकनयनं जस दरपणं, औ निरमलं तेहिभाव ।

॥ तिसव रूपवती पाउंगहि, मुखजोवन की चाव ॥

चार मीतं कवि मुहम्मदपाये। जेरि मितार्इ सर पहुँचाये ॥

यूसुफमलिकप्रशिडतवहुझानी। पहिली बात भेद उन जानी ॥

पुनि सलारकादम मतिमाहां। खांडेशूर उभानत बाहां ॥

मियां सलोनी सिंहवरयारु। वीरकहत रणखड्ग जुझारु ॥

शेखवडीवडिसिद्धि वखानां। के अदेश सिद्धि वड़ वाना ॥

चाखो चतुरदर्शा गुण पढे। औसिंह योगगुसाई गढे ॥

बृक्ष होय जो चन्दन पासा। चन्दनहोयविविधतेहिबासा ॥

॥ दो० मुहम्मद चाखोमीतं मिलि, भये जो एकैचित्त ।

॥ यहजगं साथ जो बैठे, वहजगं बिछुरन कित्त ॥

जायसनगर धर्म अस्थानू। तहांजायकवि कीन्ह बखानू ॥

औविनती प्रशिडतनसोभजा। टूटिसँवैर मेरु बहु सजा ॥

दुनिया १ ईश्वर २ पैदा किया ३ संसार ४ आखें ५ नामसितारा ६ आंख ७ दाया ८  
 खुशबू ९ जिसका किनारा न हो १० नामपहाड़ जिसको महादेवजीने त्रिशूलसे  
 खोदा था ११ सोनेका किला १२ दाया १३ सोना खालिस १४ आंख १५ आईना १६  
 पाकसाक १७ खबसूरत १८ मुंहदेखना १९ दोस्त २० दोस्ती २१ तलवार बहादुर २२  
 बलम्वहाथ २३ शेर जबरदस्त २४ तलवार २५ मर्दकामिल २६ मशहूर २७ चांदहा  
 विद्या के ज्ञाननेवाले २८ शेर २९ ईश्वर ३० पेड़ ३१ चार ३२ दुनिया ३३-३४  
 मकान ३५ घयानकरना ३६ आजजी ३७ सब तरह आरास्ता ३८ ॥



हों परिडतन केर पछलगां । कलुकहि चला तबलडीडगा ॥

हियं भंडारंग अहे जो पूंजी । खोली जीभ तारकी कूंजी ॥

रतन पदारथ बोले बोला । सुरस प्रेममधु भरी अमोला ॥

जेहिकी बोल विरहकी धाया । कहँतेहि भूख कहां तेहिमाया ॥

फेरै भेवँ रहै भा तपाँ । धूर लपेटा मानिकै छपा ॥

दो० मुहम्मद कविजो प्रेमकी, नातन रक्त न मांस ।

जें मुखदेखा सो हँसा, सुनि तेहि आये आंस ॥

सँन नवसे सत्ताइस अहै । कथा अरुमँ वेनकवि कहै ॥

सिंहल द्वीप पद्मिनी रानी । रतनसेन चित्तौरगढ़ आनी ॥

अलाउद्दीन देहली सुल्तानू । राघव चेतन कीन्ह बखानू ॥

सुना शाह गढ़ छेंका आई । हिन्दू तुरकहि भई लड़ाई ॥

आँदिअन्त जस कथा अहै । लिखि भाषा चौपाई कहै ॥

कवि व्यास रस कँवला पुरी । दूरहि नेरे नेरे दुरी ॥

नेरे दूर फल जस कांटा । दूर जो नेरे जस गुड़ चांटा ॥

दो० भँवर आय वनखरुँड सो, लेइ कमलकी बास ।

दादुरँ बास न पावै, फूलहिजो आछीपास ॥

सिंहल द्वीप कथा अब गाऊँ । औ सुपद्मिनी बँरैणि सुनाऊँ ॥

निरमल दरपणँ भांतिविशेखा । जिन्ह जसरूप सोतैसो देखा ॥

धनिसोद्वीप जिन्ह दीपक बारे । औ सुपद्मिनी जोदई सँवारे ॥

सात द्वीप बँरैणे सब लोगू । एकौ द्वीप न वहिसरै योगू ॥

दया दीन नहिँतस उजियारा । सरनद्वीप सर होय न पारा ॥

ढोलबजायके १दिल २जवाहिर ३मीठे मुहब्बतके भरेहुये ४शराव ५सूरतवदले हुये ६तप करनेवाले ७मोती वचौरह ८खून ९शुरूकरना १०नाम भाट ११वयान करना १२क्रिला १३अव्वल से आखिर तक १४चींटी १५जंगल १६मेंदक १७तारीक करना १८साफ १९शीशा की तरह २०ईश्वर २१वयान २२बरावर २३॥

जम्बू द्वीप कहूँ तसी नाई । लङ्कद्वीप सरपोच न भाई ॥

द्वीपगुप्त सहल आरण परा । द्वीपमहो सिंहल ब्राँस हरा ॥

॥ दो० सत्र संसार औ पृथिवी, आये सातो द्वीप । ॥

॥ एक द्वीप नहि आतिम, सिंहल द्वीप समीप ॥

गान्धर्वसेन सुगन्ध नरेशू । सो राजा बह ताकर देशू ॥

लंका सुना जो रावण राजू । तेहु जाहि बर ताकर साजू ॥

छप्पन कोटिकटक दलसाजा । सबै क्षत्रपति औ गदराजा ॥

सोसह सहस्र घोड़ घुड़शारा । श्यामकरणजसत्रांक्र तुषारा ॥

सात सहस्र हस्ती सिंहली । इमि कैलास ऐरांपति बली ॥

अश्वपतिक शिर मोर कहावे । गजपतीक अकुशगर्ज नावे ॥

नरपतीक कहूँ और नरिन्दू । भूपतीक जर्ग दूसरिन्दू ॥

दो० एसो चकवे राजा, चहुँखण्ड भू होय ।

सबै आय शिरनावही, संबर करी न कोय ॥

जोहि द्वीप नेरे भा जाय । जनु कैलास तीर भा आय ॥

गहनै अँवराँउ लागचहुँपासा । उठी भूमि हतिलागि अकासा ॥

तरवै सबै मलयगिरि लाये । भइजगद्धाँहिर्यनि हैआये ॥

मिली सुमेर सुहाई छाँहा । जेठ जाडलागै तेहि माहाँ ॥

वही छाहि र्यनि है आवै । हरियर सबै अकास देखावै ॥

पन्थकै जो पहुँचे सहि घामू । दुख बिसरे मुखहोय विश्रामू ॥

जिन्ह वह पाई छाहि अनूपौ । फिरि न आय सही यहिधूपा ॥

बराबर १ राजा २ फौज ३ हजार ४-७ अस्तबल ५ घोड़े की जात ६ हाथी ७ बराबर ८ नाम पहाड़ ९ नाम हाथी राजा इन्द्र ११ घोड़े सवार १२ हाथी सवार १३ हाथी १४ राजा १५-१६-१७ दुनिया १८ राजा इन्द्र १९ चक्रवर्ती २० तमाम दुनिया २१ बराबर २२ नाम पहाड़ २३ गुंजान २४ वाय २५ जमान २६ पेड़ २७ चन्दन २८ रात्रि २९-३१ पहाड़ ३० मुसाफिर ३२ आराम ३३ वेमिसाल ३४ ॥

दो० असअँवराँँ सघनघन, बरौणि न पारौँ अन्त ।

फरी फूली छयों ऋतु, जानहु सदा वसन्त ॥

फरे अम्ब अति सघन सुहाये । औजसफरीअधिकशिरनाये ॥

कटहर दार पेड़ सो पाके । बड़हर सो अनूप अतिताके ॥

खिरनी पाकर खाँड़ असमीठी । जामुनपाक भँवरअस दीठी ॥

तरवर फरे फरे खरहरे । फरे जानि इन्द्रासन परे ॥

पुनिमहुवाचुवअधिकेँ मिठामू । मधु जसमीठपुहुपँ जसवासू ॥

और खजहजाँ उनकर नाँँ । देखा सब रानी अँवराँँ ॥

लागि सबै जस अमृत शाखा । रहै लुभाय सोई जो चाखा ॥

दो० लवँग सुपारी जायफल, सब फल फरे अपूर ।

आस पास घनँ ईमली, औ घनँ तार खजूर ॥

बसहिं पंखें बोलहिं बहु भाखा । करहिंहुलाँँ देखिके शाखा ॥

भोरहोत बासहिं चहिं चुँहीं । बोलहिं पांडुकेँ एके तुहीं ॥

साँरो सुवाँँ जो रहचहिकरहीं । करहिं पखेँरूँ और करोरहीं ॥

पिव पिवकर जो लागपपीहा । तुही तुहीकर गड़रूँ केहा ॥

कुहू कुहू कर कोयल राखा । औबिहँगराँँ बोलबहुभाखा ॥

दही दही करि महरि पुकारा । हारिल अपनी बोली हारा ॥

कुहकहिं मोर सोहावन लागा । होय कराहर बोलहिं कागा ॥

दो० जानवन्त पक्षी बनके, फिरि बैठे अँवराँँ ३० ।

अपनीअपनी भाषना, लीन्हदई ३१ करनाँँ ॥

पैगँ पैगँ पर कुँवा बावरी । साजी बैठकेँ औ पावरी ३२ ॥

वाग १-८ वयान २ बहुत ३-४ शहद ५ फूल ६ नाम मेवा ७

गुंजान ६-१० चिड़ियाँ ११ खुशी करना १२ नाम चिड़ियाँ १३-१४ सारस १५

तोता १६ नाम चिड़ियाँ १७-१८ दाहियड़ १९ वाग २० ईश्वर २१ कदम २२-२३

बैठक २४ जीना २५ ॥

और कुंड बहु ठावहिं ठाऊं । सब तीरथ औ तेहिके नाऊं ॥

मठ मण्डप चहुँ पास सँवारे । तपी जपी सब आसनमारे ॥

कोईसुऋषीश्वरकोईसंन्यासी । कोईरामयती कोईविशवासी ॥

कोईब्रह्मचर्यी पथ लागे । कोईसोदिगम्बर अचिह्न नागे ॥

कोई सुमहेश्वर योगी यती । कोई एक परखै देवी सती ॥

कोईसरस्वती संतकोइयोगी । कोइनिराशंपथबैठिवियोगी ॥

दो० सेवरी खेवनां वानप्रस्थी, शिषसाधक अवधूत ।

आसन मारे बैठि सब पांच आत्मा भूत ॥

मानिसरोवर वरणों काहा । भरासमुद्रअसअतिअवगाहा ॥

जल मोती अस निरमल तासू । अमृतवरण कपूरसुबामू ॥

लंकदीपकी शिला अनाई । वांधा सरवर घाट बनाई ॥

खण्ड खण्ड सीढ़ी भुई धरे । उतरहि चढ़हि लोग चहुँ फेरे ॥

फूला कमल रहा है राती । सहस्र सहस पक्षि के छाता ॥

उलटहि सीप मोति उतराहीं । चुनहि हंस औ केलि कराहीं ॥

खनि पतार पानीतहि कादा । क्षीरसमुद्र निकस तहँ ठादा ॥

दो० ऊपर पाल चहुँदिशि, अमृत फल सब रूख ।

देखि रूप सरवर का, गइ पियास औ भूख ॥

पानि भरी आवहिं पानिहारी । रूपस्वरूप पद्मिनी नारी ॥

पद्मगन्ध तिन अङ्ग वसाहीं । भँवरलागि तिनसंग फिराहीं ॥

लंकैसिंहिनीसारंग नयनी । हंसगाभिनी कोकिलबयनी ॥

जगह १-२ तप करनेवाले ३ जप करनेवाले ४ क्लिस्म योगियोंकी ५-६

७-८-१०-११ राह ९ क्लिस्म योगी १२-१३-१४-१५-१६-१७-१८-१९

२०-२१-२२-२३ नाम तालाब २४ तारीफ २५ बहुत गहिरा २६ साफ २७

रंग २८ खुशबू २९ तालाब ३० सुख ३१ हजार ३२ चिड़ियाँ ३३ चारोंतरफ ३४

नामतालाब ३५ कमलकी खुशबू ३६ वदन ३७ कमर शेरनी की तरह ३८

हिरण ३९ आँख ४० चाल ४१ आघाज ४२ ॥

आवहिंभुण्डसोपांतिहिपांती । गवनं मुहायसुभांतिहिं भांती ॥  
 कनकं कलशं मुखचन्ददिपाहीं । रहसकेलिसे आवहिंजाहीं ॥  
 जासों वै हेरें चखै नारी । बांके नयनं जनुहनहिं कटारी ॥  
 केशं मेघवर शिर ता पाहीं । चमकहिंदशनं वीजुं कीनाई ॥  
 दो० माथे कनकं गागरी, आवहिं रूप अनूपं ।  
 जेहिकी ये पनिहारी, ती रानी केहि रूप ॥  
 तालतलावा बरणि न जाहीं । सूझै वारपार कुछ नाही ॥  
 फूलीकुमुदि केति उजियारोमानहुं उये गर्गन महँ तारे ॥  
 उतरहिं मेघ चढ़हिं लै पानी । चमकहिं मच्छवीजुं कीवानी ॥  
 तैरहिंपहँ सुसंगहि संगी । श्वेत पीत राती बहु रंगा ॥  
 चकई चकवाकेलि कराहीं । निशो विद्योहदिनहिंभिलिजाहीं ॥  
 करलहिसारस करहिं हुलासा । जीवन मरनसुएकहिं पासा ॥  
 कम्पासो डहनकै बकै लेदी । रही अपूरमीन जलभेदी ॥  
 दो० नगअमोल तेहितालहि, दिनहिंवरहिं जसदीप ।  
 जो मरजिया होयतेहि, सो पावै ब्रह सीप ॥  
 आसपास बहु अमृत बाँरी । फरी अपूर होय रखवारी ॥  
 नारंग नींबू तुरँज जँभीरा । औ बदाम बहु बेद अँजीरा ॥  
 गुलंगुल तुरँज सदाफर फरे । नारंग अति राँती रस भरे ॥  
 किसमिस सेव फरे नौ बाता । दाड़िम दाख देखि मनराता ॥  
 लाग सुहाई हरफास्यौरी । उनयरही केला की घौरी ॥

बलना-१ तरह-२ सोना-३ घड़ा-४ चमकना-५ खुशीसे उछलती-कूदती-६  
 देखना-७ आँख-८ बाल-१० दाँत-११-त्रिजुली-१२-१६-सोना-१३-वेमिसाल-  
 १४ तारीफकरना-१५ कोकोवेली-१६ नामनखत-१७ आसमान-१८ चिड़िया-२०  
 सफेद-२१ पीली-२२ लाल-२३ रात्रि-२४ नामजानवरपरिन्द मछली-पकड़-कर  
 खाजानेवाले-२५-२६-२७-२८ मछली-२९ बागीचा-३० लाल-३१-३३ अनाद-३२ ॥

फरीतूत कमरख औ व्योजी । राय करौदा बेर चिरौजी ॥

सुगन्धराव लुहारा दीठे । और खजहजा खाटे भीठे ॥

दो० पानि देहि खण्डवानी, कुवहि खांड नहि भेल ।

लागी धरी रहँटकी, सींचहि अमृत बेल ॥

पुनि फुलवारि लाग चहुँपासा । बृक्ष बेदाहिचन्दन भइबासा ॥

बहुत फूल फूली धन बेली । क्यौंढा चम्पा गोंद चमेली ॥

सुरंग गुलाल कदम औ गूजा । सुगंध बकोरी गन्धब पूजा ॥

जाहीजूही बगचन लावा । पुहुप सुदरसन लागसुहावा ॥

नागेसर सदवर्ग हवारी । औ शिंगारहार फुलवारी ॥

मुमन जर्द बहु खिली सेवती । रूपमंजरी और मालती ॥

मोलसिरी बेली औ करना । सबै फूल फूले बहु बरना ॥

दो० तेहि शिर फूल चढ़हि वै, जेहि साथे मन भाग ।

आखेन्ह सदा सुगन्धबहै, जनु वसंत औ फाग ॥

सिंहलनगर दीख पुनि वसा । धनिराजा अस जाकर दसा ॥

ऊँची पँवरी ऊँच उड़ासा । जनु कैलास इन्द्रकर बासा ॥

राज रंक सब घर घर सुखी । जो देखे सो हँसता सुखी ॥

रचि रचि साजे चन्दन चूरा । मोती अर्गर मंद करपूरा ॥

सब चौपारहि चन्दन खँभा । वहि राजा तब बैठो सभा ॥

जनु सभा देवतहि की जुरी । परी दृष्टि इन्द्रासन पुरी ॥

सबै गुणी औ पण्डित ज्ञाता । संस्कृत सबके मुख राती ॥

दो० अलखहि पन्थ सँवारै, जनु शिवलोक अनूप ।

घरघरनारिपद्मिनीमोहहि, सबअप्सरनै करूप ॥

नाम मेवा १ देखना २ खजूर ३ माली ४ पेड़ ५ फूल ६ गोंदा ७

रंगवरंग = जीना ८ महल १० कसर ११ निगाह १२ संस्कृत जवानके सब

बालनेत्राले १३ लाल १४ हृषिकोराह १५ वेमिसाल १६ स्वर्गकी औरतें १७ ॥

पुनि देखी सिंहलकी बाटी । नवोनिछिँ लक्ष्मी सवहाटी ॥

कनकं हाटँ सवकुहकहिं लीपी । बैठि महाजन सिंहलद्रीपी ॥

रञ्जीहतोड़ा रूप न दारे । चित्र कटावअनेकं सँवारे ॥

सोनरूप भल भयो पसारा । धवलीशिरीपोतहिं घरवारा ॥

रतन पदारथमाणिकं मोती । हीरालाल सँवारे जोती ॥

औ कपूर वेना कस्तूरी । चन्दन अग्र रहा भरिपूरी ॥

जिनयहिहाँटँन लीन्हविसाहाँ । तिनकहँ आनहाँटँ कितलाहाँ ॥

दो० कोई करै विसाहनाँ, काहू केर विकाय ।

कोई चलै लाभं सों, कोई मूर गँवाय ॥

पुनि सुश्रृंगार हाँटँ भलदेखा । किये श्रृंगार वैठितहँ वेर्यौ ॥

मुख बीरी शिरचीर कुसुम्भी । काननकनकं जड़ाऊखुम्भी ॥

हाथबीन पुनि मृगौ भुलाहीं । नरमोहहिंसुनिपैगँ न जाहीं ॥

भौहधनुष तेहि नयनं अहेरी । मारहिं वाणसान सों हेरी ॥

अलकं कपोल होलहँसदेहीं । लाय कटाक्ष मारजनु लेहीं ॥

कुचं कंचुकं जानहिंजगँ सारे । अंचल दीन्ह सुभावहि दारे ॥

केते खेलार हार तेहि पांसा । हाथ झारि उठिचले निरासा ॥

दो० चेटकं लाय हरहिं मन, जबलहिहै गँठिफेट ।

साँटँ नाट पुनि भई बयऊँ, ना पहिचान न भेटा ॥

लैके फूल बैठि फुलहारी ॥ पान अपूरव धरे सँवारी ॥

राह १ दुनियाकी दौलत २ बाजार ३-५-१५-१७-२१ सोना ४-२३  
केसर ६ दसनी ७ मुसव्वरी ८ बहुत ९ आरास्ता १० चूना ११ जवा-  
हिर १२ मूंगा १३ मुश्क १४ मोललेना १५ फ़ायदा १६-२० खरीदारो १६  
तवायफ़ २२ बाल २४ हिरण २५ कदम २६ आँख २७ शिकारी २८ देखाना २९  
बाल ३० गाल ३१ छाती ३२ अँगिया ३३ संसार ३४ जादू ३५ मुफ़लिस ३६  
मुसाफिर ३७ मालो ३८ ॥

सोंधां सबै बैटि ले कांधे । भल कपूर खेरी बांधे ॥

कतहूँ परिडत पढ़ै पुराना । धर्मपंथ कर करहिं बखानां ॥

कतहूँ कथा कहै कुछ कोई । कतहूँ नाचकूद भल होई ॥

कतहूँ चरहटां पंखी लावा । कतहूँ पाखंड नाच नचावा ॥

कतहूँ नाद शब्द हो भला । कतहूँ नाटक वेटक कला ॥

कतहूँ काहु ठगविद्या लाय । कतहूँ मानुष लीन बोराय ॥

दो० चरपंतं चोरदूतं गठछोरा, मिलेरहहिं तेहिपांच ।

जोबहुभांतिसजगं भाअंगमन, गठं ताकरपैबांच ॥

पुनि आई सिंहल गढपासा । कावरणों<sup>१</sup> जनुलाग अकासा ॥

तरहिं<sup>२</sup> करहिंवासुकि<sup>३</sup> कीपीठीऊपर इन्द्रलोकपर दीठी<sup>४</sup> ॥

पराखोह<sup>५</sup> चहुँदिशि<sup>६</sup> सबबांका । कांपैजांघ जायनहिं भांका ॥

अंगमं असूभ देखि डरखाये । परै सुसप्त पतारहिं जाये ॥

नव पवरी<sup>७</sup> बांकी नवखण्डा । नवो जो चढ़ै जायब्रह्मण्डा ॥

कंचनकोट<sup>८</sup> जडे नगशीशा । नखतहिंभरीबीजं पुनिदीशा ॥

लङ्काजाहिऊंचगढंताका । निरखि<sup>९</sup> न जाय दृष्टि<sup>१०</sup> मनथाका ॥

दो० (हियं नसमायदृष्टि<sup>११</sup> नहिं पहुँचै, जानहिंठादसुमेरं<sup>१२</sup> ।

कहँलग कहों उँचाई, कहँलग बरणों<sup>१३</sup> फेर ॥

ततगढवणिजं<sup>१४</sup> चलैजगमूरु । नाहित होयवाजिं<sup>१५</sup> स्थचूरु ॥

पवरी<sup>१६</sup> नवों वज्र की साजे । सहसं सहसं तहं बैठे पाजे<sup>१७</sup> ॥

हलवाई १ लङ्का २ राह ३ बयान करना ४ बाजार ५ गाना ६ आवाज ७

करनाटक ८ जादू ९ मकार १० चुगुल ११ होशियार १२ गांठी १३ तारीफ

१४ जड़ १५ नामसांप १६ देखना १७-२५ खाई १८ चारोंतरफ १९

मुश्किल २० सीढ़ी २१ सोनेका किला २२ बिलुली २३ किला २४ नजर २५

दिल २७ निगाह २८ नामपहाड़ २९ तारीफ ३० सौदागर ३१ घोड़ा ३२ मकान

३३ पत्थर ३४ हज़ार ३५-३६ पियादा ३७ ॥



फिरैं पांच कुतवार सुभँवरी । कँपे पाँठे चापत वे पँवरी ॥

पँवरिहिं पँवरि सिँह गढ़गाढ़े । डरपहिं सयँ देखि तहँ ठाढ़े ॥

बहु वनाव वे नाहरँ गढ़े । जनुगाजहिं चाहहिं शिरचढ़े ॥

ठारहिं पूँछ पसारैं जीहा । कुंजरँ डरहिं कि गुंजरलीहा ॥

कनकँ शिलागढ़ सीढ़ी लाई । जगमगाहिं गढ़ ऊपर ताई ॥

दो० नवोंखण्ड नवपँवरी, आँतहँ वज्र केवार ।

चार वँसरे सो चढ़े, सुँते सो उतरें पार ॥

नवपँवरी पर देसोंदुवारा । तेहिपर वाजिस्त्रा घरियारा ॥

घड़ी सो वैठि गिनै घरियारी । भरी मु अपनी अपनी वारी ॥

जोहि घड़ी पूजे वह मारा । घड़ी घड़ी घरियार पुकारा ॥

भराजो डांडँ जगँतँ सबडांडा । कानिचिन्तँ माँदकर भाँडँ ॥

तुम तेहि चाक चढ़ेहो कांची । अबहिं न फिरी नथिरहेवांची ॥

बड़ीजो भरी घरी तुम आऊँ । कानिचिन्तँ सोवे जो वडाँऊँ ॥

पहरहिं पहरगुजरुन्तितँ होई । हिया न सोगा जागन नोई ॥

दो० सुहम्मदुज्यों जल भरत, रहँघड़ी की रीति ।

घड़ीजो आई ज्यों भरी, दरी जन्म गा वीति ॥

गढ़परनीरँ क्षीरँ दुइनदी । पानि भरेँ जैसे दुरपदी ॥

आँर कुण्ड एक माँती चूरु । पानी अमृत कीच कपूरु ॥

वहाँ का पानी राजा पिया । वृजँ होयनहिंजवलगजिया ॥

कंचनवृक्षँ एक तेहि पासा । जस कल्पतरुँ इन्द्र कलासा ॥

महल १-२-३ शेर ४ मर्द ५ शेर ६ हाथीगस्त ७ सोना = किला ८ मकान ९

पत्थर ११ मुक्ताम १२ सचाई १३ नच मकान तथा आँख कान नाक सुँद गुदा

लिंग नवहँद्री बदनकी १४ दशवाँ दरवाजा तथा ब्रह्माण्ड १५ घाटा १६ दुनिया

१७ याकिल १८-२१ आदमी १९ उमर २० मुसाफिर २२ हमेशा २३ पानी २४

दूध २५ बूढ़ा २६ सोनेकापेड़ २७ नाम दरफ्त जो स्वर्गलोक में है २८ ॥

मूल पतार स्वर्ग वहशाखा । अमरबेलिको पावको चाखा ॥

चन्द्रपात औ फूल तराई । होय उजियार नगर जहँ ताई ॥

वैफल पावै तप करि कोई । वृद्धखाय नवयौवन होई ॥

दो० राजा भये भिखारी सुनि वह अमृत भोग ।

जेंपावा सो अमर भा, न कुछ व्याधि नहिं रोग ॥

गढ़ पर वसहिं चार गढ़पती । अश्वपगजपभुवंप नरपती ॥

सबकधौरहिर सोने साजा । औ अपने अपने घर राजा ॥

रूपवन्त धनवन्त सभांगी । परसपषाणपवर तेहिलागी ॥

भोग परस सदा सवमाना । दुख चिन्ता कोई नहिं जाना ॥

मँदिर मँदिर सबके चौपारी । बैठि कुँवर सबखेलहिं सारी ॥

पांसा दरहिं खेल भल होई । स्वर्ग वान सरपूजनं कोई ॥

भाठवरन कहिं कीरति भली । पावहिं हस्ति घोड़ सिंहली ॥

दो० मँदिर मँदिर सबकी फुलवारी, चौवाचन्दनवास ।

निशि दिनरहै वसन्तवह, ब्रह्मत्रतुबारहमास ॥

पुनि चलि देखा राजदुवारा । मानुषफिरहिं पायनहिंबारो ॥

हस्ति सिंहली बांधे बांधो । जनुसजीव सबठाढ़ पहारा ॥

कवन्योश्वेत पीत रतनारे । कवन्योहरे धूम असकारे ॥

बरनवरन गगन जसमेघा । उठहिं गगन बैठिजनुठेघा ॥

सिंहल के बरने सिंहले । इकइक चाहसो इकइकबले ॥

जड़ १ आसमान २ पत्ता ३ नखत ४ नवजवान ५ हमेशा ६ क्लिा ७

घोड़ेका सवार ८ हाथीका सवार ९ जर्मनिका मालिक १० राजा ११ महल १२

खूबसूरत १३ दौलतमन्द १४ नसीबवर १५ पारस पत्थर १६ दरवाजा

१७-२७ हँसीखुशी १८ चौसर १९ बराबरी २० तारीफ २१ नेकनामी २२

हाथी २३-२६ रात्रि २७ देखल २८ जानदार २९ सफ़ेद ३० जूद ३१ लाल ३२

धुवां ३३ रंगवरन ३४ आसमान ३५-३६ पहाड़ ३७ बयान करना ३७ ॥

गिरि<sup>१</sup> पहाड़ परवत कहिपेलहिं । बृक्ष उचारिभारि मुखमेलहिं ॥

मत्तं मत्तंगसवगरजहिं बांधे । निशि<sup>२</sup> दिनरहहिं महावतकांधे ॥

दो० धरतीं<sup>३</sup> भार अंगोही, पांव धरत उठ हाल ।

कुर्महिं<sup>४</sup> टूटिभुईं फाटी, तेहि हस्तिहि की चाल ॥

पुनि बांधे उजियार<sup>५</sup> तुरंगों । कावरणों<sup>६</sup> जस उनके रंगा ॥

लेलें समन्दं चालजगजाने । हांसलें वोरें<sup>७</sup> क्याहिवखाने ॥

परी<sup>८</sup> कुरंगों<sup>९</sup> मंहो बहुभांती । कररंकोकलाहें बलाहें सुपांती ॥

तीखें तुखारें चांद, औ बांके । तड़पहिं तवहिं बांजि विनहांके ॥

मनते अगमनं डोलहिं वागा । देतउसास गगनं शिरलागा ॥

पावहिं सांससमुदपर धावहिं । वूड़ि न पांव पार है आवहिं ॥

थिरनरहैं रिस लोह चवाहीं । भाजहिं पूछ शीश उपरोंहीं ॥

दो० अस तुखारें<sup>१०</sup> सब देखे, जनु मनके रथवांहि ।

नयनं पलक पहुँचावहीं, जहँ पहुँचाकोइ चांहि ॥

राजसभा सब देखे बैठे । इन्द्रसभा जनुपरगइ डीठे<sup>११</sup> ॥

धनि राजा अससभा सँवारी । जानहुँ फूलि रही फुलवारी ॥

मुकुटबन्द<sup>१२</sup> सब बैठे राजा । दर<sup>१३</sup> निशानसबजेहिकेसाजा ॥

रूपवन्तें<sup>१४</sup> मनदिपै लिलाटां । माथे<sup>१५</sup> छातु बैठि सब राजा ॥

जानो कमल सरोवरें<sup>१६</sup> फूले । सभाकि रूप देखि मन भूले ॥

पान कपूर मेदें<sup>१७</sup> कस्तूरी<sup>१८</sup> । सुगन्धवास भरि रही अपूरी ॥

मांके<sup>१९</sup> ऊँच इन्द्रासन साजा । गन्ध्रवसेन बैठि तहँ राजा ॥

पहाड़ १ मस्त २ रात्रि ३ ज़मान ४ कलुवा ५ हाथी ६ घोड़ा ७ तारीक ८ नामजात चारंग घोड़ों के ९-१०-११-१२ चयान करना १३ नाम जात चारंग घोड़ों के १४-१५-१६-१७-१८-१९ शोख २० घोड़ा २१-२२-२६ पहिले २३ आसमान २४ शिरउठाये हुये २५ गाड़ीवान २७ आँख २८ निगाह २९ फौज ३० खूबखरत ३१ माथा ३२ तालाब ३३ केसर ३४ मुशक ३५ बीचों बीच ३६ ॥

दो० छत्र गगन लगताकर, सूर्यदिपै तस आप ।

सभा कमल जनु विगसी, माथे बंड परताप ॥

साजा राजमंदिर कैलाश । सोनेका सब भूमि अकाश ॥

सातखण्ड ध्वराहर साजा । वही सवारसकै अस राजा ॥

हीरा इंद्र कपूर गिलावा । औनगलायस्वर्ग लयलावा ॥

जानवन्त सब उरहे उरहे । भांतिभांति नगलागउबेहे ॥

भाकटाव सब आनहु भांती । चित्रं कटावसो पांतहिपांती ॥

लागखंभर्मणि माणिकजडे । निशि दिनरहै दीपजनुबरे ॥

देखि धौरहर कर उजियारा । छिपगये चांद सूर्य औ तारा ॥

दो० साजीसाज बैकुण्ठजस, तससाजी खंडसात ।

वीहरै वीहर भाव तस, खंडखंड ऊपर जात ॥

वरणीं राजमंदिर रनिवासू । अप्सरहि भरा जान कैलासू ॥

सोरह सहसं पद्मिनी रानी । एक एकते रूप बखानी ॥

अतिस्वरूप औ अतिसुकुमारी । पान फूलकी रहहि अधारी ॥

तेहि ऊपर चम्पावति रानी । महा स्वरूप पाट परधानी ॥

पाँट वैठिरहि किये श्रृंगारू । सब रानी वहँ करहि जुहारू ॥

निर्त नवरंग अङ्गमा सोई । प्रथमैवयसं न शिर पर कोई ॥

सिंहलद्वीप महँ जेती रानी । तिनमहँकनकँ सुबारहवानी ॥

दो० कुँवर वतीसो लक्षणी, अससबमांह अनूपे ।

जानवन्त सिंहल द्विपी, सबे बखानी रूप ॥

आसमान १-६ चमकना २ खिलना ३ जमीन ४ महल ५ मुसव्वरी ७  
तरह बतरह ८-९ तसवार १० जवाहिरात ११ रात १२ मकान १३ अलग १४  
बयान करना १५ स्वर्गकी औरत १६ हजार १७ सहारा वा खुराक १८  
महारानी १९ ताहत २० हमेशा २१ पहिलीउमर २२ सोना खालिस २३  
वेमिसाल २४ बयान करना २५ ॥

चम्पावत जो रूप मनमाहा । पद्मावतिकी ज्योति कि छाहां ॥

भइ चाहै असकथा जो होनी । मेदिनजाय लिखी जसहोनी ॥

सिंहलद्वीप भयो तवनाऊँ । जो असदिया वरा तेहिटाँऊँ ॥

प्रथम सो ज्योतिगगन निर्मई । पुनि सुपितासाथे मनभई ॥

पुनिवह ज्योतिमातघट्टे आई । तिनहिँ उदर आदर बहुपाई ॥

जस अवधान पूरहै मासू । दिनदिन हिये होयपरकासू ॥

जस अंचल महँ छिपयेदिया । तस उजियार दिखावै हियाँ ॥

दो० सोने मंदिर सँवारा, औ चन्दनसवलीप ।

दियाजोमनशिवलोक महँ, उपजाँ सिंहलद्वीप ॥

भे दशमास पूरि भइ घरी । पद्मावति कन्या अवंतरी ॥

जानो सूर्य किरण हतगाढी । सूरज किरण घाट वह वाढी ॥

भानिशि महँदिनकरपरकासू । सब उजियार भयो कैलासू ॥

इतनी रूप मूर्ति परगँदी । पून्यो शशि सुखीनँ ह्यैघटी ॥

घटतहिँ घटत अमावस भये । दिनदुइ लाज गाढभुई गये ॥

पुनि जो उठी दुइज ह्यै उये । शशिनिकलंकविधिहिँ निरमये ॥

पद्मगन्ध बेधा जग वासा । भँवर पतंग भ्रमै चहुँपासा ॥

दो० इतनी रूपभई कन्या, जेहि स्वरूप नहिँ कोय ।

धन सुदेश रूपवन्ता, जहाँ जन्म अस होय ॥

भई छठरात छठी सुखमानी । रहस कूदसो रयनँ विहानी ॥

भा बिहान परिडत सब आये । काढि पुराण जन्म अरथाये ॥

उत्तमँ घड़ी जन्म भा तासू । चांदउआ भुई दिपा अकासू ॥

जगह १ पहिले २ आसमान ३ पेट ४-५ हमल ६ राशनी ७ दिल ८ पैदा  
होना ९-१० राति ११ उजियारा १२ जाहिर होना १३ पूर्णमासीका चांद १४  
पतला १५ ब्रह्मा १६ कमलकी खुशबू १७ रात्रि १८ अच्छी १९ ॥

कन्याराशि उदय जग किया । पद्मावती नाम जस दिया ॥

सूर पुरुषुशसों भयो गुरेरा । किरणयाम उपजा जगहीरा ॥

तेहिते अधिक पदारथकरा । रतनज्योति उपजा निरमरा ॥

सिंहलद्वीप भयो अवतारू । जम्बूद्वीप जाय जमवारू ॥

दो० रामाश्रय अयोध्या उपजे, लषणवतीसो संग ।

राजाराउ रूप सब भूले, दीपक जैसो पतंग ॥

आय जन्मपत्री जो लिखी । दै आशीश फिरे ज्योतिपी ॥

पाच वरपमहँ भई जो वारी । दीन्ह पुराण पढे वै सारी ॥

भइ पद्मावति परिडत गुनी । चहूँ खगडके राजहि सुनी ॥

सिंहलद्वीप राज घर वारी । महास्वरूप दई अवतारी ॥

इक पद्मिनी औ परिडत पढे । वहि कहँ योग गुसाई गढे ॥

जाकहँ लिखी लक्षँ अस होनी । सो असपाव पढी औलोनी ॥

सप्तद्वीप के वर जो आवहि ॥ उत्तरपावहि फिरफिरजावहि ॥

दो० राजाकहै गर्व किये, हौं इन्द्र शिवलोक ।

को सरवर है मोसों, कासों करों विरोक ॥

वारहँ वरप माहँ भइ रानी । राजै सुना संयोग सयानी ॥

सात खगड धवराहरँ तासू । सो पद्मिनि कहँ दीन्ह उडासू ॥

औ दीन्हिँ संग सखी सहेली । जो संग करै रहस रसकेली ॥

सबै चुवलँ पीसंग न सोई । कमलपास जनु विगसीकोई ॥

मुआ एक पद्मावति ठाऊँ । महापरिडत हीरामणि नाऊँ ॥

दई दीन्ह पंखँ असजोती । नयनँ रतनमुखमाणिकँ मोती ॥

दुनिया १ सूर्य २ मुलाकात ३ पैदा होना ४-६-८-१० बहुत ५ पाक ७ मरना

८ ईश्वर ११-१३-२५ पैदाकिया १२ रेखा १५ खूबसूरत १५ सातोंमुखक १६

गहर १७ बराबर १८ टीका विवाहका १९ महल २० मकान २१ कुआरी २२

फूलना कोकावेलीका २३ जगह २४ जानवर २६ आँख २७ संग २८ ॥

कंचनवरनं सुआ अतिलोनां । मानोमिला मुहागहि सोना ॥

दो० रहहि एक सँग दौऊ, पढ़ै शास्त्र औ वेद ।

श्रुता पढ़नाशीरी डुलावहीं, मुनतलागतसभेद ॥

भई अनंत पद्मावति वारी । रचिरचिविधिं सवकलासवारी ॥

जगै बेधा तेहि अंगसुवासा । भँवरआय लुब्धे चहुँपासा ॥

बेनी नाग मलयगिरि पीठी । शशिं माथे होय दूजपैठी ॥

भौहें धनुष साधि शरं फेरे । नयनं कुरंगं भूलजनुहेरे ॥

नासिकं कीरं कमलमुखसोहा । पद्मिनिरूपदेखिजगं मोहा ॥

माणिक्यअर्धं दर्शनं जनुहीरा । हियहुलसै कुचंकनकंजंभीरा ॥

केहरि लंकं गवन गजं हरी । सुरनर देखि माथ भुँइ धरी ॥

दो० जगं काउदृष्टिं न आवै, अप्सरनं होय अकाश ।

योगी यती संन्यासी, तप साधहिं तेहि आश ॥

राजें सुना दृष्टिं भइआना । बुधिं जोदेसँगसुआंसयाना ॥

भयो रजायसुं मारहिं सुआं । सवरे सुना चाँद जहँ उआ ॥

शत्रुं सुआं के नाऊ वारी । सुनि धाये जस धाय मँजौरी ॥

तब लग रानी सुआं छिपावा । जबलग आवमँजारि नपावा ॥

पितां कि आयसुं माथे मेरे । कहोजाय विनवै करंजोरे ॥

पंखन कोई होय सुजाँनू । जाने भुक्तिं किजानि उड़ानू ॥

सुआं जोपढ़ै पढ़ाये बयनौ । तेहिकतवधे जेहिहियेननयनौ ॥

सोनेका रंग १ खूबसूरत २ शिर ३ ब्रह्मा ४ दुनिया ५-२४ गुंजना ६ चौटी

७ चन्दन ८ चाँद ९ तीर १० आँख ११-४६ हरिण १२ नाक १३ तोता १४-२६-

३१-३३-३५-४३ खंसार १५ मूंगा १६ होंठ १७ दाँत १८ खुशहोना १९ छाती

२० सोना २१ चीताकी कमर २२ चालहाथी और सिंह की तरह २३ निगाह

२५-२७ इन्द्रलोककी परी २६ अकल २८ हुफ्त ३०-३२ दुश्मन ३२ बिल्ली

३४-३६ बाप ३७ अरज करना ३८ हाथ जोड़ना ४० अकलमन्द ४१ खाना ४२

बोली ४४ मारना ४५ ॥

दो० माणिक मोती देखावह, हिये न ज्ञान करलेय ।

दाड़िम दाखें छांडिकै, आंब ठौर फर लेय ॥

वेतो फिरी उतर अस पावा । बिन वा सुये हिये डर खावा ॥

रानी तुम युग युग सुख पाऊ । हो अज्ञा वनवास कह जाऊ ॥

मोती जो मलीन होय कला । पुनि सोपानि कहाँ निरमला ॥

ठाकुर अन्त चहो जेहि मारा । तेहि सेवक कहि कहाँ उवारा ॥

जेहि घर काल मँजारी नाचा । पंखहि नाउँ जीव नहिं बाँचा ॥

मैं तुम राज बहुत सुख देखा । जो पूछहि दिये जाय न लेखा ॥

जो इच्छो मन कीन्ह सुजेवा । यह पछताव चल्याँ बिनसेवा ॥

दो० मारै सोई निसोर्गा, डरै न अपनी दोसैं ।

केला अकेल करै का, जो भयो बेसो परोस ॥

रानी उतरै दीन्ह कै मर्याँ । जो जिव जाय रहै किमिकर्याँ ॥

हीरामणि तू प्राण परेवाँ ॥ धाखनलाग करत तेहिसेवाँ ॥

तुहिसेवा विछुरन नहिं आखौँ । पीजर हिये घालिकै राखौँ ॥

हौँ मानुष तू पंख पियारा । धर्म प्रीति तहां को मारा ॥

का प्रीति तनहमाहँ बिलाय । सोई प्रीति जियसाथ जो जाय ॥

प्रीतिभारली हिये न शोच । वही पन्थ भल होयकि पोच ॥

प्रीति पहाड़ भार जो काधा । किततेहि छूटलाय जिवबाधा ॥

दो० सुआँ नरहै खुरकँ जी, अबहुँ कालसो आव ॥

शत्रुँ अहै जेहि करियाँ, कहुँसो बूडाँ नाव ॥

मोती १ दिल २-६-२०-२२ अनार ३ अंगूर ४ जवाब ५-१६ परवानगी ७ साफ़ ८ बिलार ९ जानवरपरिन्दा १० हिसाब ११ जो मनने चाहा सो खाना खाया १२ वेगम १३ पाप १४ घेरीका पेड़ १५ मेहरबानी १७ बदन १८ जानवर परिन्द १९-२१ तोता २२ अदेशाभरा हुवा २४ दुश्मन २५ मल्लाह २६ ॥



## खण्डतीसरा स्नानखण्ड पद्मावत ॥

एक दिवस कवन्यो तहँ आय । मानसरोवरं चली अन्हाय ॥

पद्मावति सब सखी बोलाई । जनुफुलवार सबै चलिआई ॥

कोइ चम्पा कोइगोदं सहेली । कोइ सुकेतं करुणा रसवेली ॥

कोइ सुगुलाल सुदरशान राती । कोइ बकाउं कोइ बकचर्न भांती ॥

कोइ सो बोलसरं पुहपावती । कोइ जाही जूही सेवती ॥

कोइ सुवर्न जर्द ज्यो केसरं । कोइ शिंगारहारं नागेसरं ॥

कोइ कूजां सतबर्ग चंबेली । कोइ कदमसुरसरंस बेली ॥

दो० चलीं सबै मालती संगहि, फूले कुमल कुमोद । उभितमोद

बेध रही गुण गन्धरब, वास बरमला मोद ॥

खेलत मानसरोवरं गई । जाय पाले पुर ठाढ़ी भई ॥

देखि सरोवरं हँसली केली । पद्मावति सो कहहिं सहेली ॥

ए रानी मन देखु बिचारी । यहि नैहर रहना दिन चारी ॥

जबलग अहे पिताकरं राजू । खेलिलेहु जो खेलहि आजू ॥

पुनि सासुर हम गवनबं काले । कितहमकितयहसरवरं पाले ॥

कितआवन पुनि आपन हाथा । कित मिलके आवबयकसाथा ॥

सासुननंद बोलहि जियलेहीं । दारुणै समु न निसरे देहीं ॥

दो० पीउ पियार सब ऊपर, सो पुनि करै वह काहि ।

तेहि सुख राखहिकी दुख, वह कस जन्म निवाहि ॥

सरवरं तीर पद्मिनी आई । खोपाँ छोड़ि केश बिखराई ॥

शंशि मुखअंगै मलीगै रानी । तामहँ भापलीन्ह अरधानी ॥

दिन १ नाम तालाव २-१६ नाम फूल ३-४-५-६-७-८-९-१०-११-१२-१३

१४-१५-१६-१७-१८-१९-२०-२१-२२-२३-२४ जाफ़रान १७ कोकाबेली २५

किनारा २७-३२ तालाव २८-३१-३४ बाप २६ जाना ३० मुश्किल ३३

चोटी ३५ चाँद ३६ बदन ३७ चन्दन ३८ ॥

उनई घटा पराजगं ब्रह्मां । शशिकीशरणलीन्ह जनुराहो ॥

छिपगये दिनभानु कीदसा । तेहि निशि नखतचांदपरगसां ॥

भूल चकोर दृष्टि तेहि लावा । मेघघटा महँ चन्द दिखावा ॥

दर्शनं दामिनी कोकिलभाषै । भौहै धनुषं गगनं लैराखै ॥

नयनं खँजन दुइ केल करेहीं । कुचं नारंग मधुकर रसलेहीं ॥

दो० सरोवर रूपविमोहा, हिये<sup>१६</sup> हिलोर करले ।

पाउँ छुवे मँग पाउँ, तन मन लहरें दे ॥ (५१)

धरी तीर सब कंचुकै सारी । सरवर महँ पैठीं सब बैरी ॥

पानी तीर जानि सब बेलै । हुलसहिं करहिकामकी केलै ॥

करलै केशं विपहुरै विपभरे । लहरै लेहिं कमल मुख धरे ॥

नवल वसन्त सवारे कैरी । होय प्रकट जानहु रस भरी ॥

उठी कोपु जस दाँडिम दाखौं । भई अनन्त प्रेमकी साखा ॥

सरवर नहिं समाय संसारा । चांद नहाय बैठिलिये तारा ॥

धनसौं नीर शशि तरई उई । अबकितदृष्टि<sup>१७</sup> कमलओकोई<sup>१८</sup> ॥

दो० चकई विन्दुर पुकारी, कहां मिलहो नांह । (५२)

एकचन्दनिशि<sup>१९</sup> स्वर्ग महँ, दिनदूसरजलमांह ॥

लागीं केलकरे मँभं नीरौं । हंस लजाय बैठहै तीरौं ॥

पद्मावतिकौतुकं कहँराखे । तुमहिंशशि होहितरायँ नहिंराखे ॥

चांद मेल के खेल पसार । हार देव जो खिलत हारा ॥

दुनिया १ चांद २-३१-४१ सूर्य ३ रात्रि ४ खिलना ५ निगाह ६-३३ दाँत ७

विजुली ८ कोकिला कीसी बोली ९ कमान १० आसमान ११-३६ आँख १२

छाती १३-१८ भँवर १४ तालाव १५-१६-२६ दिल १६ शायद १७ लड़की

२० लुशहोना २१ मुलायम २२ बाल २३ सांप २४ कली २५ ज़ाहिर २६ अनार

२७ अंगूर २८ पानी २९-३० नखत ३१ फ़ोकावेली ३२ राति ३५ बीच ३७

किनारा ३६ तमाशा ४० नखत ४२ ॥

सँवरहिं सांवर गोरहिं गोरी । आपन आपन लीन्हमुजोरी ॥

बूझौ खेल खेलौ एक साथी । हारि न होय पराये हाथी ॥

आजहिं खेल बहुरि कित होय । खेलगई कित खेलै कोय ॥

धनि सो खेल खेल रस प्रेमा । स्वताई और कुशल क्षेमा ॥

दो० मुहम्मदबारजो प्रेमकी, ज्योंभावे त्यों खेल ।

तेलहिं फूलहिं वासज्यों, होय फुलायल तेल ॥

सखी एक तैं खेल न जाना । भई अचेत मनहारगँवाना ॥

कमल डारगहि भई विकरारों । कासों पुकारों आपन हारा ॥

कित खेले आयों एक साथी । हार गँवाय चल्यां ले हाथी ॥

घर पैठत पूँछव यह हारू । कौन उतरै पावव पैसारू ॥

नयन सीप आंसू तस भरे । जानहु मोति गिरहिं सवदरे ॥

सखिन कहा बौरी कोकिला । कौन पानी जेहिपवुन नहिं हिला ॥

हार गँवाय सो ऐसे रोवा । हरे हेराये लेव जो खोवा ॥

दो० लागीं सबमिलि हेरी, बूढ़ बूढ़ यक साथ ।

कोई उठी मोतीले, काहू बोधा हाथ ॥

कहा मानसरं चहा सुपाई । पारस रूप यहां लागि आई ॥

भा निरमल तेहिपायन परशे । पावा रूप रूप के दरशे ॥

मली समीर बास तनआई । भा शीतल तनतपनबुभाई ॥

नाजानों कौनपवन लेआवा । पुरयदशा भइ पाप गँवावा ॥

ततजन हार बेगि उतराजा । पावा सखहिं चन्द विहसाना ॥

विकसां कमलदेखिशशि रेखा भइतेहि ऊप जहां जो देखा ॥

ठकुराई १ खैरियत २ बेहोश ३ बेकरार ४ जचाव ५ आँख ६ हवा ७-१४

बूढ़ना ५-६ नाम तालाब १० पाक ११ चन्दन १२ उँढा १३ जलद १४

फूलना १६ चाँद १७ ॥

पावा रूप रूप जस चहा । शशि सुख सब दरपन है रहा ॥

दो० नयन जो देखे कमल भये, निरमल नीर शरीर ।

हस्त जो देखे हंस भये, दशन जोति नग हीर ॥

पद्मावति तह खेल दुलारी । सुआँ मँदिरमहँ देखि मँजारी ॥

कहिसि चलो जौ लहत न पाखा । जिवले उड़ा ताक वनदांखा ॥

जाय परावन खँड जिवलीन्हा । मिले पंख बहु आदरकीन्हा ॥

आन धरी आगे फरशाखा । भुक्ति नमिटी जबल हिराखा ॥

पाय भुक्ति सुख मनमें भयो । दुख जो अहा बिसर सब गयो ॥

ए गुसाँई तू ऐसो विधाता । जानवत जिव सबका भुक्त दाता ॥

पाथर महँ नहि पतंग विसारा । जहँ तहँ सँवर दीन्ह तुई चारा ॥

दो० तौ लहि साग विछोहकर, भोजन पड़ा न पेट ।

पुनि विसरा भाँ सँवरना, जनु सपने भइ भेंट ॥

पद्मावति पहँ आय मँजारी । कहिसि मँदिरमहँ परी मँजारी ॥

सुआँ जो उतरँ देत अहा पूंछा । उड़गाँ पिंजर न बोलै छूँछा ॥

रानी सुना जो सुख सब गयो । जनु निशि परी अस्त दिन भयो ॥

गहने गही चन्दकी किरा । आंसु गगन जस नखत हिंभरा ॥

दूटिवार सरवरँ वह लागे । कमल बूँडे मधुकरँ उड़ भागे ॥

यहिविधि आंसु नखत हो चुये । गगनँ छाँड़ सरवरँ महँ उये ॥

भरहिं चुवहिं मोतिनकी माला । अवंसँकेत बाँधा बहु पाली ॥

दो० उड़गाँ सोठाँ कहँ वसा, खोज सखी सो तास ॥

चाँद १ आँसु २ पाक ३ पानी ४ वदन ५ हाथ ६ दाँत ७ तोता ८-१६-२६

विह्वी १६-१८ जंगल १० उड़नेवाले जामवर हमजिन्स ११ खुराक जंगली १२-१३

ईश्वर १४ रोजी देनेवाला सबका १५ मुलाक़ात १६ रसोईवरदार १७ जवाब

२० राति २१ आसमान २२-२५ तालाब २३-२६ भँवर २४ रंज २७ चारों

तरफ़ २८ ॥

वहहै धर्ती<sup>१</sup> की स्वर्ग<sup>२</sup> का, पवन<sup>३</sup> न पावै वास ॥

चहूं पास समभावहिं सखी । कहांसु अत्र पावेगा पखी ॥

जबलहि पिंजर अहा परेवाँ । अहा बांध कीन्हेसि नितसेवा ॥

तेहि बन घन जो छूटेपावा । पुनिफिरवांदं होयकितआवा ॥

वै उड़ान फुरहरी खाई । जो भा पंख पांख तनलाई ॥

पिंजर जेहक सौंप तेहिगयो । जो जाकर सो ताकर भयो ॥

दशबाँटे<sup>४</sup> जेहि पिंजरमाहां । कैसे बांच मँजारी<sup>५</sup> पाहां ॥

ये धर्ती अस केतन खीले । अश्वपति<sup>६</sup> गजपतिवहुधरकीले ॥

दो० जहँ न राति नहिदिवस है, तहां न पान न खान ।

तेहि बन सोठां है वसा, फेरि मिलावै आन ॥

सुवै<sup>७</sup> तहांदिनदशकलकाटी । आयो व्याधं ढका लै ठाटी ॥

पैगं पैग भुँई चापत आवा । पंखहि<sup>८</sup> देखि सवैडरखावा ॥

देखो कुछ अचरज अनभलाँ । तरवरं एक आवत होचला ॥

यह बन रहत गये हम आऊँ । तरवरं चलत न देखा काऊ ॥

आजजोतरवरं चलभलनाहीं । आवहु यह बनछांड परांहीं ॥

वैतो उड़ै और बन ताका । परिडतसुआँ भूल मन थाका ॥

शाखा देखि राज जनु पावा । बैठिनिचिंतं चला वह आवा ॥

दो० पांच<sup>९</sup> बाणकर खोंचा, लासा भर सो पांच ।

पांखभरा तन उरभा, कित प्रारविन बांच ॥

बन्दभौं सुआँ करतमुखकेली । चूरं पांखमेलेसि धरटेली ॥

जर्मान १ आसमान २-हवा ३ उड़नेवाला जानवर ४-१४ तावेदार वा  
कैदी ५ दशराह तथा इन्द्रो चदनके सूरख ६ विह्वो ७ घोड़े का सवार ८ दिन  
९ तोता १०-११-२१-२५ बहेलिया १२ क्रदम वाक्रदम १३ बुरा १५ पेड़ १६-  
१८-१९ उमर १७ आगना २० आफ्रिल २२ कंपा २३ क्रैद २४ बाजू को  
तोड़के २६ भोरी २७ ॥

तहवां बहुत पंख खरभरै। आप आप महँ रोदन करै ॥

बिषं दानां कित होय अंगूरे। जहँ आमरन उहनँ धरचूरे ॥

जो न होत चारा की आसा। कित चिड़हारदकललै लासा ॥

ये बिषं चारा सबविधि ठगी। औ भा काल हाथ ले लगी ॥

यहि भूठी माया मन भूला। चूरी पांख जैसो तन फूला ॥

यहि मन कठिन मरै नहि मारा। काल न देखि देखिपै चारा ॥

दो० हम तो बुद्धि गँवाई, बिषं चारा अस खाय ।

तू सोठां परिडत हता, तू कित भा निठुरायं ॥६८॥

सुवै कहा हमहूँ अस भूले। टूटिहि डोल गर्ब<sup>३</sup> जेहि भूले ॥

केला के बन लीन्ह वसेरा। पड़ा साथ तन बेरी केरा ॥

सुवै कुरवार फुरी खाना। बिषं भा जोहि व्याधं तुलाना ॥

कहेक भोग<sup>३</sup> बृक्ष अस फरा। अड़ा लाय पंखहि कहँ हरा ॥

सखीनिचिंतं जोखधनकरना। यह निचिंतं आगे है मरना ॥

भूले हमहूँ गर्ब<sup>३</sup> तेहि माहां। सो बिगरा पावा जहँ पाहां ॥

होय निचिंतं बैठि तेहि अड़ा। तब जाना खोंचा हियं गड़ा ॥

दो० चरत न खुरकें कोन जब, तबरे चरासुख सोय ।

जीवा अब जो फांद परा गै<sup>३</sup>, तब रोये का होय ॥६९॥

मुनिके उतरें आंसु पुनि पोछे। कोन पंख बांधी बुधं ओछे ॥

पंखिनं जो बुधि<sup>३</sup> होय उजियारी। पढ़ा सुआँ कित धरै मँजारी ॥

कित तीतर बन जीभ उधेला। शुक्तिहँकार फांद गये<sup>३</sup> मेली ॥

उड़नेवाले जानवर १-२६ जहर २-४-८-१४ वाजू ३ पर मड़ोरके ५ मौत ६  
अमल ७-२५-२७ तोता ६-११-२८ वेददं १० शरर १२-१६ खुरी १३ बहेलिया १५  
पेड़ खाने का १६ याफिल १७-१८-२० दिख २१ अंदेशा फिक्र २२ गर्दन २२-  
३० जवाब २४ बिल्ली २६ ॥

तादिन व्याधं भयो जिवलेवा । उठी पांख भानाउँ परेवां ॥

भईव्याधं तृष्णां सुखवाधू । सूभी भुक्तिं न सूभैव्याधं ॥

हमहिं लोभ वह मेला जारा । हमहिं गर्व वह चाहे मारा ॥

हमनिचितं वह आवच्छिपाना । कौन व्याधं है दोषं अयानी ॥

दो० सो अवगुणं कित कीजिये, जिवदीजे जेहिकाज ।

अव कहना कुछ नाहीं, मरु भूले पक्षिराजें ॥

चित्रसेन चित्तौरगढ़ राजा । कइगढ़कोटिचित्रं समं साजा ॥

तेहिकुल रतनसेन उजियारा । धनिजननीजन्मी असवारीं ॥

परिडत गुण सामुद्रिक देखहिं । देखिरूप औ लगन विशेषहिं ॥

रतनसेन यहि कुल निरमरीं । रतनज्योति मन माथे परा ॥

पदकं पदारथ लिखीसो जोरी । चांदसूर्य जस होय अंजोरी ॥

जसमालतीकहैं भंवरवियोगी<sup>३</sup> । तसवहलागहोय यहयोगी ॥

सिंहलद्वीप जाय वह पावा । सिद्ध होय चित्तौर लै आवा ॥

दो० भोग भोजें जसमानी, विक्रमं शाका कीन्ह ।

परख रतन जो पारखी, सबै लिखन लिखदीन्ह ॥

चित्तौर गढ़ कर एक बँजारा । सिंहलद्वीप चला व्योपारा ॥

ब्राह्मणहुतएकनिपटें भिखारी । सो पुनि चला चलत व्योपारी ॥

ऋणं काहुकर लीन्हेंसिकाढ़े । मरुं तेहिगये होय कछु बाढ़े ॥

मारुं कठिनं बहुत दुख भये । नांघ समुद्र द्वीप वह गये ॥

देखि हाँटें कुछ सूभे न आरा । सबै बहुत कुछ देखि न थोरा ॥

चिड़ीमार १-३ उड़नेवाले जानवर २ दुनियाकी हवा हवस ४ रोजी ५ बहे-  
लिया ६-६ सरूर ७ ग्राफिल ८ क्रसूर १० नादानी ११ घुरा काम १२ चुप १३ उड़ने  
वाले जानवरों के राजा १४ तसवीर १५ धरावर १६ लड़का १७ पाक १८ लाल  
जवाहिर १९ रोशनी २० दुःखी २१ नामराजा २२ राजा विक्रमादित्य २३ बहुत  
सरीय २४ क्रुज २५ शायद वा कदाचित् २६ राह २७ मुश्किल २८ बाजार २९ ॥

पै सुठ ऊँच नीच तेहिकेरा । धनी पाव निर्धनी मुख हेरा ॥

लाख करोरहि बस्तु विकारि । सहस्रनें केरन कोउ ओनाई ॥

दो० सवहिं लीन्ह बिसहना, औ घर कीन्ह बहोरै । (७५)

ब्राह्मण तहां ले का, गांठ सांठ सुठथोर ॥

भुरी ठाढ़ हौं काहेक आवा । बनजँ न मिला रहा पछतावा ॥

लामैं जानि आयो यह हाटा । मूरगँवाय चलयो यह बाटा ॥

का में मरन सिखावन सिखी । आयो मरै मीच हत लिखी ॥

आपनचलत सो कीन्हा ज्ञानी । लामैं न देखि मूरभइ हानी ॥

का में वोआ जन्म औ भूजी । खोय चलयो घरहूँ की पूंजी ॥

जेहि व्योहरिया कर व्योहारू । कालै देव जो छेकँहि बारू ॥

घर कैसे पैठव में छूँछे । कौन उतरै देहो तेहि पूँछे ॥

दो० साथचला सतँ विचला, भये विच समुद्रपहार । (७६)

आशनिराशाहीं फिरो, तूविधि देहि उधार ॥

तवहीं व्याधि सुआँ लैआवा । कंचनवरनँ अनूप सुहावा ॥

बेचै लाग हाँट लै ओही । मोल रतनमाणिकँ जेहिहोही ॥

सुआँहि कोपूँछपतंगँ मँडारै । चलन देख आछे मन मारै ॥

ब्राह्मण आय सुआँ सो पूँछा । वह गुणवन्तकिनिरगुणछूँछा ॥

कहुपंखी जो गुणतोहिपाहां । गुणन छिपाये हृदये माहां ॥

हम तुम जात ब्राह्मण दोऊ । जात जात पूँछै सब कोऊ ॥

परिडत हौ तो सुनावहु वेदू । बिन पूँछे पाई नहिं भेदू ॥

दौलतवाला १ वेदौलत २ देखना ३ हजार ४ लोटना ५ वेधुंजी ६ माल ७  
 फ़ायदा ८-१३ बाज़ार १४-२३ राह २० मौत २१ होशियारी २२ तुकसान २४  
 रोकना दरवाज़ा का २५ जवाब २६ ईमान २७ धर्रा २८ बहेलिया २९ तोता  
 २०-२५-२७-२८ सोने का रंग २१ चेमिसाल २२ जवाहिरात २४ उड़नेवाले  
 जानवर २६ दिल २६ ॥



दो० हीं ब्राह्मण औ परिडत, कहि आपन गुण सोय ।

पढेके आगे जो पढै, दून लाभ तेहि होय ॥

तब गुण मोहिं अहा हो देवा । जब पिंजर हुत छूट परवाँ ॥

अब गुण कौन जो बंदै यजमाना । घाल मँजूसों वैचै आना ॥

परिडत होय सो हाटै नहि चढ़ा । चहों विकाय भूलगा पढ़ा ॥

दुइ मारमँ देखों यह हाटों । दुई चलावै वेहि केहि वाटों ॥

शेवत रक्त भयो मुख रातों । तन भापियर कहां का वाता ॥

राती श्याम कण्ठ दुइ ग्रीवाँ । तेहि दुइ फन्द डरों शठ जीवाँ ॥

अब हूँ कण्ठ फन्दके चीन्हा । दुहूँके फन्द चाहै का कीन्हा ॥

दो० पढि गुण देखा बहुत मै, है आगे डर सोय ।

धुन्धजगत्त सब जानकै, भूलरहा बुधि खोय ॥

सुनि ब्राह्मण बिनवाँ चिरहाँ । करि पंखहि कहँ मर्याँ न मारू ॥

कतये निठुरँ जिवबधेसि परावा । हत्याकेर न तोहिं डेरावा ॥

कहेसि पंख का दोषे जनावा । निठुरँ सोई सो परमसँ खावा ॥

उनहिं शेय जानिके शेना । तहून तजहिं भोग सुख सोना ॥

औ जानहिं तन होय यह नासू । पोषे मांस पराये मांसू ॥

जो न होहिं अस परमसँ खाधू । कित पंखनँ कहँ धरै वियाधू ॥

जोरी व्याधू पंखनि नित धरे । सो निचिन्त मन लोभँ न करे ॥

दो० ब्राह्मण सुअँ बेसाहा, सुनि मत वेदगरथँ ।

मिला आय सोसाथिन कहँ, भा चितोरकी पंथँ ॥

फ्रायदा १ जानवरपरिन्द २ क्रैद ३ संदूक्त ४ बाज़ार ५-७ राह ६-८ खून

९ लाल १०-११ काला १२ गला १३ दुनियाँ १४ अक्रल १५ खुशामद १६

चिड़ीमार १७ उड़नेवाले जानवर १८-२२-२८-३१ मेहरवानी १९ बे दर्द

२०-२४ मारडालना २१ पाप २२ पराया मांस खानेवाले २५-२७ छोड़ना २६

चहेलिया २६-३० गाँकिल ३२ लालच ३३ तोता ३४ पोथी ३५ राह ३६ ॥

तबलग चित्रसेन शिवसाजी । स्तनसेन चितौर भा राजा ॥

आय बात तेहि आगे चली । राज बणिजें आयें सिंहली ॥

हैं गज मोति भरी सब सीपी । और बस्तु बहु सिंहलदीपी ॥

ब्राह्मण एक सुआ लै आवा । कंचनबरण अनूप सुहावा ॥

राती श्याम करठ दुइ कांठा । राती डहन लिखा सब पाठा ॥

औ दुइ नयन सुहावन राता । राती ठोर अमीरसबाता ॥

मस्तक टीका कांध जनेऊ । कवि व्यास परिडतसहदेऊ ॥

दो० बोल अर्थ सों बोली, सुनत शीशं सब डोल । (१४)

राजमन्दिरमहँ चाही, अस वह सुआ अमोल ॥

भयो रजायंसु जन दौड़ाये । ब्राह्मण सुआ बेगि लै आये ॥

विप्र अशीश बिनत औधारा । सुआजीवनहिं करों निरारा ॥

पै यह पेट महाबिश्वासी । जेसबनावा तपी संन्यासी ॥

दौरै सेज जहां कुछ नाहीं । भुईं पर रही लाय गै बाहीं ॥

अन्धहिरही जो देखननयनां । गूंगरही मुख और न बननां ॥

बहिररही जो श्रवणं नहिं सुना । पै यह पेटन रहै निरगुनां ॥

कइ कइफेरा नित यह दोषै । बारहिं बार फिरै सन्तोषै ॥

दो० सो मोहि लिये मँगावै, लावै भूख पियास । (१५)

जो न होत अशन बैरी, केहिकाहूकी आसा ॥

सुए अशीश दीन्ह बड़साजू । बड़ परताप अखरिडेंतराजू ॥

भागवन्तविधि बुधि अवतारां । जहां भागतहँरूपजोहारां ॥

मरना १ सौदागर २ हाथी ३ सोना ४ लाल वा काला ५ आंख ६-१६

लाल ७ लालचोंच ८ असृत ९ शिर १० हुजम ११ नौकरलोग १२ जल्द १३

ब्राह्मण १४ अलग १५ जबरदस्त १६ तपकरनवाले १७ औरत १८ आवाज

२० कान २१ नादान २२ हमेशा २३ दरवाजा २४ पेट २५ हमेशा राज ज्ञयम

२६ ब्रह्मा २७ अज्ञ २८ पैदा करना २९ देखना ३० ॥

कोइ केहिपास आसके गवना । जोनिराशदद आसनमवना ॥

कोइ विन पूछे बोल जो बोला । होय बोल माटी के मोला ॥

पढिगुणजितने पण्डितमतिभेऊ । पूछे बात कहै सहदेऊ ॥

गुणी न कोई आप सराहौ । जो सो विकाय ज्ञानसोजाहा ॥

जबलग गुण प्रकट नहि होय । तबलग मँन न जानै कोय ॥

दो० चतुरबेद हों पण्डित, हीरामन मोहिं नाउँ ।

पद्मावति सों भेरदों, सेवकरों तेहि ठाँउं ॥

रतनसेन हीरामन छीना । एकलाख ब्राह्मण कहँ दीन्हा ॥

बिप्रे अशीशजोकीन्हपयाना । सुआ जो राजमँदिरमहँआना ॥

बरैणो काहि सुआ की भाखा । दीन्ह सुनाउँ हीरामन राखा ॥

जो बोलै राजा सुखजोर्वा । जानौ मोतिन हार पिरोवा ॥

जो बोलै सब माणिक मूंगा । नाहित मवनै बांध है गूंगा ॥

जनुहि मारमुख अमृत मेला । गुरुहै आप कीन्ह जगँचेला ॥

सूर्य चांद की कथा कहा । प्रेमकी कहनलाय चितगहा ॥

दो० जो जो सुनै धुनै शिर राजा, प्रीति होय अगाह ।

असगुणवन्त नाहिं भल, सोठाँ बावर कीजे काह ॥

दिन दशपांच तहां जो भये । राजा कतहुँ अहेरे गये ॥

नागवती रुपवन्ती रानी । सब रनिवास पाटपरधानी ॥

कियशृंगार करँ दरपनलीन्हा । दरपन देखिगँवजेहि कीन्हा ॥

बोलहु सुआ पियारे नाहो । मोरे रूप कोउ जगँ माहा ॥

जाना १ मज्जवूत २ छुप ३-१५ राजायुधिष्ठिर के भाई ४ तारीफ़ ५

जाहिर ६ भेद ७ चारोंबेद ८ मुलाकात ९ जगह १० ब्राह्मण ११ कूच १२

तारीफ़ १३ देखना १४ दुनियाँ १६ तोता १७-२३ शिकार १८ महारानी १९

हाथ २० गरूर २१ खाविन्द २२ संसार २३ ॥

पद्मावत ।

११० ॥ पसक ॥ ३६  
जितसु फौजे ॥ ३६ ॥

हँसत सुआ पुनि आय सुनारी । दीन्ह कसोटी औ पनवारी ॥  
सुआ बाँनि तोरी कस सोना । सिंहलद्वीप तोरकस लोना ॥  
कौन दँष्टि तोरे रुपमनी । वहिँ हौ लोन कि वै पद्मिनी ॥  
दो० जोनकहेसि सँत सोठाँ, तोहि राजाकी आन ॥

है कोई यह जग महँ, मोरे रूप समान ॥  
सँवररूप पद्मावति केरा । हँसा सुआ रानी मुख हेराँ ॥

जेहिसरवरँ महँ हंसन आवा । बगुला तहँ जलहंस कहावा ॥  
दई कीन्ह अस जगत अनूपा । एक एकते आगर रूपा ॥  
कै मन गर्व न छाजा काहू । चाँदघटा और लाग्यो राहू ॥  
लोनेँ विलोने तहां को कहै । लोनी सोइ कंत जेहि चहै ॥  
काहि पूँछ सिंहलकी नारी । दिनहिँनपूजैनिशिँ अंधियारी ॥  
कनक सुगन्ध सुतेहिँकी कायाँ । जहां माथ का बरणों पाया ॥

दो० गढी सुसोने सोधी, भरे सो रूपे भाग । चाँदी  
सुनत रोष भइ रानी, हिये लोन असलाग ॥

जो यह सुआ मँदिरमहँ अहै । कोन होय राजा सोँ कहै ॥  
सुनिराजापुनि होय बियोगी । छाँडै राज चलै होय योगी ॥  
विषराखे नहिँ होत अँगूरू । शब्द न दे बहुर हम चूरू ॥  
धायँ दामिनी बेगिँ हँकारी । वहसौँपाहियँ रिसनसँभारी ॥  
देखोयहसोठाँ है मुँडचालाँ । भयो न ताकर जाकर पाला ॥  
मुखकी आनिपेटबसआना । तेहि अवगुण दसहाटविकाना ॥

चुनोटी १ आवाज २ खूबसूरत ३-५-१६ निगाह ४ सच ६ तोता ७ कसम =  
बराबर ८ देखना १० तालाव ११ दुनियाँ १२ वेमिसाल १३ गरूर १४ खूबसूरत  
या बदसूरत १५ खाविन्द १७ राति १८-२१ सोना १६ वदन २० गुस्सा २१  
दिल २२-२६ दुखी २३ आवाज २४ लौंडी २५ विजुली २६ जल्द २७ बोलाया  
२८ तोता ३० चदराह ३१ ॥

पंख न राखी होय कुभाखी । लेतहँ मारि जहां नहिं साखी ॥

दो० जेहि दिनका मैं डस्तहों, रयनि छिपानो सूर ।

सो लैदे कमल कहँ, मोकहँ होय मयूर ॥

धाय सुआ ले मरै गई । समुझि ज्ञान हिरँदे मत भई ॥

सुआ सुराजा करि विशरामे । मारन जाय चहै जेहि स्वामे ॥

यह पण्डित खण्डित बैरागू । दोष ताहि जेहि मूझि न आगू ॥

जो तिरियाँ के काज न जाना । परै धोख पाछे पछताना ॥

नागमती नागिन बुंध ताऊ । सुआ मयूर होय नहिं काऊ ॥

जोनहिंकंत की आयसुं माहां । कौन भरोस नारिकी बाहां ॥

मगँ यहि खोजहोय तसआय । तुरी रोग हरि माथेजाय ॥

दो० दुइसो छिपाये ना छिपे, इकहत्या अरु पाप ।

अन्तहि करहिं बिनाश यह, मैं साखी दै आप ॥

राखसुआ धाय मति साजा । भयोखोज तस आयोराजा ॥

रानी उतर मान सों दीन्हा । पण्डित सुआ मँजारी लीन्हा ॥

मैं पूछयो सिंहल पद्मिनी । उतर दीन्हा तुम्हको नागिनी ॥

का तोर पुरुष रयनि करराऊ । उल्लुनजानिदिवँस करभाऊ ॥

वैजसदिन तूनिशिँ अधियारी । जहांवसन्त करीलकोवारी ॥

का वह पंख कूट मुहँ कूटे । असवडवोल जीभ मुख छोटे ॥

जहर चुवै जो जो कहि बाता । अस हत्यार लिये मुखराताँ ॥

दो० माथे नहिं वैसारी, जो शठ सुआ सलोन ।

गवाह १ राति २-२४-२६ सूर्य ३ पद्मावति ४ मोर ५-१३ लौंडी ६-

२० दिल ७आराम ८ मालिक ९ पाप १० औरत ११-१६ अकल १२ खाविन्द

१४ हुकम १५ शायद १७ घोड़ा १८ बन्दर १९ जवाब गरूर से २१ चिह्नी २२

जवाब २३ दिन २५ बागीचा २७ उड़ने वाले जानवर २८ जहर २९ लाल ३०

बैठालना ३१ खूबसूरत ३२ ॥

सत कहि सती सँवारे सरा । आगलाय चहुँदिशि सतजरा ॥

दुइजगं तरा सत्य जें राखा । और पियार दीन्ह सतभाखाँ ॥

सो सतझाँड़ि जो धर्म बिनाशाँ । कामतिकीन्हहिये सतनाशा ॥

दो० तुम सयान औ परिद्धत, असत न भाषों काउ ।

सत्य कहो मोसों वह, काकर अपनाउँ ॥

सत्य कहत राजा जिव जाउ । पै मुखअसत न भाषों काउ ॥

हों लिय सत्य निसखों यहिते । सिंहलद्वीप राजघर जेहिते ॥

पद्मावत राजा की बारी । पद्मगन्धं शीशि दईसँवारी ॥

शीशि मुख अंगें मलयगिरिरानी । कनक सुगन्धहि द्वादश बानी ॥

है पद्मिन जो सिंहलमाहाँ । सुगंध स्वरूपसो वहकी छाहाँ ॥

हीरामन हों तिहके परेवाँ । काँठा फूटि करत तेहि सेवा ॥

औ पायों मानुष की भाखौं । नाहीं तो पंखें मूठभर पाँखा ॥

दो० जिवलहिं जियो रातदिन सँवरो, सरों वही लै नाउँ ।

मुखराताँ तनहरिहर कीन्हा, दुहं जगंत लैजाउँ ॥

हीरामन जो कमल बखानौं । सुनि राजा होय भँवरभुलाना ॥

आगे आव पंखें उजियारे । कहै सुद्वीप पतंग किय मारे ॥

रहा जो कनक सुवासके ठाँउँ । कस न होय हीरामन नाउँ ॥

को राजा कस दीप अतंगू । जेहिरे सुनत मन भयो पतंगू ॥

सुनिसुसमुद्रचखें भये कलकलीं । कमलवाहि भँवरहोय मिला ॥

कहौ सुगंधनि कस निरमली । भाँअलि संग कि अबहाँ कली ॥

चारोंतरफ १ दोनों जहान २ बोली ३ नाश ४ दिल ५ झूठ ६-८ क्रसूर ७

लङ्का ८ कमलकी खुशबू ९ चाँद ११-१२ वदन १३ चन्दन १४ लोना १५-

२५ जालिस १६ उड़ने वाले जानवर १७-१८-२३ आवाज़ १८ लाल २०

दुनियाँ २१ बयान करना २२ जगह २५ आँख २६ नाग जानवर २७ पद्मावत

२८ पाकसाफ़ २९ अँसर ३० ॥

औकहुतहांजोपद्मिनीलोनी । घरघरसबकेहोहिंजसहोनी ॥

दो० सबै बखाने तहां कर, कहंत सो मोसों आव ।

वहों दीप वह देसां, सुनत उठा तस चाव ॥

का राजा हौं बरनों तासू । सिंहलद्वीप अहै कैलामू ॥

जो गा तहां भुलाना सोय । गये युगवीत न बहुराकोय ॥

घर घर पद्मिनः छतिस जाती । सदा वसंत दिवसैं अरु राती ॥

जेहिं जेहिं बरनै फूल फुलवारी । तेहिंतेहिं बरनै सुगन्धमुनारी ॥

गन्धप्रसेन तहां बड़ राजा । अप्सरंहिं माहिंइन्द्रासनसाजा ॥

सो पद्मावत ताकी बारी । औ सब द्वीपमाहिंउजियारी ॥

चहूंखण्ड के वर जो आहीं । गर्वहिं राजा बोलहिंनाहीं ॥

दो० उदित सूर जसदेखी, चांद छिपै जेहि धूप ।

ऐसे सबै जाहिं छिप, पद्मावत की रूप ॥

सुनि रवि नाउंस्तनै भारती । परिडत वही फेर कहु वाता ॥

तुइ सुरङ्ग सूरति वह कही । चितमहँ लाग चित्र हैरही ॥

जनु होय सूर्य आय मनवसे । सब घटपूर हिये परगँसे ॥

अबहँ सूर्य चांद वह छाया । जलबिन मीनै रक्तबिन कार्या ॥

करनै करान भा प्रेमअंगूरु । जो शशि स्वर्ग चढौ होय मूरु ॥

सहसँ किरान रूपमन भूला । जहँजहँदृष्टि कमलजनुफूला ॥

तहां भँवर जहँ कमलागन्धी । भइशशि राहुकेर ऋणवन्धी ॥

दो० तीन लोक खण्ड चौदह, सबै परै मोहिं सूभ ।

खूबसूरत १ तारीफ़ २-३ दिन ४ रंग ५-६ इंद्रलोककी परी ७ लड़की ८

चारोंतरफ़ ९ शरर १० सूर्य ११-१२-२३ राजारतनसेन १३ दीवाना १४

तसवीर १५ दिल १६ खिलना १७ मछली १८ वदन १९ नसनस में २०

चांद २१-२६ आसमान २२ हजार ज्योति तथा पद्मावत २३ निगाह २४ ॥

कान टूटि जेहि आभरणं, का लै करब सुसोन ॥

राजा मुनि बियोगं तसमाना । जैसेहियं विक्रमं पछिताना ॥

वह हीरामन परिडत मुवा । जो बोलै मुख अमृत चुवा ॥

परिडत दुखखण्डित निरदोषा । परिडत हिये परै नहिं धोखा ॥

परिडत केर जीभ मुख शोधे । परिडत बात न कहै बियोधे ॥

परिडत सुमति दै पन्थहि लावा । जो कुपन्थे तेहि परिडत न भावा ॥

परिडत राती वदन सरेखा । जो हत्यार रुहरं पै देखा ॥

की प्रान घट आनहि मंती । की जलिहोहिं सुआ संग सती ॥

दो० जन जानहुकिये अवगुण, मंदिर होय सुखराज ।

आयसुं मेट कन्तै कै, काकर भय न अकाज ॥

चांद जैस धन उजेर अहे । भा पिउरोष गहन असगहे ॥

परमसुहाग निवाहन पारी । भावै धाग सेवा जब हारी ॥

इतनक दोषे वीरज पिउ रूठा । जो पिउ आपन कहै सुभूठा ॥

ऐसे गर्व नहिं भूलै कोई । जेहिं डर बहुत पियारो सोई ॥

रानी आय धाय के पासा । सुआ भवा सेमर की आसा ॥

पराप्रीति कंचन महँ सीसा । विथरन मिलै श्यामपै दीसा ॥

कहां सुनार पास जेहि जाऊँ । दे सुहाग करै इक ठाँऊँ ॥

दो० में पिय प्रीति भरोसे, गर्व कीन्ह जिव माहँ ।

तेहिरिस हों परहेली<sup>३</sup>, नगररोप की नाहँ ॥

उतैरै धाय तव दीन्ह रिसाई । रिस आपहिं बुधि<sup>४</sup> अत्ररहिं खाई ॥

जेवर १ दुख २ दिल ३-४ राजा विक्रमादित्य ४ वेहदा ६ राह ७ वद

राह ८ लालमुँह ९ खून १० नागमती रानी ११ हुकम १२ खाविन्द १३-

२०-२४ रानी १४ छोड़ना १५ क्रसर १६ गरूर १७ लौंडी १८-२६ सोना १६

जगह २१ अहंकार २२ दूर २३ जवाब २४ अकल २७ ॥



मैं जो कहा रिस करहु न बाला । कोन गयो यहि रिस करघाला ॥  
 बिस बिरोध रसहि पै होई । रिस भारै तेहि मार न कोई ॥  
 तुइ रिस भरी न देखेसि आगू । रिसमहँ काकहँ भयो सुहागू ॥  
 जेहिरिस तेहिरिस जोगन जाई । घेरस हरैदि होय पीराई ॥  
 जेहिके रिस भिलाय रस दीजै । सो रस तज रिस कोहन कीजै ॥  
 कतँ सुहाग की पाई साधा । पावै सो जो वही चितवांधा ॥  
 दो० रहै जो पियकी आयसुँ, और वरती होय हीन ।

निरमल देखै चांदजस, जन्म न होय मलीन ॥

जुवाहार मन समुझी रानी । सुआ दीन्ह राजा कहँ आनी ॥  
 नागमती हौँ गँब न लीन्हा । कतँ तुम्हार मर्म पिय लीन्हा ॥  
 सेवा करै जो बारहमासा । अतनकि अवगुण करैनियासा ॥  
 जो तुम देइ नाय के ग्रीवाँ । छाँड़हि नहिँ विन मारे जीवा ॥  
 मिलतहि महँ जन अहो निरारै । तुमसो अहो अदेशँ पियारै ॥  
 मैं जाना तुम भोहे माहाँ । देखों ताक तो हौँ सबमाहाँ ॥  
 का रानी का चेरी कोई । जेहिकहँ मर्याँ करै भल सोई ॥  
 दो० तुम सों कोई न जीता, हारा विक्रम भोजँ ।

पहिले आपहिँ खोयकर, करै तुम्हारा खोज ॥

राजें कहा सत्य कहु सुआ । विनसत कसजस सेमर भुआ ॥  
 हो सुख रँती कहो सत बाता । जहाँ सत्य तहँ धर्म सँघाता ॥  
 बांधी सृष्टि<sup>१</sup> अहै सतक्रेरी । लक्ष्मी अहै सत्य की चेरी ॥  
 सत्यजहाँ साहस सिधि<sup>२</sup> पावा । औ सतबाँदी पुरुष कहावा ॥

औरत १ खराब २-११ हल्दी ३ खाविन्द ४-६ इकम ५ पाकसाफ ६  
 मैला ७ शकर ८ भेद १० गरदन १२ अलग १३ सारा जहान १४ मुहव्यत १५  
 राजा विक्रमाजीत १६ नामराजा १७ लाल १८ दुनियाँ १९ कामिल २०  
 सच बोलनेवाला २१ मर्द २२ ॥

कहों लिलोट दुइजकी जोती । दुइजहिज्योतिकहांजमंओती ॥

सहसं किरणजोमूर्यदिपाये । देखि लिलोट सोउ छिपजाये ॥

का शिर वरणों दिपै मयंकू । चांद कलंकी वह निकलंकू ॥

आवचांद पुनि राहु गरासा । वह बिन राहु सदा परकासा ॥

तेहिलिलोटपरतिलकजोबैठा । दुइजपासजानहुधुवं दीठा ॥

कनकं पाठ जनु वैठो राजा । सबै सिंगार अस्त्रं लै साजा ॥

वह आगे धिरं रहै न कोऊ । वहकाकहिं असजुरासंजोऊं ॥

दो० खदग धनुष औ चक्रवान; दुइजग मारन नाउँ ।

मुनिके परा मुरछकै राजा; मोकहं भये यकठाउँ ॥

भौहं श्यामं धनुषं जनुताना । जासों हेरं मारि बिष बाना ॥

ओहि धनुष वह भौहं चढ़ा । कै हत्यार कालं अस गढ़ा ॥

ओहि धनुष कृष्ण पै अहा । ओही धनुष राघव करं गहा ॥

ओहि धनुष रावण संहारं । ओहि धनुष कंसासुर मारा ॥

ओहि धनुष वेधा हत राहू । मारा वही सहस्राबाहू ॥

ओहि धनुषमें उपनहि चीन्हा । धानिकं आपपनवै जगं कीन्हा ॥

वहि भौहहि शरं कोइ न जीता । अपसरंहि छिपी छिपी गोपितां ॥

दो० भौहं धनुष धनधानकं, दूसर सरं न कराय ।

गगनं धनुष उगवै, लाजहि सो छिपजाय ॥

नयनवान सरं पूचन कोऊ । जनुसमुद्र अस उलटहि दोऊ ॥

रांती कमल करहि अलभवीं । गुंजहि मातनकरहि अपसवां ॥

शिर १-४-६ दुनियां २-२४ हजार ३ तारीक ५ चांद ६ पेव ७ रोशन ८ नाम नखत १० सोना ११ हथियार १२ कायम १३ मिलना १४ सियाह १५ कमान १६ देखना १७ मौत १८ हाथ १९ मारडालना २० नामराजा २१ तीर अंदाज़ २२ निशाना २३ वान २४ इन्द्रलोककी परी २६ गोपी २७ पञ्चावत तीर अंदाज़ २८ बराबर २९-३२ आसमान ३० आंख ३१ लाल ३३ भंवर ३४ ॥

उठहिं तुरंगं लेहिं नहिं बागा । जानौं उलट गगन कहँलागा ॥

पवन भूकोरें देहिं हिलोरा । स्वर्ग लाय भुँइ लाइ ब्रह्मोरा ॥

जंग डोलै डोलत नयनाहां । उलट औडार चहै पलमाहां ॥

जबहिं फिराये कङ्कन वूरा । असवै भौह भँवरकी जोरा ॥

समुद्र हिलोर करहिं जनु भूले । खंजन लरहिं मिरगँ वन भूले ॥

दो० भरै समुद्र अस नयनै दुइ, माणिक भरे तरङ्ग ।

आवहिं तीर जाहिं फिर, काल भँवर तेहि सत ॥

बरुनी का वरुणें ईमें वनी । साधे वान जानु वहिं अनी ॥

जुरी राम रावणकी सैनौ । बीच समुद्र भयें वह नयना ॥

वारहिं पार नयावर सांधे । जासों हेरँ लाग विये बांधे ॥

उन्ह वानहिं असकौन न मारा । वेध रहा सगरा संसारा ॥

गगनै नखत जस जाहिं न गिने । वै सब वान वही के हने ॥

धरती वान वेध सब राखे । शाखा ठाढ़ वही सब शाखे ॥

रोवँ रोवँ मानुष तन ठाढ़े । सूतहिं सूत वेधँ अस गाढ़े ॥

दो० वरुनि वान जसे उपनहिं, वेधी रन वन दंख ।

सो जेहि तन सब रोवां, पंखहिं तन सब पंख ॥

नासकँ स्वर्ग देवोंकेहि योगूँ । स्वर्ग खीनँ वह बदन सँयोगू ॥

नासकँ देखिल जान्यो सुआ । शूकँ आय वेसर होय उआ ॥

सुआ जो पियर हीरामनलाजा । और भावका वरुणों राजा ॥

सुआ मुनाक कँठोर नवारी । वह कोमलँ तिलपुहुँपँ सँवारी ॥

घोड़ा १ आसमान २-३-१८ दुनियाँ ४ आँख ५-८ ममोली ६ हिरन ७

जवाहिर ८ लहरि १० किनारा ११ पलक १२-२० तारीफ १३ इस्तरह १४

फौज १५-१६ देखना १७ सुराख १८ जानवर परिन्द २१ नाक २२-२७

तलवार २३-२५ बराबरी २६ पतली २६ नाम नखत २८ बयान करना २९

सकत ३० टेंडी ३१ मुलायम ३२ फूल ३३ ॥

प्रेम छोड़ि कुछ और नहिं, लुना जो देखौ मनबूझ ॥

प्रेम मुनत मनभूल न राजा । कठिनप्रेम शिरदियतेहिछाजा ॥

प्रेम फन्द जो पड़ान छूटा । जीव दीन्ह पै फांद न छूटा ॥

गिरगिट छन्दधरै दुखतीतां । खनहो पीत राति खन सीतां ॥

जानिपुछारै जो भयबनबासी । रोवरोवपरी फांदनकोआसी ॥

पांख फरेरा सोई फांदू । उड़ न सकहि उरभे भये बांदू ॥

मेउंमेउं निशि दिन चिछाय । वही रोष नागिन धरखाय ॥

पांडुकं मुआकरठवह चीन्हा । ज्यहिं गै परा चाहि जिवदीन्हा ॥

दो० तीतर गयै<sup>१</sup> जो फांद है, नितहि<sup>२</sup> पुकारै दोष ।

मुक्ति<sup>३</sup> हँकारै फांदगै<sup>४</sup>, मेले कित मारे पुनमोष<sup>५</sup> ॥

राजा लीन्ह ऊबके श्वासा । ऐसे बोल नहिं बोल निरासां ॥

पहिल प्रेमहै कठिन<sup>६</sup> दुहेलीं । दोजगं तरा प्रेम जेहि खेला ॥

दुख भीतर प्रेम मधुं राखा । किंचन मरन चहै सो चाखा ॥

जेहि नहिं शीशं प्रेमपथ लावा । सो पृथ्वी मँहँ काहेक आवा ॥

अब मैं पीय प्रेमपथ मेल्ला । पायन ठेल राख कै चेला ॥

प्रेमवारसो<sup>७</sup> कहै जो देखा । जे न देखि का जानि बिशेखा ॥

तत्रलग दुख प्रीतम नहिं भेटां । मिलातो गाजरमकै दुखमेठा ॥

दो० जस अनूप तुइ बरणी, नखंशिख बरणीं शिगार ।

है मोहि आश मिलन की, जो पुरवै करतारै ॥

१ रंग २ गर्म ३ पीला ४ लाल ५ लफेद ६ मोर ७ प्रेमका फन्दा ७ रात ८

सुस्सा ९ कुमरी १० गरदन ११-१५ हमेशा १२ चुप १३ चोलाना १४ नजात

१६ नाउममेद १७ मुशिकल १८ भारी १९ दोनों जहान २० शराव २१ शिर

२२-३५ राह २३-२५ ज़मीन २४ दरवाजा २५ मुलाकात २७ बहुत दिन २८

घयान करना २९ नाखून से शिरकी चोटी तक ३० तारीफ़ ३१ ईश्वर ३२ ॥

## खण्डसातवां शृंगारखण्ड पद्मावत ॥

का शिंगार वह बरणीं राजा । वहक शिंगार वही पै छाजा ॥

प्रथम शीशै कस्तूरी केशों । बलि वासुंकि को और नरेशों ॥

भंवरकेश वह मालति रानी । विपहरं लरहिं लेहिं अरघांनी ॥

बेनी छोरि भार जो वारा । स्वर्ग पताल होय अधियारा ॥

कोमल कुटिल केशं नगकरे । लहरे भरी भुअंग वैसादे ॥

बेधीजानि मलयगिरि वासा । शीशं चढी लोटहिं चहुं पासा ॥

घुंघुरवार अलकै विषं भरे । संकरे प्रेम ज्यों गेंयें परे ॥

दो० असफंदवार केशं वै राजा, पराशीशं गें फांद ।

अष्टोकुलीनागें सब डरके, भये केशं के वांद ॥

बरनो मांग शीशं उपरुहीं । सेंदुर अथै चढ़ा जेहि नाही ॥

बिन सेंदुर असजानहिं दिया । उजेरपंथै रयनि महुं किया ॥

कंचन रेश कसौटी कसी । जनु घनमहुं द्रौमिनि परगेंसी ॥

सूर्यकिरणजनुगगनं विशेषी । यमुना मांभ सरस्वती देखी ॥

खांडे धार रुधिरं जनु भरा । करवेंटे ले बेनी पर धरा ॥

तेहि पर पूर धरे जो मोती । यमुन मांभ गङ्गाकी सोती ॥

करवेंटे तपौ लीन्ह होय चूरु । मगें सुरुधिरं लेदेइ सेंदूरु ॥

दो० कनक द्वादशं बानि होय, चही सुहाग वह मांग ।

सेवा करहिं नखत शीशि तरैइ, उवै गगनं तस मांग ॥

तारीक १ पहिले २ शिर ३-२०-२६-३२ मुशक ४ बाल ५-६-१६-२६-

२५-२६ न्योछावर ६ नामसांप ७ आदमी ८ सांप १०-१७-१८ खुशबू ११

चोटो १२-४१ आसमान १३-३८-५० मुलायम १४ पेचदार १५ चन्दन १६

जहर २२ जंजीर २३ गरदन २४-२७ नाम सांप २८ गुलाम ३० तारीक ३१

राह ३३ रात ३४ सोना ३५-४६ विजुली ३६ चमक ३७ खून ३६-४५

लोटके ४० नाम जगह जहाँ शिर कटाते हैं ४२ प्रकार ४३ शायद ४४

खालिस ४७ चांद ४८ नखत ४९ ॥

पुहुप सुगन्ध करहि सबआसा । मगं <sup>मिलान</sup> हरकाथलेइ हमपासा ॥

अधरें दशनपरनासक शोभा । दाडिम देखिसुआमनलोभा ॥

खजने वेहिदिश केलिकराहीं । बेहिवहरसको पावकोउनाहीं ॥

दो० देखिअमीरसं आधरन्हं, भयोनासकां कीरं । <sup>मोती</sup>

पवनं वासु पहुँचावे, आश्रमछाडनु तीरं ॥

अधरें सुरंग अमीरस भरे । विन्वँ <sup>अनूप</sup> सुरंग लाज वन फरे ॥

फूल दुपहरी जानहु राती । फूल भरहि जो जो कहिवाता ॥

हीरा लीन्ह सुविद्रुम धारा । बिहँसत जगत होय उजियारा ॥

भइ मँजीठ वातहि रँगलागें । कुसुमरंग थिरें रहै न आगें ॥

वहिके अधरें अमी भरराखे । अबहि अछूतिन काहूँ चाखे ॥

मुख तंगोले धार नहि रसा । केहि सुखयोग सो अमृतवसा ॥

राता जगत देखरंगराती । रुधिरें भरी आछहि बिहँसाती ॥

दो० अमीअधर असराजा, सब जगें आस करेइ । <sup>राजा</sup>

केहिका कमल बिकासों, को मधुकैरें रसलेइ ॥ <sup>राजा</sup>

दशनं चौक बैठे जनु हीरा । औविचविचरंगश्यामं मँभीरा ॥

जनु भादौनिशि दाँमिनि दीसी । चमकउठैतसतहाँबतीसी ॥

वहसो ज्योति हीरा उपराही । हीरा वेहिसों तेहि परछाहीं ॥

जेहिदिनदशनं ज्योतिनिरमई । बहुते ज्योति ज्योतिदाभई ॥

रवि शशिनखतदीन्हवहज्योती । रतने पदारथमाणिकमोती ॥

जेहितेहिबिहँसिं सभामहँसी । तहँतहँछिटकज्योतिपरकँसी ॥

फूल १ शायद २ बोलना ३ हौठ ४-११-१६-२४-३० दात ५-३४-३६

नाक ६-१२ अनार ७ ममोला ८ तरफ ९ अमृत १०-२५ तोता १३ हवा १४

किनारा १५ कुन्दरु १७ लाल १८-२७ मृगा १९ हँसना २०-२६-४४ दुनियां

२१-३१ लाख २२ क्लायम २३ पान २६ खून २८ खिलना ३२ अचरा ३३ बहुत

काला ३५ राति ३६ विजुली ३७ देख पड़ना ३८ बनावई गई ४० सूर्य ४१

चांद ४२ जवाहिरात ४३ उजियारा ४५ ॥

दामिनि चमकन सरस्वती पूजा । पुनिवहज्योतिहोयकोदजा ॥

दो० वेहँसत हँसत दशन तस, चमकी पाहन उठीलुके ।

(१५८) दाडिम सरँ जो नकैसका, फाव्यो हिया दके ।

रसना कहीं जो कहि रसवाता । अमृत वचन सुनत मनराता ॥

हरीशिशिर चातकं कोकिला । वीनत्रंशिवेवैनं जेहिमिला ॥

चातकं कोकिलरमहिंजोनाहीं । सुनिवै वयनं लाजधिपजाहीं ॥

भरै प्रेम मधुं बोलहिं बोला । सुनै सो मातृदूमके डोला ॥

चतुरवेदमति सब वह पाहां । ऋगयजुसागअथर्वणमाहां ॥

इकइक बोल अर्थ जो गुना । इन्द्र मोहि ब्रह्मा शिरधुना ॥

भागवतमर्थ पिंगलओगीता । अर्थजोजेहिपण्डितनहिंजीता ॥

दो० भावसँती औ व्याकरन, सुनी पिंगल पाठ पुराण ।

(१५९) वेदु भेदसों वात कहि, जनुलागें हिये वाण ॥

पुनि बरनों का सुरंग कपोलें । इक नारंगके दो किये योला ॥

पुहुपं पंगरस अमृतसांधे । कै अस सुरंग खरोसं वैधि ॥

तेहि कपोलें वायें तिलपरा । जो तिलदेखि सो तिलतिलजरा ॥

जनु घुंघुंची वह तिलकरमुँहां । विरहवान सांधो सामुहां ॥

अगिनवान तिल जानहु सूझा । इककटाक्ष लाख दुहुजूआ ॥

सो तिलकाल भेट नहिं गयो । अब वह कालकाल जग भयो ॥

देखत नयनं परी परझाहीं । तेहिते रातें श्यामं उपराहीं ॥

दो० सोतिल देखि कपोलें पर, गगनं रहाधुवें गाड ।

बिजुली १ बराबर २ दांत ३ पत्थर ४ लूक ५ अनार ६ चरांवरी ७ जीभ ८

दूरकरना जरदीका ९ पपीहा १०-१२ आवाज़ ११-१३ शराब १४ चार १५

महाभारत पुराण १६ पोथी १७ दिल १८ बयान करना १९ गाल २०-२३-२६

फूल २१ लुड्ड २२ कालाँमुँह २३ दुनियां २५ आँख २६ लाल २७ सियाह २८

आसमान ३० नामनखत ३१ ॥

खनहि उठै खन वूडै, डोलै नहि तिलछाड़ ॥१०॥  
 श्रवण साँप दुइ दीप सँवारे । कुण्डल कनक रचे उजियारे ॥  
 मणिकुण्डल चमकहि अतिलोने । जनुकँव धालव कहि दुइकोने ॥  
 दोउ दिश चाँद सूर्य चमकाहीं । नखत हँ भरी निरखि नहि जाहीं ॥  
 तेहिपर घूँटे दीप दुइ वारे । दुइ ध्रुव दुहं खूँट बैसारे ॥  
 पहिरे घूँटी सिंहलद्वीपी । जानहु भरे कहजही सीपी ॥  
 खनखन जाहि चीर शिरगहाँ । कांपतबीज धौलँ दिशि रहा ॥  
 डरहि देव लोक सिंहला । पड़ैन बीज दृष्टि तेहि कला ॥  
 दो० करहि नखत सब सेवा, श्रवण दीन्ह अस दोउ ।  
 चाँद सूर्य अस कहै, और जगत् का कोउ ॥  
 करैणों श्रीवँ कोवँ कीरीसा । कंचन तारजनुलाग्योसीसा ॥  
 कँडे फेर जानुगँयँ गाढ़े । हरी पुछारँ ठगे जनु ठाढ़े ॥  
 जनुहिये काढ़ि परेवाँ ठाढ़ा । तेहिते अधिकँ भावगँये बाढ़ा ॥  
 चाक चढाय साँच जनु कीन्हा । वागतुगँ जानगाहिलीन्हा ॥  
 गये मयूर तमचोरँ जोहारा । उन्हें पुकारे साँझ सकारा ॥  
 पुनितेहि ठाँउँ परी त्रिय रेखा । घूँट जो पीक लीक तसदेखा ॥  
 धनुग्रह श्रीवँ दीन्हनिधि भाउ । वहिकाकहि लेकरे मिराँउँ ॥  
 दो० करैठै श्री मुक्तावनमाली, सोहै अभरँ श्रीवँ ।  
 की होय हारकण्ठ लागै, कै तप साधा जीव ॥११॥  
 कनकँ दण्ड दुइ भुजा कलाई । जानहु फेर कँडेरँ भाई ॥

कान १-१३ सोना २-१८-३७ खूबसूरत ३ देखना ४ वाली ५-७ नाम  
 नखत ६ सँचना ७ बिजुली ८-१२ सक्रम १० तरफ ११ दुनियाँ १४ तारीक १५  
 गरदन १६-२०-२५-३०-३६ कलंगी १७ खरादी १६-३८ मोर २१-२७  
 दिला २२ कवृत्तर २३ बहुत २४ छोड़ा २६ सुरगा २८ जगह २९ द्रवर ३१  
 मुलाकात ३२ नाम जेवर ३३ मोतीका हार ३४ जेवर ३५ ॥



कदल गाभकी जानौ जौरी । औ रांती वह कमल हथोरी ॥

जानौ रक्क हथोरी बूडी । रवि प्रभातें तातें वै जूडी ॥

हियांकादिजनुलीन्हेसिहाथाकरुधिरं भरीअंगुरी तहिसुथा ॥

औ पहिरें नगजडी अंगूठी । जगं विनजीव जीव वहमूठी ॥

वाहूं कंगन ताड़ं सलाने । डोलत वाहु भावगत लोने ॥

जानो गति वेरनं देखराय । वाहुं डुलाय जीव लेजाय ॥

दो० भुजउपमां पौ नारीनं पूजी, खीनं भईतेहिचिन्तं ।

(११२) ठांविहिं ठावें वेधे भई हृदयं, ऊव सांसले निन्त ॥

हियां थार कुचं कंचनं लाडू । कनकं कचूर उठेकै चाडू ॥

वेधे अंवर कंठे केतकी । चाहें वेधे कीन्ह कंचुकी ॥

छन्दन वेलसाज जलु गूदे । अमृत भरे रतन दुइ मूदे ॥

यौवन बाण लेहिं नहिं वागा । चाहहिं हुलसहिये में लागा ॥

अग्नि बाण दुइ जानों सांधे । जगं वेधे जो होहिं न वांधे ॥

उतंग जंभीरं होय रखवारी । छुइको सकै राजाकी वारी ॥

दाडियें दाखें फरी अब चाखा । असनारंग वेहिका कहिराखा ॥

दो० राजा बहुत सुये तप, लाय लाय भुईं माथ ।

(११३) काहूं छूय न पारी, गये मरोरत हाथ ॥

पेट पतरि जलु चन्दन लावा । कहकहकेसरें वरणें सुहावा ॥

शीरें अहार न कर सुकमारा । पान फूल लेरहै अधारा ॥

श्यामभुअंगिनि रोमावली । नाभी निकस कमलकहं चली ॥

लाल १ लोह २-७ सूर्य ३ ओर ४ गर्म ५ दिल ६-२०-३० दुनियां ८-३१  
नामजेवर ९ खूबखरत १०-११ तचायफ्र १२ बरावरी १३-१५ कमलकी नाल  
१४ पतली १६ शोच १७ जगह १८ छेद १९-२५-२७ छाती २१-२२ सोना  
२३-२४ नोक छाती केदण्डो की २६ अंगिया २८ पोशाक २९ नीवू ३२ बेटी ३३  
अनार ३४ अंगूर ३५ खुशबू ३६ रंग ३७ दूध ३८ कालीनाग्नि ३९ ॥

आय दोहों नारंग बिच भये । देखि मयूर ठमक रहिगये ॥  
 आय जुरी भँवरन की पांती । चन्दन गाभ वास की माती ॥  
 गइ कालिन्दी विरह सताई । चलपराग अरबल बिचआई ॥  
 नाभी कुंड सो बनारसी । सौह को होय मीचें तेहिलिखी ॥  
 दो० शिरकरवँटतनकाशी लैलै, बहुतसीफ तेहिआश ।  
 बहुत धूम घूँट में देखी, उतर न देइ निरांश ॥  
 चोंटी पीठ लीन्ह वै पाछें । जनु पहिर चली अप्सराकाँछें ॥  
 यलैयागिरि की पीठि सँवारे । बेनी<sup>१</sup> नाग चढ़ा जनु कारे ॥  
 लहरें देत पीठ जनु चढ़ा । चीर उड़ावा केंचुल मढ़ा ॥  
 वेहिकाकहँअसबेनी<sup>२</sup> कीन्हीं । चन्दनवासभुअंगहि<sup>३</sup> लीन्हीं ।  
 कृष्णकरा चढ़ा वह माथे । तब सो छूटि अब छूटन नाथे ॥  
 कारे कमल गहे<sup>४</sup> मुख देखा । शीशि पीछे जनु राहुविशेखा ॥  
 को देखै पावे<sup>५</sup> वह नागू । सो देखै माथे मन भागू ॥  
 दो० पद्मगं जो पंकज मुखगंहे, खंजुन तेहिशिर बैठ ।  
 छात सिंहासन राजधन, ताकह होइ जो दीठ ॥  
 लंकें खीनँ असआहिनकाहू । केहरि<sup>६</sup> कहँन वह सरताहू ॥  
 वसौं लंकें पखनीगजभीनी<sup>७</sup> । तेहितेअधिकलंकेंवहखीनी<sup>८</sup> ॥  
 परहँपि पिवर भये तहँ बसौं । लिये डंख मानुष कहँ डसां ॥  
 मानहुँ नलिनें खंड बुइ भये । दुहँबिच लंकें तार रहिगये ॥  
 हिये<sup>९</sup> सोमूड़परचलीवहनागा । पैगदेत कितसहसकें लागा ॥

१ यमुना २ नाममुक्ताम ३ वरावर ४ मौत ५ घुआं ६ जवाच ७ ना-  
 उम्रेद ७ इन्द्रपरी ८ धोती ९ चन्दन १० दोटी ११-१२ काला नाग १३-  
 १४ पकड़ना १५-१६ घाँद १७ साँप १८ कमल १९ ममोला २० कमर २१-  
 २५-२६-३३ पतली २२ चीता २३ भँवरा २४-३१ बहुत पतली २६  
 बहुत २७ वारीक २८ डह ३० कोकावेली ३२ छाती ३४ डर ३५ ॥

छुद्रघण्टं मोहहिं नरराजा । इन्द्र अखाड आयं जनु वाजा ॥

नाभः वीन गँहे कामिनी । लाकहिं सबै राग रागिनी ॥

दो० सिंहें नजीता लंकै शर, हार लीन्ह बनवास ।

तेहि रिस रक्कपिये मानुष, खाय मारके मांस ॥

नाभी कुण्डसो मलयसमीरूँ । समुद्र भँवर जस भवै गँभीरूँ ॥

बहुते भँवर बाँडर भये । पहुँच न सके स्वर्ग कहँ गये ॥

चन्दनमांझ कुरंगिन खोजूँ । वेहिको पाव को राजा भोजूँ ॥

को वह लागहि वंचलसींभा । काकहिं लिखी ऐसको रीभा ॥

सोहै कमल सुगन्ध शरीरूँ । समुद्र लहर सोहै तन चीरूँ ॥

भूलहि रतन पाटके भोपाँ । साज मदर्न वहिकाकहँ कोपा ॥

अबहिं सो अहै कमलकी करी । नजनों कौन भँवर कहँ धरी ॥

दो० बेधरही जग बासना, निरमल मेद सुगन्ध ।

तेहि अरघान भँवर सब लुब्धे, तँजैहिं न दियेबन्ध ॥

वरैणों तँव लंकै की शोभा । औ गजँ गवनदेख सबलोभा ॥

जुरे जंघ शोभा अति पाये । केला खंभ फेर जनु लाये ॥

कमल चरण अतिरौत विशेषी । रहै पाँट पर भूमि नदेखी ॥

देवता हाथ हाथ पगलेहीं । जहँ पगपरै शीशँ तहँ देहीं ॥

माथे भागन कोउ अस पावा । चरणकमल लै शीशँ चढावा ॥

चौरा चाँद सूर्य उजियारा । प्रायल बीच करहिं भनकारा ॥

अनवट विछिया नखत तँरौई । पहुँच सकै को पाँइन ताई ॥

करधनी १ नामबाजा २ पकड़ेहुये ३ चीता ४ कमर ५ चन्दनकी हवा ६ गहिरा ७ आसमान ८ हरिनके पाँवका निशान ९ लहंगा १० कामदेव ११ पाँकसाक १२ केसर १३ छोड़ना १४ तारीक करना १५ चूतर १६ कमर १७ हाथी १८ बहुत लाल १९ तल २० जमीन २१ ऊँच २२ शिर २३-२४ छोटे नखत २५ ॥

दो० बरन शिंगार न जान्यो, नखशिख जैस अभोग ।

पाना चेत तस जगं कछू न पायों, उपमां देव वह योग ॥

मुनिके राजा गयो मुरझाय । जानो लहर सूर्य के पाय ॥

प्रेम घाव दुख जानि न कोई । जेहि लागै जानै पै सोई ॥

परा सुप्रेम समुद्र अपारा । लहरहिं लहर होय बिसभारा ॥

बिरह भँवर होय भँवर देय । खनखन जीव हिलोरहिं लेय ॥

कितहिं निसांस बूड़िजिवजाइ । कितहिं उठै निसांस बौराइ ॥

कितहिं पीत खन हो मुखसेतां । कितहिं चेत खन होय अचेतां ॥

कठिन मरन ते प्रेम व्यवस्था । नान जिये न जाय अवस्थां ॥

दो० जनु लें हारहिं लीन्ह जिव, हरहिं त्रासहि ताहि ।

इतना बोल न आव मुख, करै त्राहि त्राहि ॥

जहँलग कुटुंब लोग औ नेगी । राजाराय आय सब बेगी ॥

ज्ञानवन्त गुणी कारणी आये । ओम्हा बैद्य सयान बुलाये ॥

चरचहिं चैष्टी परखहिं नारी । नेरँ नाहिं औषध तहिं बारी ॥

है राजा लक्ष्मण के करी । शक्ती बान मोह है परा ॥

तहँ सो राम हनुमन्त बलदौरी । को लै आव सजीवनमूरी ॥

बिनय कराहिं जेतो गढ़पती । का जीव कीन्ह कौन मतमती ॥

कहोसो पियर काहि पुनि खांगा । समुद्रमुमेरु औरतुमहिं मांगा ॥

दो० धावनँ तहां पठावै, देहिं लाख दशरोकै ।

होयसो बेल जेहिबारी, आनहिं सबै बरोकै ॥

जो भा चेत उठा बैरागा । बावर जनो सोय उठि जागा ॥

दुनियां १ मिसाल २ बेकरार ३ वेदम ४-५ पीला ६ सफ़ेद ७ होश ८

बेहोश ९ हाल १० दुखदेना ११ जल्द १२-१६ चहरेकी हालत १३ नजदीक

१४ मानिन्द १५ राजा १६ दूत १७ नरुद १८ ॥

आय जगर्तवालकजसरोवा । उठा रोय हा ज्ञान सो खोवा ॥

हौं तो अहा अमर पुर जहां । यहां मरन पुर आयों कहां ॥

कैं उपकार मरन पर कीन्हा । सुंकि जगाय जीव हरलीन्हा ॥

सोवत रहा जहां सुख साखा । कसन तहां सोवतविधि राखा ॥

अब जिव वहां यहांतन सूना । कबलग रह यहि प्रानवहना ॥

जो जिव घटै कालके हाथा । कठिन नेकपै जीवन साथा ॥

दो० उठहिं हाथ तन सरवरं, हियाँ कमल तेहिमाहिं ।

नयनहिं जानहु नेरे, कैं पहुँचत अवगीहिं ॥

सबहिं कहा मनसमभो राजा । काल सेतेकुब्जजूं नद्याजा ॥

तासों जूँ जात जो जीता । जातन कृष्णतजहिं गोपिता ॥

उनहिं नेहँ काहू से कीजे । नाँ भेटि काहे जिव दीजे ॥

पहिलहिं सुख नेहँ जब जोरा । पुनिहो कठिन निवाहतओरा ॥

रहत हाथ तन जैसे शरीरुं । पहुँचन जाय परातस फेरुं ॥

गगनँ दँष्टि सो जाई पहुँचा । प्रेमअँदँष्टि गगनँ ते ऊँचा ॥

धुँवँ ते ऊँच प्रेम धुँवँ उआ । शिर दै पाँ दिये सो लुआ ॥

दो० तुम राजा औ सुखिया, करो राजसुख भोग ।

यहरे पंथँ सो पहुँचै, सहै जो दुःख वियोगँ ॥

सुवै कहा मनसमभो राजा । करतशीति कठिनँ है काजा ॥

तुमहिं अबहिं जेई घर पोई । कमलन भेटहिं भेटहिं कोई ॥

जानहि भँवर जो तेहिपँथँ लूटै । जीव देहि औ दिये न लूटै ॥

दुनियाँ १ वैकुण्ठ २ अहसान ३ चुपचाप ४ ईश्वर ५ अलग ६ तालाव ७

दिल ८ आंख ९ हाथ १० गहरा ११ मौत १२ लड़ाई १३-१४ छोड़ना १५

सुहृद्वत १६-१७ सुशिकल १८-२० बदल १६ आसमान २०-२३

निगाह २१ अदख २२ नाम नखत २४-२५ राह २६-२९ विरह २७ सुला

कात २६ कोकावली ३० ॥

कठिन आह सिंहलकर साजू । पाई नाहिं जो भाँके साजू ॥

वह पंथे जाय जो होय उदासी । योगी यती औ तपी संन्यासी ॥

भोग किये पायत वह भोगू । तर्ज सो भोग कोइ करत न योगू ॥

तुम राजा चाहो सुख पावा । योगहि भोग करत नहिं भावा ॥

दो० साधन सिद्धन पाई, जोलौ साधि न तप्य ।

सोपै जानहिं बापुरो, शीशं जो करनहिं कल्प ॥

का भाखे कहानी कथा । निकसै धीव न बिनदधि मथा ॥

जो लह आप हेराय न कोई । तौलहि हेस्त पाव न सोई ॥

प्रेम पहाड़ कठिन विधि गढ़ा । सोपै जाय शीशं सों चढ़ा ॥

पंथे सूरि नगर उठा अंगूरु । चोर चढ़ाके चढ़ि संसूरु ॥

तुई राजा क पहिरेसि कंथा । तोरे घरहि मांके दर्शं पंथा ॥

कामकोधं तृष्णां मनमाया । पांचौ चोर न छांडहिं कार्या ॥

नवं सेधं गढ़ं के मंभियारों । घरसूसहिनिशिं केउ जियारा ॥

दो० अबहूँ जागि अयोनी, होत आवनिशिं भोर ।

पुनि कुँछ हाथ न लागै, बूसजायँ जब चोर ॥

सुनि सो वात राजामन जागा । पलकन मारि टकटकालागा ॥

नयनहिं दुरहिं मोति औ मूंगा । जसगुड़ खाय रहाहै गूंगा ॥

हियँकी ज्योति दीपवह मूभा । यह जो दीप अंधरा बूभा ॥

उलटि दृष्टिं माया सो रूठी । पलकन फिरी जानकै भूठी ॥

जो पै नाहीं इस्थिर दसा । जग उजारि का कीजे वसा ॥

मुभिकल १-११ लड़ाई २ राह ३ किस्मफ़कीर ४-५-६-७ छोड़ना ८ फ़कीर ९-१५ शिर १०-१३ ईश्वर १२ राहसूरीकी १४ गुदड़ी १६ बीच १७ राह तथा नाक कान आँख मुहँ गुदा लिंग १८ मुस्सा १९ हवस २० बदन २१ सुराख २२ किला २३ दरमियान २४ रात २५-२७ नादान २६ आँख २८ दिल २९ नज़र ३० ॥

गुरु बिरह चिनगी पै मेला । जो सुलगाय लिये सो चेला ॥

अबकी पतङ्ग भृङ्ग की करौ । भँवर होउँ जेहि कारन जरा ॥

दो० फूल फूल फिर पूंछौ, जो पूंछौ वह केतौ ।

तनन्यौछावर कै मिलौ, ज्यों मधुकरँ जिउदेत ॥

हिन्दू मीतँ बहुत समभावा । मान न राजा गवन भुलावा ॥

उपजै प्रेमपीर जेहि आये । परबुँधि होत अधिक सो आये ॥

अमृत वात कहत विष जाना । प्रेमको वचन मीठ के माना ॥

जो वह विषे मारिकै खाय । पूंछौ ताही प्रेम मिठाय ॥

पूंछौ बात भरथरँहि जाय । अमृतराज तँजो विपखाय ॥

औ महेशँ वड़ सिद्ध कहावा । उनहूँ विषे कण्ठ पै लावा ॥

होतउयोरवि<sup>१</sup> किरण निकासा । हनुमन्तहोय को देखुआसा ॥

दो० तुमसब सिद्धि मनावहु, होय गणेश सिधिलेहु ।

चेला कीन चलावै, तुलै गुरु जेहि भेहु ॥

तजौँ राज राजा भा योगी । करँ किंकरी तन कियो वियोगी<sup>१</sup> ॥

तन बिसभरँ मनबावरलटा । उरभा प्रेम परी शिर जटा ॥

चन्द्रबदनँ औ चन्दनदेहा । भस्म चढाय कीन्ह तनखेहाँ ॥

मेखलँ सिंहे चक्र टिँदारे । लीन्ह हाथ तिरशूल सँभारे ॥

कंथाँ पहिर दण्ड करँ गहाँ । सिद्धि<sup>२</sup> होयकहँ गोरखँ कहा ॥

मुद्राँ श्रवणँ करँठँ जपमाला । करँउहियाँ कांध सिँहँछाला ॥

पाँवरँ पायलीन्ह शिर छाता । खप्पर लीन्ह भेषँ कै राता ॥

परवाना १ नामकीड़ा २ मानिन्द ३ केतकी ४ भँवरा ५ दोस्त ६ नसी-  
हत ७ बहुत ८ बात ९ राजाभरथरी १० छोड़ना ११-१४ महादेवजी १२ सूर्य  
१३ हाथ १५-२२ दुःखी १६ बेकरार १७ मुँह १८ राख १९ मस्तहाथी २०  
गुदड़ी २१ पकड़ना २२ पूराहोना २४ नामकलीरकामिल २५ वाला २६ कान  
२७ गरदन २८ सुमिरनी २९ चीतेकीखाल ३० खड़ाऊँ ३१ सूरत ३२ लाल ३३ ॥

दो० चला भक्ति मांगने कहँ, साजकिया तप योग ।

सिद्धि होय पद्मावत पाये, हृदय जबकि बियोगँ ॥

गणक कहहि करगवनन आजू । दिनलै चलहि होय सिधँ काजू ॥

प्रेमलुब्ध दिन घड़ी न देखा । तब देखी जब होय सरेखाँ ॥

जेहितन प्रेम कहां तेहि मासू । कार्या रक्क न नयनहि आंसू ॥

परिडत भुलानन जानहि चालू । जीवलेत दिन पूँछन कालू ॥

सती कि वौरी पूँछै पाँडे । औ घर बैठि नसै तँ भाँडे ॥

मरिजो चलै गङ्गा गति लेइ । तेहि दिन कहां घड़ी को देइ ॥

मैं घर वार कहां कर पावा । घरकार्याँ पुनि अन्तँ परावा ॥

दो० हारे पखेरू पंखी, जेहि बन मोर निवाहि ।

खेलचलातेहि बन कहँ, तुम अपने घरजाहि ॥

चहुँदिशँ आनसो डौंड़ी फेरी । भइ कटकई राजा केरी ॥

जानवन्त अहहि सकलँ दरकानी । सांभरलेहु दूरहै जाना ॥

सिंहलद्वीप जायसव चाहा । मोल न पावब जहां विसाहा ॥

सवनिवहै पुनि आपन सांठी । सांठी विनसोरहँ मुखमाठी ॥

राजा चला साज कै योगू । साजो बेगँ चलै सबलोगू ॥

गर्वजो चढ़ीतुरी केपीठी । अबभुइँचलहु स्वर्ग सोडीठी ॥

मंत्राँ लीन्ह होहुसँग लागू । गुदरजाय सबहो यह आगू ॥

दो० का निचिन्तँ रे मनै, अपनी चिन्ताँ आछ ।

लेह सजगँ भा आगमनँ, पुनि पछतास न पाछ ॥

कामिल १-२ दिल ३ दुःख ४ नजूसी ५ पूरा ६ दीवाना ७ होशियार ८  
वदन ९-१० आखिर ११ चारोंतरफ १२ फौज १३ सब १४ अरकानदौलत  
१५ पूंजी १६-१७ जल्द १८ गरूर १९ बोड़ा २० आसमान २१ निगाह २२  
सलाह २३ नाकिल २४ फिकिर २५ होशियार २६ पहिले २७ ॥



बिनवै रतनसेन की माया । माथेछात पाटै नितै पाया ॥

बर्षहिंनवनिधिँ लक्षपियारी । राजछाँडि जन होहिं भिखारी ॥

नितै चन्दन लागै जेहि देहा । सो तन देखि भरवअवखेहाँ ॥

सब दिन रहे करत तुम भोगू । सो कैसे साधव तप योगू ॥

कैसे धूप सहव बिन छाहाँ । कैसे नींद पडै भुँइँ माहाँ ॥

कैसे ओढव कांथर कंथाँ । कैसे पांय चलव भुँइँ पंथाँ ॥

कैसे सहव खनहि खन भूखा । कैसे खाव करकटाँ सूखा ॥

दो० राज पाँटै दरै पुरुष सब, तुमहीं सों उजियार ।

बैठि भोग रस माहिके, नचल तेहि अँधियार ॥

मोहिं यह लोभ सुनावन माया । काकर सुख काकर यह काया ॥

योनि यानँ तन होइ यह छारै । मोटी पोष मरै को भारा ॥

का भूलौं यहि चन्दन चोवा । वैरी जहाँ अंग के रोवा ॥

हाथ पांय श्रवणँ औ आँखी । ये सब भरहिं आय पुनि साँखी ॥

सूति<sup>१</sup> सूतितन बोलहिं दोखौं । कहो कहँहो यह गति मोखौं ॥

जो भल होत राज औ भोगू । गोपिचन्दँ नहिं साधत योगू ॥

उन्हें सृष्टि<sup>२</sup> जो देख परेवा । तजौं राज कजरी वनसेवा ॥

दो० देखि अन्तँ अस होयहि, गुरु दीन्ह उपदेश ।

सिंहलद्वीप जाबमै माता, तुमसों मोर अँदेशँ ॥

रोवहिं नागमती रनवासू । कै तुम कन्तँ दीन्ह वनवासू ॥

अबको हमहिं कोहि भोगिनी । हमहँ साथ होयहहिं योगिनी ॥

की हम लावहु आपनसाथा । की अब मार चलहु सँहाथा ॥

अरजकरना १ तर्कत २-१० हमेशा ३-५ सब दुनियाँकी दौलत धराख ६-  
१३ गुदड़ी ७ राह ८ टुकड़ा रोटी ९ फौज ११ आखिर १२-२२ कान  
१४ गवाही १५ सूरख १६ पाप १७ नजात १८ नामराजा १९ संसार २०  
बोड़ना २१ सलाम २३ खाविन्द २४ ॥

तुम अस बिहूड़े पीव पिरीता । जहँवां रास तहां सँगसीता ॥

जबलहिजिवसँग छांड़िनकायां । करिहों सेव प्रखारहुँ प्राया ॥

भली पद्मिनी रूप अनूपी । हमते कोइ न आर्गोरि रूपा ॥

भौहें भली पुरुपन की दीठी । जहँ जाना तहँ दोन्ह न पीठी ॥

दो० दीन्ह अशीश सबै मिलि, तुम माथे नितँछात ।

राजकरो चित्तोरगढ़, राखो पिय अहिवात ॥

तुम तिरियाँ मतिहीन तुम्हारी । मूख सोइ मता घर नारी ॥

राघव जो सीता सँग लाई । रावणहरी कौन सिधि पाई ॥

यह संसार स्वप्न जस हेरां । अन्तं न आपनको कहिकेरा ॥

राजाभरथरिहिं नहिंसुनीअर्यानी । जेहिके घर सोरहसै रानी ॥

कुचै लीन्हे तरवा सहराई । भा योगी कोउ संग न लाई ॥

योगी काहि भोग से काजू । चही न मेहरी चहै न राजू ॥

जूड़ि करकट्यै पै भीखहिचाहा । योगी तातँ भात सों काहा ॥

दो० कहा न मानी राजा, तँजी सर्वैई भीर ।

चला छांड़िकै रोवत, फिरके दीन्हन धीर ॥

रोवत माता फिरै न वारी । रतनचला जगं भा अधियारा ॥

वारं मोर जियावर रता । सो लैचला सुआँ परवता ॥

रोवहिं रानी तँजैहिं पराना । फोरहिंवरी करहिं खरिहाना ॥

चूरहिंगे अभरनँ उरँ हारू । अब काकहँ हम करव शिंगारू ॥

जाकहँ कही रहसिके पीव । सोई चला काकर यह जीव ॥

वदन १ धोना २ बेमिसाल ३ खूबसूरत ४ मर्द ५ देखना ६-१० हमेशा  
७ औरत ८ कामिल ९ आखिर ११ नादान १२ छातीकीदंडी १३ ठंडीरोटीका  
दुकड़ा १४ गर्ग १५ छोड़ना १६-२४ सब १७ धीरज १८ लड़का १९-२१  
दुनियां २० जिनदगी का लयव २२ तोता २३ चूड़ी २४ गरदन के जेवर २६  
छाती २७ ॥

मरीचहर्हि पै मरै न पावहिं । उठै आग सवलोग बुझावहिं ॥

घड़ी एक सुट भयो अँडूरी । पुनि पाछे वीता होय रूरी ॥

दो० टूटि मने नव मोती, फूट मने दस कांच ।

लीन्ह समेट सबै आभरन, होयगा दुखकर नांच ॥

निकसा राजा सुनके पूरे । छाँड़ि नगर मेला होय दूरे ॥

रायें रांग सब भये बियोगी । सोरह सहसँ कुँवर भये योगी ॥

माया मोह हरी सँहाथा । देखि न बूझ नियान न साथा ॥

छाँड़हिं लोग कुटुम्ब सबकोज । भयेनिराश दुखमुखतर्जदोज ॥

सँवरहिं राजा सोइ अकेलीं । जेहिरे पन्थ खेलेहोय चेला ॥

नगरनगर औ गाँवहिं गाँवां । छाँड़ चला सब ठाँवहिं ठाँवां ॥

काकर गढ़ काकर मठ माया । ताकर सब जाकर जिवकार्या ॥

दो० चलाकटके योगिनके, करके गेरुवा भेस ।

कोसबीस चारहुँ दिश, जानहुँ फूला टेस ॥

आगे सगुन सगुन यहितका । दहीमांभ रूपे कर टका ॥

भरे कलश तरुनी चलिआई । दही लिये ग्वालन गुहराई ॥

मालिन आय मौर ले गाथे । खंजन वैठ नागके माथे ॥

दाहिन मिरगँ आयगाधायें । प्रतीहारें बोला घर वायें ॥

बिरभँ सवरिया दाहिनबोला । बायें दिशें गीदरें नहिं डोला ॥

बायें अकाशी धूरे आये । लोवाँ दरश आय देखराये ॥

बायें कुँरी दाहिन कोचाँ । पहुँची भुक्ति जैस मनरोचाँ ॥

शोर १-२ जेवर ३ शेर ४ राजा के भाई ५ दुःखी ६ हजार ७ आखिर ८

छोड़ना ९ परमेश्वर १० राह ११ जगह १२ चदन १३ फौज १४ चारोंतरफ

१५ देख १६ नजमी १७ रुपया दही में रखके १८ जवान औरत १९ ममोला

२० हिरन २१ तीतर २२ साँड़ २३ तरफ २४ सियार २५ चीन्ह २६ लौचड़ी

२७ कौवा २८ उल्लू २९ रोजी ३० चाहना ३१ ॥

दो० जाकहँ सगुनहोहिं अस, औगर्वनै जेहि आस ।

अष्टोमहाँसिद्धि पंथहि, जस कबि कहा व्यास ॥

भयो पयानँ चला तब राजा । शंखनादँ योगिनकर बाजा ॥

कहिन आज कुञ्जथोर पयानाँ । काल्ह पयानँ दूर है जाना ॥

वह मिलानँ जो पहुँचै कोई । तब हम कहव पुरुष भल सोई ॥

है आगे परवतकी बाँटै । विषमँ पहाड़ अगमँ सठघाँटै ॥

विचविच कोह नदी औ नारा । ठाँवहिं ठाँव बैठि बटपारों ॥

हनुमँत केर सुनत पुनि हांका । वहिको पार होयको थाका ॥

असमन जानि सँभारहु आगू । अगवाँ केर होहु पछलागू ॥

दो० करहिं पयानँ भोरउठि, नितहिँ कोसदश जाहिं ।

पंथीँ पंथाँ जो चलहिं, ते कितरहँ औठाहिं ॥

करहु दृष्टि थिरँ होय बटाऊँ । आगू देखि धरहु भुँई पाऊँ ॥

योगिओवेँटँ भुँई परी भुलाय । कीमरि पंथँ चले न जाय ॥

पांयन पहिरलेहु सव पँवरीँ । काँट न चुभै न गडै अँकरोरी ॥

परी आयअववनखँडँ माहाँ । डंडों कारन बीच निबाहाँ ॥

सघनँ टाँखवन चहुँदिशँ फूला । बहुदुखमिलै वहाँकर भूला ॥

भाँखरजहाँसु छाँडहु पन्थीँ । हिलगम कोयनफारहु कन्थीँ ॥

दहिने विदरँ चँदेरीँ वायें । वहिकहँ होब बाँटँ दुइठायें ॥

दो० एक बाँट गई सिंहलै, दूसर लँक समीपँ ।

जाना १ कामिल २ राह ३-१०-२०-२५-३१-३५-३७ कूच ४ शंखकी  
आवाज़ ५ कूच तथा मौतका दिन ६ कूच दूर तथा क्लयामतका दिन ७  
मिलाना ८ जवाँमर्द ९ टेढ़ा ११ जहाँ कोई न पहुँचसके १२ जगह १३-३६  
राहलुटनेवाले १४ वन्दर १५ गुरु १६ कूच १७ हररोज़ १८ राहचलनेवाले १९  
निगाह २१ कायम २२ मुसाफ़िर २३ राह वतलानेवाला २४ खड़ाऊँ २६ जंगल  
२७ नाम जगह २८ गुंजान २९ चारोंतरफ़ ३० गुदड़ी ३२ नाम मुल्क ३३-३४  
जगह ३६ नाममुल्क तथा स्वर्ग ३८ नाम मुल्क तथा नरक ३९ बराबर ४० ॥

है आगे पंथ दो वनहिं, गवनबं केहिदीप ।

ततखन बोला सुआ सरेखा । अगर्वो सोई पंथ जेहिं देखा ॥

सोका उड़ै न जेहि तन पाखू । लैसोपलाशहि बोलै शाखू ॥

जस अंधा आंधीकर संगी । पंथ न पाव होय सहलंगी ॥

मुनिमति काजचहसि जो साजा । बीर्जानगर विजैगिरराजा ॥

पूंछा जहां कुण्ड औ गोला । तजि<sup>१</sup> वायें अंध्यार खटोला ॥

दाखिन दाहिने रहै तिलंगी । उत्तरमांफ होय करहंकटंगा ॥

मांभरतनेपुर सौह दुबारा । आस्खण्ड वे वायें पहारा ॥

दो० आगे वाउँ उड़ोसाँ, वायें देहिसु वाँट ।

दाहिनावरत लायके, उतर समुद्रकी घाट ॥

होत पर्याँ जाय दिनकेरौ । मिरगारन महिं कीन्ह वसेरा ॥

कुश सांठर भइ सूरि<sup>२</sup> सपेती । करवैट आय वनी सुईसेती ॥

क्याभिलीजसभूमि<sup>३</sup> गलीजा । चलिदसकोस ओसतनभीजा

ठाँव<sup>४</sup> ठाँव सब सोवहिं चला । राजाँ जागे आप अकेला ॥

जेहिके हिये<sup>५</sup> प्रेम रँग जामा । का तेहि लीदभूखविशरामाँ ॥

बन अंध्यार रयनि अंधियारी । भादौं बरन भयो अतिभारी ॥

किंगरी गहे हाथ बैरगी । पांचतन्त धुनिओही लागी ॥

दो० नयन लाग तेहि मारगै, पद्मावत जेहि दीप ।

जैसे स्वाति बूदकह, बन चातुकै जलसीप ॥

राह १-६-१६-३१ जाना २ तोता होशियार ३ राहवतानेवाला ४ नाम दरअत ५ भोलामाराहुआ ७ सलाह ८ नाम मुल्क ९ छोड़ना १० नाम मुक्काम तथा योग की क्रिया ११-१२-१३ नाम मुल्क तथा मुक्काम मतलब १४ नाम मुल्क १५ कूच १७ शामकेवक्त १८ जंगल तथा कबरिस्तान १९ तोशक और लिहाऊ २० तकिया २१ जमीन २२ जगह २३ रतनसेन मुराद परमेश्वर २४ दिल २५ आराम २६ रात २७ नाम बाजा २८ पांचतार २९ आँख ३० पपीहा ३२ ॥

मासके लाग चलत तेहिबाटां । उतरे जाय समुद्र की घाटा ॥

स्तनसेन भा योगी यती । सुनि भेटे आवा गजपती ॥

योगी आप कटक सब चेला । कौनद्वीप कहँ जाहहिखेलां ॥

भली आय सब मायां कीजै । पहुँनाँई कहँ आयसुँ दीजै ॥

सुनहु गजपती उतरँ हमारा । हम तुम एकै भाव निरारा ॥

सो तेहिकहँ जेहिमहँ यहभावा । जोनिराशँ तेहिलाङनशावां ॥

यही बहुत जो बोहित<sup>३</sup> पाऊँ । तुमते सिंहलद्वीप सिधाऊँ ॥

दो० जहां मोहिं निजजाना, कटक हों लिये बाँर ।

जो रेजियों तौ लै फिरों, मरौ तो वहकी बाँर ॥

गजपती कही शीशँ वरमांगा । इतनी बोल न होइहै खांगा ॥

यहि सब देउँ आज्ञा पै गढ़ी । फूल सोई जो महेश्वरँ चढ़ी ॥

पै गुसाई सो एक नवाँती । मारगँ कठिनँ जावकेहिभाँती<sup>३</sup> ॥

सात समुद्र असूक्त अपारा । मारहिं मगरमच्छ घड़ियारा ॥

उठै हिलोर न जाय सँभारी । भाँगहि कोइनिबहै व्योपारी ॥

तुम सुखया अपने घर राजा । एते दुख जो सहो केहिकाजा ॥

सिंहलद्वीप जाय सो कोई । हाथ लेहँ आपन जिब होई ॥

दो० खारि क्षीरँ दधि उँदधि सुराँ जलपुनिकिलँ किलाकूतँ ।

कोचदि नांघ समुद्रये सातों, है काकर असपूत ॥

गजपति यहिमन सकँती सेवा । पैजेहिप्रेम कहां तेहि जीवा ॥

जो पहिले शिरदेपगँ धरिये । मुये केरका मीचँ करिये ॥

एकमहीना १ राह २-२१ नाम राजा ३-६-१७ फौज ४-१४ जाना ५ मेहर-  
नानी ६ ज्याफत ७ हुफम ८ जवाब १० नाउममेद ११ जुफ्तान १२ नाच १३  
दरवाजा १५-१६ शिर १८ महादेवजी १६ अज्ञे करना २० मुशिकल २२  
फिसतरह २३ किस्मत २४ खारी २५ दूध २६ दही २७ मीठापानी २८ शराब  
२९ नाम समुद्र ३०-३१ साक्ती ३२ कदम ३३ मौत ३४ ॥

सुख संकल्प दुख सांभरं लीन्हा । तौ पयानं सिंहल कहँ कीन्हा ॥

भँवरजानि पै कमल पिरीती । जेहि महँ बिथा प्रेमकी वीती ॥

औ जें समुद्र प्रेमकर देखा । तें यहि समुद्र बूँदवर लेखा ॥

सातें समुद्र सतलीन्ह सँभारू । जो धरँती का गरू पहारू ॥

जो पै जीव बांध सत बेरा । परजिव जाय फिरै नहिं फेरा ॥

दो० रंगनाथ हौं जाकर, हाथ वही के नाथ ।

गँहै नाथ सो खींचै, फिरै न फेरे माथ ॥

प्रेम समुद्र जो अति अवगाहँ । जहाँ न वार न पार न थाहा ॥

जो वह समुद्र गाह यहि परे । जो अवगाहँ हंस होइ तरे ॥

हौं पद्मावत कर भिखमज्जा । दृष्टि न आव समुद्र औ गज्जा ॥

जेहिकारणं गै कांथर कंथौ । जहाँ सो मिलै जाउँ तेहि पंथौ ॥

अब यह समुद्र परो होय मरा । प्रेम मोर पानी के करौ ॥

घरभा कोइ कतहूँ लै जाऊँ । वहकी पंथं कोऊ धरखाऊँ ॥

असमन जान समुद्रमहँ पखौं । जोकोइखायवेगँ निसतँखौं ॥

दो० स्वर्ग शीर्षधर धरँती, हियौं साँ प्रेम समुन्द ।

नयनँ कौड़यौं होय रही, लैलै उठ तेहि बुन्द ॥

कँठिन बियोगँ योगदुखदाहँ । जन्मजरतहौं और न पाहू ॥

डरलज्जा तहँ दोउ गँवानी । देखै कछू न आग न पानी ॥

आग देखि वह आगें धावा । पानिदेखिवहसौहिं धसावा ॥

जस बावर न बुभाये बूभा । कौनभाति जायका सूभा ॥

तोशा १ कूच २ वरावर ३ खारी, मीठा, पानी, दही, दूध, शराब, किल-

किलाकूत ये सात समुद्र हैं ४ जमीन ५ पकड़ना ६ गहिरा ७-८ निगाह ९

घास्ते १० गरदन ११ गुदड़ी और कण्ठा १२ राह १३-१५ मानिंद १४ जल्द

१६ छूटजाना १७ आसमान १८ शिर १९ जमीन २० दिल २१ आँख २२ नाम

जानवर २३ मुष्किल २४ जुदाई २५ जलना २६ सामने २७ किसतरह २८ ॥

मगर मच्छ डर मने न लेखा । आपहिं वहाँ पारभा देखा ॥

औ नहिं खाय वह सिंहसिंदूरी । काठै जाहि अधिक यह भूरी ॥

काया साया सङ्गन आधी । जेहि जिव सौपा सोई साथी ॥

दो० जो कुछ देव अहां सङ्ग, दान दीन्ह संसार ।

काजानी केहिकी सत, देई उतारै पार ॥

धन जीवनँ औ ताकर जिया । ऊँच जगत् महि जाकरदिया ॥

दियासो सब जपतप उपराहीं । दिया बराबर कुछ जगं नाही ॥

एक दियतें दशगुन लाहा । दिया देखि सबको मुख जाहा ॥

दिया करे आगे उजियारा । जहां न दिया तहां अधियारा ॥

दियामंदिरं निशि करे उजोरा । दिया नाहिं घरमूसहिं चोरा ॥

हांतिम करणँ दिया जो सिखा । दिया रहा धर्मन महँ लिखा ॥

दिया सो काज दोहूँ जग आवा । यहां जो दिया वहां सब पावा ॥

दो० निर्मल पंथं कीन्ह तेहि, जेहिरे दिया कुछहाथ ।

कुछ नहिं कोइ लैजायही, दिया जाय पै साथ ॥

खरडग्यारहवां बोहितखरड ॥

संत नडोल देखा गजपती । राजादत्त संतं दोनों सती ॥

आपन नाहिं कर्यां पी कथा । जीवदीन्ह अंगमनं तेहि पंथां ॥

निश्चै चला भर्म डर खोय । साहसैं जहां सिद्ध तहँ होय ॥

निश्चै चला आंडिकै राजू । बोहितं दीन्ह दीन्ह सब साँजू ॥

चढा वेगँ औ बोहितं पेली । धन वह पुरुषं प्रेमपंथं खेली ॥

शेरलाल १ क्यादा २ वदन ३-२१ दुनियां दोलत ४ रुपया ५ ईश्वर ६

झिन्दगानी ७ दुनियां ८-१० ऊपर ११ मकान ११ रात १२ नाम सखी १३-१४

पाकसाफ १५ राह १६-२३-३१ ईमान १७ नाम राजा १८ सखावत १९

सच्चाई २० पहिले २१ वहादुर २४ कामिल २५ नाच २६ सामान २७ जखद २८

जहाज २९ मर्द ३० ॥



प्रेम पथं जो पहुँचै पारा । बहुरै न आय मिलै यहि धारा ॥

तेहि पावा उत्तमै कैलासू । जहां न मीचै सदा सुख वासू ॥

दो० यहि जीवनकी आशका, जैसे स्वप्न तिल आध ।

मुहम्मद जीतहि जो मुये, ते पूरुष सिध साध ॥

जस दिनरयानि चली गजै भांती । बोहित चली समुद्रकी पांती ॥

धावहि बोहित मन उपराहीं । सहस्र कोस एकपलमहँ जाहीं ॥

समुद्र अपार स्वर्ग जनुलागा । स्वर्ग नखाले गिनै वैरागा ॥

ततखनै एकचालहँ दिखराये । जनु धौलागिरि पर्वतआये ॥

उठै हिलोर जो चालहँ निराँजे । लहर अकाशलागि भुँवाजे ॥

राजा सिते कुँवर सब कहै । अस अस मच्छ समुद्रमहँ अहँ ॥

तेहिरे पथं हम चाहत गवनाँ । होहुसचेत बहुरै नहिँ अचना ॥

दो० गुरु हमार तुम राजा, हम चेला तुम नाथ ।

जहां पाउँ गुरु राखै, चेला राखै माथ ॥

केवटै हँसे सुनत को बंजाँ । समुद्र न जानि कुवाँकर मंजाँ ॥

यहि तो चालहँ न लागै कोहू । का कहियो जब देखव रोहू ॥

सो अबहीं तुम देखे नाही । जेहि मुख ऐसे सहस्र समाहीं ॥

राजपंखेँ तेहिपर मँडराहीं । सहस्र कोस तिनकी परछाहीं ॥

तेवै मच्छ ठौर गँहि लेहीं । शावकै मुख चाराले देहीं ॥

गरजे गगनै पंख जो खोलहिं । डोले समुद्र डहन जो डोलहिं ॥

तँहां न सूर्य न चांद असूभा । चढै सोई जेहि अगमनै बूभा ॥

राह १-२०-३४ लौटना २-२३ मिट्टी ३ वैकुण्ठ ४ मौत ५ मर्द ६ रात ७

हाथी ८ नाव ९-१० हज़ार ११-२८-३० आसमान १२-३३ ऊँचा १३ नीचा

१४ यकायक १५ नाम जानवर १६-१८-२७ नाम पहाड़ १७ हिलना १६

जाना २१ होशियार २२ मल्लाह २४ वातचीत २५ मेढक २६ सीसुर्य २६ पक

डना ३१ बच्चा ३२ तथा परमेश्वरकी दूरग्वेशी ३३ ॥

दो० दशमहँ एक जायकोइ, कर्म धर्म सत नेम ।

बोहित पार होइ जो, तौहो कुशल औ खेम ॥ (१२०)

वात कहत भइ देश गुहारी । केवटहि चाल्हँ समुद्रमहँ मारी ॥

हस्ती लाय सिष्ट सब ढीला । दौड़ आय इक चाल्हँ लीला ॥

केवट लागिलागि सब बली । फिरैन चाल्हँ जाय बहिचली ॥

बोहित सहसं जाहिं चहुँओरा । होयकलोल जाहिं तरि बोरा ॥

मुनिके आप चढासैं राजा । औ सबलोग देशमिलबाजाँ ॥

भालवांस खांडे बहु परहीं । जान पखाल बाजके चढहीं ॥

चारालील जो माछर बाभी । कहां जाय जो जाकर खांभी ॥

दो० माछरकर भूखहि हृदयं, तेहि साधे विप वान ।

सबहिं पहुँचकै मारा, चाल्हँ तजाँ परान ॥ (१२१)

जस धौलागिरि परबत होइ । तेही भांति उतरान्यो सोई ॥

सबै देश मिलि तैरहिं आना । लिये कुल्हाड़ी लोग जहाना ॥

जनु परबत कहँ लागहि चांटी । लेगये मांस रही सब कांटी ॥

मांजर परी कोसदस बेंडी । मांजरिकस जस श्वेत बेंडी ॥

नयनं सोजानिकोटकी पँवरे । कितअसंगहे फिरतेहि भँवरे ॥

रतनसेन से संघी कहैं । अस अस मच्छ समुद्र महँ अहैं ॥

राजातुमचाहो तहिं गवनाँ । होइके सजगँ बहुरि नहिं अबना ॥

दो० तुम राजा औ गुरु, हम सेवक औ चेर ।

कीन्ह चहैं सब आयसुँ, अब गवनी तहि फेर ॥ (१२२)

नाच १-११ खैरियत २ नाखुदा अर्थात् मल्लाह ३-८ नाम जानवर  
४-७-१०-२२ हाथी ५ जंजीर ६ ज्वरदस्त ६ हज़ार १२ सैर १३ पानी के  
नीचे १४ फ़ौज १५ पहुँचना १६ तलवार १७ नासजानना १८ खुराक १९  
पेट २० ज़हर २१ छोड़ना २२ नाम पहाड़ २३ चूटी २४ सफ़ेद २६ आँख २७  
किलेका दरवाज़ा २८ पकड़ना २९ जाना ३०-३५ होशियार ३१ लौटना ३२  
गुलाम ३३ हुकम ३४ ॥

राजें कहा कीन्ह मो प्रेमा । जहां प्रेम तहँ कूशल क्षेमा ॥  
 तुम खेवो जो खेवहि पारहिं । जैसे आप तरहिं मोहिं तारहिं ॥  
 मोहिंकुशल करशोचन ओता । कुशल होतजोजन्मनहोता ॥  
 धर्ती स्वर्ग जाट पर दोऊ । जो यहिविच जिव राखनकोऊ ॥  
 हौं अब कुशल एक पै मांगौं । प्रेमपंथ सतवांधि न खींगौं ॥  
 जो सतहिये तो पंथहि दिया । समुद्रन डरै देखि मरजिया ॥  
 तहँलग हेरौं समुद्र द्विदोरौं । जहँलग रतन पदारथ जोरौं ॥

दो० सप्तपताल खोजके, काटौं वेद गौरंथ ।

सातसमुद्र चढ़ि धावौं, पद्मावत जेहि पंथ ॥

खण्ड बारहवां सात समुद्र खण्ड ॥

सायं तरे हिये सतपूरा । जो जीसतें कार्यर पुनि सूरा ॥  
 तहँ सब बोहित पूर चलाई । जहँ सतपवन पंख जनुलाई ॥  
 सतसौथी सतगुरु हम वारू । सत्त गहीले लावे पारू ॥  
 सती नाक सब आगू पाळू । जहँ जहँ मगरमच्छ औ काळू ॥  
 उठै लहर जनु उठै पहारा । चढ़ै स्वर्ग औ परै पतारा ॥  
 डोलहिं बोहित लहरें खाई । सहस्र कोस इक पलमहँ जाई ॥  
 राजें सो सत हिरदय बांधा । जेहि सत टेक करगुर कांधा ॥

दो० खारिसमुद्र सब नांधा, आये समुद्र जहँ क्षीर ।

भिले समुद्र वै सातौं, वेहरै बेहर नीरै ॥

क्षीरसमुद्र का बरैणों नीरू । श्वेत स्वरूप पियत जस क्षीरू ॥

छैरिचत १-२-३ जमीन ४ आसमान ५-२३ चक्रीकापिल ६ राह ७-१०-

१५ कमी दल ६-१७-२६ देखना ११ लाल जवाहिर तथा पद्मावत १२

सात पाताल १३ पोथी १४ बहादुर १६ सचाई १८ नामद १६ नाव २०

हवा २१ मद्दगार २२ जहाज २४ हजार २५ दूध २७-३२ अलग २८ पानी

२६ तारीफ ३० संकट ३१ ॥

उलटहि माणिक मोती हीरा । दर्ब देखि मन होय न धीरा ॥

मनो अनचाह दर्ब औ भोगू । पंथ भुलाय विनाशै योगू ॥

योगी मनहि उही रिस मारहि । दर्ब हाथकै समुद्र पयारहि ॥

दर्ब लेइ जो इस्थिर राजा । जो योगी तेहिके केहि काजा ॥

पंथी पंथे दर्ब रिपु होई । ठग बटपार चोर सँग सोई ॥

पंथी सोई दर्ब सो रूसे । दर्ब समेट बहुत अस मूसे ॥

दो० क्षीरसमुद्र सब नांघा, आये समुद्रदधि माहि ।

जोहै पंथ के बावर, नातेहि धूप न ब्राहि ॥

दधि समुद्र देखत तसुदहो । प्रमके लुब्धे दग्धे पैसहा ॥

प्रेम जो डाढो धन वह जाव । दधि जमाय मथिकादु घ्रीव ॥

दधि इकबूंदजामिसवक्षीर । कांजी बूंदविनशिहोयनीर ॥

स्वांस डाढ मनमथनी गाढी । हिये ज्योति विनफूटिनसौढी ॥

जेहिजियप्रेम चंदनतेहिआगे । प्रेमभवनै फिर डर नहिभागे ॥

प्रेमकी आग जरे जो कोय । ताकर दुख नहि मिथ्यो होय ॥

जो जानहि सत आपहिजारा । नास्तहिये सत करेन पारा ॥

दो० दधि समुद्र पुनिपारभे, प्रेमहि कहां संभार ।

भावे पानी शिरपरै, भावे परहि अंगार ॥

आय उदधिजल समुद्रअपारा । धृती स्वर्ग जरे तेहि भारा ॥

आग जो उपजी ओही समुन्दा । लंका जरी वही एकबुन्दा ॥

धिरह जो उपजा ओही काढा । खनन बुभाय जाय तनबाढा ॥

राह १-५-१० तैरना २ कायम ३ मुसाफिर ४ राह लूटनेवाले ५ राह

चलनेवाले ७ अर्थात् माल वा दौलत पास अपने न राखे न दही ६-१६-

१७-२८ दीवाने ११ जलताहुआ १२ आशक १३ आंच १४ औटाहुआ १५

दूध १८ खटाई १६ पानी २० रस्सी २१ दिल २२-२७ बालाई २३ मकान २४

खराब २५ कमहिमत २६ नामसमुद्र २६ जमीन ३० आसमान ३१ पैदा

होना ३२-३३ ॥

जेहिसो बिरह तोहि आगन दीठी । सौहिं जरो फिर देहि न पीठी ॥

जगमहँ कठिन खड्ग की धारा । तेहिते अधिक बिरहकी भारा ॥

अगम पथ जो ऐस न होई । साधु कहै पावै सब कोई ॥

तेहि समुद्र महँ राजा परा । जरा चहै पै रोवँ न जरा ॥

दो० तलफै तेल कराह जिमि, इमि तलफै सबनीर ।

वहि जो मलयगिरि प्रेमका, सुबुन्दसमुद्र शरीर ॥

सुरी समुद्र पुनि राजा आवा । महुवामधुँ छाती देखरावा ॥

जो तेहि पिये सो भांवर लेय । शीशं फिरै पथ पैगँ न देय ॥

प्रेमसुरी जेहिके जिय माहां । किंतु बैठे महुवा की छाहां ॥

गुड़की पास दाखँ रस रसा । बेरी बेर मार मन गसाँ ॥

बिरहिन दग्धकीन्ह तन भौंटे । हाड़ जराय दीन्ह जस काटे ॥

नयन नीरुँ सों पोतै क्यौं । तस मधुँ चुवै बरै जस दिया ॥

बिरह सुरांगे भूजै माँसू । गिर गिर पडै रक्त के आँसू ॥

दो० मुहम्मद जो प्रेमका, हिये दीप तेहि याख ।

शीशं न देइपतंग ज्यों, तबलग चाखन वाख ॥

पुनिकिलकिलौ समुद्रमहँ आई । गा धीरज देखत डर खाई ॥

भा किलकिल अस उठै हिलोरा । जनु अकाश टूटै चहुँ ओरा ॥

उठै लहर परबत की नाई । फिर आवै योजन लखताई ॥

धर्तीलेत स्वर्ग लहि बाढा । सकल समुद्र जानो भाठाढा ॥

नीरुँ होय तरि ऊपर सोई । महाँ अरम्भ समुद्रमहँ होई ॥

देखना १ सामने २ दुनियां ३ मुखिल ४ तलवार ५ ज्यादा ६ जहां कोई  
न पहुँचसके ७ राह ८-१६ जिसतरह ९ इसतरह १० पानी ११ चन्दन १२  
शराब १३-१४-१८-२८ शिर १५ क्रम १७ क्यौंकर १६ अंगूर २० बेर  
नाम मेवा फसली २१ लेना २२ गर्म २३ भट्टी २४ आंख २५ आंसू २६ बदन  
२७ सीख २८ खून ३० दिल ३१-३२ पांखी ३३ नामसमुद्र ३४ आसमान ३५  
सब ३६ पानी ३७ शेर ३८ ॥

फिरत नीर योजन लख ताका । जैसे फिर कुम्हार का चाका ॥

भापरलौ नराना जबहीं । मरै सो ताकहँ परलौ तबहीं ॥

दो० गये औसान सबनके, देख समुद्रकी बाढ़ ।

नेरिहोत जनुलीले, रहा नयन अस काढ़ ॥

हीरामन राजासों बोला । यही समुद्र आय सतडोलां ॥

सिंहलद्वीप जो नाहि निबाहू । यही ठाँउ साँकर सबकाहू ॥

यहिकिलकिल अससमुद्रगंभीरुं । जेहिगुनहोयसोपावैतीरुं ॥

यही समुद्रपथ मँभधारा । खाँडे की असेरख हजारा ॥

तीस सहस कोसनकी बाँटा । अस साँकर चलि सकैन चाँटा ॥

खाँडे चाहि पैन पैनाई । वारि चाहि पातर पतराई ॥

वही पथ सब काहू जाना । हाय दुसरे विश्वास नदानां ॥

दो० मरन जियन यहि पथहि, येही आशँ निराशँ ।

पड़ा सो गयो पतालहि, तरा सो गा कैलाशँ ॥

राजे दीन्ह कटक कहँ वीरा । सपुरुष होहु करहु मनधीरा ॥

ठाकुर जेहिक शूर भाँ कोई । कटक शूर पुनि आपहि होई ॥

जौलहि सतीन जिय सतबांधा । तौलहि देइ कहार न कांधा ॥

प्रेम समुद्र मँहँ बांधा बेरा । यहि सब समुद्रबुन्द जेहि केरा ॥

नाहीं स्वर्ग न चाहौं राजू । ना मोहि नरक सितें कुछकाजू ॥

चाहौं वह कर दर्शन पावा । जेहिमो आन प्रेमपथ लावा ॥

काठ काहि गाढ़ काँ दीला । बूढ़न समुद्र मगर नहि लीला ॥

चारलाख कोस १ कयामत २-३ हवास ४ आंख ५ नामतोता ६ चढ़

हवास ७ जगह ८ मुशिकल ९ नाम समुद्र १० गहरा ११ किनारा १२ राह

१३-१५-१६-३० धार १४ तलवार १६ जयादा १७ पानी १८ नादान २०

रास्ता २१ उम्मेद २२ नाउम्मेद २३ नाम वैकुण्ठ २४-२६ फौज २५ कयाम

२६ बहादुर २७-२८ ॥

दो० कान्हँ समुद्रधस लीन्हँसि, भा पीछे सब कोय ।

कोइ काहू न सँभारे, आपन आपन होय ॥

कोइबोहितेँ जस पवन उड़ाहीं । कोइ चमकवीजेँ परजाहीं ॥

कोइ भल जस धाव तुषारूँ । कोइ जैस वैल गरियारूँ ॥

कोइ हरूँ जानि रथ हांका । कोइ गरू पहाड़भा थाका ॥

कोइ रंगहिं जानहु चांटी । कोइ टूटि होहिं सर माटी ॥

कोइ खाय पवन कर भोला । कोइ गिरहिं पात ज्यों डोला ॥

कोइ परहिं भँवर जल माहीं । फिरतरहिं कोइदियेन बाहीं ॥

राजा कर भा अगमन खेवा । खेवकेँ आगे सुवा परेवा ॥

दो० कोइ दिन मिला सबेरें, कोइ आवा पछरात ।

जाकर हुत जस साजूँ, सो उतरा तेहिभांत ॥

सतें समुद्र मानसरें आये । सत जो कीन्ह सहसैं सिधिपाये ॥

देखि मानसरें रूप मुहावा । हियँ हुलासँ पुरइनेँ होयझावा ॥

गाअधियार रयनेँ मसिँ बूटी । भा भिनसार किरनरविँ फूटी ॥

अस्त अस्तें सबसाथी बोले । अन्ध जो अहे नयनेँ विधिँ खोले ॥

कमल बिकसैं तसबेहँसी देहीं । भँवर दरश होयहोयरसलेहीं ॥

हँसहिं हंस औ करहिं कुरेराँ । चुनहिं रतनेँ मुक्ताहलँ हेरा ॥

जो अस आवसाधि तपयोगू । पूजी आस मानरस भोगू ॥

दो० भँवर जो मसैं मानसरें, लीन्ह कमलरस आय ।

घुनजो हियाँवेँ न कैसका, भूर काठ तस खाय ॥

श्रीकृष्णचन्द्रजी १ नाव २ हवा ३-६ बिजुली ४ घोड़ा ५ भारी ६ हलकी

७ चूटी ८ आगे १० मल्लाह ११ सामान १२ नाम तालाब जिसमें हंस

रहते हैं १३-१५ हजारतरह की आराम १४ दिल १६ खुश १७ कमल १८

रात १९ सियाही २० सूर्य २१ बाहवाह २२ आंख २३ ईश्वर २४ खिलना २५-

२६ कुल्लेकरना २७ जवाहिर जिसकी पैदाइश खानिसे होती है २८ मोती २९

हिम्मत बांधना ३० नामतालाब ३१ दिलेरी करना ३२ ॥

खण्ड तेरहवां सातसमुद्रपार भाव  
सिंहलद्वीपखण्ड ॥

पूछा राजें कहु गुर सुवा । न जनों आज कहाँ दिन उवा ॥

पवन बास शीतल लै आवा । कयाँ दहत चंदनजनुलावा ॥

कवहुँन ऐसोजुडान शरीरु । पडा अगिनमहँ जानहु नीरु ॥

निकसत आव किरनरबि रेखा । तिमिरगईनिरमल जगं देखा ॥

उठै मेघ जस जानहु आगे । चमके बीज गगन परलागे ॥

तेहिऊपरजनुशशि परकासी । औसोगचीचहँ भयोनिरासा ॥

और नखतचहुँदिश उजियारी । ठावहिठाँव दीप असबारी ॥

दो० और दखिनदिश नेरे, कंचन मेरुँ दिखाउ ।

जैसे वसंत ऋतु आवे, तैसिबास जगं आउ ॥

तुई राजा जस विक्रम आदी । तुई हरिचंद बैने सतबोदी ॥

गोपिचंद तुई जीता योगी । औभरथरीनपूज बियोगी ॥

गोरख सिद्ध दीन्ह तुहिहाथू । तारी गुरु सुखन्दर नाथू ॥

जीति प्रेम तुई भूमि अकाशू । दृष्टि परा सिंहल कैलाशू ॥

वै जो मेघ गहँ लाग अकासा । बजरी कटी कोट चहुँपासा ॥

और नखत वेहिके चहुँपासा । सब रानिन क्री अहँ उडासा ॥

तेहिपरशशि जोगब्रह्महि भारा राजमंदिर सोने नगजरा ॥

दो० गगन सरोवर सहस्र कमल, कुमुद तराई पास ।

हवा १ ठंडी २ बदन ३-५ जलना ४ पानी ६ सूर्य ७ अधियारा ८  
पाक साफ ९ दुनियाँ १०-२० विजुली ११ आसमान १२-३७ चांद १३-३५  
रोशनी १४ छोटे नखत १५-३६ चारों तरफ १६ हरजगह १७ सोना १८ नाम  
पहाड़ १९ राजाविक्रमाजीत २१ नाम राजा २२-२४-२५ सब बोलनेवाला २३  
दुखी २६ नाम योगी २७-२८ जमीन २९ तिराह ३० किला ३१-३३ बुज ३२  
महल ३४ तालाब ३५ हजार ३६ कोकावेली ४० नखत ४१ ॥



तुई रवि उवा भँवर होय, पवन मिला ले वास ॥  
 सो गढ़ देखि गगन ते ऊंचा । नयन देखि कर ज्ञानन पहुँचा ॥  
 बिजुरी चक्र फिरि चहुँ फेरे । औ जमकात फिरहि यम घेरे ॥  
 धार्य जो बाजा किय मनसाधा । मारा चक्र भयो दुइ आधा ॥  
 चांद सूर्य औ नखत तराई । तेहि दर अंतरिक्ष फिरि सर्वाई ॥  
 पवन जाय तहँ पहुँचा चहा । मारा तैसो लोटि भुँई रहा ॥  
 अग्नि उठै जरिबुभे नियानी । धुवाँ उठा उठि बीच मिलाना ॥  
 पानि उठा उठि जाय न छुवा । फिरा रोय आय भुँई चुवा ॥  
 दो० रावन चहा सौहि के हेरो । उतर दशोगये माथ ।  
 शंकर धरा ललाटे भुँई । और को योगी नाथ ॥  
 तहां देख पद्मावत रामी । भँवर न जाय न पखे नामा ॥  
 अबसिखे एक देउ तुहि योगी । पहिले दरशन होय तो भोगी ॥  
 कंचन मेरु दिखावे जहां । महादेव कर मण्डफ तहां ॥  
 वह खखण्ड जस परवत मेरु । मेरुहि लाग होय तस फेरु ॥  
 माघमास पाछल पख लागे । श्री पंचमी होय यहि आगे ॥  
 उधरे महादेव कर वारु । पूजन जाय सकल संसारु ॥  
 पद्मावत पुनि पूजन आई । है है वह दिन दृष्टि मिलाई ॥  
 दो० तुम गवनो वह मण्डफ कहँ । हौ पद्मावत पास ।  
 पूजे आय बसन्त जो पूजे मन की आस ॥  
 राजे कहा दरश जो पाऊँ । पर्वत काहि गगन कहँ धाऊँ ॥

सूर्य १ हवा २ आसमान ३-२६ आंख ४ बिजुली ५ राँद ६ यमराज ७

दौड़ना ८ पहुँचना ९ बीचोबीच १० सब ११-२३ आखिर १२ सामने १३ देखना १४

शिर १५ उड़नेवाले जानवर १६ सलाह १७ सोने का पहाड़ १८-२०-२१

बीहड़ १६ दरवाजा २२ दीवार २४ जाना २५ ॥

जेहि परबतपर दरशन लीन्हा । शिरसौ चढी पायँकाकीन्हा ॥

मोहिं सो भावे ऊँचे ठाँऊँ । ऊँचे लेवो प्रीतिम नाऊँ ॥

पुरुष चाहिये ऊँच हियाऊँ । दिन दिन ऊँचे राखे पाँऊँ ॥

सदा ऊँच पैसेये बारूँ । ऊँचे से कीजे ब्योहारूँ ॥

ऊँचे चढे ऊँच खँड सूझा । ऊँचे पास ऊँच मति बूझा ॥

ऊँच सङ्ग सङ्गत नितं कीजे । ऊँचे लाय जीव बलि दीजे ॥

दो० दिन दिन ऊँचहोय सो जेहि ऊँचे पर जाव ।

ऊँच चढे जो खसिपडे, ऊँच न छाँडे काव ॥

नीच संग नितं होय निचई । जैसे हंस काग की नाई ॥

नीच से कबहुँ न होय भलाई । नीचहिसों पर होय मुर्दाई ॥

नीच न कबहुँ जिय महँ ताँके । नीच नही कबहुँ मुखभाँखे ॥

नीच न कबहुँ आवे काजा । नीचहि अहे न एको लाजा ॥

नीचेका संग कबहुँ न कीजे । नीचे पंथ पाँउ नहि दीजे ॥

नीचे नहि कीजे ब्योहारूँ । नीच न कबहुँ दीजे भारूँ ॥

नीचे केर न कीजे साथा । नीचगहे कुछ आवि न हाथा ॥

दो० होय नीच नहि कबहुँ, जेहि ऊँचे मन भाव ।

नीच ऊँचते हँसी, नीचे केर स्वभावी ॥

हीरामन देवर्षी कहानी । चला जहाँ पद्मावत रानी ॥

राजा चला सुँवरि सो लता । परबतकहँ जो चला परवता ॥

का परवत चढि देखै राजा । ऊँच मण्डफ सीने सबसार्जा ॥

अमृत फर सबलागि अपूरे । औ तहँलागि सजीवनमूरे ॥

जगह १ मर्द २ हिम्मत ३ दरवाजा ४ हमेशा ५-७ कुर्बान ६ गुमनामी ७  
 श्यालकरना ८ मुँहसे बोलना ९ राह ११ बोझा १२ पकड़ना १३ नामतोता  
 १४ कौल १५ घन १६ तोता १७ सामान १८ नामबूदी १९ ॥

चौमुख मण्डफ चहुँ केवारा । बैठे देवता चहुँ दुवारा ॥

भीतर मण्डफ चारखम्भ लागे । जेहि वे छुवे पाप तेहि भागे ॥

शंख घंट निते बाजहिं सोई । औ बहु होम जाप तहँ होई ॥

दो० महादेव कर मण्डफ, सकल यात्रा आव ।

जस इच्छामन जेहिकी, सो तैसो फल पाव ॥

खण्ड चौदहवां गवन मण्डफ

खण्ड राजा रतनसेन ॥

राजां बावर विरह वियोगी । चेला सहसै तीस सँग योगी ॥

पद्मावत की दरशन आसा । दरदवतकीन्ह मण्डफचहुँपासा ॥

पूर्वद्वार होयके शिरनावा । नावतशीशं देव पुनि आवा ॥

नमो नमो नारायण देवा । कामे योग सकौं के सेवा ॥

तुँ दयालु सबके उपरीहीं । सेवाके आशीं तुहिनाहीं ॥

नामोहिं गुन नजीभ रसवाता । तुँ दयालु गुन निरगुन दाता ॥

पुखहु मोर दरश की आसा । हौं मारगं जो करौ श्वासा ॥

दो० तेहि विधिविनय न जान्यो, जेहि विधि अस्तुति तौर ।

कर सुदृष्टि औ कृपा, इच्छा पूजै मोर ॥

के अस्तुति जो बहुत मनावा । शब्द कोटिमण्डफमहँ आवा ॥

मातृष प्रेम भयो बैकुण्ठी । नाहत काहि छारं एकमूठी ॥

प्रेमहि माहि विरह रसरसा । प्रेमके घर मधु अमृतवसा ॥

नष्टे धाय जो मरै तो काहा । सतजो करै बैठे तेहिलाहा ॥

एकबार जो मन दै सेवा । सेवहि फल प्रसन्न है देवा ॥

चार १ हमेशा २ सब ३ दुखी ४ हजार ५ दरवाजा ६ शिर ७ खिदमत ८

दया करनेवाला ९-१३ ऊपर १० उम्मेद ११ हुनर १२ दाना १४ नादान १५

अर्थात् उसी तरह का दम बदम दूड़नेवाला हूँ १६ तारीफ १७ निगाह

अच्छी १८ आवाज़ १९ माटी २० शराब २१ बदराह २२ फ़ायदा २३ खुश २४ ॥

सुनिके शब्द मण्डफ भंकारा । बैठो आय पुरब के द्वारा ॥

पिंडे चढ़ाय छार चित आंटी । माटी होय अन्त जो माटी ॥

दो० माटी मोल न कछुलहे, औ माटी सब मोल ।

दृष्टि जो माटी सो करै, माटी होय अमोल ॥

बैठि सिंह बाला होय तर्पा । पद्मावत पद्मावत जपा ॥

दृष्टि समाधि वही सो लगी । जेहि दरशन कारण बैरागी ॥

किंगरी गँहे वज्रि भूरी । भोर सांफ सुनिके नित पूरी ॥

कन्था जै अग्नि जनुलाये । बिरहढँडोरं जरत न बुझाये ॥

नयनरात निशि मारग जागे । चूषे चकोरजानु शैशिलामे ॥

कुण्डलगँहे शीश भुइलावा । पांवर होउं जहां वैपावा ॥

जटा छोरके वारं वहारों । जेहिपथ आवशीश तहँवारों ॥

दो० चारहुचकं फिरेमनखोजत, डंडं नरहंधिरं वार ।

होयके भस्मपवन संगधाऊं, जहांसो प्रानअधार ॥

पद्मावत तहँ योग संयोगा । परी प्रेमवश गँहे वियोगों ॥

नींद न परी रयन जो आवे । सेजकेवांच जानु कोइलावे ॥

दँहै चन्द औ चन्दनचौरुं । दग्ध करै तन बिरहगंभीरुं ॥

कल्पसमान रयनही वादी । तिलतिलमरुयुगयुग परगादी ॥

गँहे वीनमगं रयन विहाये । शशिबाहन नित रहै उनाये ॥

पुनि धुनि संग औरही लागे । ऐसी बिधा रयन सब जागे ॥

आवाज़ १ वदन २ विभूति ३ निगाह ४-५ घास्ते ६ पकड़ा ७-१६-३६  
हररोज ८ गुदड़ी ९ जंगल १० आंखलाल ११ रात १२-२६ राह १३-२०  
आंख १४ चांद १५ शिर १७ खड़ाऊं १८ दरवाजा १९ न्योछावर २१ चारों  
तरफ २२ घड़ी २३ क्रायम २४ हवा २५ अर्थात् फकीरीका हाल २६ लेना २७  
दुख २८ जलना ३०-३२ कपड़ा ३१ भारी ३३ बराबर ३४ तिलके बराबर  
कम और करन से ज्यादा ३५ पकड़ा ३६ शायद ३७ आखिर ३८ हिरन  
चांद के रथका ३९ हमेशा ४० आवाज़ ४१ ॥

कहां सो भँवर कमल रसलेवा । आय परीहोय घरन परेवा ॥

दो० सो धन विरहपतंग भइ, जरा चहै तेहि दीप ।

कतैन आवभंग होय, को चन्दन तन लीप ॥

परी विरह बन जानौ घेरी । अगम अमूम जहां लग हेरी ॥

चतुरदिशा चितवे जनु भूले । सो बन कौन जो मालति फूले ॥

कमल भँवर ओही बन पावे । कोमिलाय तनतपन बुभावे ॥

अंग अंग अस कमल शरीरा । हिय भा पियर प्रेम की पीरा ॥

चही दरशरवि कीन्हविकासू । भँवरदृष्टि मनलाग अकामू ॥

पूछे धाय बोरि कहु वाता । तुइजस कमल करी रंगराता ॥

केसरबन रंग भा तोरा । मानहुँ मनहि भयो कुछ फोरा ॥

दो० पवन न पावे संचरी, भँवर तेहो नहि बैठि ।

भूलकुरंगिन कस भई, जानु सिंह तुइ डीठि ॥

धाय सिंह धर खात्यों भारी । कीतसँ रहत अहे जसवारी ॥

जो बनसुनो कि नवल वसन्ता । तेहिन परा हस्तमै मन्ता ॥

अब जोबन बारी को राखा । कुञ्जर विरहविधा से शाखा ॥

मै जानो जातन रस भोगू । जोवनकठिन सतापवियोगू ॥

जोबन गरुआ पेल पहारू । सहि न जाय जोवनकर भारू ॥

जोबन अस मनमत्तै न कोई । नवे हस्तै जो आंकुश होई ॥

जोबन भरि भादों जस गङ्गा । लहरें देइ समांय न अङ्गा ॥

दो० पखौ अथाह धायहौ, जोवन उदधिगँभीर ॥

कवूतर १ पद्मावत २ खाविन्द ३ मुधिकल ४-२२ देखना ५ दिल ६ सूर्य ७  
खिलना ८ निगाह ९ लौड़ी १० लड़की ११-२० लाल १२ पीला १३  
हिरनी १४ शेर १५ शेर ने क्या मारा है १६ अर्थात् लड़कई में कैसी  
थी १७ नया १८ हाथी मस्त १९-२१-२६ दुख २३ वीर २४ मस्त २५  
समुद्र गहरा २७ ॥

तहँ चितवों चारहुदिशः को गँहि लावे तीर ।

पद्गावत तुइ समुद्र सयानी । तुइ सर समुद्र न पूजी रानी ॥

नदी समाय समुद्र महँ आई । समुद्रडाल कहु कहां समाई ॥

अवहीं कमलकरी हिये तोरा । अइहै भँवर जो तोकहँ जोरा ॥

जोवन तुरी हाथ गहि लीजे । जहां जाय तहँ जाय न दीजे ॥

जोवन जोर माँते गज अहे । गहहु ज्ञान अंकुश जिमि रहे ॥

अवहिं बार तुइ प्रेम नखेला । काजानिस कस होय दहेलां ॥

गगन दृष्टि करपाय तराहीं । सूर्य देखकर आवत नाहीं ॥

दो० जव लग पीउ मिले तुहि, साधि प्रेमकी पीर ।

जैसे सीप स्वातिकहँ, तपै समुद्र मँक नीर ॥

दहत धायँ जोवन औ जीव । जानहु परा अगिनिमहँ घीव ॥

करवट सहों होत दुइ आधा । सही न जाय विरहकी दाधा ॥

विरह समुद्र विपहर अस भारा । भँवर मेल जिवलहरनमारा ॥

विरह नाग होय शिर चढडसा । वही अगिन चन्दनमहँ बसा ॥

जोवन पंखी विरह बियाँधू । केहरि भयो कुरङ्गिनँ खाँधू ॥

कनक पाँनि कित जोवनकीन्हा । औटनकठिनँ विरहवहदीन्हा

जोवनजलहि विरहमाँसि छुवा । भूलहि भँवर फिरहिं भासुवाँ ॥

दो० जोवन चन्द उवाजस, विरह भयो संग राहु ॥

घरतहि घरत खीनँ भय, कहेन पारो काहु ॥ (१७२)

नयनँ जो चक्र फिरे चहुँओरा । चरची धायँ समाय न कोरा ॥

साजना

चारों तरफ १ पकड़ना २ किनारा ३ बराबर ४ दिल ५ घोड़ा ६ जवानी  
७ हाथी मस्त ८ लड़की ९ मारी १० आसमान ११ नजर १२ बीच १३  
पानी १४-२३ जलना १५ दाया १६ परदार जानवर १७ बहेलिया १८ शेर १९  
हिरन २० खाना २१ सोना २२ मुश्किल २४ लियाही २५ ताता २६ वारोक्त २७  
कहि नहीं सकता २८ आँख २९ दाया ३० ॥

कहोसि प्रेम उपजा जो वारी । वांधि सत्तमन डोलन भारी ॥

जेहिजिय मनहिं सत्त होय भारू । परे पहार नहिं वांके वारू ॥

सती जो जरी प्रेम पै लागी । जोसतहिये तो शीतलें आगी ॥

जोबन चांद जो चौदस करी । विरहकीचिंतगी सो पुनिजरा ॥

पुव्व बन्धु सो योगी यती । कामबन्ध सो कामिनें सती ॥

आव बसन्त फूल फुलवारी । देव बारें सब जोहहिं वारी ॥

दो० तुम पुनि जाहु बसन्त लै, पूज मनावहु देव ।

जीव पाय जग जन्म है, पिय पाई कै सेव ॥

जबलग अंधि आयनियराई । दिनयुगयुगविरहिन कहँ जाई ॥

नींद भूखनिशै दिनगइदोऊ । हिये मांझु जस कलपे कोऊ ॥

रोमरोम जनु लागहिं चांटे । सूतें सूत जनु वेधे कांटे ॥

दरंधे कराह जरे जस घीव । वेगें न आव मलयगिरि पीव ॥

कौन देव कहँ जाय पराँसों । जेहि सुमेरु हियें लाय गिरासों ॥

गुंसे जो फलसासहि परंगटें । अब होय सुभ्रें चहहिं हम घटें ॥

भइ संयोगें जुरा अस मरना । भूखहि गई भोगका करना ॥

दो० यौवन चञ्चल ढीठ है, करे न कीजै काज ।

धन कुलवन्त जो कुलधरै, की जीवन मनलाज ॥

तेहिं वियोगें हीरामनें आवा । पद्मावत जानहु जिव पावा ॥

करठ लगाय सुअँ सों रोई । अधिकमोहें जो मिले विछोई ॥

आगंठठी दुखहिये गँभीरुं । नयनहिं आय चुवा होय नीरुं ॥

पैदा होना १ लडकी २-६ दिल ३-२०-३१ उंढा ४ चांद चौदहों के बरा  
 बर ५ हवा ६ औरत ७ दरवाजा ८ खिदमत १० हृद ११ रात १२ बीज १३  
 खराख १४ गर्म १५ जल्द १६ चन्दन १७ पूजन १८ नाम पहाड़ १९ छिया  
 २१ जाहिर २२ हर रगमें भरा है कि दम बढ़म घटती है २३ मुलाकात २४  
 कामवाला २५ दुःख २६ नाम तोता २७-२८ बहुत पियारा २९ विछुड़ाहुआ  
 ३० भारी ३२ आंख ३३ पानी ३४ ॥

रही रोय जब पद्मिनि रानी । हँसि पूँछहिं सब संखी सयानी ॥  
मिले रहस भाँ चाहे दूना । कित रोई जो मिले बिद्योनां ॥  
तेहिक उतरै पद्मावत कहा । बिछुरन दुख जो हिय भर रहा ॥  
मिलत हिये आये सुख भरा । वह दुख नयननीरै होय दुरा ॥

दो० बिछुरतां जब भेटे, सो जाने जेहि नेह ।

सुख सुहेला उगवे, दुःख भरे जिमिं मेह ॥

खण्ड पन्द्रहवां मुलाकात खण्ड

पद्मावत औ हीरामन ॥

पुनि रानी हँसि कुशलै पूँछा । कितंगे बनहिकै पिंजर छूँछा ॥  
रानी तुम युगयुग सुखपाँदू । आजँ न पंखी<sup>१</sup> पिंजर ठाडू ॥  
जो भा पंख कहाँ थिरै रहना । चाहे उड़ा पंख जो डहना ॥  
पिंजर मँहँ जो परेवाँ घेरा । आय मँजोरँ कीन्ह तहँ फेरा ॥  
दिवसकै आय हाथ पै मेला । तेहि डर बनोबासकहँ खेला ॥  
तहां जाय व्याध नर सांधा । छूट न जाय मीच कर बांधा ॥  
वे धर वेचा ब्राह्मण हाथा । जम्बूद्वीप गयो तेहि साथा ॥  
दो० तहां चित्रं चित्तौरगढ़, चित्रसेन कर राज ।

टीकां दीन्ह पुत्रकहँ, आप लीन्ह शिवसाँज ॥

बैठि जो राज पितोँ कर ठाँऊं । राजा रतनसेन तेहि नाऊं ॥  
का वरौणों धन देश दुवारा । जहँ असनगउपजाँ उजियारा ॥  
धन माता औ पिता बखाना । जेहिके वंश अंशँ असआना ॥

शुश १ जवाब २ दित ३-४ आँसू ५ मुहब्बत ६ जिस तरह ७ वादल  
८ खेरियत ९ कहाँ १० तहत ११ सोहना १२ जानवर परिन्द १३-१६ कायम  
१४ बाजू १५ बिल्ली १७ एक दिन १८ जाना १९ तसवीर २० राजतिलक २१  
मरना २२ वाप २३ जगह २४ तारीक २५ पैदाहोना २६ अक्रबालवाला २७ ॥



लक्षन बतीसों कुल निरमला । बरणि न जायरूप औ कला ॥

वेहों लीन्ह अहा अस भागू । चाहै सोने मिला सुहागू ॥

सुनग देख इच्छा भइ मोरी । है यह रतन पदारथ जोरी ॥

है शशि योग यही पै भानू । तहँ तुम्हार में कीन्ह बखानू ॥

दो० कहां रतन रतनागढ़, कंचन कहां सुमेर ।

दैव जो जोरी दुहुँलिखी, मिली सो कौनहि फेर ॥

सुनिके विरह चिनग वह परी । रतन पाव जो कंचनकरी ॥

कठिन प्रेम बिरहा दुख भारी । राज छांड़िभा योगि भिखारी ॥

मालति लाग भँवर जस होय । होयबावर निसरा बुधिखोय ॥

कहेसि पतंग होय रस लेऊं । सिंहलद्वीप जाय पंग देऊं ॥

पुनि वह कोउ न छाँड़ अकेला । सोरहसहस्र कुँवर भयचैला ॥

और गिनै को संग सँहाई । महादेव मँढ़ मेला जाई ॥

सूर्य पुरुष दरशन की ताई । चितवे चन्द्र चकोर की नाई ॥

दो० तुम बारी रस योग जेहि, कमलहि जस अरघान ।

तस सूरज परकाशँ कै, भँवर मिलायो आन ॥

हीरामन जो कही यहि बाता । सुनिके रतन पदारथ राता ॥

जैसे सूर्य देख है औपी । तसभा विरह कामदल कोपी ॥

सुनिके योगी करे बखानू । पद्मावत मनभा अभिमानू ॥

कंचनकरी न काचहि लोभा । जो नगजड़े होय तस शोभा ॥

कंचन जो कसिये कै ताता । तब जाने वह पीत कि राता ॥

पाक साफ १ वयान करना २-७ उसका मोल लियाहुआ ३ जवाहिर  
लाल ४ चांद ५ सूर्य ६ सोने ८ सोने की अंगूठी ९-२३ मुश्किल १० दीवाना  
११ कदम १२ हजार १३ फौज १४ मर्द १५ लड़की १६ उजियारा १७ नाम  
तोता १८ उदय होना १९ गुस्सा करना २० तारीफ २१ गरूर २२ पीला २४  
लाल २५ ॥

नगकरमर्मसो जड़िया जाना । जड़े जो असनगदेखे बखाना ॥

को अस हाथ सिंह मुख घालै । को यह बात पिता सों चालै ॥

दो० स्वर्ग इन्द्र डर कांपै, बासुंकि डरै पतार ।

कहँ ऐसो वरै पृथ्वी, मोहिं योग संसार ॥

तुइरानी शशि<sup>१</sup> कञ्चन कला । वह नगरतन सूरै निरमला ॥

बिरह बिजगै बीजगा कोई । आग जो लुवै जाय जर सोई ॥

आगबुभायधोय जल गाढे । वह न बुभाय आग अतिवाढे ॥

बिरहकी आग सूरै जरकपा । रातहि दिवस जरे औ तपा ॥

खनहि स्वर्ग खनजाय पतारा । थिर<sup>२</sup> न रहै यहि आग अपारा ॥

धनि सो जीव दरुधै इभि<sup>३</sup> सहा । ऐसो जरे दूसर नहि कहा ॥

सुलगसुलग भीतर होय श्यामा । प्रगटै होय नहि काढे नामा ॥

दो० काह कहों ओही सों, जो दुख कीन्ह निमेट ।

तेहिदिन आग करोंय हबाहर, जेहिदिन होय सुभेट ॥

सुना जो असधनै जारा कयौ । तनभा सांचे नयनै भामयौ ॥

देखों जाय जरै जसभानू । कञ्चनै जरै अधिक होय बानू ॥

अब जो जरै सुप्रेम वियोगी<sup>४</sup> । हत्यामोहिजेहिकारणयोगी ॥

हीरामन सो कही रस बाता । सुनिके स्तनै पदारथ राता ॥

योगी योग सँभारहि छाला । देहों भुँकें देहों जैमालौ ॥

आव बसन्त कुशल सो पाऊं । पूजा भिसै मण्डफकहँ आऊँ ॥

भेद<sup>१</sup> देखना २ तारीफ़ ३ शेर ४ बाप ५ आसमान ६ नाम राजा सांपों

का ७ खाविन्द ८ जमीन ९ चांद १० सूर्य ११-१४-२७ पाकसाफ़ १२ आग १३

दिन १५ कभी १६ कायम १७ जलन १८ इसतरह १९ सियाह २० ज़ाहिर

२१ औरत तथा पद्मावत २२ यदन २३ सांचा २४ आँख २५ मोम २६

सोना २७ बहुत २८ खरा २९ दुखी ३० सबब ३१ जवाहिर ३२ मुख ३३

जिसके गलेमें पड़े उसीके साथ शादी हो ३५ बहाना ३६ ॥

गुरु के बचन फूल हिर्य गाथे । देखों नयन चढ़ाऊँ माथे ॥

दो० कमल नरण तुम बरना, मैं माना पुनि सोय ।

चांद सूर्य कहँ चाही, जोरी सूर्य वह होय ॥

हीरामन जो कही रस बाता । पाय पान भयो मुख राता ॥

चला सुआ तब रानी कहा । भा जो पराउ जो कैसे रहा ॥

जो नित चले सँवारहि पाखा । आज जो रहा काल्हको राखा ॥

नाजनो आजकहाँ दिनउवा । आयहिमिलै चलहिमिलसुवाँ ॥

मिलके बिछुरमरनकी आनी । कत आयहु जो चलहि निदानाँ

अनरानी जो रहतों रांधी । कैसे रहों बचन करे बांधा ॥

ताकर दृष्टि ऐसो तुम्ह सेवा । जैसे कुञ्ज मन सेज परेवा ॥

दो० बसै मीन जल धरती, अर्थाँ वर्ष अकास ।

जो प्रीति पै दोउ महँ, अर्थाँ होहिँ एकपास ॥

आवा सुआ बैठिजहँ योगी । मारगँ नयन वियोगँ वियोगी ॥

आय प्रेमरस कहा संदेशू । गोरखँ मिला मिला उपदेशू ॥

तुमकहँ गुरु मयाँ बहुकीन्हा । कीन्ह अदेशूँ आवकहँ दीन्हा ॥

शब्दी एक होय कहा अकेला । गुरुजसभृङ्ग पतंगँ जस चेला ॥

भृङ्गी ओही पंखँ पै लेइ । एकहि बार चहै जिव देइ ॥

ताकहँ गुरु मयाँ भलकीन्हा । नवअवतारँ ज्ञानँ बहुदीन्हा ॥

होय अमरँ अस मरकेजिया । मँवरकमल मिलके मधुपिया ॥

दो० आवै ऋतुबसन्त जब, तब मधुकरँ तवबास ।

विल १ आंख २-२१ रंग ३ नाम तोता ४ लाल ५ हररोज ६ तोता ७

बराबर ८ कहां ९ जल्द १० ये रानी ११ नज़दीक १२ कौल १३ निगाह १४

नाम जानवर परिवन् १५ मछली १६ ज़मीन १७ पानी १८ आखिर १९ राह

२० सुबाह २१ दुखी २२ नाम क्रकौर २४ नसीहत २५ मेहरबानी २६-३३

सलाम २७ घात २८ नाम कीड़ा २९-३०-३१ पांखी ३२ नया जन्म ३३ अकल

३४ हमेशा ज़िन्दा ३५ मँवरा ३७ ॥

योगीयोग जो इमि सहे, सिद्ध समापत तास ॥

खण्डसोलहवां वसन्तखण्ड ॥

दई दई कर सुरत गँवाई । श्रीपञ्चमी पूजितव आई ॥

भयो हुलास नवल ऋतुमाहा । क्षण न सुहाय धूप औ ब्याहां ॥

पद्मावत सब सखी हँकारी जानवन्त सिंहलकी वारी ॥

आज वसन्त नवल ऋतुराजा । पंचम होय जंगत सबसाजा ॥

नवल श्रृंगार बनाहत कीन्हा । शीशं परासहि सेंदुर दीन्हा ॥

विकसे कमल फूल बहुवासा । भँवरआय लुँधे चहुँ पासा ॥

पियर पात दुख भरे निपाते । सुख पलहा उँपजी होय राँते ॥

दो० अर्वाधि आय सो पूजे, जो इच्छा मन कीन्हा ।

चलहु देवमद गोहनं, चहो सो पूजा दीन्हा ॥

फिरे आन ऋतु वाजन वाजे । औ श्रृंगार बौरहि सब साजे ॥

कमल करी पद्मावत रानी । होय मालति जानो बिगसांनी ॥

तारामन्द्रे पहिर भल चोला । भरी शीशं सँवनखत अमोला ॥

सखी कुमोदें सहसँदश सङ्गा । सबै सुगन्ध चढाये अङ्गा ॥

सब राजा रायनकी वारी । वरन वरन पहिरै सब सारी ॥

सबै स्वरूप पद्मिनी जाती । पान फूल सेंदुर सब राँती ॥

करै कलोलें मुरङ्ग रंगीली । औ चोवा चन्दन सब खेली ॥

दो० चहुँदिशि रही वासना, फुलवारी अस फूल ।

वे वसन्त सो फूली, गा वसन्त वहि भूल ॥

इसतरह १ कामिल २ खुशी ३ नया ४ बुलाना ५ जहातक ६ लङ्की  
७-२०-२७ दुनियां ८ पेह १० शिर ११-२३ दाख १२ खिलना १३-२१  
खपिटना १४ भरना १५ पैदा १६ लाल १७-२६ हद १८ साथ १९ नाम  
कपडा २२ कोकविली २४ हजार २५ वदन २६ रंगवरंग २८ खुशी ३० चारों  
तरफ ३१ ॥

भई अहा पद्मावत चली । छत्तिसकुरि भइ गोहन भली ॥

भई गौरि संग पहिर पटोरा । ब्रह्मनिआय सहस्र अंग मोरा ॥

अग्रवारि गजगवन करेई । वैसि पांव हंस गत देई ॥

चन्देलिनि ठमकहिं पगं दारा । चल चौहान होय भनकारा ॥

चली सुनारि सुहांग सुहाती । औ कलवारि प्रेममधुमाती ॥

बानिनि चली सिंदुर दियेमांगा । कैथिनि चली समायन आंगा ॥

पटयनि पहिरि सुरंग तन चोला । औ बरइन मुखखात तमोला ॥

दो० चली पवन संग गोहन, फूल डार लिये हाथ ।

विश्वनाथ की पूजा, पद्मावत के साथ ॥

ठाठेरिन बहु ठाठर कीन्हा । चली अहीरिन काजर दीन्हा ॥

गूजरि चली गोरस की माती । बढयनि चली भागकी ताती ॥

चली लुहारिन बांके नयना । भाटिन चली मधुर अतिवयनी ॥

गन्धिन चली सुगन्ध लगाये । छीपिन चली सो चीर रंगाये ॥

रंगरेजिन बहु रंती सारी । चली युक्ति सो नाउनि वारी ॥

मालिनि चली हार लिये गाथे । तेलिनि चली फुलायलमाथे ॥

किये श्रृंगार बहु वेश्या चली । जहल्लग मूदी विकसी कली ॥

दो० नटनी डोमिनि दारिन, सहनायन परकार ।

निरतत नाद विनोद सों, विहंसत खेलत नार ॥

कमल सुभाय चली फुलवारी । फर फूलन की इच्छा वारी ॥

आप आप महँ करहिं जोहारूँ । यह वसन्त सब कहँ त्योहारूँ ॥

वही मनोरं भूमक होई । फर औ फूल लियो सब कोई ॥

छत्तिस क्लौम १ साथ २-११ गौराहाण ३ हजार ४ चदन ५-६ हाथी की चाल ६ कदम ७ शराब ८ हवा १० ईश्वर १२ मोठी १३ बोल १४ लाल १५ खिलना १६ नाचना १७ गाना १८ खुशी १९ सोईय सलामत २० रसमगाने औ बजाने की २१ ॥

फाग खेलि पुनि दाहव होली । सेततखेह उडावव भोली ॥

आज छांड पुनि दिवस न दूजा । खेल वसन्त लेहु कै पूजा ॥

भा आयमुं पद्मावत केरा । फेरन आय करव हम फेरा ॥

तसहम कहँ होयहै रखवारी । पुनि हम कहां कहां यह वारी ॥

दो० पुनिरै चलव घर आपने, पूज विश्वेश्वर देव ।

जेहिको होय खेलना, आजखेल हँस लेव ॥

काहँ गही अम्ब की डारा । कोई विरह जम्बु अति छारा ॥

कोइ नारंगी कोइ मारं चिरोजी । कोइ कटहरं वडहरं कोइ न्योजी ॥

कोइ दाड़िमं कोइ दाखं खेरी । कोइ सदाफरं तुर्जं जंभीरी ॥

कोइ जैफरं कोइ लोग सुपारी । कोइ कमरख कोइ कोबां छारी ॥

कोइ विजोरं कोइ नरियरं चूरी । कोइ इमली कोइ महुवाखजूरी ॥

कोइ हरफा कोइ चोर करौदा । कोइ अनार कोइ बेरकिसौदा ॥

काहँ गही केला की घौरी । काहँ हाथ पडी निमकौरी ॥

दो० काहँ पाई तेरे, काहँ कहँ गये दूर ।

काहँ खेल भयो विपै, काहँ अमृत मूर ॥

पुनि बीनहिं सब फूल सहेली । जो जेहि आस पास सबबेली ॥

कोइ क्यांडा कोइ चम्पनेवारी । कोइ केतकि मालति फुलवारी ॥

कोइ सतवर्गं गाँद औ करनी । कोइ चमेलि नागसरं बरना ॥

कोइ सुगुलावं सुदर्शनं कूजी । कोइ सोन जैदं भलपूजा ॥

कोइ सोबोलसरं पुट्टुप वैकोरी । कोइ रूपमंजरी औ गोरी ॥

कोइ शृंगार हरं तेहि पाहां । कोइ सेवती कदम की छाहां ॥

जलाना १ राख धूर २ दिन ३ हुकम ४ बागीचा ५ नामदेवता ६ लेना ७

आंव ८ जामुन ९ नाम मेवा फलसली १०-११-१२-१३-१४-१६ अनार १५

अंगूर १६ खिरनी १७ नाम मेवा १८-२०-२१-२२ टुकड़ा २३ जहर २४ नाम

फूल २५-२६-२७-२८-२९-३०-३१-३२-३३-३४-३५-३६-३७-३८ ॥

कोइ चन्दन फूलहिं जनुफूली । कोइ अजान बिस्वातर भूली ॥

दो० कोइ फूलपाव कोइ पाती, जेहिकहाथ जेहिआंट ।

कोइहार चीरै उरझानी, जहांलुवे तहँ कांट ॥

फरफूलन सब डार भिराई । भुरगड बांध के पंचम गारै ॥

बाजत दोलै दंद औ भेरै । मन्दिरतूरै भांभै चहुँफेरै ॥

सींगी शंख डफसंगम बाजे । वंसकारै महुवरै सुरसाजे ॥

और कहा जित बाजन भले । भांति भांति सब बाजत चले ॥

स्थहिं चढी सब रूप सुहाई । लिये वसन्त मडमँडफ सिबाई ॥

नवल वसन्त नवल वै वारी । सेंदुर बूका करै धमारी ॥

खनैहिं चलहिं खन चांचर होई । नाचधू भूला सब कोई ॥

दो० सेंदुरखेहँ उठीतस, गगनै भयोत्स राते ।

राति सकलै महि धर्ती, राति वृक्षवनपत ॥

ग्रहिविधि खेलत सिंहलरानी । महादेव मठ जाय तुलानी ॥

सकलै देवता देखन लागे । दृष्टि पाप सब उनके भो ॥

ये कैलास सुनै अप्सरी । कहांते आय दृष्टि भुईं प ॥

कोई कहै पद्मिनी आई । कोइ कह शंशि औ नखत तराई ॥

कोई कहै फूल फुलवारी । फूली सब देखके वारी ॥

एक स्वरूप औ सेंदुर सारी । जानहु दिया सकलै महि वारी ॥

धुरधुर परै जोई मुख जोहे । मानहु मिरगँ द्वारहिं मोहे ॥

दो० कोई परा भँवर हीय, वास लीन्ह जनु चांप ॥

कोइ पतङ्ग भा दीपक, कोइ अधजर तन कांप ॥

नाम फूल १ कपड़ा २ नाम बाजा ३-४-५-६-७-८-९-१० नया ११

लड़की १२-२४ कमी १३ धूर १४ आसमान १५ लाल १६ सय १७-२०

जमीन १८-२५ पहुँचना १९ निगाह २१ चांद २२ छोटे नखत २३ हिरन २६

चम्पा २७ पांखी २८ ॥

पद्मावत गई देव दुवारा । भीतर मँडफ कीन पैसारा ॥

देवै संशय भा जिय केरा । भागों केहिदिशि मरडफ घेरा ॥

एक जुहार कीन्ह औ दूजा । तिसरे आय चढ़ायसि पूजा ॥

फरफूलन सब मँडफ भरावा । चन्दन अगर देव अन्हवावा ॥

भरि सेंदुर आगें भइ खरी । परसि देव पुनि पांयन परी ॥

और सहेली सबै विवाहीं । मोकहँ देवकि तुहुवरं नाही ॥

हौं निरगुन जें कीन्ह न सेवा । गुनं निरगुनं दातां तुम देवा ॥

दो० वरसयोगं मोहिं मिखहु, कलशं जातहौं मान ।

जा दिन इच्छां पूजे, बेगं चढाऊं आन ॥

इच्छं इच्छ विनती जसु जानी । पुनिकरं जोरिठाढ भइ रानी ॥

उतरं को देय देव सोगयो । शब्दं कोट मरडफ महँ भयो ॥

काटिपयारों जैसे परेवा । सोगयो ईशं उतरं को देवा ॥

भये जीव विन नाउत आभा । विषभइ पूरि कालभये गोभा ॥

जो देखे जनु विषहरं डसा । देख चरित पद्मावत हँसा ॥

भल हम आय मनावा देवा । गाजन सोय को मानै सेवौ ॥

को इच्छा पुरवै दुख खोवा । जहिंमन आय सो तनतन सोवा ॥

दो० चहुँदिशि सखी उठावहिं, शीशं बिकल नहिं डोल ।

धर कोइ जीवन जानो, मखरे बकत कुबोल ।

ततखनं आय सखी वेहँसानी । कौतुक एक न देखहु रानी ॥

पूर्व द्वारं मठ योगी छाये । नाजनो कौन देश ते आये ॥

जनु उन योग तन्त अब खेला । सिद्ध होय निसरे सब चेला ॥

सलाम १ खाचिन्द्र २ वेहुजर ३-५ हुनर ४ देनेवाला ६ खाचिन्व लायक  
७ आरजू ८-१० जख ६ हाथ ११ जवाब १२-१६ आवाज़ १३ छोड़ देना १४  
देवता १५ सांप १७ खिदमत १८ चारों तरफ १९ शिर २० यकायक २१ दर-  
वाज़ा २२ कामिल २३ ॥



उन मँहँ जो एक गुरू कहावा । जस गुडदे काहू बौरावा ॥

कुँवर बतीसो लक्षण राता । दर्शयें लषन कहे एक वाता ॥

जानो आहि गोपचन्द योगी । की सुआय भरथरी वियोगी ॥

वे पिङ्गल गये कजरी आरन । ये सिंहल सोवहिं केहिकारन ॥

दो० यह मूरत यह मुद्रा, हम न देख अवधूत ।

जानहुँ होहिं न योगी, कोइ राजा के पूत ॥

सुनि सुवात रानी रथ चढ़ी । कहँ अस योगी जो देखों मढ़ी ॥

लै संगसखी कीन्ह तहँफेरा । योगिआयजनु अपछरँनहिं घेरा ॥

नयन कचूर प्रेम मधु भरे । भइ सुदृष्टि योगी सो बुरे ॥

योगीदृष्टि दृष्टिसौ लीन्हा । नयन रूप नयनहिं जिवदीन्हा ॥

जो मधु छकतपरा तेहिपाले । सुध न रही वह एक पियाले ॥

पड़ा मांत गोरखँ कर चेला । जिवतन छाँडिस्वर्ग कहँ खेला ॥

किंगरी गँही जो हुत बैरागी । मरती बार वही धुन लागी ॥

दो० जेहि धन्ध जाकर मन बसे, सपने सूफ सुगन्ध ।

तेहिकारणँ तपसी तपसाधहिं, करहिप्रेमचितबन्ध ॥

पद्मावत जस सुना बखानूँ । सहसँ किरा देखे तस भानूँ ॥

मेलिसँ चन्दन मँगखनजागा । अधिको सोतसीरँ तनलागा ॥

तब चन्दन आखँरँहियँ लिखी । भीखँ लई तुम योग न सिखी ॥

बारँ आय तबगा तुँई सोई । कैसे भुक्ति परापत होई ॥

वरीस हुनर जाननेवाला १ अंदाज से बात करता है २ नाम योगी  
३-४-१४ नाम रानी ५ जंगल ६ इन्द्रलोक की परियां ७ आंख पियाले की  
तरह ८ शराब ९-१३ निगाह १०-११ आंख १२ आसमान १५ जाना १६

१ बाजा १७ पकड़ना १८ वास्ते १९ तारीफ २० हजार २१ सूर्य २२

२३ शायद २४ बहुत २५ ठंडा २६ हफ्त २७ दिल २८ भीख

२९ दरवाजा ३० रोजी ३१ ॥

अब जो सूर अहेशशि राता । आये चंद्र सुगगन पुनिसाता ॥

लिखसो बात साखिनसो कही । यही ठाँव हों बरित रही ॥

परगट हों तो होय असभंगूँ । जगत् दियाकर होय पतंगूँ ॥

दो० जासों चख हेरों, सोई ठाँव जिव देय ।

यह दुख कतहुँ न निसरों, को हत्या अस लेय ॥

कीन्ह परान सबहि स्थ हांका । पर्वत छांड सिंहलगढ़ ताका ॥

बलि भये सब देवता बली । हत्यारिन हत्या लै चली ॥

को असहितुँ मुवे गहि बाँही । जोपै जिय आपन तन नाहीं ॥

जौ लहजिव आपन सब कोई । विन जिवकोइन आपन होई ॥

भाई बन्धु औ मीत पियारा । विन जिवघडी न राखै पाराँ ॥

विन जिवपिएडँ छार करकूरा । छार मिलावै सो हित पूरा ॥

तेहि जिव विना अमर भा राजा । कोउठि बैठि करब सो काजा ॥

दो० परिकार्या भुँडलोटे, कहारै जिव बलिभीव ।

को उठाय बैठारे, बाज पियारे जीव ॥

पद्मावत सो मंदिर पैठी । हंसत जाय सिंहासन बैठी ॥

निश सोती मुनि कथा बहारी । भा विहान सब सखी हँकारी ॥

देवपूज जस आयों काली । स्वप्न एक निश देख्यो आली ॥

जनुशशि उदय पूर्व दिशलीन्हा । औरवि उदय पश्चिम दिशकीन्हा ॥

पुनि बलि सूर चांद पहुँ आवा । चांद सूर्य दुहुँ भयो भिरावाँ ॥

दिन औ रात जानहु भय एका । राम आय रावण गढ़ छेका ॥

सूर्य १-२६ चांद अर्थात् रात को आवें २ आसमान अर्थात् किला ३ जगह  
४ बत्ते ५ ज़ाहिर ६ तुकसान ७ दुनियाँ ८ पांखी ९ आंख से देखों १० कूच  
११ कुर्बान १२ ज़बरदस्त १३ दोस्त १४-१६-२० मरे की वांछ पकड़े १५ रख  
नहीं सक्ता १७ वचन १८-२१ राख १९ पहुँचना २२ रात २३ बुलाया २४  
चांद २५ मुलाकात २७ ॥

तस कुछ कहान जाय निवेदा । अर्धुन वान राहु को बेधा ॥

दो० जनहुँ लङ्क सब लूँसी, हनूँ बिधाँसी वार ।

जाग उठ्योँ अस देखत, कहुसखि स्वप्नविचार ॥

सखी सो बोली स्वप्न विचारी । काल्ह जो गई देव करवारी ॥

पूजि मनायो बहुत बिनाँती । परसन आय भयो तुम्हराती ॥

सूरज पुरुष चांद तुम रानी । अस वर देव मिलावै आनी ॥

पछो खण्ड कर राजा कोई । सो आवै वर तुम कहँ होई ॥

कुछ पुनि जूझ लाग तुम रामा । रावण सेते होयँ संग्रामा ॥

चांद सूर्य सो होय विवाह । वरविधाँ सब बेधे राह ॥

जस ऊँचाँ कहँ अनिरुध मिला । मेट न जाय लिखा परवला ॥

दो० सुख सुहाग है तुम कहँ, पान फूल रस भोग ।

आजकाल्ह भा चाहै, अस सपने का संयोग ॥

खण्ड सत्रहवाँ सतीखण्ड राजा रतनसेन ॥

किये बसन्त पद्मावत गई । राजा तव बसन्त सुध भई ॥

जो जागा न बसन्त न बैरी । ना सो खेल न खेलनहारी ॥

नावहँ की वह रूप सुहाई । गइ हिराइ पुनिदृष्टि<sup>१</sup> न आई ॥

फूल भडी सूखी फुलवारी । दृष्टि<sup>२</sup> परी उकठी सब छैरी ॥

कै यह बसत बसन्त उजारा । गा सो चांद अथवा ले तारा ॥

अबतेहिबिनजगँ भा अंधकूपी । वह सुखछाँह जरादुखधूपा ॥

बिरहदेवाँ को जरत सिरावा । को पीतम सोँ करै मिलावा ॥

दो० हिये<sup>३</sup> देख जो चन्दन, मिलके लिखा बिछोह<sup>४</sup> ।

लक्ष्मी १ हनुमानजी २ दरवाजा तोड़ना ३-११ महादेव के मंडफ ४

आजकी ५ खुश ६ मर्द ७ खाविन्द ८-६ लड़ाई १० नाम लड़की १२ जबर-

दस्त-१३ ताबीर १४ बाग १५ निगाह १६-१७ जलजाना १८ दुनियाँ १९

कुवाँ २० आग २१ दिल २२ जुदाई २३ ॥

हाथमीज शिरधुन रोवे, जो निचिन्त अस सोय ॥  
जस विद्योहे जलमीन दुहेला । जलहतिकट अगिन महेमेला ॥  
चन्दन अंक दाग होय परे । बुभुहिन ते आखर परजरे ॥  
जेहि शिरआगे होयहोय लागी । सब तन दाग सिंहवनदागी ॥  
जरैमृग वनखण्ड वह ज्वाला । औतीजरहि बैठि तेहि छाला ॥  
कितते अंकलिखे जह सोहा । मग अंकित तेहि करत विद्योहा ॥  
जैसे दुखित कंसा कोतला । मांधी नलहि कामकन्दला ॥  
भयो अंक नल जैसोदमावत । नयना मूंद छिपी पद्मावत ॥  
दो० आय वसन्ता छिपरहा, होय फूलन की भेश ।  
केहिविधिपाऊं भवरहोय, कवनसो करों उपदेश ॥  
रोवत रतन माल जनु चूरी । जह होय ठाढ़होय तह कूरा ॥  
कहां वसन्तसो कोकिल बैना । कहां कुसुमअलि बेधी नयना ॥  
कहां सुमूरति परी जो डीठी । कादिलिहेसिजिवहृदयेपैठी ॥  
कहसो दरश परशं जेहिलहा । जोसो वसन्तकरी लहि कहा ॥  
पात विद्योह रूख जो फूला । सो महुवा रोवे अस भूला ॥  
टपकहिं महुव आंसु तसपरहीं । होयमहुवा वसन्तज्यो भरहीं ॥  
मोर वसन्तसो पद्मिनि नारी । जेहिविने भयो वसन्त उजारी ॥  
दो० पावा नवल वसन्तपुनि, बहु आरत बहुचोप ।  
ऐसो न जानाअन्त होय, पातभरहि होय कोप ॥

जुवार् १ मछली २ भारी ३ आग ४ हफ ५-६ शेर ७ हिरन ८ शायद  
मुलाक़ात न हो ९ राजा कंस रानी कोतलाके लिये १० मांधीनल रानी  
कामकन्दला के लिये ११ राजा नल रानी दमयन्ती के लिये दुःखी १२ आंख १३  
सदबोर १४ दूटना १५ आवाज़ १६ भँवर १७ नजर १८ दिल १९ दीवार वा  
क़वमयोसी २० जिसफा उलटा कांटा होता है २१ नया २२ दुःख २३  
आखिर २४ ॥

अहो महा विश्वासी देवा । कित मैं आय कीन्ह तू सेवा ॥

आपन नाव चढ़े जो देइ । सो तो पार उतारै खेइ ॥

सुफलजानि पर्ग देख्यो तोरा । सुआँका सेमर तू भा मोरा ॥

पाहन चढ़ि जो चहिभा पारा । सो ऐसे बूढ़े मँभधारा ॥

पाहन सेवा कहां पसीजा । जन्मत पलवै जो जलभीजा ॥

बावर सोई सुपाहन पूजा । सकत कीमार लई शिरदूजा ॥

काहे न पूजे सोई निराशा । सुये जीत मन जाकर आशा ॥

दो० सिंह तरेंदा जेहि गहाँ पार भये ते साथ ।

तेपै बूढ़े बारहिं भेंड़ पूछ जेहि हाथ ॥

देव कहा सुनि बौरे राजा । देवहि अगमन मारागाजा ॥

जो पहिले अपने शिर परी । सो का काहुक धरधर करी ॥

पद्मावत राजा की बारी । आय सखिन सो मंडफ उघारी ॥

जैस चांद गोहन सब तारा । पखो भुलाय देख उजियारा ॥

चमके दर्शन बीज की नाई । नयन चक्र चमकात भवाँई ॥

हो तेहि दीप पतङ्ग होय परा । जिवजिमि काढ़ स्वर्ग लेअरा ॥

फेर न जाना वहँ का भई । वहँ कैलास कि कहँ अपसई ॥

दो० अबहँ मरों निसाँसी, हिये न आवै साँस ।

रुगिया की को चालै, बैदहि जहां उपास ॥

अनहो दोष देउ का काहु । सुनिके कयो मर्यो नहिं ताहु ॥

हितूँ पियारा मीत बिछोई । साथ न लाग आपगा सोई ॥

पैर १ तोता २ पत्थर ३-४ खिदमत ५ सुशिकल समय का बोझ कौन

दूसरा उठाता है ६ नाउम्मेद ७ सरना न शेर ८ पकड़ना ९ पहिले ११

विजुली १२-१७ दस्तगोरी १३ लड़की १४ साथ १५ दांत १६ आँख १७

धूमना १८ जिसतरह २० आसमान २१ छिपना २२ वेदम २३ दिल २४

बदन २५ मेहरबानी २६ दोस्त २७-२८ जुदाई २९ ॥

कामैं कीन्ह जो कार्यापोषी । दोषै न मोहिं आपं निरदोषी ॥  
 फाग बसन्त खेल गइ गौरी । मोहितनलाग आग जस होरी ॥  
 अब असकाहि छारै शिरमेलों । छारेहनों फाग तस खेलों ॥  
 कित तप कीन्ह छांडिके राजू । आहुँरै गयों न भा सिधिकाजू ॥  
 पायों न होय योगी यती । अब सरै चढों जगैं जस सती ॥

दो० आय पीतम फिरंगया, मिला न आय बसन्त ।

अवतन होरी लायके, जार करों भसमन्त ॥

कुकर्नो पंख जैसो सरि साजा । तस सरिवैठि जराचहिराजा ॥  
 सकल देवता आय तुलाने । वहिं कस होय देवअस्थाने ॥  
 विरह अगिनवज्रांगं असूभा । जरै शूरै न बुझाये बूभा ॥  
 तेहिके जरत जो उठै विजांगी । तीनों लोक जरहितेहि लागी ॥  
 अबकी घड़ी चिनगतेहि छूटे । जरहिं पहाड़ पहनें सब फूटे ॥  
 देवता सबे भस्म होय जाहीं । छार समेटे पावत नाहीं ॥  
 धर्ती स्वर्ग होय सब तातां । है कोई यहि राखि विधातां ॥

दो० मुहम्मद चिनग प्रेमसुनि, गगनै औ मही<sup>२</sup> डिराय ।

धन विरहिन औ धनहियां, जहँयह अगिन समाय ॥

हनुमत वीर लङ्का जे जारी । पर्वत उही अहा खवारी ॥  
 बैठि तहां भा लङ्का ताका । छठये मांस वही उठ हांका ॥  
 तेहिकी आग वहू पुनि जरा । लङ्का छांडि पलङ्कां परा ॥  
 तहां जाय यह कहा संदेशू । पार्वती औ जहां महेशू ॥

तनपालना १ कछूर २ राख ३ उमर ४ चिता ५-७ नाम चिड़िया ६  
 सब ८ पहुँचना ९ मकान १० सङ्गत ११ चहादुर १२ लूक १३ पत्थर १४  
 जमीन १५-२० आसमान २६-२६ गर्म १७ ईश्वर १८ दिल २१ महीना २२  
 कहां २३ महादेवजी २४ ॥

योगी आय बियोगी कोई । तुम्हरे मँडफ आग तेहि वोई ॥

जरी लँगूर सुराती उहां । निकस जो भाग भये करसुहां ॥

तेहि बज्राङ्ग जरेहों लागा । बजरङ्गी जरउठा तो भागा ॥

दो० रावण लङ्का में दँही, वै मोहिं डाँटी आय ।

गगन पहाड़ होत है रावट, को राखे गँहि पांय ॥

खरड अठारहवां पार्वती महेश खरड ॥

ततखन पहुँचे आय महेशू । वाहन बैल कुष्ठिकर भेशू ॥

कांथरें कर्पा हड़ावरें बांधे । सुरडमाल औ जनेऊ कांधे ॥

शेशनाग सोहै करंटमाला । तन विभूति हंस्ती कर छाला ॥

पहुँची रुद्र कमलकी कटा । शशि माथे औ शिरपर जटा ॥

चँवरघंटें औ डमरू हाथा । गौरा पार्वती धनि साथा ॥

औ हनुमन्त वीर सँग आवा । धरे भेष जनु बन्दर छावा ॥

औ तेहि कहिन न लावहु आगी । ताकर शर्मजरहि जेहि लागी ॥

दो० कीतप करे न पाँरहि, कीरि न साँरहि योग ।

जियत जीवकसका देसि, कहो सो मोसों वियोग ॥

कहेसि को मोहिं बातहि बिलभावा । हत्याकर न तोहि डिरावा ॥

जरे देहु दुख जरो अपारा । निसितिरें परों जाय यकवारा ॥

जस भरथरी लाग पिंगलौ । मोकहँ पञ्चावत सिंहला ॥

मैं पुनि तजौ राज औ भोगू । मुनि सुनाउँ कीन्हों तपयोगू ॥

यहि मठसेयों आय निराशा । कीसुपूज अन पूजन आशा ॥

दुखी १ लाल २ पत्थरसा बदन ३ जलाना ४-५ राख ६ पकड़ना ७

गुदड़ी ८ बदन ९ हाँडों की माल १० साँप ११ गरदन १२ हाथी १३

छाँद १४ घण्टी १५ कसम १६ निवाहना १७ बरवादा १८ दुःख १९

रिहाई २० नामयोगी २१ नामरानी २२ छोड़ना २३ खिदमत २४ ॥

ते यह जिव डाँढे परदाधा । आधा निकसरहाघट आधा ॥

जो अधिजरसो बिलवन लावा । करत बिलम्ब बहुतदुख पावा ॥

दो० एतना बोल कहत सुख, उठी बिरहकी आग ।

जो महेश नहिं अमी बुझावत, सकल जगतहतलाग ॥

पार्वती मन उपजाँ चारु । देखो कुँवरकेर सत भाऊ ॥

वहिं यह बीच कि प्रेमहि पूजा । तन मन एककि मारगँ हुआ ॥

भई स्वरूप जानहु अप्सरी । विहँसि कुँवरकर आँचरधरा ॥

सुनो कुँवर मोसों एक वाता । जस रंगमोर न दूसर राताँ ॥

औ विधि रूपदीन्ह है तोका । उठासुशब्द जाय शिवलोका ॥

तवहों तोकहँ इन्द्रपठाई । की पद्मिन तुइ अप्सरें पाई ॥

अवतजि जरन भरनतपयोगू । मोसोमानि जन्म भर भोगू ॥

दो० हों अप्सरें कैलासकी, जेहि सरें पूजनकोय ।

मोतजि सँवरजोवहमरिस, कौनलाभ तेहिहोय ॥

भलहिंरंगतुहि अप्सर राताँ । मोहिं दुसर सो भावनबाता ॥

मोहिंवहसँवरि मुयेअसलहाँ । नयनें जो देखिसिपूँछसिकहा ॥

अवहिंताह जिवदिये न पावा । तेहिअस अप्सरठाढमनावा ॥

जो जिवदेहों वहकी आशा । नजनों काह होय कैलाशा ॥

हों कैलास काहि लै करों । सो कैलास लाग जेहिमरों ॥

वहकी बारँ जीय निरवारों । शिर उतार न्योछावर डारों ॥

ताकर चाँहै कहै जो आई । दोउ जगते तेहिदेउँ बड़ाई ॥

दो० वह न मोर कलुआशा, हों वह आश करेउँ ।

जलाना १ महादेवजी २ अमृत ३ खब ४ पैदाहोना ५ चाहना ६ राह ७ इन्द्रलोककी परी ८-१०-१६ हँसना ९ लाल १० ईश्वर ११ आवाज़ १२ इन्द्रतक भेजोगी १३ छोड़ना १४-१८ बराबर १७ प्रायदा १९-२१ लाल २० आँख २२ दरवाज़ा २३ न्योछावर २४ खबर २५ जहान २६ ॥



तेहि निराश प्रीतम कहँ, जिवनदेउँ का देउँ॥

गौरी हँसि महेशँ सों कहा । निश्चैयहि विरहानलँ दहाँ ॥

निश्चै यहि वह कारनँ तपा । प्रबलँ प्रेम न आछे छिपा ॥

निश्चै प्रेम पीर यहि जागा । कसँ कसौटी कंचनँ लागा ॥

बदनपियर जलटपकै नयना । प्रकटँ दोउ प्रेमके बयनाँ ॥

यहि वह जन्म लागके सीमा । चही न औरहि ओही रीमा ॥

महादेव देवन के पिता । तुम्हरे शरण राम रणजिता ॥

येहँ कहँ तस मर्या करेहू । पुरवहु आश कि हत्या लेहू ॥

दो० हत्या चढायहि कांधदुइ, औ तिनके अपराध ।

तिसरेलेहु कि माथे, जोरिलिये किये साध ॥

मुनि के महादेव की भाखाँ । सिद्धपुरुष राजँ मनलाखा ॥

सिद्धहि अङ्ग न बैठे माखी । सिद्धिपलकनहिलावहिआंखी ॥

सिद्धिहि अङ्गहोय नहिं आया । सिद्धहोय नहिं भूखनमार्याँ ॥

जो जगँ सिद्धि गुसाईकीन्हा । प्रकटँ गुप्तँ रहै कोचीन्हा ॥

बैल चढा कुष्ठी कर भेशूँ । कहिराजासत आहिमहेशूँ ॥

चीन्हेसोइ रहै तेहि खोजा । जसबिक्रमँ औ राजाभोजा ॥

केजिवतन्तँ मन्तँ सों हेरा । गयोहिरायजो वह भा मेरा ॥

दो० बिनगुरु पन्थे न पावै, भूलासोइ जो मेट ।

योगीसिद्धहोय तब, जव गोरखँ सों भेट ॥

ततखनँ रतनसेन घाबरा । छाँडि डफार पांय लैपरा ॥

महादेवजी १-१८ विरहकी आग २ जलना ३ संभव ४ ज्वरदस्त ५ सोना ६ जाहिर ७-१५ आवाज ८ मेहरवानी ९ वातचीत १० मर्दकामिल ११ बदन १२ दुनियाँदौलत १३ दुनियाँ १४ छिपा हुआ १६ सूरत १७ राजाबिक्रमाजीत १६ तलाश २० देखना व हुंठना २१ राह २२ नाम योगी २३ यकायक २४ ॥

माता पिता जन्मकित प्राला । जो अस फाटै ब्रह्मणो घाली ॥  
 धर्ती स्वर्ग मिले हत दोऊ । कितनिरार करदीन्ह बिछोऊ ॥  
 पदक पदारथ कर हुतखोवा । दूटहि रतन रतनतस रोवा ॥  
 गंगन भेव जसवर्षहि भली । धर्ती पूर सलिल होय चली ॥  
 सार्यर उवटशिखरकी पीठी । चढीपानि पाहन हिरी फाटी ॥  
 बूँद पानि होय होय सब गिरे । प्रेम फन्द कोऊ जन परे ॥  
 दो० तसरोवे जस जिव जरै, गिरे रक्क औ मांस ।

रोम रोम सब रोवहि, सूत सूत भर आंस ॥

रोवत बूड उठा संसारू । महादेव तव भयो मयारू ॥  
 कहसि न रोव बहुत तें रोवा । अब ईश्वर भा दारिद खोवा ॥  
 जो दुखसहै होय सुखओका । दुखविनसुखनजायशिवलोका ॥  
 अब तू सिद्ध भया सुख पाई । दर्पण कर्या छूटिगइ काई ॥  
 कहूं वात अबहं उपदेशी । लाग पंथ भूले परदेशी ॥  
 जो लहि चोर सेंध नहिं देई । राजा केर न मूसै पेई ॥  
 चढ़े तो जाय पार वह खूदी । परे तो सेंध शीशे सों सूदी ॥  
 दो० कहंतोहि सिंहलगढ़हि, है खंड सात चढ़ाव ।

फिरा न कोई जीते जिय, स्वर्ग पंथदे पांव ॥

गहं तसवाकें जैसतोर कार्या । पुरुष देखि ओहीकी छाया ॥  
 पाई नाहिं जूझ हठ कीन्हे । जें पावा तें आपहिं चीन्हे ॥

गर्दन १ ज़मीन २ आसमान ३-८-२५ अलग ४ लाल वा जवाहिर ५  
 हाथ ६ आंशु ७ पानी ८ तालाब ९ घोषी का पाटा ११ पत्थर १२  
 छाती १३ खून १४ सुराख १५ मेहरवानी करनेवाले १६ कामिल १७  
 आइना १८ बदन १९-२० नसीहत २० राह २१ पूंजी २२ खाई २३  
 शिर २४ किला तथा बदन आदमी २६ पंचदार २७ मर्द २८ ॥

नौ पँवरी ते गढ़ मभियारां । औ तहँ फिरहिं पांचकुतवारां ॥

दशोंद्वार गुंन एक नाके । अगम चढ़ाव वाटं सुठवाके ॥

भेदी जाय कोई वह घांठी । जौ लहिभेद चढ़ै होय चांठी ॥

गढ़तरि कुण्ड सुरंगतेहि माहां । ते वे पंथ कहों तोहि पाहां ॥

चोर पैठि जस सेंध सवारी । जुवा पैतं जस लाय जुवारी ॥

दो० जस मरजिया समुद्रधस, मारेहाथ आवतस सीप ।

ढूँढि लेहु जो स्वर्ग द्वारे, चढ़ै सो सिंहलदीप ॥

दशोंदुवारं ताल का लेखा । उलट दृष्टि जो लाव सो देखा ॥

जायसो जाय श्वास मनबन्दी । जस धसिलीन्ह कान्हें कालिन्दी ॥

तू मनमाथ मारके श्वासा । जो पै मरहि आप कर नासा ॥

प्रकट लोकचार कहुं वाता । गुंन लाव मन जासों राता ॥

होंहूँ कहत सबै मति खोई । जो तू नाहि आहि सबकोई ॥

जीतहि जुरी मरै इकवारा । पुनि को मीचं मरै को पारा ॥

आपहिं गुरु सो आपहिं चेला । आपहिं सब औ आप अकेला ॥

दो० आपहिं जीवनें मरनपुनि, आपै तनमन सोय ।

आपहिं आपकरै जो चाहै, कहां सो दूसर कोय ॥

नौ दरवाजा तथा नौ सुराख बदन के आंख २ कान २ मुँह एक १ नथुना २ गुदा १ लिंग १-१ दरमियान २ पांच कोतवाल यहां मुराद काम कोथ अहंकार लाभ बौरह से है ३ दशइंद्रिय बदनकी कर्मइंद्रिय ५ ज्ञानइंद्रिय ५-४ छिपा हुआ ५ जहां किसी का दखल न हो ६ राह ७ बहुतेदेवा ८ चीटी ९ दांव १० दश दरवाजे बदन आदमी के ११ निगाह १२ योग की क्रिया बायें पैरकी रग दहिने पैरसे एकड़ श्वास को तौंदी के नीचे से रोक दो अँगुली से होंठ बीच की अँगुली से दोनों नथुने दोनों शहादत की अँगुली से आंख दो अँगुली से कान के सुराख बन्द कर ईश्वर का नाम तौंदी से खींच कर ब्रह्मांड को श्वास चढ़ाये १३ श्रीकृष्णजी १४ यमुना १५ ज़ाहिर १६ छिपा १७ लाल १८ मै १९ अक्ल २० मौत २१ जीना २२ ॥

खरद उन्नीसवां राजा गढ़ छेका खरद ॥

सिधि गुटका राजे जो प्रावा । औ भइसिद्धि गणेश मनावा ॥

जब शंकर सिधि दीन्ह कुटका । परी हूल योगिन गढ़ छेका ॥

सबै पत्निनी देखहि चढी । सिंहल घेर गई उठि मदी ॥

जस घर फिरा चोर मतकीन्हा । तेहिधिधिसेधचाहिगढ़दीन्हा ॥

गुप्त चोर जो रहै सो सांचा । परगट होय जीव नहि बांचा ॥

पँवरपँवर गढ़ लाग केवारा । औ राजा सों भई पुकारा ॥

योगी आय छेक गढ़ मेली । नाजनों कौन देश कहँ खेली ॥

दो० भयो रजायसु देखो, को भिखार अस ठीठ ।

वेगँ वरज तेहि आवहि, जन दुइचार बसीठ ॥

उतर बसीठ दुइआय जुहारी । की तुम योगी की बनजारी ॥

भयो रजायसु आगे खेलहि । गढ़ तरुछाँड़ि अन्त होय खेलहि ॥

असलागहिकेहिकेसिखँ दीन्हें । आयहिमरहिहाथजिवलीन्हें ॥

यहां इन्द्रासन राजा तपा । जाहि रिसाय सूर डरछिपा ॥

हो बनजार तो बनजै विसाहो । भर व्योपार लेहु जो चाहो ॥

योगीहोहु तो युक्ति सों मांगहु । मुँकँ लेहु लैमार्ग लागहु ॥

यहां देवता आश के हारी । तुम पतङ्गको आहि भिखारी ॥

दो० तुम योगी बैरागी, कहत न मानी कोह ।

लेहु मांग कछुभिक्षा, खेल अन्तकहँ होह ॥

आन जो भीखहों आयोलिये । कसन लेउँ जो राजा दिये ॥

पद्मावत राजा की वारी । हों योगी वह लाग भिखारी ॥

हरवाजा १ हुकम २-७ जलद ३ वकील ४-५ सलाम ६ जाना ७  
क्रिला ८ और जगह १० सिखाना ११ सूर्य १२ माल १३ तदवीर १४  
रोज़ी १५ राह १६ पांखी १७ चले जाउ और कहीं १८ भीखके वास्ते १९  
लहक्री २० ॥

खप्पर लिये बारं भा मांगों । भुक्तिं देइ लै मारगं लागों ॥

सोई भुक्ति परापत पूजा । कहां जाउँ असबार न दूजा ॥

अब धर यहां जीव वह ठाँऊँ । भस्म होहुँ पै तजों न नाऊँ ॥

जस बिनप्रान पिण्ड है छूँछा । धर्म लाग कहिये जो पूँछा ॥

तुम सो बसीठ राजा की आरा । शाखं होहु यह भीख निहोरा ॥

दो० योगीबार आवसो, जेहि भिक्षा की आस ।

जो निराश दृढ़ आसन, कितगवने केहिपास ॥

मुनि बसीठ मन अपने रिसा । यव पीसत घुनजायहि पिसा ॥

योगी ऐस कहै नहिं कोई । सो कहुवात योग तेहि होई ॥

वह बड़ राज इन्द्र कर पाटों । धर्ती परे स्वर्ग को चाटा ॥

जो यह बात जाय तहँ चली । बूटहिं अबहिं हस्तिं सिंहली ॥

औ बूटहिं तहँ वज्र के कूटों । बिसरे भुक्तं होय सबखूटों ॥

जहँलग दृष्टि न जाय पसारी । तहां पसारसि हाथ भिखारी ॥

आगे देखि पांवधरि नाथा । तहां न देखि दृष्टि जहँ माथा ॥

दो० बहरानी जेहि जुगतमहँ, तेही राज औ पाटं ।

सुन्दर जाय राजघर, योगिहि बन्दरकाट ॥

जो योगी सत बन्दर काटा । एके योग न दूसर वाटों ॥

और साधना आवै साधे । योग साधना आपहिं दाँधे ॥

सरं पहुँचाउ योग कर साथू । दृष्टिं चाहि अगमनं होय हाथू ॥

तुम्हरे जोर सिंहल के हाथी । हमरे हस्तिं गुरु है साथी ॥

दरवाजा १ भीख २ रास्ता ३ जगह ४ छोड़ना ५ बदन ६ शाख मेवा

भरी ७ कहां जाऊँ ८ लायक ९ तहत १० आसमान ११ हाथी १२

पत्थरके गोले १३ भीख मांगना १४ चारों तरफ १५ निगाह १६ तहत १७

राह १८ जलाना १९ आखिर २० नजर से ज्यादा २१ पहिले २२ हाथी २३ ॥

हस्तनेस्तं वह करतन बारों । परबत करै पांव की छारों ॥

जोरगिरे गढ़ जानवन्तें भये । जो गढ़ गर्ब करहिं ते नये ॥

अन्तें जो चलना कोउ न चीन्हा । जो आवा सो आपन कीन्हा ॥

दो० योगिहि कोह न चाही तब न मोहिं रिस लाग ।

योग तन्त ज्यों पानी काहि करै तेहि आग ॥

वसीठहिं जायकही सबवाता । राजा सुनत कोह भा राता ॥

ठांवहिं ठांव कुँवर सबभाँखे । के अबलहिं ये योगी राखे ॥

अवहूँ वेगहिं करो सँयोऊँ । तस मारहु हत्या किन होऊ ॥

मन्त्रिन कहा रहो मनबूझे । प्रति न होय योगिहिसों कूँभे ॥

वे मारे तो काह भिखारी । लजि होय जो मानी हारी ॥

ना भल मुये न मारे मोषूँ । दुहूँवात तुम्ह लागहि दोषूँ ॥

रहे देहु जो गढतरे मेली । योगी किताँ आछे पुनि खेली ॥

दो० आछेदेहुँ जो गढतरे, जनि चालहु यह बात ।

नितहिं जो पाहन भखकरहिं, असकेहिके मुखदांत ॥

गये वसीठें पुनि बहुरि न आये । राजें कहा बहुत दिन लाये ॥

नाजनों स्वर्ग बात धौँ काहा । काहुन आयकही फिर चाहा ॥

पंख न कायाँ पवन न पाया । केहिविधिमिलों होउकेहि छाया ॥

सँवर रक्त नयनहि भर चुवा । रोय हँकारेसि मांभी सुवाँ ॥

परी जो आंसु रक्त की टूठी । रँग चली जस बीरबहूठी ॥

नाश १ देर २ राख ३ पहाड़ ४ जहाँ तक ५ गहर ६ मरना ७ खुद-  
 बीनी की ८ गुस्ता ९ वकील १०-२७ लाल ११ जगह १२ घुलाया १३  
 जल्द १४ तद्वीर १५ सलाहकार १६ बड़ाई १७ लड़ाई १८ मरना १९  
 नजात २० पाप २१ किलेके नीचे २२ कितने आये और चले गये २३  
 रहने दो २४ हर रोज २५ पत्थर २६ आसमान तथा किला २८  
 खबर २९ बदन ३० हवा अर्थात् जोर ३१ घुलाया ३२ दरमियानी ३३  
 तोता ३४ खून ३५ ॥

घहीरक लख दीन्हीं पाती । सुवा जो लीन्ह चोच भइराती ॥

बांधी कंठ पड़ा जस कांथी । बिरहिके जराजायकहँ नाथी ॥

दो० मसिनयनी लिखनी बरनै । रोयरोयलिखा अकथँ ।

आखरँ दिहे न कोई छुवै, दीन्ह परेवा हत्थ ॥

श्री मुख बचन सो कहेसि परेवा । पहिले मोर बहुतके सेवा ॥

पुनरे सँवार कहेसि अस दूजी । जेउ बलँ दीन्ह देवतन पूंजी ॥

सो अबहीं तब से बल लागी । बल जिवरहान तनसो जागी ॥

भलहि ईशहँ तुमवल दीन्हा । जहँ तुम तहाँ भाववल कीन्हा ॥

जो तुम भयौ कीन्ह पग धारा । दृष्टि दिखाय वान विषमारा ॥

जो असजाकर आशा सुखी । दुख महँ एसन मारै दुखी ॥

नयनँ भिखारन मानहि सीखा । अगमनँ दौरेलीन्ह पै भिखा ॥

दो० नयनहिँ नयन जो बेधगये, नहिँ निकसै वे वानँ ।

हिये जो आखरँ तुम लिखी, ते शठ घटहिँ परान ॥

ते बिष बान लिखूँ कहँ ताई । रकँ जो चुआ भीज दुनियाई ॥

जान सुकौरी रकपसेऊँ । सुखी न जान दुखी कर भेऊँ ॥

गिनन पीरतिन काकर चिन्तौ । प्रीतमनिठुरँ होहिँ असनिन्तौ ॥

कासों कहँ बिरह की भाखा । जासों कहों होय जरराखा ॥

बिरह आग तन जरमै जरै । नयननीरँ सायँ सब भरै ॥

पाती लिखी सँवर तुम नामा । रकलखे आखर भयश्यामा ॥

आखर जरहिँ न कोई छुवा । तब दुख देख चला लै सुवा ॥

लाल १ गरदन २ निशान ३ आशिक ४ काञ्चल आखका ५ पलक ६ हाल ७ हफ़ ८-२० जलना ९ जोर १० मौजूद ११ ईश्वर १२ मेहरवानी १३ नजर १४ आख १५-१७ आगे १६ तीर १८ छाती १९ खून २१ कालासाँप २२ लाल पसीना २३ भेद २४ अदेश २५ वेदद २६ अर्थात् हमेशा से होते आये हैं २७ आखका पानी तथा आँसू २८ तालाब २९ अर्थात् कालहफ़ ३० ॥

दो० अय शठ मरों छुड़ि गई पाती, प्रेमपियारेहाथ ।

भेदहोत दुख रोय सुनावत, जीव जात जो साथ ॥

कञ्चनतारें बांधगयें पाती । लैगा सुवा जहां धनराती ॥

जैसे कमल सूर्य की आसा । तोर कथें बहु मरै पियासा ॥

विसरा भोग सेज सुख बासू । जहां भँवर सब तहां हुलामू ॥

तबलसि धीर सुना नहि पीउ । सुना तो घड़ी रहै नहि जीउ ॥

तबलगे सुख हियँ प्रेम न जासा । जहाँ प्रेमका सुख विश्रामा ॥

अगर वदन दुखदेहे शरीरुं । औ भा अग्नि कयौ करचीरुं ॥

कथा कहानी सुनि सुठ जरा । जानो धीर वसन्दरै परा ॥

दो० विरहन आप सँभारे, मैल चीरै शिर रुख ।

पिजपिउ करत रातदिन, पपिहा सुख भै सूख ॥

ततखनै गा हीरामनँ आई । मरत पियास अहाँ जनु पीई ॥

भल तुम सुआ कीन्ह है फेरा । गाँद न जानहु प्रीतम केरा ॥

वातहि जानो विषम पहारा । हृदय नमिला न होय निरास ॥

मर्म पानि कर जानि पियासा । जो जल मेहँ ताँकहँ का आसा ॥

का रानी यहि पूँछहु बाँता । जन कोई होय प्रेमकर राता ॥

तुम्हरे दरशनलाग वियोगी । अहा सो महादेव मठ योगी ॥

तुम वसन्तलै तहां सिधाई । देव पूज पुनि औ फिर आई ॥

दो० दृष्टि वान तस मारेहु, खाय रहा तेहि ठाँव ।

दूसर तार न बोलहि, लै पद्मावत नाँव ॥

खाली १ सोनिकातार २ गरदन ३ अर्थात् पद्मावत ४ खोचिन्द ५ खुशी ६ दिल ७ आराम ८ जलना ९ वदन १०-११ कपडा १२-१४ आग १५ उसी वक्त १६ नाम तोता १६ मुशकिल १७ टेढ़ा १८ दिला १९ अलग २० भेद २१ पानी २२ अर्थात् दीवाना २३ दुःखी २४ तिगाह २५ जगह २६ ॥



रोम रोम बान वे फूटी । सूतहिं सूत रुधिरं मुख छूटी ॥

नयनहि चली रक्तकी धारा । कन्थी भीज भयो रतनारौ ॥

मूरज बूढ़ उठा परभार्ता । औ मंजीठ ट्ठमू बनराता ॥

भयो बसन्त राती बनपती । औ जतने सब योगी यती ॥

भूमि जो भीज भयो सब गेरू । औ राती तहँ पढ़पखेरू ॥

राती सती अगिन सबकार्यौ । गगन मेघ राती तहँ आया ॥

ईगुरभा पहाड़ जो भीजा । पै तुम्हार नहिं रोम पसीजा ॥

दो० तहां चकोर औ कोकिला, मर्याँ हिये तेहि पैठ ।

नयनन रक्क भरायहि, तुम फिर कीन्ह न डीठ ॥

ऐसो बसन्त तुम्हीं पै खेलहु । रक्त पराये सेंदुर मेलहु ॥

तुम तो खेल मन्दिर कहँ आई । वह कामर्म जसजान गुसाई ॥

कहोसि मरै को वारहि बारा । एकहि वार होहुँ जरझारौ ॥

सरै रच चहा आग जो लाई । महादेव गौरी सुधि पाई ॥

आय बुझाय दीन्ह पँथं तहां । मरनखेलकर आगमं जहां ॥

उलटा पंथ प्रेमकी वारौ । चढै स्वर्ग जो परै पतारा ॥

अव धसलीन्ह चही तेहि आशा । पावै श्वास कि मरै निराशा ॥

दो० पाती लिख सो पठाई, लिखा सबै दुख रोय ।

धौं जिवरहै कि निसरै, कहा रजायसुँ होय ॥

कहिके सुआ छोड़ दइ पाती । जानहु दब्बै छूट तसताती ॥

गेउं जो बांधा कञ्चन तागा । राती श्याम कण्ठ जर लागा ॥

सुराख १ खून २-१५ आँल ३ गुदड़ी ४ लाल ५-८ भोर ६ लाख ७  
जंगल की वूटी ८ ज़मीन १० परिन्द जानवर ११ बदन १२ आसमान १३  
मेहरवानी १४ भेद १६ ईश्वर १७ राख १८ चिता १९ राह २० पहिले २१  
दरवाज़ा २२ आसमान २३ हुकम २४ निहाई २५ गर्म २६ गरदन २७  
सोना २८ लाल वा काला २९ ॥

अग्नि श्वास मुख निसरैताती । तरवर जरहिं तहां को पाती ॥

रोय रोय सुवे कही सो बाता । रक्त कि आंशु भयो मुखराता ॥

देख कण्ठ जरलाग सो केरा । सो कस जरे बिरह अस घेरा ॥

जर जर हाड़ भये सब चूना । तहां मांस को रक्त बहूना ॥

वै तोहिं लाग कयो सब जारो । तपत मीन जल रहै न पारो ॥

दो० तुहि कारन वह योगी, भस्म कीन्ह तनदाह ।

तू अस निडुरं निझोई, बात न पूछी ताह ॥

कहेस मुआ मोसों मुनि बाता । चहोंतो आज मिलों जसराता ॥

पैसो मर्म न जानै भोरों । जानै मर्म जो मर के होरो ॥

हों जानतहूँ अबहूँ कांचा । नाजेहि प्रीति रंगथिरं रांचा ॥

नाजेहि भयो मलयगिरि<sup>१</sup> वासानाजेहिरबि<sup>२</sup> होयचढेउअकासा

ना जेहि होय भंवरकर रंग । ना जेहि दीपक भयो पतंगू ॥

ना जेहि किरा भुंगं की होई । ना जेहि आप जिये मर सोई ॥

ना जेहि प्रेम औट इक भयो । ना जेहि हिये मांफ डरगयो ॥

दो० तेहिका का कहिये रहन, जो है प्रीतम लाग ।

जो वह सुने लेइ धस, का पानी का आग ॥

पुनिधन कनक वानमसि<sup>३</sup> मांगी । उत्तरं लिखत भीजतन आंगी ॥

तस कञ्चन कहँ वही सुहागा । जोनिस्मल नगहोयसुलागा ॥

हों योगी मठ मण्डफ बहोरी<sup>४</sup> । तहवां कसन गांठ तुम जोरी ॥

गा विपभोरें देखके नयना । सखिनलाजका बोलों बयना ॥

पेह १ चदन २ मछली ३ वेक्करार ४ वास्ते ५ जलाना ६ वेदद ७-८  
भेद ९ नादान १० मरके जलना ११ कायम १२ चन्दन १३ सूर्य १४  
नाम कौड़ा १५ तिसको रहने के वास्ते क्या कहँ १६ पद्मावत १७  
कालम १८ सियाही १९ जवाब २० सोना २१ पाक साफ २२ जाना २३  
बेहोश २४ आवाज़ २५ ॥

खेल मिसैं मैं चन्दन घाला । मगँ जांगेसि तो देवों जैमाला ॥

तबहुँ न जागा गा तू सोई । जागे भेट न सोये होई ॥

अब शंशि होय चढ़े आकासा । जा जिव देय सो आवै पासा ॥

दो० तबलागि भुँकि न लैसका, रावनसिय इकसाथ ।

कौन भरोसे अब कहों, जीव पराये हाथ ॥

अब जो सूर गगन चढ़ आवै । राहु होय तो शंशि कहँ पावै ॥

बहुतेहिँ ऐसो जीवपर खेला । तू योगी किनमाहँ अकेला ॥

विक्रम धसा प्रेमके बारी । सम्पावतँ कहँ गयो पतारा ॥

सुदीपच्छ खरडरावतँ लागी । गगन पूर होयगा बैरागी ॥

राजकुँवरँ कंचनपुरँ गयो । मिरगावतँ कहँ योगी भयो ॥

साधुकुँवरँ खरडावतँ योगू । मधु मालतिकहँ कीन्ह वियोगू ॥

प्रेमावतँ कैसुरसरँ सांधा । ऊषाँ लागि अनिरुधँ वरवांधा ॥

दो० हों रानी पञ्चावत; सात स्वर्ग पर वास ।

हाथ चढ़ों सो तेहिके, प्रथमँ करै अपनास ॥

हों पुनि अहों ऐस तुम राँती । आधी भेट पिरितम पाती ॥

तोहँ जो प्रीति निबाँहै आटा । भँवरन देख केतमहँ कांटा ॥

होहु पतङ्ग आवगँहुँ दिया । लेहसमुद्रधसहोय मरिजिया ॥

राँत रंगजिमिँ दीपकवाती । नयनँ लावहोयसीपसेवाती ॥

चात्रिकँ होहु पुकारपियासा । पियो न पानि स्वातिकी आसा ॥

सारस हो बिछुरी जस जोरी । रयँनि होयजलचकड़ चकोरी ॥

बहाना १ शायद २ चाँद ३-७ भीख ४ सूर्य ५ आसमान ६ राजा  
विक्रमाजीत ७ दरवाजा ८ नामरानी १०-१२-१६-१८-२१ राजामोज ११  
नाम जगह १३-१५ नाम राजा १४-१७-२२ भँवर १६ दुखी २० वेदी  
बायासुर २३ पोता श्रीकृष्णचन्द्रजी २४ पहिले २५ लाल तथा खुश २६  
निबाह करना २७ पकड़ना २८ सुख २९ जिस तरह ३० आँख ३१  
पपीहा ३२ रात ३३ ॥

होहु चकोरदंष्ट्रि शशि पाहां । औ रवि होहु कमल वहमाहां ॥

॥ दो० होहु ऐस तुहिराती सक्रेसि तो प्रीति निबाह ।

॥ राहुबेध अर्जुन होय, जीत दुरपदी व्याह ॥

॥ राजायहां तैसे तप भूरा । भाजर बिरह छार कर कूरा ॥

॥ जिव गंवाय सो गयो विमोही । भाबिनजिवजिबदीन्हेसिओही ॥

॥ कहां पिङ्गला सुखमन नारी । सुन्नसमाधि लाग गइ तारी ॥

॥ बूद समुद्र जैसो हो मेरा । गा हेराय तस मिलै न हेरा ॥

॥ रंगहि पान मिला जस होय । आपहि खोय रहा होय सोय ॥

॥ सुवे आय देखा भा नाशू । नयन रक्त भर आये आंशू ॥

॥ सदा प्रीतम गाढ़ करेई । वह न भूल भूला जिव देई ॥

॥ दो० मूर सजीवन अनके, औ मुखडिडका नीर ।

॥ गरुडपंख जस झरै, अमृत बरसा करै ॥

॥ मुवाजिया अस बास जो पावा । लीन्हेसिश्वासपेटजिवआवा ॥

॥ देखिसि जाग सुआ शिरनावा । पातिदीन्हमुखबचनसुनावा ॥

॥ शब्द सुनाय अमीमुख मेल । गुरु बुलाय वेग चलचला ॥

॥ तोहि अलि कीन्ह आपभाकेवी । हों पठवा गुरु बीच परेवा ॥

॥ पर्वन श्वास तोसों मनलाई । जोवै मार्ग दृष्टि विडरई ॥

॥ जस तुम काया कीन्हों दाह । सोसबगुरुकहँभयो अगाँह ॥

॥ तपावन्त छाली लिखदीन्हा । वेग चलावचहँसिधि कीन्हा ॥

॥ दो० वेग चलआवो अस कहेउ, जीव वसे तुम नाउ ।

निगाह १ चाँद २ सूर्य ३ नाम भाई राजा युधिष्ठिर ४ रंग ५-६

जुलम ७ नाम वृद्धी ८ पानी ९ तोता १० बोल ११ जलद १२-२४ भँवर २३

केतकी १४ विचवानी १५ हवा १६ दूढ़ना १७ राह १८ निगाह १९

जलाना २० खबर २१ दिन मिला २२ खत २३ काम पूरा २५ ॥

नयनहि भीतरपन्थै है, हिरदय भीतर ठाँउ ॥

मुनि पद्मावत की अस मयाँ । भावसन्त उपजी नइ कयाँ ॥

मुआका बोल पवन होयलागा । उठासोय हनुमत होय जागा ॥

चांदमिलनकहँ दीन्हेंसि आशा । सहसँ किरानसूर्यपरकाशा ॥

पाति लीन्ह लै शीशं चढ़ावा । दृष्टि चकोर चांद जस पावा ॥

आश पियासा जो जेहि केरा । जो भिभकार वही सो हेराँ ॥

अब यहि कौन पानि मैं पिया । मै तन पांख पतङ्ग मरजिया ॥

उठा फूल हिरदय न समाना । कन्थाँ टूक टूक भर आना ॥

दो० जहां प्रीतम वै बसहिं, यहि जिववलें तेहिवाँटै ।

जो सो बुलावै पांव सों, हमतहँ चलै ललाटै ॥

जो पन्थ मिला महेशहि सेई । गयो समुद्र ओही धसलेई ॥

जहँ वह कुराड विषमँ औगाहाँ । जायपरा तहँ पाव न थाहा ॥

बावर अन्ध प्रेम कर लागू । सौहँ धसा कुछसूफ न आगू ॥

लीन्हेंसि धसजोश्वासमनमारा । गुरु मुछन्दर नाथ सँभारा ॥

चेला परी न छाँडहि पाछू । चेला मच्छ गुरु जस काछू ॥

जस धसलीन्ह समुद्र मरजिया । उधरे नयन वरै जस दिया ॥

खोज लीन्ह सो स्वर्ग दुवारा । वञ्चँ जो मूँदे जाय उधारा ॥

दो० बाँकचढ़ाव स्वर्ग गढ़, चढ़त गयो होय भोर ।

भइ पुकार गढ़ ऊपर, चढ़े सेंध दै चोर ॥

राजें मुनि योगी गढ़ चढ़े । पूँछी पास पांडित जो पढ़े ॥

योगी गढ़ जो सेंध दै आवहिं । बोलहुशब्दें शुद्धजसपावहिं ॥

आँख १ राह २ दिल ३ जगह ४ मेहरवानी ५ पैदा होना ६ वदन ७ हज़ार ८ शिर ९ देखना १० गुदड़ी ११ न्योछावर १२ राह १३ माथा १४ महादेवजी १५ टेढ़ा १६ खबर १७ सामने १८ आसमान १९-२१ पत्थर २० कहां कयाँ दराड २२ ॥

कहहिं बेद परिहत पढ़ बेदी । योग भँवर जसमालति भेदी ॥

जैसे चोर सेंध शिर मेलहिं । तस ये दोउ जीव पर खेलहिं ॥

पन्थ नहि चलहिं बेदजसलिखी । स्वर्गजाय शूलीचढ़ सिखी ॥

चोर होय शूली पर मोषूँ । देजो शूरी तेहि नहिं दोषूँ ॥

चोर पुकार बेध घर मूसी । खोलो राज भँडार मँजूसी ॥

दो० जसयहि राजमँदिर कहँ, दीन्हरयन होय सेंध ।

तेसो इन्ह कहँ मोषहोय, मारहु शूली बेध ॥

खण्डबीसवां मन्त्रीखण्ड गन्धर्वसेन ॥

रांध जो मन्त्री बोले सोई । एसो जो चोर सिद्ध पै कोई ॥

सिद्ध निशङ्क स्यनदिन भोही । ताकाँ जहां तहां अपसोही ॥

सिद्ध निडरपै अपने जीवा । स्वर्ग देख वो नावहि श्रीवाँ ॥

सिद्ध जाय पै जिव बधतहां । औरहिं मरन पंख अस कहां ॥

सिद्ध अमरं कार्याँ जसपारा । जरहिं मरहिं परजाय न मारा ॥

चढ़ा जो कोप गर्गनं उपरही । थोरे साज भरे ते नाही ॥

जम्बुकं जूझचढ़े जो राजा । सिंह साजके चढ़े सो छाजा ॥

दो० छरहि काज कृष्ण करसाजा, राजा चढ़े रिसाय ।

सिद्धगिद्धजहँदृष्टि गगनभहँ, बिनछरकुछनबिसाय ॥

आवहु करहुकदरं मससाजू । चढ़हिं बजाय जहाँलगिराजू ॥

होहसँजोवर्ल कुँवरजो भोगी । सब दलछेकधरहु अब योगी ॥

चौबिसलाख छत्रंपति साजे । छपनकोटि दरं बाजनबाजे ॥

राह १ नजात २ पाप ३ सन्दूक ४ मर्दकामिल ५ फिरना ६ देखना ७

पहुँचना ८ गर्दन ९ हमेशाजिन्दा १० चदन ११ आसमान १२ सियार १३

शेर १४ फुरेव १५ निगाह १६ लयकर तय्यार हो १७ मुक्ताबिला १८

राजा १९ क्रौञ्च २० ॥

बाइससहस्रां सिंहली चाले । गिरि पहाड़ पेई सब हाले ॥  
जगत बराबर वै सब चांपा । डराइन्द्रबासुंकि हिये कांपा ॥  
पदमकोटिरथसाजे आवहिं । गढ़होयखेहै गगन कहँधावहिं ॥  
जनु भौचाल जगत महँ परा । कुर्महिं पीठ टूटि हिय डरा ॥  
दो० अत्रहि स्वर्ग छायागा, सूर्य भयो अलोप ।

दिनहि रात अस देखी, चढ़ाइन्द्र होय कोप ॥  
देखकरकँ औमनमंत हाथी । बोले रतनसेन के साथी ॥  
होतआव दल बहुत असूभा । अस जानव कुछ होयहैजूभा ॥  
राजा तुँ योगी होय खेला । यहीदिवस कहँहमभयेचेला ॥  
जहां गाँठे ठाकुर कर होई । सङ्ग न अँडे सेवक सोई ॥  
जो हम मरन-दिवसमनताका । आजआय पूजी वह शाका ॥  
पर जिव जाय जायनहिबोला । राजा सतसुमेरु नहि डोला ॥  
गुरु केर जो आयसुं पावहि । सौँहँ होहिअौचकँ चलावहि ॥

दो० आजकरहि रण भारत, सत बाचादै राख ।  
सत्त गुरु सत कौतुकँ, सत्तभरै पुनि साख ॥  
गुरु कहा चेला सिध होहू । प्रेमबारै है करो न कोहू ॥  
जा कहँ शीशं नायके दीजै । सङ्ग न होय जूझ जो कीजै ॥  
जेहिं जिय प्रेमपाँनि भासोई । जेहि रँगमिलै वही रँगहोई ॥  
जो पै जाय प्रेम सौं जूझां । किततपमरहि सिद्ध जेहिबूझा ॥  
यहिसतबहुतजूझँ नहिकरिये । खड्गँ देख पानी है हरिये ॥  
पानी कहा खड्ग की धारा । लौट पानि सोई जो मारा ॥

हजार १ पहाड़ २ नामराजासांपोंका ३ दिल ४ राख ५ आसमान ६-८  
कछुवा ७ फौज ८ मस्त ९ दिन ११ मुसीबत १२ मालिक १३ हुकम १४  
सामने १५ नामहथियार १६ तमाशा १७ दरवाजा १८ गुस्ता १९ शिर २०  
पानी २१ लड़ाई २२-२३ तलवार २४ ॥

पानी से ते आग का करई । आये बुझाय पानी जोपरई ॥

दो० शीश दीन्ह मैं आगमन, प्रेमपानि शिरमेल ।

अवसो प्रीति निवाहुँ, चलो सिद्धहोय खेल ॥

राजें छेक धराः सब योगी । दुखऊपर दुखसहै वियोगी ॥

नाजिय धड़क हिये डरकोई । नाजियमरन जिवनकसहोई ॥

नागफांस उन्हमेली ग्रीवां । हर्ष न विसमो अबकोजीवां ॥

जोजिव दीन्ह सोलेव निरासा । विसरेनहिं जोलहतनश्वासा ॥

करै किंगरी तेहि तन्तवजावा । यही गीत वैरागी गावा ॥

भलहिं आनगये मेली फांसी । हिये नशोचऐसीरिसनासी ॥

मैगये फांद वही दिन मेली । जेहि दिन प्रेमपन्थ खेला ॥१॥

दो० परगट गुप्त सकल महँ, पूरहा सोनाउँ ।

जहँ देखों वह देखों, दूसर नहिं कहूँ जाउँ ॥

जवलग गुरु मैं अहानचीन्हा । कोटिअन्तरपटें बिचहुतदीन्हा ॥

जो चीन्हा तौ और न कोई । तनमन जिव यौवन सबसोई ॥

होंहों कहत धोख अन्तराहीं । जो भा सिद्ध कहां परछाहीं ॥

मारै गुरु कि गुरु जियावा । और को मारमरै सब आवा ॥

सूरी मेल हस्ति गुरु परू । हों नहिं जानौं जानै गुरु ॥

गुरु हस्ति परचदेसोपेखां । जगत्त जोनार्स्त नास्तसबदेखा ॥

अंधिमीन जसजलमहँधावा । जलजीवन जलदृष्टि नआवा ॥

दो० गुरुमारे मारे हिये, दिये लुरझहिढाँठ ।

भीतर करहि डुलावै, बाहर नाचै काठ ॥

शिर १ पहिले २ दुखी ३ दिल ४-१० गरदन १-६ खुशी ६ दुःख ७ हाथ ८ जाहिर ११ छिपा हुआ १२ सब १३ करारों परदाका बीच १४ हाथी १५ देखना १६ दुनियां १७ नाश होनेवाला १८ मछली १९ जिन्दगी २० निगाह २१ घोड़ेकी घांग २२ ॥



सो पद्मावत गुरुहों चेला । योगतन्त जेहिकारन खेला ॥

तज व्ह बार न जानौदूजा । जेहि दिन मिलै यात्रा पूजा ॥

जीवकाढ़ भुइंधरो ललाटू । वहिकहँ देउँ हियाँ महँपाटू ॥

को मोहिलै सो छुवावै पाया । नौ अवतारँ देइ नइ कायाँ ॥

जीवचाहि सोअधिकं पियारी । मांगै जीव देउँ बलिहारी ॥

मांगै शीशँ देउँ मैं श्रीवाँ<sup>२</sup> । अधिक तेरे जो मारै जीवाँ ॥

अपने जिवकर लोभ न मोहीं । प्रेम बार होय मांगौँ ओहीं ॥

दो० दर्शन वहकादिया जस, हों सुभिखारी पतंग ।

जो करवटँ शिर सारी, मरत न मोरों अंग ॥

पद्मावत कमलार्शशि ज्योती । हँसै फूल रोवै तव मोती ॥

परजापतेँ हँसी औ रोँचूँ । लायेदूत होय नितँखोजू ॥

जबहिँ सूर्य्य कहँलागाराहू । तवहिकमलँ मनभयो अगाँहूँ ॥

बिरह अगस्तँ जोविसँमो भयउ । सरवरँ हरषँ सूखसव गयउ ॥

परगटँ ठारसकै नहिँ आंशू । घुटघुट मांसगुँष्ठ होयनाशू ॥

जस दिनमांभरयनिहोयआई । विगसतकमल गयो मुरभाई ॥

राताँ बदन गयो होय सेताँ । भवँत भँवर रहिगई अचेता ॥

दो० चितहिँ<sup>२६</sup> जो चित्रँ कीन्हधुँनँ, रोरोँअङ्ग समीप ।

सहँसै सालदुख आहभर, मुरछँ परीकामीप ॥

पद्मावत सँग सखी सयानी । गनकेनखत पीरशँशि जानी ॥

घास्ते १ छोड़ना २ दरवाजा ३ शिर ४-११ दिल ५ तन्त ६ नया  
जन्म ७ बदन ८ ज्यादा ९-१० गरदन १२ शिर उतारना १३ चाँद १४  
बाप पद्मावत १५ रोना १६ हररोजतलाश १७ तथा राजारतनसेन १८  
तथा पद्मावत १९ खबर २० आग २१ तेज २२ तालाव २३ खुशी २४  
जाहिर २५ छिपा २६ लाल २७ सफ़ेद २८ याद २९ तसवीर ३०  
पद्मावत ३१ हज़ार ३२ बेहोशी दूरहोती ३३ चाँद तथा पद्मावत ३४ ॥

जानेहुमैर्मे कमलकरं कोई । देख बिथा बिरहिन की रोई ॥

बिरहा कठिन काल की कला ॥ बिरहन सही कालपर भला ॥

काल काढ़ लैजीव सिधारा । बिरह काल मारे पर मारा ॥

बिरह आग पर भेलै आगी । बिरहघावपर घावबिजागी ॥

बिरह आनपर बान पसारा । बिरह रोग पर रोग सँचारा ॥

बिरहसाल परसाल नवेला । बिरहकाल परकाल दहेला ॥

दो० तनरावन होय शिरचढ़ा, बिरह भयो हनुमन्त ।

जारे ऊपर जरे, तजै न कै भसमन्त ॥

कोइकुमोदपरसहिंकरपाया।कोइमलयागिरि छिड़कहिंकाया ॥

कोइमुखशीतलनीर चुवावै । कोइअंचलसो पवनडुलावै ॥

कोइमुखअमृतआननिचोवा।जनुबिषदीन्हअधिक धन सोवा ॥

जोवहिंश्वासखनहिंखनसखी।कबजिवफिरैपवनऔपँखी ॥

बिरहकाल होयहिये जो पैठा । जीवकाढ़ लै हाथे बैठा ॥

खनकमवन्नबांधाखनखोला।गहेसि जीभमुखजायनबोला ॥

खनहि बीज की बानन मारा । कँपकँप नारिमरै बिकरारा ॥

दो० कतहू बिरह न छाँड़ै, भा शशिगहन गिराश ।

नखत चहूँदिशि रोवहिं, अंधरे धरत अकाश ॥

घड़ीचारइमि गहनगिराशी।पुनिविधि हिये ज्योतिपरकाशी ॥

निसँसे ऊभभर लीन्हेश्वासा । भइ अधार जीवनकी आसा ॥

बिनवहिं सखी छूटशैशि राहू।तुम्हरी ज्योति ज्योतिसबकाहू ॥

भेद १ कोकावेली २-७ आग ३ सुराख ४ भारी ५ छोड़ना ६ चन्दन ७

ठण्डापानी ८ बहुत १० पद्मावत ११ हरघड़ी १२ दिख १३ रुकना १४

बिजुली १५ बेकरार १६ चाँदगहन १७ इस तरह १८ ईश्वर १९ दिल २०

रोशनी २१ बेहोश २२ कछु खाया २३ चाँद २४ ॥

तू शशिबंदन जगत उजियारी । कै हरलीन्ह कीन्ह अधियारी ॥  
 तू गजगाँमिनि गर्व गहेली । अबकसअस सतछांडदहेली ॥  
 तू हर लंक हेराई केहर । अब कसहार करेसि है हर ॥  
 तू कोकिल बैनी गजमोहा । कौनव्याधहोयगहीनिछोहा ॥  
 दो० कमलकरी तू पद्मिन, गइ निशि भयो विहान ।  
 अबहुँ न सम्पट खोलिसि, जोरिउठाजगभान ॥  
 भाननाउँ सुनिकमल विकासा । फिरकै भँवरलीन्ह मधुवासा ॥  
 शरदचन्द मुखजीभ उधेली । खंजननयन उठी करकेली ॥  
 बिरह न बोल आव मुखमाई । मरमर बोल जीववरियाई ॥  
 डोलबिरहदारुण हिय कांपा । खोलनजाय बिरहदुखभांपा ॥  
 उँदधि समुद्रजसतरंग दिखावा । चंपू महिमुखवातन आवा ॥  
 यह शठ लहर लहर परधावा । भँवरपरा जिव थाह न पावा ॥  
 सखी आन विप देवतो मरनू । जीव न पेट मरन का डरनू ॥  
 दो० खँनै उठै खनबूडै, अस हिय कमल सकेत ।  
 हीरामनहि बुलावहि, सखी कहन जिव लेत ॥  
 चेरी धाय सुनत खन धाई । हीरामन लै आय बुलाई ॥  
 जनहु वैद्य औषध लैआवा । रोगिये रोग मरतजिव पावा ॥  
 सुनत अशीशनयनधनखोली । बिरहबैनकोकिलजिमि बोली ॥  
 कमलहि बिरहविथा जसवादी । केशर वरनपीर हिय कादी ॥  
 कित कमलहि भा प्रेम अंगूरू । जो पै गहन लेह दिन सूँ ॥

चाँद कैसा मुँह १-दुनियां २ हाथीकी खाल ३ गरूर ४ भारी ५ कमर ६  
 खाँता ७ आवाज़ ८ वेदद ९ रात १० सूर्य ११ फातिककी पूरनमाँसीका  
 चाँद १२ समोलाकी आंख १३ भारी १४ मुश्किल १५ दिल १६ नामसमुद्र १७  
 लहर १८ आंख १९ कभू २० बन्द २१ जिसतरह २२ पीला २३ सूर्य २४ ॥

पुरयन चाहिं कर्मल की करी । सकल विथा मुनि असतुमहरी ॥

पुरुष गँभीर न बोलहिं क्रीहू । जो बोलहिं तो और निबाहू ॥

दो० एतना बोल कहत सुख पुनि होइगई अचेत ।

पुनिकै चेत सँभारी वही बकत मुखलेत ॥

और दग्ध का कहीं अपारा । सती जो जरे कठिन असभारा ॥

होय हनुमन्त पैठ है कोई । लङ्का दाह लाग तन सोई ॥

लङ्का बुझी आग जो लागी । यहिन बुझै तस आंच विजागी ॥

जनहु अगिनके उठहिं पहारू । वैसव लागहिं अंग अंगारा ॥

कट कट मांस सरागँ पुरोवा । रक्तकी आंसु मांस सबरोवा ॥

खनक वार मांस अस भूजा । खनहिं चपायसिंह असगूजा ॥

यहरी दग्ध हत अतम मरीजे । दग्ध न सही जीवपर दीजे ॥

दो० जहँ लगचन्दन मलयगिरि । औ सायँ रँ सबनीरँ ।

संभमिल आय बुझावहिं, बुझाहि न आगशरीर ॥

हीरामंन जो देखेसि नारी । प्रीति बेल उर्पजी हियँ बारी ॥

कहेसिन तुमकस होहु दहेली । उरभी प्रेम प्रीतिकी बेली ॥

प्रीतिबेल जन उरभै कोई । उरभा मुये न छूटै सोई ॥

प्रीतिबेल ऐसे तन डाढ़ा । पलहत सुख बाढ़त दुख बाढ़ा ॥

प्रीतिबेलकी अमर को बोई । दिनदिन बढ़ै क्षीणँ नहिं होई ॥

प्रीतिबेल सँग विरह अपारा । स्वर्ग पतार जरै तेहिभारा ॥

प्रीति अकेल बेल जहँ छावा । दूसर बेल न सरवरँ पावा ॥

दो० प्रीतिबेल उरभाय जब, तब मुजान सुखसाख ।

मिले प्रीतम आयके, दाखँ बेल रस चाख ॥

सब १ अच्छेलोग २ जलन ३ मुशकिल ४ जलाना ५ आग ६ सीख ७ कर्मा ८ शेर ९ चन्दन १० तालाव ११ पानी १२ पैदा १३ दिल १४ भारी १५ घटना १६ आसमान १७ बराबरी १८ अंगूर १९ ॥

पद्मावत उठि टेके पाया। तुमहुँ तो देखौ प्रीतम छाया ॥

कहतलाज औरहिये न जीव। इकदिशँ आगदुसरदिशपवि ॥

तुमसो मोर खेवकै गुरु देवा। उतरों पार तेही विधि खेवा ॥

सूरँ उदयगढ़ चढ़त भुलाना। गहने गहा कमल कुँभलाना ॥

औ हत होय मरों नहिँ भूरी। यह शठ मरों जो नेरहि दूरी ॥

घट महँ वकत वकतभा मेरुँ। मिलहिन मिलहिपरातसफेरु ॥

दमनहिँ नलहिँ जोहंसमिलावा। तव हीरामन नाउँ कहावा ॥

दो० मूरँ सजीवन दूर है, सलै शक्ती वान।

प्राण मुक्तिँ अबहोतहै, वेगँ देखावहिअन ॥

हीरामन भुईँ धरा ललाटूँ। तुमरानीयुगयुगै सुखपाटूँ ॥

जेहिके हाथ जरी, औ मूरी। सो योगी अब नाहीँ दूरी ॥

पिता तुम्हार राज कर भोगी। पूजे विप्रँ मरावै योगी ॥

पँवरँ पँवर कुतवाल सो बैठा। प्रेमकलुव्यँ सुरँगहोय पैठा ॥

चढ़त रयनिगढ़ होयगा भोरु। आवत वारँ धराकै चोरु ॥

अब लैगये देय वह शूरी। तेहिसो अगाँहँ विथातुमपूरी ॥

अब जिव तुम कायाँ वहयोगी। काया रोग जान पै रोगी ॥

दो० रूप तुम्हार योगी आपन, पिंड कमावा फेर।

रहा हेराय खंड तेहि आपै, कालन पावत हेर ॥

हीरामन जो बात यहि कही। सूर्यकीगहन चांद पुनिगही ॥

सूर्यकीदुखजोशशिँ होयदुखी। सो कित दुखमाने करमुखी ॥

अबजो योगी मरै मोहिँ नेहौ। मोहिँ वह साथ धर्तगगनेहौ ॥

छाँती १ इकतरफ़ २ महाह ३ सूर्य ४ मुलाकात ५ रानीदमन ६ नाम

राजा ७ नाम वृद्धी ८ सूराल ९ आखिर १० जल्द ११ शिर १२ हमेशा १३

तक़्त १४ जड़ १५ ब्राह्मण १६ ड्योढी १७ प्रेमका भराहुआ १८ दरवाज़ा १९

खवर २० वदन २१ चाँद २२ मुहब्बत २३ ज़मीन-आसमान २४ ॥

रहै तो करों जन्म भर सेवा । चलैतो यह जिव साथ परेवा ॥

कौनसो कर लैगहि<sup>२</sup> गुरुसोई । पर कार्या प्रवेश जो होई ॥

पलटसो कौन पंथ विधिखेला । चेला गुरु गुरु होय चेला ॥

कौन खण्ड अस रहा लुकाई । आवै काल हेरै फिर जाई ॥

दो० चेला सिद्ध सो पावै, गुरुसों करै अछेद ।

गुरु करै जो कृपा, कहै सो चेला भेद ॥

अनरानी तुम गुरु वह चेला । मोहिं पूँछहु कै सिद्ध नवेलीं ॥

तुम चेला कहँ परशन भई । दरशन देय मँडफ चलगई ॥

रूप गुरु कर चेलहि डीठा । जितसमायहोयचित्रं सोपैठा ॥

जीव काढ़ लै तुम अपसई<sup>३</sup> । वह भा काया जिव तुम भई ॥

कया जो लाग धूप औ सेऊँ । कया न जान जानि पै जीऊँ ॥

भोग तुम्हार मिला वह जाई । जो वहविथा सोतुमकहँआई ॥

तुम वहकी घट वह तुम माहां । काल कहां पावै वह व्याहां ॥

दो० अस वह योगी अमर भा, परकाया परवेश ।

आवकाल गुरु तनदेखी, फिर सोकरै अदेश ॥

मुनि योगीकी आमरकरनी । न्योरी<sup>४</sup> विरहत्रिधाकीमरनी ॥

कमलकरीहोय बिकसौं जीव । जनु रविउदय छूटगासीव<sup>५</sup> ॥

जो भा सिद्धको मारै पारा । तीव्रसते होय जो धारौ ॥

कहो जाय अब मोर संदेश । तजो<sup>६</sup> योगअबहोहु नरेश ॥

जन जानहु हौं तुमसों दूरी । नयनहिं मांफ गड़ी वहशूरी ॥

तुम प्रस्वेत घटै घट केरा । मोहिंघटजीव घटतनहिंवेरा ॥

हाथ १ पकड़ना २ घटन ३ राह ४ देखना ५-६ कमल ६ दुईन राखे ७ नया न तसवीर १० छिपना ११ जाड़ा १२ हमेशा जिन्दा १३ सलाम १४ आखिर १५ खिलना १६ सूर्यके उदय जाड़ा जाय १७ राख १८ छोड़ना १९ बहादुर २० पसीना २१ देर २२ ॥

तुम कहँ पाटँ हिये<sup>२</sup> में साजा । अब तुम मोर दुहूँ जगराजा ॥

दो० जोरीजियहिंमिलगलरहै, मरहिं तोएकहिं दोउ ।

तुमपै जियजनहोयकुछ, भोजियहोयसोहोउ ॥

खएडइकीसवांशूलीखएडरतनसेन ॥

बाँधतपाँ आनी जहँ शूरी । जुरेआय सव सिंहल पूरी ॥

पहिले गुरुदेय कहँ आना । देखरूप सवकोउ पछताना ॥

लोगकहँ यहि होय न योगी । राजकुँवर कोउअहैवियोगी ॥

काहू लाग भयो है तपा । हिये<sup>३</sup> सुमाल केर मुखजपा ॥

जस मारे कहँ बाजा तूरू । शूरीदेख हँसा मन्मूरू ॥

चमके दशन भयो उजियारा । जो जहँ तहां वीज असमारा ॥

योगी केर करो पै खोजू । मंगै यहिहोय न राजा भोजू ॥

दो० सव पूँछहिं कहु योगी, जात जन्म औ नाउ ।

जहाँ ठाँव रावकर, हँसा सो कहु केहिभाउ ॥

का पूँछौ अब जात हमारी । हम योगी औ तपा भिखारी ॥

योगी जात कौन हो राजा । गारिन कोहमारँ नहिं लाजा ॥

निलज भिखारलाजजेहिं खोई । तेहिकी खोज परै जन कोई ॥

जाकर जीव मरे पर वसा । शूरीदेख सो कसनहिं हँसा ॥

आज नेहसों होय निबेराँ । आजभूमि<sup>४</sup> तजै गगन वसेरा ॥

आज कयौ पिंजर वंद दूटा । आजहिं प्रान परेवाँ दूटा ॥

आज नेह सो होय नियाराँ । आज प्रेमसँग चला पियारा ॥

दो० आजअवधै सरै पहुँची, गयेजाउँमुखरातँ ।

सङ्गत-१ दिल २-५ योगी ३ दुखी ४ नामवाजा ५ नाम मर्द  
कामिल ७ दांत न बिजुली ८ तलाश १० शायद ११ गुस्ता १२ जुदाई १३-१६  
जमीन १४ छोड़ना १५ आसमान १६ चदन १७ उड़नेवाला १८ हृद २०  
बराबर २१ लाल २२ ॥

वेगं होहु मोहिं सारहु, जन चालहु यह बात ॥  
 कहहिं सँवरि जेहि चाहेसि सँवरा । हम तुम करहिं केतिकर सँवरा ॥  
 कहेसि वही सँवरों हर फेरा । मुयेजीत आहों जेहि केरा ॥  
 औ सुभिरों पद्मावत रामा । यहि जिवन्योझावरतेहिनामा ॥  
 रक्त की बूँद कयाँ जब परहीं । पद्मावत पद्मावत कहहीं ॥  
 रहे तो बूँद बूँद महँ ठाँऊँ । परहुँ तो सोई लै लै नाँऊँ ॥  
 रोम रोम तन तासो ओधों । सूतहि सूत बेध जिवसोधा ॥  
 हाड़हिहाड़ शब्द सो होई । नस नस माँह उठै धुनिसोई ॥  
 दो० खाय बिरह गाताकर, गूद मांस किये हान ।  
 हों पुनि सांचा होय रहा, वहकी रूप समानें ॥  
 योगिहि जबहिं गाढ़ असपरा । महादेव कर आसन टरा ॥  
 औ हँसि पार्वती सो कहा । जानहुसूर गहन असगहा ॥  
 आज चढ़े गढ़ ऊपर तपों । राजें गहाँ सूर तब छिपा ॥  
 जग देखैगा कौतुकें आजू । कीन्ह तपा मारे कहँ साजू ॥  
 पार्वती मुनि पाँयन परी । चलौ महेश देखैं इक घरी ॥  
 भेष भाट भाटिन कर कीन्हा । औ हनुमन्तबीर संगलीन्हा ॥  
 आय गुप्त है देखन लागे । वहसूरति कस सती सभंगे ॥  
 दो० कटकें असूक्ष्मदेखके आपन, राजागर्व करेय ।  
 दईकीदिशाँ न देखै, वह काकहँ जयँ देय ॥  
 आसन लिये रहा हो तपा । पद्मावत पद्मावत जपा ॥  
 मन समाध तासों धुन लागी । जेहिदरशन कारण वैरागी ॥

जलद १ चदन २ जगह ३ वेधना ४ सूरका ५ आवाज ६ लमाना ७  
 मुशकिल ८ सूर्य ९ योगी १० तमाशा ११ महादेवजी १२ छिपकर १३  
 सतीकी तरह क्लायम १४ प्रोज १५ गहर १६ ईश्वरकी तरफ १७ जीत १८ ॥



रहा समाय रूप वह नाऊँ । और न मूक वारं जहँ जाऊँ ॥  
 औ महेश कहेँकरो अदेशूँ । जेहि यहपन्थ दीन्ह उपदेशूँ ॥  
 पार्वती पुनि सत्य सराहा । औ फिरमुखमहेश करजाहाँ ॥  
 हिये महेश भईजोमहेशी । कित शिरनावहिं ये परदेशी ॥  
 मरतेहुँ लीन्ह तुम्हारा नाऊँ । तुमचित कीन्ह रही यहटाँऊँ ॥  
 दो० मारतही परदेशी, राखलेहु यहि वीर ।

कोइ काहू कर नार्ही, जो हो चलै न तीर ॥

लै संदेश सोटाँ गा तहाँ । शूली देहि रतन को जहाँ ॥  
 देख रतन हीरामन रोवा । राजा जिव लोगनहठ खोवा ॥  
 देख रोदन हीरामन केरा । रोवहिं सब राजा सुखहेराँ ॥  
 मांगहिं सब विधिनाँ सोँ रोई । की उपकारेँ छुड़ावै कोई ॥  
 कहि संदेश सब विपतिमुनाई । विकल बहुत कुछकहीनजाई ॥  
 काढ़ प्रान बैठ लिये हाथा । मरै तो मरों जियोँ इक साथी ॥  
 सुनि संदेश राजा तब हँसा । प्रान प्रान घट घट महँ वसा ॥  
 दो० हीरामन औ भाट दसौंधी, भये जिवपर इकठाउँ ।

चल सो जाय अब देख तहँ, जहँ बैठो रहिराउँ ॥

राजा रहा दृष्टि कै औंधी । रहिनसका तब भाट दसौंधी ॥  
 कहेसि मेलकै हाथ कटारी । पुरुष न आछे बैठि पिटारी ॥  
 कान्ह कोप कै मारा कंमू । गोकुल मांफ वजावा वंमू ॥  
 गन्धबसेन जहाँ रिस बाढ़ा । जाय भाट आगे भा ठाढ़ा ॥  
 ठाढ़ देख सब राजा राऊ । बायें हाथ दीन्ह वरभाँऊ ॥

दरवाजा १ महादेवजी २-७ सलाम ३ राह ४ देखना ५ दिल ६  
 मेहरवानी ७ जगह ८ तोता ९ रोना ११ देखना १२ ईश्वर १३  
 कोशिश १४ निगाह १५ आशीर्वाद १६ ॥

बोला गन्धर्वसेन रिसाई । कैस योगि कसभाट असीई ॥

योगी पानि आग तू राजा । आगहिपानिजूम नहिंछाजा ॥

दो० आरा बुझाई पानि सो, जूम न राजा बूम ।

लीन्हे खपर बार तुहिं, भिक्षा देहि न जूम ॥

योगि न होय आहि सो भोजू । जानहु भेद करो सो खोजू ॥

भारथ होय जूम जो अधा । होहिं सहाय आयसबयोधा ॥

महादेव रण घण्ट बजावा । मुनिकै शब्द ब्रह्मचलिआवा ॥

बासुकि फणपतार सो कादा । अष्टोकली नागभा ठादा ॥

छप्पन कोटि बसन्दरं बरा । सवालाख पर्वत फुरहरा ॥

चढे अस्त्र लै कृष्ण सुरारी । इन्द्र लोग सब लाग मुहारी ॥

तेतिस कोटि देवता साजा । औ छानबे मेघदल गाजा ॥

दो० नबे नाथ चलिआवहिं, औ चौरासी सिद्ध ।

आजमहाभारथचलै, गगनं गरुडं औगिद्ध ॥

भइअज्ञी को भाट औभाऊं । बायें हाथ दिये बरभाऊं ॥

को योगी अस नगरी मोरे । जो दै सेंध चढे गढ चोरे ॥

इन्द्र डरै नित नावै माथा । जानत कृष्ण शेष जे नाथा ॥

ब्रह्मा डरै चतुरमुखं जामू । औ पाताल डरै बलं बामू ॥

धरति डरै औ मण्डफ मेरुं । चन्द्रसूर्य्यऔ गगनं गंभीरु ॥

मेघ डरहिं बिजुली जेहिडीठी । कूर्म डरै धरती जेहिं पीठी ॥

चहोंतो सबमाँकों धर केशा । औरकोगिनतं अनेगनरेशां ॥

वेअदव १-१६ लड़ाई २ दरवाजा ३ भारी लड़ाई ४ मारना ५ मदद ६  
आवाज ७ नाम राजा साँपों का ८-२० नाम हाथी ९ आग १० मौजूद ११  
हथियार १२ आसमान १३ नाम राजा पक्षी १४ हुकम १५ सलाम १७  
चार मुँह १८ राजा दैत्य १९ नाम पहाड़ २१ आसमान २२ निगाह २३  
कछुवा २४ फेरवादेना २५ गिनती २६ राजा २७ ॥

दो० बोला भाट नरेश सुनि, गर्व न छाजा जीव ।

कुम्भकरणकी खोपड़ी, बूढ़त बायाँ भिवँ ॥

रावण गर्व विरोधी रामू । ओही गर्व भयो संग्रामू ॥

तसरावण असको बरवडाँ । जेहिदशशीशं वीसभुजदंडा ॥

सूरज जेहि की तपै रसोई । निज बसन्दर धोती धोई ॥

सूकै सुनेयाँ शशिमसयाराँ । पवन करै नित बारं बोहारा ॥

मीच लाय कै पादी बांधा । रहा न दूसर सपने कांधा ॥

जो अस बज्र दरहि नहिं टारा । सोउ मरदोउ तपैसी करमारा ॥

नाती पूत कोटि दश अहा । रोवनहार न एको रहा ॥

दो० ओछ जान के काहु, जनकोइ गर्व करेय ।

ओछी पार दई है, जीत पत्र जो देय ॥

अबजो भाट तहां हत आगे । बिनयँ उठा राजा रिसलागे ॥

भाट अहै ईश्वर की कला । राजा सबराकहँ अरकला ॥

भाट मीच पै आपन दीसा । ताकहँ कौन करै रिस रीसा ॥

भयो रजायँ सुगन्ध्रव सेनी । काहि मीचके चढा नसेनी ॥

कह आनी बानी अस पढै । करसि न बुद्ध भेंट जो कढै ॥

जातभाट कित औगुनँ लावस । बायें हाथ राजबर भावसँ ॥

भाट नाउँ का मारों जीवाँ । अबहूँ बोल नायके ग्रीवाँ ॥

दो० तुझे भाट वै योगी, तोहि यह कहांक सङ्ग ।

कहां चढै असपावा, कहां भया चित भङ्ग ॥

गरूर १ वचना २ नाम पहलवान ३ सजादेना ४ लड़ाई ५ जवरदस्त ६ शिर ७ नाम गुरू राक्षसोंका ८ चोपदार ९ चाँद मशालची १० हवा ११ दरवाजा १२ मौत १३ श्रीराम लक्ष्मण १४ गरूर १५ कमजोर की तरफ १६ अर्ज १७ मुकाबिला न चाही १८ हुकम १९ सीढ़ी २० अकिल २१ बेहतर २२ सलाम २३ गर्दन २४ ॥

जो सत पूँछेसि गन्धर्व राजा । सत पै कहूँ परै नहिं गाजा ॥  
 भाटहिं काहिं मीचसों डरना । हाथ कटार पेट हन भरना ॥  
 जम्बूद्वीप चितावर देशू । चित्रसेन बड़ तहां नरेशू ॥  
 स्तनसेन यहिं ताकर वेदा । कुलचौहान जाय नहिं मेदा ॥  
 खाँड़े अचल सुमेरु सुभारू । दै न जो लागै संसारू ॥  
 दान सुमेरु देत नहिं खाँगौ । जो यह मांग न औरहिं मांगा ॥  
 दाहिन हाथ उठायों ताही । और को अस बरभावो जाही ॥  
 दो० नाउँ महापात्र मुहिं, तेहेकि भिखारी डीठ । औ  
 रिसलागे खरिवात कहि, खरि पै कहै बसीठ ॥  
 ततखन सुनि महेश मनलाजा । भाटकिरनि है विनवाँ राजा ॥  
 गन्धर्वसेन तू राजा महा । हों महेश मूरत सुनि कहा ॥  
 पै जो बात होय भल आगे । कहा चही काभा रिस लागे ॥  
 राजकुँवर यहिहोहिं न योगी । मुनि पद्मावतभयो वियोगी ॥  
 जम्बूद्वीप राजघर वेदा । जोहै लिखा सो जाय न मेदा ॥  
 तूरे सुवें जाय ब्रह्म आना । औ जाकर बिरोकें तैमाना ॥  
 पुनि यह बात सुनीशिवलोका । कर सुविवाह धर्म है तोका ॥  
 दो० मांग भीख खप्पर लिये, मुये न छाँड़े बाँरे ।  
 वृक्षदेखजो कनककचूरी, भीखदेह नहिंमार ॥  
 औ हँटे होहरे भाट भिखारी । का तू मोहिं देइ अस गारी ॥  
 को मोहियोगी जगतहोइपारा । जासों हेरो जाय पतारा ॥  
 योगी यती आव जित कोई । सुनत त्रास मान भा सोई ॥

विजुली १ राजा २ तलवार ३ बहादुर ४ कमी ५ शोख ६ चकील ७  
 उसी वक्त ७ महादेवजी ८ मानिन्द ९ तारीक १० कहामान ११ दुखी १२  
 गुरुसा १३ दरवाजा १४ सोने की कटोरी १५ दूर हो १६ लायक १७  
 देखना १८ डर १९ ॥

भीखलेहु फिर मांगो आगे । यहि सब रयनि रहै गढ़लागे ॥  
 जसचहि इच्छे चहुँतेहिदीन्हा । नाहिं वेध शूली जिवलीन्हा ॥  
 जेहि अससाधहोय जिवखोवा । सो पतंग दीपक तस रोवा ॥  
 सुर नर मुनि गुनिगन्धर्व देवा । तेहिंको गिनेकरहिं नितसेवा ॥  
 दो० मोसों को सरवर करै, अरे मुनि भूँटेभाट ।  
 शार होय जो चालों, गर्ज हस्तिन केठाटा ॥  
 योगी धर मेले सब पाछे । उरये माल आये रण काछे ॥  
 मंत्रिन कहा सुनो हो राजा । देखहु अब योगिनकर काजा ॥  
 हमजो कहा तुमकरहुन जूझा । होत आवदर जगत असूझा ॥  
 खन इकमहँ भुरमटहो बीता । दरमहँ चढ़े जोरहै सोजीता ॥  
 कै धीरज राजा तव कोपा । अङ्गद आय पांव रण रोपा ॥  
 हस्ति पांव जो अगमन धाये । ते अङ्गद धर मूँड़ि फिराये ॥  
 दीन्ह उड़ाय स्वर्ग कहँ गये । लौट न फिरै तहहिं के भये ॥  
 दो० देखतरहै अचम्भो योगी, हस्ती बहुरन आय ।  
 योगीकर अस जूझव, भूमि न लागत पाँय ॥  
 कहहि बात योगी हम पाये । छिन इक मांह चहतहै धाये ॥  
 जौलहि धावहि असकाखेलहु । हस्तिहिंकेर जूहँ सब पेलहु ॥  
 जोगर्ज पेल होय रण आगे । तस बगमेल करहुँ संग लागे ॥  
 हस्ति की जूह आय अँगसारी । हनुमत तवै लँगूर पसारी ॥  
 जोहिसो सेन बीच रणआई । सब लपेट लँगूर चलाई ॥  
 बहुतक दूट भये नौ खण्डा । बहुतक जायपरे ब्रह्मराई ॥

रात १ चाहना २ बराबरी ३ राख ४ हाथी मस्त ५ हाथी ६ पहलवान ७  
 सलाहकार ८ लड़ाई ९ फौज १० पल ११ बालि का वेटा १२ हाथी १३  
 पहिले १४ असमान १५-२१ जमीन १६ हलका १७ मस्त हाथी १८  
 मुकाबिला १९ फौज २० ॥

बहुतक भुवन सोह अत्रीखा । रहे जो लाख भये ते लेखा ॥

दो० बहुतक परे समुद्रमह, परत न पावा खोज ।

जहां गर्व तहँ पीरा, जहां हँसी तहँ रोजे ॥

फिर आगे का देखे राजा । इश्वर के घण्टे रण बाजा ॥

सुना शंख जो विष्णु अपूरा । आगे हनुमत के लंगूरा ॥

लीन्हें फिर लोक ब्रह्मण्डा । स्वर्ग पतारलोवा मृतमण्डा ॥

वलि वासुकि औ इन्द्रनरेन्दू । राहु नखत सूरज औ चन्दू ॥

जामवन्त दानव राक्षस पुरे । अहतो ब्रह्म आय रण जुरे ॥

जेहिकर गर्व करत हत राजा । सो सब फिर बैरी होइ साजा ॥

जहँवा महादेव रण खड़ा । शीशनाय नृप पांयन पड़ा ॥

दो० केहिकारण रिसकीजिये, हों सबक औ चेर ।

जेहि चाही तेहि दीजिये, वारि गुसाईं केर ॥

जब महेश उठ कीन्हवसीठी । पहिले कडू अन्तहोय मीठी ॥

तू भन्ध्रव राजा जग पूजा । गुण चौदह सिख देइको दूजा ॥

हीरामन जो तुम्हार परवा । गाचितौ औ कीन्हेसि सेवा ॥

तेहि बुलाय पूछौ वह देणू । औ पूछौ योगिहि जस बेणू ॥

हमरे कहत रोप नहि मानो । जो वह कहै सोई परमानो ॥

जहां वारि तहँ आवर ओका । कर विवाह धर्म बड़ तोका ॥

जो पहिले मन माननकाधे । परखै रतन गांठ तव बांधे ॥

दो० रतन छिपाये ना छिपै, पाख होय सो षेप ।

वाल कसौटी दीजियो, कनककचोरी वेष ॥

फिरना १ बीच २ गहर ३-११ रोना ४ महादेवजी ५-१५ जमीन ६ नाम राजा देख्य ७ नाम राजा साप ८ राजा ९-१२ पत्थर १० वास्ते १३ लड़की १४ वकालत १५ जानवर परिन्द १७ यज्ञान १८ सांभ की कटोरी १६ ॥

हीरामन जो राजें सुना । रोष बुझाय हिये मँहँ गुना ॥  
 आज्ञाभई बोलावहु सोई । पण्डितहूते दोष नहि होई ॥  
 एक कहत सहसकँ दशधाये । हीरामनहिं वेग लै आये ॥  
 खोला आगे आन मँजूसौ । मिलानिकसिबहुदिनकररुसा ॥  
 अस्तुति करत मिला बहुभांती । राजें सुना हिये भइ शांती ॥  
 जानो जरत अग्नि जलपरा । होयफुलवाररहस हियभरा ॥  
 राजें मिल पूँछी हँस बाता । कसतन पियर वरन मुखराता ॥

दो० चतुरंबेदतुम पण्डित, पढे शास्त्र वो वेद ।

कहाँ चढे योगीगढ़, आनकीन्हघरभेद ॥

हीरामन रसनां रस खोला । दैअशीश औ अस्तुति वोला ॥  
 इन्द्रराज राजेश्वर महा । सुनिहियँ रिसकुछजायनकहा ॥  
 पै जो बात होय भल आगे । सेवक निडर कहै रिस लागे ॥  
 सुवा सुफल अमृत पैखोजा । होय न विकर्म राजा भोजा ॥  
 हों सेवक तुम आदि गुसाई । सेवा करों जियों जब ताई ॥  
 जो जिव दीन्ह देखावा देशू । सोपै जिय मँहँ वसै नरेशू ॥  
 जो वह सँवरै एकै तोहीं । सोई पंख जगत रतिमोहीं ॥

दो० नयनबैन औ श्रवण, सबही तोर प्रसाद ।

सेवा मोर यही नित, बोलों आशिरवाद ॥

जो अस सेवक जेहि तपकसा । तेहिक जीभपै अमृत वसा ॥  
 तेहिं सेवक कै करमहि दोषू । सेवा करत करै पतिरोषू ॥  
 औजेहिदोष निदोषहिं लागा । सेवक डरा जीव लै भागा ॥

गुस्सा १-१६ दिल २-११ क्रसूर ३-१२ हजार ४ पिजरा ५ बहुत  
 तरह ६ तसल्ली ७ लाल चार ८ जवान १० राजाविक्रमादित्य १२ सबसे  
 पहिले १३ राजा १४ लालमुँह १५ आँख जवान कान १६ मेहनत की १७  
 बैक्रसूर २० ॥

जो पक्षी कहवां थिर रहना । ताकै जहां जाय जो डहना ॥  
सप्तद्वीप फिर देखेउ राजा । जम्बूद्वीप जाय तब वाजा ॥  
तहँ चितौर देखो गढ़ ऊँचा । ऊँचराज शिर तोपहँ पहुँचा ॥  
रतनसेन यह तहां नरेशू । सो आन्यो योगी कर बेशू ॥

दो० सुवासुफल लै आनी, है तेहि गुण मुखरातै ।

कयां पीत सो तासों, सँवरो विक्रम बात ॥

पहिले भयो भाट सत भाखी । पुनि बोला हीरामन साखी ॥  
राजा भा निश्चय मन माना । बांधा रतन छोड़ कै आना ॥  
कुल पूँछा चौहान कुलीना । रतन न बांधे होय मलीना ॥  
हीरा दशन पान रँग पागी । विहँसत बदन बीजवरतागी ॥  
मुन्द्रा श्रवणवीन सों चांपे । राजबैन उघरे सब भांपे ॥  
आना काट एक तुखारुँ । कहा सुफेरिभयो असवारु ॥  
फेरा तुरी छतीसो खुरी । सवहि बखानी सिंहलपुरी ॥

दो० कुँवर बतीसो लक्षना, सहसै किरन जस भाँन ।

काह कसौटी कसिये, कञ्चन बारह वान ॥

देखसुँध्य करकमल सँयोगू । अस्तैअस्त बोला सबलोगू ॥  
मिला सोवश अंश उजियारा । भाविरोक औतिलकसँवारा ॥  
अनिरुद्धको जो लिखजयमारा । को भेटै बाणासुर हारा ॥  
आज मिलीअनिरुधकहँऊपा । देव इन्द्र दीन्ह शिर दूषा ॥  
खड्ग मूर भुइँ सरवर केवा । वन खँड भँवरहोय रसलेवा ॥

कायम १ बाजू २ सातों मुल्क ३ पहुँचा ४ लाल ५ बदन ६ यक्रीन ७  
कानकी वाली ८ सरदारी की बातें ९ घोड़ा १०-११ तारीफ १२ हज़ार १३  
सूर्य १४-२० सोनाखालिस २५ तथा रतनसेन १६ तथा पद्मावत के  
लायक १७ ।ह चाह १८ टीका १९ तालाव २१ ॥



पच्छम का बार पूर्वकी बारी । लिखी जो जोरी होय न्यारी ॥

मानुषसाज लाख मन साजा । सोई होय जो विधिउपराजा ॥

दो० गये बाजन जो बाजत, जिय मारण रणमाहँ ।

फिर बाजन ते बाजे, मंगलचार उनाहँ ॥२॥

बोल गुसाई कर मैं माना । कहिसो जगतउतर कहँ आना ॥

माना बोल हरष जिव बादा । औ विरोकँ भा टीका गादा ॥

दोनों मिले मनावा भला । पुरुष आप आप कहँ चला ॥

लीन्ह उतारी जो हत योगू । जो तप करै सो पावै भोगू ॥

वह मन चित जो एकै अहा । मार लीन्ह न दूसर कहा ॥

जो अस कोई जिव परछेवा । देवता आय करहिं तेहिसेवा ॥

दिनदश जीवन जो दुख देखा । भायुगयुगसुख जहां न लेखा ॥

दो० रतनसेन का बरनों, पद्मावत कर व्याह ।

मन्दिरवेगँ सँवारो, मन्दिर तोरा छाह ॥

खण्डबाईसवाँ व्याहराजारतनसेन और पद्मावत ॥

लगन धरी औ रचा विवाहू । सिंहल निवत फिरा सबकाहू ॥

बाजन बाजे कोटि पचासा । भा आनंद सगरे कैलासा ॥

जेहिदिनकानितदेवमनावा । सोई दिवस पद्मावत पावा ॥

चांद सूर्य मन माथे भागू । औ गावहिं सबनखंत सुहागू ॥

रचरचमाणिके माडौं व्यावहिं । औ भुइंराति विद्याविविद्यावहिं ॥

चन्दन खम्भ रचे चहुँ पांती । माणिकदिया बरहिं दिनराती ॥

घर घर मन्दिर रचे दुवारा । जहँ तक नगर गीत भंकारा ॥

लडका १ लडकी २ अलग ३ ईश्वरने पैदाकिया ४ जघाव ५ खुशी ६  
टीका ७ खेलना ८ तारीफ़ करना ९ जवद १० दिन ११ तथा १२ सहेलियां  
१२ जवाहिर १३ लाल १४ ॥

दो० हाट वाट सब सिंहल, जहँ देखी तहँ रात ।

धन राती पद्मावत, जाकर ऐसि बरात ॥

स्तनसेन कहँ कपड़ा आये । हीरा मोति पदारथ लाये ॥

कुँवर सहस्र संग अहे सभागे । विनय करै राजा पहुँ लागे ॥

जेहिखग तुम साधातप योगू । लेहु राज मानो सुख योगू ॥

मज्जन करहु विभूति उतारो । करो अस्नानचित्र समसारो ॥

काटहु मुन्द्रा फटक अभाऊ । पहिरोकुरदल कनकजड़ाऊ ॥

घोरहु जटा फुलायल लेहू । झारहु केश मुकुट शिरदेहू ॥

काटहु कंथा चिरकुट लावा । पहिरो राता दगला सुहावा ॥

दो० पांवरि तजहु देहुपगपैरी, आवा बांक तुखारि ।

बांध मोर धरि छत्र शिर, वेग होहु असवार ॥

साजा राजा वाजन वाजे । मदनसहाय दोउदल गाजे ॥

आँ राता सोने रथ साजा । भइ बरात गोहन सब राजा ॥

वाजत गाजत भा असवारा । सबसिंहलने क्रीन्ह जुहारो ॥

चहुँदिशियश अलनखततराई । सूरज चढ़ा चांद की ताई ॥

सब दिन तपे जैस हिय माहां । तैसि रात पाई सुख ब्राहां ॥

ऊपर छत्र राति तस छावा । इन्द्रलोक सब सेवा आवा ॥

आज इन्द्रअर्सेर सों मिला । सब कैलास होहि सिंहला ॥

दो० धरती स्वर्ग चहुँ दिश, पूरही मशयार ।

वाजत आवै मंदिर कहँ, होहि मंगलाचार ॥

पद्मावत धौराहर चढी । धौकसरवि जाकहँशशि करी ॥

लाल १-१२-१७ हजार २ अर्ज ३ नहाना ४ तसवीर ५ बाली ना चीज ६ सोना ७ मुद्राई = खड़ाऊ ८ घोड़ा ९ जहद ११ साथ १३ सलाम १४ छोटे खितारे १५ दिल १६ इन्द्रलोक की परी १७ आसमान १८ महल २० सूर्य २१ चांद २२ ॥

देख बरात सखिनसों कहा । यह महँ कौनसो योगी अहा ॥  
 कैसो योग लै औरँ निवाहा । भयो मूरँ चढ़चांद विवाहा ॥  
 कौन सिद्धसो ऐसो अकेला । जे शिर लाय प्रेमसो खेला ॥  
 कासों पिता बचन असहारी । उतरँ न दीन्हदीन्हतेहि वारी ॥  
 काकहँ दई ऐसो जिव दीन्हा । जे जिहमार जीत रण लीन्हा ॥  
 धन पूरुष अस नवै न नाये । औसँ परसहो देश पराये ॥  
 दो० को बरबन्द वीर अस, मोहिं देखे कर चावँ ।

पुनिजायहिजनवासहि, सखीरी वेगँ देखाव ॥

सखी देखावहिं चमकहि वाहू । तू जसचांद सूर्य्य तोरनाहू ॥  
 छिपा न रहै सूर्य्य परकाशू । देखकमलमन भयो विकारूँ ॥  
 वह उजियार जगत उपराहीं । जगउजियारसो तेहिपरछाहीं ॥  
 जस रवि<sup>१</sup> देखउठै परभातों । उठा छत्र देखहिं सब राता ॥  
 वही मांफ भा दूलह सोई । और बरात संग सब कोई ॥  
 सहसँहिं किरणरूपविधि<sup>२</sup> गढ़ा सोने के रथ आवै चढा ॥  
 मन माथे दरशन उजियारा । सोहँ<sup>३</sup> निरखनहिंजायनिहारा ॥

दो० रूपवन्त जस दरपण, धन तू जाकर कन्त ।

चाही जैसो मनोहरा, मिलासो मनभावन्ता ॥

देखा चांद सूर्य्य जस साजा । सहसँहिं भावमदँनतनगाजा ॥  
 हुलसे नयन दरश मदमाते । हुलसे अर्धरँ रंग रस राते ॥  
 हुलसा बदनँ उपररवि<sup>४</sup> आई । हुलसाहियाँ कंचुकि<sup>५</sup> नसमाई  
 हुलसे कुचँ कसनी बँद टूटी । हुलसेभुजवलियाँ कर फूटी ॥

आखिरतक १ सूर्य्य २-११-२० जवाब ३ लड़की ४ इतमीनान ५  
 जबर्दस्त ६ चाह ७ जल्द ८ खाविन्द ९ खिलना १० भोर १२ हजार १३-  
 १६ ईश्वर १४ सामने देखना १५ काम पैदा हुआ १७ हाँठ १८ मुँह १९  
 दिल २१ अंगिया २२ छाती २३ चूड़ी २४ ॥

हुलसी लंक कि रावण राजू । रामलक्षणदरं साजहिं साजू ॥  
आज चांद घर आवा मूरुं । आज शृंगारहोय सब चूरु ॥  
आज कटकं जो राहत कामू । आज विरहकरहोय संग्रामू ॥

दो० अंग अंग सब हुलसै, कोइ कतहूँ न समाय ।

ठांवाहिं ठां विमोही, गइ मुरझा गत आय ॥

सखी सँभार प्रियाचहिं पानी । राजकुँवरि काहे कुँभिलानी ॥  
हमतो तोहिं देखावा पीव । तू मुरझान कैस भा जीव ॥  
मुनहु सखी सब कहै विवाह । मोकहँ जैसो चांद कहँ राहू ॥  
तुम जानहु आवै पिउ साजा । यह धमधम मोकहँ सबबाजा ॥  
जते वराती औ असवारा । यह सब मोरे चालनहारा ॥  
सो आगमं देखत हों भखी । आपन रहन न देखों सखी ॥  
होय विवाह पुनि होयहै गौना । गवनवतहांवहुरं नहिं अचना ॥

दो० अथ सो मिलन कितहै सखी, परा विछोवा टूट ।

तैसि गांठ पिउ जोरव, जन्म न होय है छूट ॥

आय वजावत वैठ वराता । पान फूल सेंदुर सब राता ॥  
जहँ सोने कर चित्रं सँचारी । आन वरात तहां बैठारी ॥  
भांभ सिंहासन पांठ सँवारा । दूलह आन तहां बैठारा ॥  
कर्नक खंभ लागे चहुँ पांती । माणिकं दियावरहि दिनराती ॥  
भयो अचल धुँवँ योग पखेरु । फूलवैठ थिरं जैस सुमेरु ॥  
आज दई हों कीन्ह सुभागा । जसदुखकीन्ह नेगसबलागा ॥  
आज सूरं शंशिके घरआवा । चांदसूर्य दुहुँ भयो मिलावा ॥

कौज १-३ सूर्य २-१६ लड़ाई ४ दूरअदेशी ५ लौटके ६ लाल ७ तस-  
घोर ८ श्रीचोचोच ९ तऊन १० सोना ११ जवाहिरात १२ नाम नखत जिसे  
कुतुब कहते हैं १३ कायम १४ नामपहाड़ १५ चाँद १७ ॥

दो० आज इन्द्रहोय आयों, मैं बरात कैलाश ।

आज मिली मोहिं अप्सरा, पूजीमनकी आश ॥

होय लाग ज्योनार पसारा । कनक पत्र परसे पनवारा ॥

सोन थार मणि माणिकजरे । राय रङ्ग सब आगे धरे ॥

रतन जडाऊ खोरोखोरी । जन जन आगे सौसौजोरी ॥

गडुवन हीर पदारथ लागे । देख विमोहे पुरुष सभगे ॥

जानहुँ नखतकरहिं उजियारा । छिपगये दीपक औ मसयारा ॥

भइमिल चाँदमूर्य की कला । भा उदोत तैसी निरमला ॥

जेहिंमानुषकहँ ज्योतिनहोती । तेहिभइज्योतिदेखवहज्योती ॥

दो० पांति पांति सब वैठी, भांति भांति ज्योनार ।

कनक पत्र दोने तरे, कनकपत्र पनवार ॥

पहिले भात परोसे आना । जनहुँ सुवास कपूर वसना ॥

झालहिं माडा औ घी पोई । उजियर देख पाप गयो धोई ॥

लुचई पुरी सुहारी पूरी । एक तो ताती औ सुठकवरी ॥

खंडराखांड जो खगडे खगडे । वरी अक्रोतर सो कहहरडे ॥

पुनि संधान आने बहुसांधी । दूध दही कि मुन्दों बांधी ॥

पुनि बावन प्रकार जो आये । नहि असदेखन कवहँ खाये ॥

पुनि जीवरे पीभावरँ आई । घृत खांड का कहीं मिठई ॥

दो० जेवत अधिकसुवासिक, मुहँमहँ परत चिलाय ।

सहस्र स्वाद सो पावै, एक कौर जो खाय ॥

जेवन आवा बिन न बाजा । बिनबाजहिं नहिं जेवै राजा ॥

इन्द्रपरी १ सोना २-न राजाको भाई ३ कटोरा कटोरी ४ रोशनी ५ सांक्र ६ सौनक्र ७ वारीक भाइ ८ एक किसमका खाना ९ अचार बहुत तरहका ११ लडुवा १२ खीर १३ मुरब्बा १४ हजार १५ ॥

सब कुँवरन पुनि खैचा हाथू । ठाकुर जेवँ तो जेवँ साथू ॥

बिनयकरहिं परिडत बिचवाना । काहे नहिं जेवहिं यजमाना ॥

वह कैलास इन्द्र कर बासू । जहांन अन्न न माछर मांसू ॥

पान फूल आंछी सब कोई । तुमकारण यह कीन्ह रसोई ॥

भूख तजन अमृत है मूखा । धूपतो सीरक नीबी रूखा ॥

नीदतो मुँई जनु सेज सपेती । छाँड़ो का चतुराई येती ॥

॥ दो० कौन काज केहि कारण, बिकल भयो यजमान ।

॥ होय रजायसुँ सोई, बेगं देहिं हम आन ॥

तुमं परिडत जानहु सब भेदू । पहिले नाद भयो तब वेदू ॥

आदिपिता जोबिधि अवतारा । नादसंग जिवं ज्ञान संचारा ॥

सो तुम वरजं नेकका कीन्हा । जेवनसंग भोग बिधिदीन्हा ॥

नयनं वैन नासक दुइश्रवना । यहिचारहुँ संग जेवनअवना ॥

जेवन देखा नयन सिरानी । जीभहिस्वादभुँकं रसजानी ॥

नासक सब वासना पाई । श्रवनहिंका सँवरत पहुनाई ॥

तेहिं का होय नाद पै पोषी । तब चारहुँ कर होय सँतोषी ॥

॥ दो० औसवसुनहुँशब्द इक, जिनहिं पड़ा कुछसूभ ।

॥ नाद सुननि परिडतबरज, कहो सो तुमकाबूभ ॥

राजा उतरै सुनहु अब सोई । माहि डोलै जो वेद न होई ॥

नाद वेद मँद पैडं जो चारी । काँयाँ महँते लेहु बिचारी ॥

नाद हिये मनु उपजीकाँयाँ । जहँमदतहाँ पैडं नहिं छाया ॥

खुराक १-१३ वास्ते २ छोड़ना ३ ठण्डा रहै धूप लगने पर भी ४  
सफ़ेद विछौवा ५ हुकम ६ जलद ७ ब्रह्मा ८ ईश्वर ९ बदन में जानआइ १०  
रीक ११ आंख मुँह—नाक कान १२ आसूदगी १४ करार १५ वात १६  
जवाब १७ ज़मीन १८ मस्ती १९ शरीरत २०-२४ बदन २१-२३ दिल २२ ॥

होय अनमद जूझ सो करिये । जान वेद आंकुश शिरधरिये ॥

योगी होय नाद सो सुना । जेहि सुनि कामजरै चौगुना ॥

किये जो परसंतत मनलावा । घूम मांत सुनि औरन भावा ॥

गये जो धर्म पन्थ है राजा । ताकहँ पुनि जो सुनै तो धाजा ॥

दो० जिस मदपिये घूम कोउ, नाद सुनै पै घूम ।

तेहिते बरजे नेकहै, चढ़ रहसँ के दूम ॥

भई ज्योनार फिरा खड़वाँनी । फिरा अरगँजा कुहकहँवानी ॥

फेरे पान फिरा सब कोई । लाग्यो व्याहचार सब होई ॥

झाड़ो सोन कि गगनँ सँवारा । वन्दनवार लाग सब चारा ॥

सजा पाँठ छत्र केँ छाहाँ । रतनँ चौक पूरी तेहि माहाँ ॥

कंचनँ कलशनीरँ भरि धरा । इन्द्रँ पास आनी अप्सराँ ॥

गाँठ दुलहिन दूलहकी जोरी । दुहँ जगत जो जाय न छोरी ॥

वेद पढ़ै परिडत तेहि ठाऊँ । कन्या तुला राशि लै नाऊँ ॥

दो० चांद सूर्य्य दोउ निरमलँ, दोउसे योगँ अनूप ।

सूर्य्य चांदँ सो भूला, चांद सूर्य्य के रूप ॥

दोहँ नाउँ लै गावहिँ वाराँ । करहिँ सो पद्मिनि मंगल चारा ॥

चांदँ के हाथ दीन्ह जयमाला । चांद आन सूर्य्य गयेँ घाला ॥

सूरज लीन्ह चांद पहिराई । हार नखैत नेरहिँ सो पाई ॥

पुनि धनँ भर अंजुल जल लीन्हा । यौवन जन्म कंत कहँ दीन्हा ॥

कन्त लीन्ह दीन्हों धन हाथा । जोरी गाँठ दुहँ, इक साथी ॥

मेहनत १ राह २ तारीक ३ राग सुननेसे दुनी कै क्रियत होती है ४ शरवत ५ अतर ६ आसमान ७ दरवाजा ८ तख्त ९ जवाहिरात १० सोना ११ पानी १२ तथा राजा १३-१७ तथा पद्मावत १४-१८ पाकलाक १५ मिलना १६ लड़की १६ पद्मावत २०-२४ सूर्य तथा रतनसेन २१ गरदन २२ तथा सहेलियाँ २३ ॥

चाँद सूर्य्य दुइ भाँवर लीन्हीं । नखतमौल न्योछावर कीन्हीं ॥

फिरहिं दोउ सतफेर गुंते के । सातहिं फेर गाँठ सो एके ॥

दो० भइ भाँवर न्योछावर, राजचार सब कीन्ह ।

दायज कहूँ कहाँ लग, लिख न जाय ततदीन्ह ॥

रतनसेन जो दायज पावा । मन्ध्रवसेन आय कँठलावा ॥

मानुपचिन्त आनकुछ चिन्ता । करै गुसाँइन मनमहँ चिन्ता ॥

अब तुम सिंहलद्वीप गुसाँई । हम सेवक आहैं सेवकाई ॥

जस चितारगढ़ तुम्हरो देशू । तस तुम यहां हमार नरेशू ॥

जम्बू द्वीप दूरका काजू । सिंहलद्वीप करहु नित राजू ॥

रतनसेन विनवाँ करजोरी । अस्तुति योग जीभकहँ मोरी ॥

तुम गुसाँई जे छारै छुड़ाई । कीमानुप अति दीन्ह बड़ाई ॥

दो० जो तुम दीन्ह सो पावा, जिवों जन्म सुखभोग ।

नाहत खेहँ पाय की, हों योगी केहि योग ॥

धौराहरँ पर दीन्हा वासू । सात खण्ड जहँवाँ कैलासू ॥

सखी सहसँ दश सेवा पाई । जनहुँ चाँदसँग नखततराई ॥

हैमखण्ड शशिके चहुँ पासा । शशि मूरहिले चढ़ी अकासा ॥

चलमूरज दिन अथवै जहां । शशिनिरमल तू पावसितहां ॥

मन्ध्रवसेन धौराहरँ कीन्हा । दीन्ह नराजहि योगिहिदीन्हा ॥

मिलीजाहिं शशिके चहुँ पाहां । सूर्य्य न चापै पावै अहां ॥

अब योगी गुरु प्रायो सोई । उतरा योग अस्म था धोई ॥

दो० सातखण्ड धौराहरँ, सात रंग नग लाग ।

गोतबाले १ राजा २ अर्जुन करना हाथ जोड़के ३ धूर ४-५ महल ६-  
१२-१५ हज़ार ७ छोटे सितारे ८ पद्मावत ९ रतनसेन १० लताफ़ ११ चाँद  
तथा पद्मावत १३ तथा राजा खिलवत न करसका १४ ॥



देखतका कैलासहिं, दृष्टिपाप सब भाग ॥

सातखण्ड सातां कैलासा । कावरणों जस उत्तम वासा ॥

हीरा ईंट कपूर गिलावा । मलयागिरि चन्दनसवलावा ॥

चूनाकीन्ह औट गजमोती । मोतिहिचाह अधिकतेहिज्योती ॥

विश्वकर्महि सैं हाथ सँवारा । सात खण्ड सातहिं चौपासा ॥

अतिनिरमल नहिंजायविशेखा । जसदरपनमहँदरशनदेखा ॥

भुईं गव जनहुँ समुद्र हिलोरा । कनकखम्भ जनुरचोहिंडोरा ॥

रतनपदारथं होय उजियारा । भूले दीपक औ मसियारा ॥

दो० तहँ अपसर पद्मावत, रतनसेन के पास ।

सातस्वैर्ग हाथजनुआये, औसातों कैलास ॥

पुनि तहँ रतनसेन पगधारा । जहां रतननौ सेज सँवारा ॥

पुतरी गढ़ गढ़ खम्भनकाढी । जनु सजीव सेवा सब ठाढ़ी ॥

काहू हाथ चन्दन की खोरी । कोइ सेंदुर कोइ गहे सिंधौरी ॥

कोइ कुंकहि केसर लिये रहैं । लावै अंगं रहस जनु चहैं ॥

कोइ लिये कुंकुमा चोवा । धन कव चहै ठाढ़मुखजोवा ॥

कोइ बीरा कोइ लीन्हे बीरी । कोइपरमल अतिमुग्धसँमीरी ॥

काहु हाथ कस्तूरी मेदूँ । भांतिहिभांति लागसब भेदू ॥

दो० पांतिहि पांतिचहूँ दिश, सब सोंधी करहाट ।

मांभँ रचा इन्द्रासन, पद्मावत कहँ पाँट ॥

खण्ड तेईसवां मुलाकात पद्मावत वा

राजा रतनसेन ॥

सात खण्ड ऊपर कैलास । तहँवाँ नारसेज सुख साजू ॥

निगाह १ तारीक २ चन्दन ३ ज्यादा ४ पाकसाक ५ सोना ६ जवाहिः

रात ७ आसमान ८ फटोरी ९ वदन १० देखना ११ हवा १२ मुशक १३

अम्बर १४ बीचोंबीच १५ तहत १६ ॥

चार खम्भ चारहुँदिश धरे । हीरा रतन पदारथ जिरे ॥

माणिक दियाजड़े औ मोती । होय उजियारहातेहिज्योती ॥

ऊपर राती चँदवा छावा । औ मुँसुरंग विद्यावविद्यावा ॥

तेहिमहँ पलंगसेज सुखदासी । कीन्हविद्यावन फूलहिवासी ॥

दोहुँदिशगेंदवा औगल सोई । काची पाटँ भरी धुन रोई ॥

फूलहिं भरे ऐसो केहि योगू । को तहँ पौढ मानरस भोगू ॥

दो० अतिसुकमारसेज सोडाँसी, छुवै न पावै कोय ।

देखत नवै खनहिं खन, पाँव धरत किस होय ॥

राज तपत सेज जो पाई । गाँठछोरिधनसखिन छिपाई ॥

अहै कुँवर हमरे अस चारू । आजुकुँवरकर करव शिंगारू ॥

हरद उतारि चढ़ावव रंगू । तवनिशिं चाँदसूर्य सोसंगू ॥

जनुचातुकमुख बूँद सेवाती । राजा चकचौहत तेहिभाँती ॥

योग छूटि जनु अपसर साथा । योग हाथकर भयो बिहाथा ॥

वै चतुराँ कर लै अपसई । मित्र अमोल छिन लैगई ॥

बैठा खोय जरी औ बूठी । लाभ न पाव मूल भइ टूठी ॥

दो० खाय रहा ठग लाडू, तन्त मन्त बुधि खोय ।

धौराहरँवनखँडँ भयो, ना हँसि आव नरोय ॥

अस तप करतभयो दिनभारी । चार पहर बीते युग चारी ॥

परीसांभ पुनि सखी सो आई । चाँद रहा अपनी जो तराई ॥

पूँछहिं गुरु कहारे चेला । विनशांशि रेकस मूरँ अकेला ॥

धातकमाय सिखेतूँ योगी । अवकसजसनिरधातवियोगी ॥

चारोंतरफ़ १ जवाहिरात २-३ ताल ४ तकिया ५ रेशम ६ विछौना ७  
पद्मावत ८ रस्म ९ रात १० पपीटा ११ होशयारी १२ छिपजाना १३  
महल १४ जंगल १५ छोटै नखत १६ चाँद १७ सूर्य १८ दुखी १९ ॥

कहां सो खोयहु विरवा लोना । जेहिते होय रूप औ सोना ॥

कसं हतार पार नहिं पावा । गन्धक कहां करकटी खावा ॥

कहां छिपायहु चंद्र हमारा । जेहिबिन रयनि जगत अधियारा ॥

दो० नयन कौड़िया हिय समुद्र, गुरुसो तेहि महँ ज्योति ।

मन मरजिया न होय परे, हाथ न आवै मोति ॥

का पूँछौ तुम धात निछोही । गुरुजो कीन्ह अंतरपट ओही ॥

सिधि गुटका जो मोसों कहा । भयो रांग सत हिये न रहा ।

सोन रूप जासों दुख खोलों । गयो भरोस तहां का वोलों ॥

जहँ लोना विरवा की जाती । कहिको संदेश आनको पाती ॥

कि जो पार हस्तार करेजे । गन्धक देख अभहिं जिवदीजे ॥

तुम जोरा की सूर मयकूँ । पुनि विछोय सो लीन्ह कलंकू ॥

जो यहि घड़ी मिलावै मोही । शीश देउ वलिहारी ओही ॥

दो० होय अबरक ईशुर हुआ, फेर अग्नि महँ दीन्ह ।

कार्या पीतर होय कनक, जो तुम चाहो कीन्ह ॥

का विसाय जो गुरु असबूभा । चकाव्यूह अभिमन ज्योजूभा ॥

बिष जो दीन्ह अमृत देखराई । तेहिरे निछोहें को पतियाई ॥

मरै सुजान होय तन सूना । पीर न जानै पीर विहूनौ ॥

पार न पाव जो गन्धक पिया । सो हस्तार कहो किमजिया ॥

हम सिधिगुटका जानहिं नाहीं । कौन धात पूँछहु तेहि पाहीं ॥

अब तेहि बाजें रांगभा डोलों । होय सार तो वरंगी वोलों ॥

अबरक कै तन ईशुर कीन्हा । सो तन फेर अग्नि महँ दीन्हा ॥

जोड़ना १ रात २ दिला ३ वेदद ४ छिपाना ५ कलेजा ६ सूर्य ७ चांद ८  
वदन ९ सोना १० नाम किला ११ चेटा अर्जुन १२ वेदद १३ अलग १४  
विदून उसके १५ फौलाद १६ तिपतिया १७ ॥

दो० मिलि जो प्रीतम बिछरहि, कार्या अगिन जराय ।  
 कैसु मिलै तन तप बुझै, कैअब मोहि बुझाय ॥  
 सुनिके बात सखी सब हँसी । जानहुँ रयनि तरैँ परगँसी ॥  
 अन्नसो चांद गगनमहँ छिपा । लालचकै कित पावस तपाँ ॥  
 हमहुँ न जाने धौँ सो कहां । करवखोज औँ विनवबँ तहां ॥  
 औँ अस कहवँ आहि परदेशी । कर मार्याँ हत्याँ जन लेशी ॥  
 पीर तुम्हार सुनत भाँ छोहँ । देव मनाय होय अस औँहू ॥  
 तूँ योगी तप कर मन जिता । योगिहि कौन राजकी कथा ॥  
 वह रानी जहँवाँ सुख राजू । वारह अमरण करै सो साजू ॥  
 दो० योगी हँदँ आसनकर, इस्थिर धरम न ठाँव ।  
 जो न सुने तौँ अब सुनि, वारह अमरण नाँव ॥  
 प्रथमै मज्जन होय शरीरु । पुनि पहिरै तन चंदन चीरु ॥  
 साज माँग शिर सेंदुर सारा । पुनिललाटरचितिलकसँवारा ॥  
 पुनि अंजनदोउ नयनहि करे । पुनिसो कानन कुण्डलपहरे ॥  
 पुनि नासके भल फूल अमोला । पुनिरातीँ मुख खायतमोला ॥  
 गयेँ अमरण पहिरे जहँ ताई । औँ पहिरे करैँ कँगन कलाई ॥  
 कटिँ क्षुद्राँवल अमरण पूरा । पाँयन पहिरे पायलँ चूरा ॥  
 वारह अमरण यही बखाने । ते पहिरे वारहुँ अस्थाने ॥  
 दो० पुनि सोरहों शिंगार जस, चारहुँ योग कुलीन ।  
 दीरघ चार चार लँघुँ, चारशुभ्रँ चहुँखीनँ ॥  
 पद्मावत जो सँवारी लीन्हा । पूँयो रात दई शशिकीन्हा ॥

चंदन १ रात २ छोटै नखत ३ खिलना ४ आसमान ५ योगी ६ अङ्ग  
 करंजा ७ मेहरवानी ८-९ जेवर १० मज्जवूत ११ कायम १२ पहिले १३  
 नहाना १४ लाल १५ गरदन १६ हाथ १७ कमर १८ करंधनी १९ पाँजेव  
 वा छुट्टे २० बड़े २१ छोटै २२ मोटे २३ पतला २४ पूरनमासी २५ ॥

करिमज्जन तन कीन्ह नहानू । पहिखो चीरगयो छिपभानू ॥

रचि प्रत्रावल मांग सेंदूरी । भरिमोतिन औ माणिक पूरी ॥

चंदन चीर पहिर बहु भांती । मेघ घटा जानहुँ वक पांती ॥

श्री जो रतन मांग बैठारा । जानहुँ गगन दूधनिशि तारा ॥

तिलक खलाट धरातस दीठा । जनहुँ दुइजपर नखत न वैठा ॥

कानन कुंडल खूंट औ खूटी । जानहुँ परी कंचुकी टूटी ॥

दो० पहिर जड़ाऊ ठाढ़भइ, कहि न जाय तस भाव ।

मानहुँ दरपन गगन भा, तो शशितार देखाव ॥

बांक नयन औ अञ्जन रेखा ॥ खंजन जानु शरद ऋतु देखा ॥

जो जो हेर फेर चप मोरी । लरै शरद मह खंजन जोरी ॥

भौहै धनुष धनुष पै हारा । नयन सांघ जनु वाणनमारा ॥

करन फूल नासक अतिशोभा शशि मुख आयसूक जनु लोभा ॥

सुरंग अर्धर औ लीन्ह तंबोरा । सोहै पान फूल कर जोरा ॥

कुसुमगेंद अससुरंग कपोलां । तेहिपर अलक भुवंगिन डोला ॥

तिलकपोल अल पंकज वैठा । वेधा सोई जो वह तिलदीठा ॥

दो० देखशिगार अनूप विधि, विरह चला तव भाग ।

कालकष्ट वह उनवा, सब मोरे जियलाग ॥

का बरणों अभरणें औ हारा । शशिपहिरेनखतनकी मारा ॥

चीर चार औ चन्दन चोला । हीर हार नग लाग अमोला ॥

तेहि भांपी रोमावल कारी । नागिनि रूप इसी हत्यारी ॥

कुच कंचुकी श्रीफल उभे । हुलसहिं चहहिं कंतहियचुभे ॥

उवटन १ सूर्य २ नामदाया ३ जवाहिर ४ वगुला ५ टीका ६ आसमान

७-१३ रात ८ माथा ९ बाली १० करनफल ११ नाम छोटि नखत १२ चांद

१४-१८ ममोला १९ देखना २० आंख २१ होंठ २२ गाल २३ बाल २४

नागिन २५ वेमिसाल २६ जेवर २७ छाती २८ अंगिया २९ ॥

वाहहिं वाहू ताड़ सलोनी । डौलत बांह भावगत लोनी ॥

तरवन कमलकली जनु बाधे । वसो लंकै जानहु दुइ आधे ॥

हुदधंटे कँटि कंचन बागा । चलते उठहिं छतीसो रागा ॥

दो० चुरापायल अनत्रट विछिया । पांयनपरी वियोगं ।

हिये लायटुकहमकहसमंदे । नहितुमजान औभोग ॥

अस बारह सोरह धन साजी । छार्जन और वहीपै छाजी ॥

विनवहिसखी गहर काकीजे । जे जिवदीन्ह ताहि जिवदीजे ॥

सँवरिसेज धन मन भइशंका । ठाढ़ तेवान टेक कर लंका ॥

अनचिन्हा पियकांपोमनमाहां । का मै कहव गहबँ जो बाहां ॥

वारि वैसगइ प्रीति न जानी । तरुणै भई मैमन्त भुलानी ॥

यौवनगर्व न कुछ मै चेत । नेह न जानु श्याम के सेता ॥

अव जो कंत पूँछहि सबवाता । कस मुख होय पीत कै राता ॥

दो० हों सुवारि औ डुलहिन । पियसो तरुणै औ तेज ।

नाजानो कस होय है । चढ़त कन्त की सेज ॥ ३५

मुनि धनडर हिरदय तव ताड़ । जौलहिरहस मिलानहिं साड़ ॥

कौन कली जो भँवरन राई । डारन दूटि पुहुँपे गरुवाई ॥

मात पिता जो व्याहै सोई । जन्म निवाह कंत संग होई ॥

भरे यमवार चहै जहँ रहा । जाय न भेटा ताकर कहा ॥

ताकहँ विलंब न कीजे वारी । जो पिय आयसु सोइ पियारी ॥

चलहु वेगि आयसु भा जैसे । कन्त बोलावे रहै सो कैसे ॥

मान न कर थोरा कर लाडू । मान करत रस माने चाँडू ॥

१ नाम जेवर १-२-३-४ खूबसूरत ३ भँवर ४ कमर ५-७-१६ करंधनी ६ दुखी १० दिल ११ मुलाकात १२ पद्मावत १३ सोहना १४ देर १५ पकड़ना १७ जवान १८-२३ मस्त १९ जवानो का आकर २० काला थो सफेद २१ लाल २२ फूल २३ मरनेके दमलक २४ हुकूम २५ जल्द २७ गुस्सा २८ ॥

दो० साजन लिये पठाई, आयसुं जाय न भेट ।

तनमन यौवनसाज सब, देइचली लै भेट ॥

पद्मिन गवनै हंस गये दूरी । हस्तिं लाज मेलहि शिरधूरी ॥

वदलै देख घटचन्द छिपाना । दशनै देखके बीजं लजाना ॥

खंजनं छिपे देख कै नैना । कोकिलछिपी सुनतमधुवैना ॥

श्रीवं देखकर छिपा मयूरु । लंकं देखकर छिपा सेंदूरु ॥

भौहधनुष जो छिपा अकारौ । वेनी<sup>३</sup> वासुंकि छिपापतारा ॥

खड्गं छिपी नासिका विशेषी । अमृत छिपा अर्धर रसदेखी ॥

पहुँचिहिं छिपा कमलपौनारी । जंघ छिपा कदली होय वारी ॥

दो० अपसर रूप छिपाई, जोहि चलै धनै साज ।

जहँलग गर्वगहेलजग, सर्वेछिपीमनलाज ॥

मिलीसो गोहनै संखी तराई । लीन्हचांद सूर्य्य पहुँ आई ॥

परश रूप चांद देखराई । देखत सूर्य्य गयो मुरभाई ॥

सोरहकिरनदंष्टि शैशिकीन्हा । सहसँ किरनसूर्य्यकहँलीन्हा ॥

भा रवि<sup>३</sup> अस्त तराई हँसी । सूर्य्य न रहा चांद परगँसी ॥

योगी आहि न भोगी कोई । खाय करकटौ गयो परसोई ॥

पद्मावत निरमल जस गङ्गा । नाहिं युक्ति योगी भिखमङ्गा ॥

आय जगावहिं चेला जागहु । आवा गुरू पांय उठलागहु ॥

दो० बोलहिं शब्दं सहेली, कानलागगहि माथ ।

गोरखँ आय ठाढ़ भा, उठरे चेला नाथ ॥

हुकम १ चाल २ हांथी ३ मुँह ४ दाँत ५ विजुली ६ ममोला ७ मीठी  
वोली ८ गर्दन ९ कमर १० चीता ११ आसमान १२ चोटी १३ नाम राजा  
सांपों का १४ तलवार १५ होंठ १६ केला १७ पद्मावत १८ साथ १९ छोटे  
नखत २०-२६ सूर्य्य २१-२५ निगाह २२ चाँद २३ हजार २४ खिलना  
२७ टुकड़ा रोटी २८ पाक २९ आवाज़ ३० योगी ३१ ॥

गोरख शब्द शुद्ध भा राजा । रामा सुनि रावन होय गाजा ॥  
 गंही बांह धन सेजवां आनी । अंचल ओट रही छिपरानी ॥  
 सकुची डरी सुरी मन बारी । गहु न बाहरे योगि भिखारी ॥  
 ओहट हो योगी तोर चेरी । आवे वास करकटो केरी ॥  
 देखि बिभूत बूत मुहि लागी । कांपे चांद राहु सो भागा ॥  
 योगी तोर तपसी कै कया । लागी चहे अंग मोर छयां ॥  
 वार भिखारन मांगेसि भीखा । मांगे आयस्वर्ग चदशीखा ॥  
 दो० योगि भिखारी कोई, मन्दिर नपैसे पार ।  
 मांगलेहु कुछ भिक्षा, जाय ठाढ़हो वार ॥  
 अन तुम कारण प्रेम-पियारी । राज बीडिके भयो भिखारी ॥  
 नेह तुम्हार जोहिये समाना । नितौर सो निसखोहै आना ॥  
 जसमालतिमहँ भँवरवियोगी । चढ़ावियोग चल्याहै योगी ॥  
 भँवर खोज जसपावै केवौ । तुम कारण मैं जिवपरछेवौ ॥  
 मयों भिखार नारितुम लागी । दीप पतंग है अंगयो आगी ॥  
 एकवार मरि मिलै जो आये । दूसर वार मरै कित जाये ॥  
 किततेहिमीचँ जोमरकेजिया । भँवर कमल मिलकैरसपिया ॥  
 दो० भँवर जोपावै कमलकहँ, बहुआरतँ बहुआस ।  
 भँवर होय न्योआवर, कमल देय हसबास ॥  
 अपने मुहँ न बड़ाई आजा । योगी कतहुँ होहिनहिराजा ॥  
 हौ रानी तू योगि भिखारी । योगिहिभोगिहिकौनचिन्हारी ॥  
 योगी सबे बन्द अस खेला । त भिखार केहिमाहँ अकेला ॥

पकड़ना १ पद्मावत २ दूरहो ३ सुखा, दुकड़ा रोटी ४ बदन ५-६  
 छाया ७ दरवाजा ८ आसमान ९ पैठ न. सके १० वास्ते ११ दिला १२  
 दुखी १३ कमल १४ दुख १५-१७ मौत १६ ॥



पवनबांध अपसव्वहिं अकासा । मंसहिं जहां जाहिं तहें वासा ॥

येही भांति सृष्टि बहु छरी । येही भेष रावण सिय हरी ॥

भँवरहिं मीचनेर जो आवा । केतकि वास लेयकहँ धावा ॥

दीपक ज्योति देखिउजियारी । आय पंख ह्ये परा भिखारी ॥

दो० रयनिजो देखे चन्दमुख, मँसि तन होय अलोप ।

तुहँ योग अस भूला, होय राजा के रूप ॥

अनधन तूशंशेरं निशं माहां । हों दिनेरं जेहिके तूआहां ॥

चांदहि कहां ज्योति औ कला । सूर्यकी ज्योतिचांद निस्मला ॥

भँवर बास चम्पा नहिं लेई । मालति जहां तहां जिव देई ॥

तुमहुत भयों पतंगकी किरों । सिंहलद्वीप आय उड़परा ॥

सेयों महादेव कर वारूँ । तजौ अन्न भा पवनअहारूँ ॥

तुम सों प्रीतिगांठ में जोरी । कटै न कटै छुटै न छोरी ॥

सियाँ भीख रावणकहँ दीन्ही । तूअसनिदुरअन्तरपटै दीन्ही ॥

दो० रंगतुम्हारे रात्यों, चढ्यों गर्गन ह्ये सूर ।

जहँ शशिशितलकहँ तपो, मनइच्छा धनपूर ॥

योगि भिखारकरेसि बहुवाता । कहेसि रंग देखों तुहि राता ॥

कपरारंगे रंग नहिं होई । हिये औट उपजै रंगसोई ॥

चांदकी रंग सूर्य जो राता । देखी जगत साँफ परभाता ॥

दग्धे बिरह नितहोय अंगारू । दहक अंच दग्धे संसारू ॥

जो मँजीठ औटै बहु आंचा । सो रंग जन्म न डोलै रांचा ॥

जरै बिरह जो दीपक वाती । भीतर जरि ऊपर ह्ये राती ॥

सांसरोकिकै १ छिपना २ दुनियां ३ सीताजी ४ मात ५ रात ६-११

सियाही ७ शायब ८ पेपद्मावत ९ चाँद १० सूर्य १२-२० पाकसाक १३

मानिन्द १४ दरवाजा १५ छोड़ना १६ श्रीसीताजी १७ औट १८ आसमान

१९ साल २० दिल २२ मोर २३ जलाना २४ ॥

जर पलाश कोइला के भेसू । तब फूला राता हो टेसू ॥  
 दो० पान सुपारी खैर तह मिलै करै चकमून । कला  
 तबलमा रंगन राची । जवलमा होय न चूना ॥  
 धन याका सुंगका चूना । जेहि तननेह दग्ध तेहिदना ॥  
 हो तुम नेह पियरभा पानू । पेड़ी हुतसन रास बंखानू ॥  
 सुनि तुम्हार संसार बढौना । योगलीन्ह तनकीन्ह गढौना ॥  
 करहि जो किंगिरीलै बैरागी । नेवती होय विरेहकी आगी ॥  
 फेरफेर तन कीन्ह सुजोनी । औट रत्तरां हिरदय अरुना ॥  
 मूख सुपारी भा मनमारा । शिरसरोत जुनु करव सारा ॥  
 हाड चून भै विरहै दही । जानै सोइ जो दग्ध इमि सही ॥  
 दो० कै सुजानि बहुपीरा । जेहि दुख ऐसो शरीर ।  
 रक्त पियासे जे अहहि का जानै परपीर ॥  
 योगिहि बहुत छन्द औराही । बूँद सेवती जैसे पराही ॥  
 पढ़हि भूमि परहोय कचूरू । पढ़हि कदलपर होय कपूरू ॥  
 पढ़हि समुद्र खारजल औराही । पढ़हि सीप सब मोली होही ॥  
 पढ़हि मेरु पर अस्त होई । पढ़हि नागमुख विषहोय सोई ॥  
 योगी भँवर निट्ट ये दोऊ । केहि आपनभे कहो सो कोऊ ॥  
 एकटावै यहिथिर न रहाही । रसलै लैलै अन्त कहँ जाही ॥  
 होयगही एनि होय उदासी । अन्तकाल दोनो विश्वासी ॥  
 दो० तासो नेह जोट्ट करहि । थिर आब्रहिसहदेश ।  
 योगी भँवर भिखारी दूर रहहि आदेश ॥

रेखा १ पञ्चावत २ जलन ३-१० बड़ाई ४ गढौता ५ हाथ ६ महिमान ७  
 भुजंगा म शिरकटाना ८ इसतरह ११ मकर करना १२ जमान १३  
 नरकचूर १४ केलो १५ पहाड १६ जगह १७ कायम १८ जाना १९  
 वेसबर २० मजबूत २१ सलाम २२ ॥

थलथलनगनहोहिजेहिज्योती।जलजलसीपनउपजहिंमोती॥

बनबन बृक्ष न चन्दन होई । तनतन विरह न उपजै सोई ॥

जहँउपजा सो अठ मरगयो । जन्म निरारं न कवहूँ भयो ॥

जलअम्बुज रँबि रहैअकासा । जो प्रीति जानहुँ इकपासा ॥

योगी भँवर जोथिरं नरहाहीं । जेहि खोजहिं तहँ पावै नाहीं॥

मैंतो पावा आपन जीव । छाँड़ सेवात जाय नहिं पीव ॥

भँवरमालती मिलै जो आई । सोतजँ आनफूल कितजाई ॥

दो० चम्पाप्रीति जो तेल है, दिन दिन आकर वास ।

गलगल आप हेराय जो, मुयहिं न छाँड़ै पास ॥

ऐसैं राजकुँवर नहिं मानौ । खेल सारंपांसा तव जानौ ॥

कच्ची बारहिबार फिरासी । पकी तौ फिर थिर न रहासी ॥

रहै न आठ अठारह भाखा । सोरह सत्रह रहै सो राखा ॥

सतयें धरे सो खेलनहारा । दाराग्यारा जामु न मारा ॥

तू लीन्हेसि आँखे मन दुवा । औ यगसारचहेसिपुनिछुवा ॥

हौतूनेह रच्यों तोहि पाहीं । दसों दांत तोरे हियँ माहीं ॥

तव चौपर खेलौं कै मर्या । जो तरहेलँ होय सो तिया ॥

दो० जेहिमिल विछुरन औतपन, अंतं तंततेहिनन्त ।

तेहिमिल कंचन को सहै, परविन मिलै नचन्त ॥

बोलौं बचन नारिसुनिसांचा । पुरुषका बोल सप्तऔ वांचा ॥

यहि समलाग्योतुहि असनारी । दिनतोहिंपासऔरनिशँ सारी ॥

मैं पर बारहिंबार मनायों । शिरसोंखेल निपटजिवलायों॥

पैदा १ अलग २ कमल ३ सूर्य ४ क्रायम ५ छोड़ना ६ चौपर ७ दिल ८ मेहरयानी ९ जो मेरे साथ बाजी हारजाय १० आखिरको सुख ११ सोना १२ रात १३ ॥

भल भांती मैं रचना राची । मारेसि तोहि सबै कै काची ॥

पाकउठायो आशक रीता । हौं जीतहि हारा तू जीता ॥

मिलके युगनहिं होहुं निरारी । कहां बीच दोती दिन हारी ॥

अबजिवजन्मजन्म तुहिपासा । चढ़यो योग आयो कैलासा ॥

दो० जाकर जिवबसि जेहिसे । तेहि पुनि ताकरटेकै ।

कनक सुहागनबिछुड़हि, औठमिलहिंजोएक ॥

वेहँसधिन सुनिके सत बाता । निश्चै तू मोरे रंगरातां ॥

निश्चै भँवर कमल रसरसा । जोजेहिमनसो तेहि मनवसा ॥

जब हीरामन भयो सँदेशी । तूहुत मँडफ गयो परदेशी ॥

तोररूप तस देखेउ लोना । जनु योगी तू मेली टोना ॥

सिधि गुटका जो दृष्टि कमाई । पारे मेल रूप बसँ याई ॥

भुक्ति देन कहँ मैतुहि डीठा । कमलनयनहोय भँवरजोबैठा ॥

नयनपुहुपै तू अलि भासोभी । रहाबेध तस उड़सि न लोभी ॥

दो० जाकर आशहोयजेकहँ, तहँ पुनि ताकर आस ।

भँवर जो दादाँ कमलका, कसनपाव रसवास ॥

कौन मोहनी धौं हुत तोही । जोतोहिबिथासोउर्पजीमोही ॥

बिन जलमीनँ तपै जसजीउ। चार्तुकै भयो कहत पिउपीउ ॥

जखों विरह जस दीपकवाती । मँग जोवतभइ सीपसे बाती ॥

डारडार ज्यों कोयल भई । भयो चकोर नीद निशँ गई ॥

मोरे प्रेम प्रेम तुहुँ भयो । राताहेमँ अगिन ज्यों तयो ॥

हीरादिपहिं जोसूर उदोती । नाहतकितपाहनँ कहँ योती ॥

अलग १ दो तीन का क्या कामहै २ मददगार ३ सोना ४ पञ्चावत हूँसी  
५ यक्रीन ६ मस्त ७ खूबसूरत ८ निगाह ९ पारा मिलाके चाँदी किया १०  
भीख ११ देखना १२ फूल १३ भँवरा १४ आशिक १५ पैदा होना १६ मछली १७  
पपीहा १८ राह १९ रात २० लाल सोना २१ चमक २२ सूर्य २३ पत्थर २४ ॥

रविपरकाशें कमल विकसा । नाहतकितमधुकरकितवासा ॥

दो० तासों कौन अंतरपट, जो अस प्रीतम पीव ।

न्योद्धावर करि आपहूँ, तनमनयोवन जीव ॥

हँसि पद्मावत मानी बाता । निश्चै तू मोरे रंग राता ॥

तू राजा धनिकुल उजियारा । असकैचरच्यों मर्म तुम्हारा ॥

पै तू जम्बूद्वीप वसेरा । काजानेसि क्रस सिंहल मेरा ॥

काजानेसि सुमानसर केवा । सुनिसुभंवरभा जिवपरखेवा ॥

नातू सुनी न कोई डीठी । कैसे चित्र होय चित पैठी ॥

जौलहि अगिनकरै नहिं भेद । तौलहि औटचुवहिनहिंभेद ॥

कहँ शङ्कर तू ऐसो लखावा । मिलाअलख तसप्रेमचखावा ॥

दो० जेहिके सत सँघाती, ताकर डर सो अमेद ।

सोसत कहु कैसे भा, दुहूँ भांत सो भेद ॥

सत्य कहूँ सुनि पद्मावती । जहँ सतपुरुष तहां सरस्वती ॥

पायों सुवा कहे वह बाता । भानिश्चै देखत मुख राती ॥

रूपतुम्हार सुन्यो अस नीका । नाजेहिचढ़ा काहुँ कहँटीका ॥

चित्र कियों पुनि लैलै नाऊँ । नयनहिलाग हिये भाटाऊँ ॥

होंभा सांच सुनत वह घड़ी । तुमहोय रूपआय चितचढ़ी ॥

होंभा काठ मूर्ति मन मारे । जहँ जहँ करसवहाथ तुम्हारे ॥

तुम जो डोलावहु सोई डोला । मवनसांस जोदीन्हतोबोला ॥

दो० कोइसोवै कोइ जागै, असहों गयो विमोहि ।

परगटगुँ न दूसर, जहँ देखों तहँ तोहि ॥

१ ओद १ भेद २ नाम तालाव ३ कमल ४ जानपर खेला ५ देखना ६ तसवीर ७ शोला ८ अतर ९ ईश्वर १० लाल ११ दिल १२ दीवाना १३ जाहिर वा छिपा १४ ॥

विहँसी धन सुनके सतभाऊ । हों रामा तू रावण राज ॥

रहि जो भँवर कमलकी आसा । कस न भोग मानै रसवासा ॥

जस सत कहा कुँवर तू मोही । तस मन मोर लाग पुनि तोही ॥

जत्रहुत कहिगा पंख सँदेशी । सुन्यों कि आवाहै परदेशी ॥

तत्रहुत तुम बिन रहै न जीउ । चातुकै भयों कहत पिउपीउ ॥

भयों चकोर सो पन्थ तिहारे । समुद्रसीप जस नयन पसारे ॥

बिरह भयों देहि कोयलकारी । डार डार जिमि पीउ पुकारी ॥

दो० कौनसोदिनजवपिउमिलै, बहुमन राता जासु ।

वह दुख देखै मोर सब, हों दुख देखों तामु ॥

कहि सतभाव भई कँठलागू । जनु कंचन औ मिलासुहागू ॥

चौरासी आसन पर योगी । पटरस वन्दक चतुर सो भोगी ॥

कुसुममाल अस मालति पाई । जनु चम्पा गँहि डार नवाई ॥

कलीवैध जनु भँवर लुभाना । हनाँ राहु अर्जुन के वाना ॥

कंचनकली जड़ी नगज्योती । वरमा सों बेधा जनु मोती ॥

नाँगजानि कीर नख दिये । अर्धर आम्बरस जानहुलिये ॥

कौतुककैल करहिं दुख नसा । कन्देहि कुरलहिजनुसँहँसा ॥

दो० रही वसाय वासना, चोवा चन्दन भेद ॥ ३१६ ॥

जो अस पद्मिन राँवी, सो जानै यह भेद ॥

रतनसेन सो कन्त सुजानू । पटरस पण्डित सोरह वानू ॥

तस है मिले पुरुष औ गोरी । जैसी विछुड़ी सारस जोरी ॥

हँसी १-पपीहा २ राह ३ जलना ४ दीवाना ५ सोता ६ कुसुमकी बोड़ी  
की तरह छाती ७ पकड़ना ८ कली में भँवरा ने खुराख किया ९ तीर  
निशाने पर मारा १० सोने की कलीसा चन्दन मोती की तरह वरमा  
से बेधा ११ तोता १२ द्रोण १३ कुजेल १४ तालाव १५ अतर १६  
भोगना १७ ॥

रची सारं दोनों इक प्रासा । है युग युग आवहि कैलासा ॥  
 पिय धनगहि दीन्ही गलबाहां । धन बिहुड़ी लागी उरमाहां ॥  
 ते छक रस नव केल करेहीं । चोक लाय अधरनरस लेहीं ॥  
 धन नवसात सात औ पांचा । पूरुष दश तेरह किम बांचा ॥  
 लीन्ह बिधांसै विरह धनसाजा । औ सवरचन जीतहतराजा ॥

दो० जनहुँ औटकै मिलगये, तस दोनों भये एक ।

कंचन कसत कसौटी, हाथ न कोऊ टकै ॥

चतुरनारि चितअधिकै चहुँटी । जहां प्रेम वाढी किम छूटी ॥  
 कुरला काम कीरं मनुहारी । कुरला जहँतहँ सोनसुनारी ॥  
 कुरला होय कंतकरै तोखू । कुरला गहे पांचधन मोखू ॥  
 तेहिकुरली सोसुहागअभागी । चंदन जैस श्यामकँठलागी ॥  
 गेंद गोंदकै जानहुँ लिये । गेंद चाहि धनकोमल भये ॥  
 दाड़िम दाखँ बेलरस चाखा । पियके खेल धनजीवनराखा ॥  
 भयो बसन्तकली सुख खोली । बैन सुहावन कोकिलबोली ॥

दो० पिउपिउकरतजीभधनसूखी, बोली चातृकभाति ।

परीसो बूँदसीपंजनुमोती, हिये पेरी सुखशांति ॥

भयो जूझ जस रावण रामा । सेजबिधांसै विरह संग्रामो ॥  
 लीन्ह लंकै कंचन गेंदें टूटा । कीन्ह शिंगार अहा सब लूटा ॥  
 औ योवन मेमन्तै बिधांसा । बिचला विरहजीवलैनासा ॥

चौपड़ १ होंठ चूसना २ पद्मावतहारी ३ राजा जाता ४ लूटना ५ सोना ६  
 पकड़ना ७ बहुत ८ मस्ती में काम का तोता आया ९ जोश में सोना  
 सुनार के हाथ से आया १० गलवा किया खाविन्दने ११ गलवा करके  
 पैर औरतका वास्ते फ़रागतके पकड़ा १२ गलवा १३ जैसे गेंदने गोंद के  
 फूल को गोद में लिया १४ गेंदासे नर्म १५ अनार १६ अंगूर १७ आवाज़ १८  
 पपीहा १९ दिल २० लूटना २१ लड़ाई २२ कमर २३ सोने का किला  
 तथा चवन २४ मस्त २५ ॥

दूटी अंग अंग सब भेषा । दूटी मांग अंग भये केशा ॥

कंचुक चूर चूर भइ तानी । दूटी हार मोती बहरानी ॥

वारी ताड़ रसोनी दूटी । बांह कंगन कलाई छूटी ॥

चन्दन अंग छूट तस भेटी । वेसर दूटी तिलक गा भेटी ॥

दो० पुहुप शिगार सवार सब यौवन नवल बसन्त ।

अरराज ज्योहिय लायके मरगज कीन्हो कन्त ॥

विनय करै पञ्चावत वाला । सुवन सुराही पियो पियाला ॥

पिय आयसु माथेपर लेऊँ । जो माँगो नय नय शिर देऊँ ॥

पै पिय वचन एक सुनि मोरा । चाखौ पिय मँधु थोरा थोरा ॥

प्रेम सुरा सोई पै पिया । लखे न कोऊ कि काहुँ दिया ॥

चुवा दाखे मधु जो इकनारा । दूसर वार लेत वेसँभारा ॥

एक वार जो पीके रहा । सुखजीवन सुख भोजन लहा ॥

पान फूल रस रंग करीजे । अर्थ अघरसो चाखा कीजे ॥

दो० जो तुम चाहो सो करो ना जानो मल मन्हु ।

जो भावै सो होय मोहि तुम पिय चहुँ अनन्द ॥

सुनि धन प्रेम सुराके पिये । मरनाजिवन डरहि नहि हिये ॥

जहँ मधु तहाँ कहाँ निस्तारा । की सुधुमरहाँ की मतवारा ॥

सो पीजानि पिये जो कोई । पै न अघाय जाय पर सोई ॥

जाकहँ होय वार इकलाही । रहै न वह बिन ओही चाहा ॥

अर्ध दर्ब सब देइ वहाई । कै सब जाव न जाय पियाई ॥

रतहि दिवस रहै सब भीजा । लाभ न देख न देखी बीजा ॥

अंगिया १ नामजेवर २ राजाके मुलाकातसे ३ फूल ४ खुशबू ५ दलमल ६ शराय मुहब्बत सुराही से ७ काम काम पियो ७ हुकम ८ घात ९ शराय १० अंगूर ११ होंठ १२ पञ्चावत १३ दिल् १४ प्रायदा १५-१७ दिन १६ मुत्तसान १८ ॥



भोर होत तब पलहु शरीरु । पाय घुमरहां शीतल नीरु ॥

दो० एकबार भरदेहु प्रियाला, बारवार को मांग ।

सुहम्मदकिमन पुकारे, ऐसो दांवजेहिखांग ॥

भयो बिहान उठा रँबि साई । चहुँदिशि आई नखत तराई ॥

सबनिशँ सेजमिलाशँशिसूरु । हारचीर वलियाँ भइ चूरु ॥

सुधनँ पान चून भइ चोली । रंगरंगील निरंग भइ डोली ॥

जागत रँयनि भयो भिनसारा । भइ बेसँभारँ सोत वेकरारा ॥

अलकँ तुरंगिनि हिरदयँ परी । नारंगँ छुइ नागिन विपमरी ॥

लँरी मुरी हिये हार लपेटे । मुरँसरि जनु कालिन्दी भेटे ॥

जनुप्रयागँ आरयँले विचमिली । वेनी भइ सो रोमावली ॥

दो० नाभी लँभते गये, काशीकुरँदे कहाव ।

देवतामरहिकलँपँशिर, आपहिंदोपँ नलाव ॥

विहँसि जगावहिँसखीसयानी । सूरँ उठा उठि पद्मिनिरानी ॥

सुनतसूरँ जनु कमल बिकासीं । मधुकँरँ आयलीन्हमधुवासा ॥

जनहुँ मातबँसँ पानी वरसी । अतिविपभरफूलीजनुअरसी ॥

नयनकमल जानहु दुइखोले । चितवनमृगँ सोअतिजनुभूले ॥

तन बेसँभार केश औ चोली । चितअचेतजनु वाली भोली ॥

कमलमाँफु जनु केसँरँ दीठी । यौवन हुत सो गँवाई बैठी ॥

भयेशँशि गहेगहनअस गहे । बिधरे नखतँ सेजभर रहे ॥

नशा १ डण्डापांनी २ कमी ३ सूर्य तथा राजा ४-८ सहेली ५ रात ६ चाँद ७ चूड़ी ८ पद्मावत १० वेरौनक्र ११ रात १२ बेहोश १३ बालकीलटँ १४ छाती १५ तथा छातियाँ १६ पँचलरी वा सतलरी १७ छाती १८ गङ्गा जी तथा छाती १९ यमुना तथा छाती के बाल २० नाम तीरथ २१ नाम मुकाम २२ त्रिवेनी २३ लालच २४ मणिकर्षिका कुण्ड २५ शिरकटाना २६ गुनाह २७ सूर्य २८-२९ खिलना ३० अँवर ३१ मस्तीवखी ३२ हिरन ३३ जूदरङ्ग ३४ चाँद ३५ तथा हारके मोती ३६ ॥

दो० बेल जो राखी इन्द्रकहँ, पवन बास नहिं देहि ।

लाग्यो आय भँवरतेहि, कलीं बेष सस लेहि ॥

हँसिहँसि पूँछें सखीं सरोसीं । जनहु कुसुदं चन्दनसुखदेसीं ॥

रानी तुम ऐसी सुकुमारा । बास फूल तन जीव तुम्हारा ॥

सहिनिहँसकोहृदय पर हारू । कैसेँ सही कन्तकर भारू ॥

बदनकमलविकसतें दिनराती । सो कुँभलातकहो केहिभंती ॥

अधरँ कमल जो सहत न पाँनू । कैसेँ सहा लाग सुख भानू ॥

लंकें जो पैग देत मुरभाई । कैसेँ रही जो राव न रोई ॥

चन्दन त्रोंप पवन अस पीव । भयो चित्रसम कसभा जीव ॥

दो० सब अरगजँ मरगजँ भयो, लोचनैविँ सरोजँ ।

सत्य कहो पद्मावत, सखी परी सब खोज ॥

कहों सखी आपन सतभाऊ । हों जो कहत कस रावनैराऊ ॥

कांपों भँवर पुहुपँ पर देखे । जनुसँशिगहनतैसियोहिलेखे ॥

आज मर्म मैं जाना सोई । जस पियारपिय औरन कोई ॥

हर तवलग अहमिलानपीव । भाँकुं की दृष्टि हूँग्या सीवें ॥

जतसन भातुलीन्हपरकाँसूँ । कमलकलीमनकीन्ह विकारसूँ ॥

हियेँ ओहें उपजाँ औसीवें । पिय न रिसाय लेव परजीव ॥

हतजो अपारबिरहदुख दूख । जनहुअगस्त्यउदैधजलसूखा ॥

दो० हमहुँ रंग बहु जानव, लहरें जेत समुंद ।

पिय लौगये चतुराई, सम्योँन एको बुन्दें ॥

होशियार १ कोकावेली २ छाती ३ मुँह ४ खिलना ५ होंठ ६ सूर्य तथा राजा ७ कसर ८ तथा राजकी सुहवत ९ तसवीर १० सुशब्द ११ दलमल १२ आँख १३ कुन्दरु की तरह लाल १४ कमल १५ तथा औरत मर्द की सुहवत १६ फूल १७ चाँद १८ भेद १९ सूर्य २० निगाह २१ जाड़ा २२ रोशनी २३ खिलना २४ दिल २५ मेहरबानी २६ पैदा २७ खिदमत २८ समुंद २९ दाँव ३० ॥

करि शिंगार तापन कहँ जाऊं । औही देखों ठाँवहिं ठाँऊं ॥  
 जो जियमहँ तो वही पियारा । तनमहँ सोइ न होयनिरारा ॥  
 नयनहि महँ तो वही समाना । देखों जहाँ न देखों आना ॥  
 आपहिं रस आपहि पै लेई । अधरँ सहस लागे रस देई ॥  
 हियो थार कुच कंचन लाडू । अगमन भेट दीन्ह कै चाडू ॥  
 हुलसी लङ्क लङ्क सो लसी । रावनँ रहस कसौटी कसी ॥  
 यौवन समै मिला वह जाई । हौरी विच हुत गयो हेराई ॥  
 दो० जस कुछ दीजे धरनँ कहँ, आपन लेह संभार ।

तस शिंगार सबलनिहेसि, कीन्हेसि मोहिं ठठारा ॥

एरी छबीली तुहिं छव लागी । नेत्रँ गुलाल कतँ संग जागी ॥  
 चम्प सुदरशन अस भा सोई । सोन जर्द जस केसरँ होई ॥  
 बैठि भँवर कुँचै नारंग वारी । लागी नखँ अछरँ रंगधारी ॥  
 अधरँ अधरसों भीज तवोरी । अलकावतँ मुरमुरगइ मोरी ॥  
 राय सुनी तुम्ह औ स्तमुँहीं । अलि मुखलाग भई फुल चुँहीं ॥  
 जैसे शिंगार हार सों मिली । मालति ऐसि सदारहिखिली ॥  
 पुनि शिंगारस किरौं नेवारी । कदम सेवति पियहिपियारी ॥  
 दो० गोंद कलीसमँ चिकैसी, ऋतु वसन्त औ फाग ।

फूलहु फरहु सदा मुख, औ मुखसुफल सुहाग ॥

कहि यह बात सखी उठ धाई । चम्पावतँ कहँ आय सुनाई ॥  
 आज निरँग पद्मावत बारी । जीव न जाने पवनअधारी ॥

जगह १ अलग २ होंठ ३ छाती ४ सोनेके लडुवाली छातियां ५ पहिले ६  
 पियार ७ खुश होना ८ कमर ९ तथा राजा १० धरोहर ११ आँख १२  
 छाविद १३ पीली १४ छाती १५ लडकी १६ नाखून लगनेसे रंगजाता रहा १७  
 होंठपर पानकी लाली १८ बाल १९ लाल २० सुखँ मुँह २१ भँवर २२  
 नाम चिड़िया २३ बराबर २४-२५ खिलना २६ मायपद्मावत २७ बेरंग २८ ॥

तड़कतड़कगो चन्दन बोला । धड़कधड़क डरउठै न बोला ॥  
 अहे जो कली कमलरस पूरी । चूर चूर होयगई सो चूरी ॥  
 देखो जाय जैसि कुँमलानी । मुनि सुहाग रानीबेहँसानी ॥  
 ले सँग सबही पद्मिन नारी । आई जहँ पद्मावत बारी ॥  
 आय रूप सबही जो देखा । सोनबरण होयरही सो रेखा ॥  
 दो० कुसुम फूल जस मखी, निरँग देख सब अंग ।  
 चम्पावत भइ वारी, चूब केश औ मंग ॥  
 सब रत्नवास बैठि चहुँ पासा । शीशिमंडल जनुबैठअकासा ॥  
 बोली सबहि वारि कुँमलानी । करहु शिंगार देहु खडवानी ॥  
 कमल कली कोमल रंगभीनी । अतिसुकुमारलङ्क की क्षीनी ॥  
 चाँद जैसि धन बैठि गिरासी । सहसकिरनहोयसूर्यबिकासी ॥  
 तेहिके भारँ गहन अस गही । भइ निरँग सुखज्योति न रही ॥  
 दर्ब वार कुछ पुण्य करेहू । औ लै बर संन्यासहि देहू ॥  
 भरके थार नखत गजमोती । वरंती कीन्ह चाँदकी ज्योती ॥  
 दो० कीन्ह अरगर्जा मखन, औ सुख दीन्ह नहान ।  
 पुनिभइ चाँदजोचौदस, रूप गयो छिप भानँ ॥  
 पटवैहि चेर आन सब छोरी । सारी कंचुके पहिर पंदोरी ॥  
 पहँदयाँ और कस्यौं रंती । धायलँ पिडवाँही गुजराती ॥  
 चकवाँ चीरमखोनों लीने । मोति लाग औ आपे सोने ॥  
 सुरंग चीर भल सिंहलद्वीपी । कीन्हजो आपा धनवहद्वीपी ॥  
 पेमचौं डुरयाँ और बुंदेरी । श्यामँ सेत पीरी औ हेरी ॥

हैसना १ पीली २ चेरंग ३-५ चाँद ६ शरबत ७ कमर पतली ८ किसके  
 मुलाकात के लुकसे ७ दरवाजा ८ न्योछावर ९ खुशबूदार उवटन  
 ११ सूर्य १२ दारोगा तोशाखाना १३ अंगिया १४ रेशम १५ नाम कपड़ा १६-  
 १७-१६-२०-२१-२२-२४-२५-२६लाल १७खूबसुरत २३काला २७सफ़ेद २८॥

सात रंग सो चित्र चितरे । भस्के दीठ जाहिं नहिं हेरे ॥

चन्दनोता जो खरदुकें भारी । वांसपूर भिलामिलकी सारी ॥

दो० पुनि अभरणं बहु काढा, आनोभांति जड़ाउ ।

फेरफेर सब पहिरहिं, जैस जैस मन भाउ ॥

रतनसेन गये अपनी सभा । बैठे पाट जहां अठ खँभा ॥

आयमिले चितौर के साथी । सबै विहँसके दीन्हा हाथी ॥

राजाकर भल मानहु आई । जें हमकहँ यहि भूमि दिखाई ॥

जो हम कहँ नहिं एतनरेशुं । तब हम कहां कहां यहि देखू ॥

धनि राजा तुई राज विशेषा । जेहिकी राजयमुभवकुछदेखा ॥

भोग बिलास सभी कुछ पावा । कहां जीभ तस अस्तुतिआवा ॥

अब तुम आयअन्तरपटसाजा । दरशन कहँ न तपावहु राजा ॥

दो० नयनं सेराने भूखगइ, देख दरश तुम आज ।

आजभयो अवतारं नव, औसब भे नये काज ॥

हँसके राज रजायसुं दीन्हा । मैं दरशन कारणें तप कीन्हा ॥

अपनी योग लाग अस खेला । गुरुभा आपकीन्ह तुम चेला ॥

अहकमोर बर्षाऋतु देखहु । गुरु कीन्हके योग्य विशेषहु ॥

जो तुम तपसाधामोहिं लागी । अब जन हिये होहु वैरांगी ॥

जोजेहिं लाग सहै तप योगू । सो तेहिके संग मानै भोगू ॥

सोरह सहस्र पद्मिनी मांगी । सबै दीन्ह नहिं काहू खींगी ॥

सबके धौरहरं सोने साजा । सब अपने अपने घर राजा ॥

दो० हस्तिं घोर औकापर, सबहि दीन्ह वड़ साज ।

तसवीर १ निगाह २ किस्म लहंगा ३-४ नाम कपड़ा ५-६ जेवर ७  
तख्त ८ जमीन ९ राजा १० आंख ठंडी ११ नई पैदाइश १२ हुकम १३  
वांस्ते १४ तथा रोना १५ दिल १६ दुखी १७ हज़ार १८ कमी १९ महल २०  
हाथी २१ ॥

भये गृहस्त सब लखपती, घरघर मानहु राज ॥

पद्मावत सब सखी बोलाई । चीर पटोर हार पहिराई ॥

शीश सबन के सेदुर पूरा । शीश पूर सब मांग सिंदूरा ॥

चन्दन अगर चित्रसम भरी । नयन चार जानहुँ औतरी ॥

जानु कमलसंग फूली कोई । औ सो चाँद संगतरई उई ॥

धन पद्मावत धनतोर नाहूँ । जेहि अभरण पहिरा सबकाहूँ ॥

वारह अभरण सोरह शिंगारा । तोहिसोहेपियशशिमसयारा ॥

शशि सुकलङ्गी राहुहि पूजा । तुइनिकलङ्कनकोइसरं दूजा ॥

दो० काहूँ वीन गहा करै, काहूँ नाद मृदंग ।

सब दिन अनन्दवधावा, रहसकूद इकसंग ॥

पद्मावत कहि सुनहु सहेली । होंसों कमलतुमकुमुदनबेली ॥

कलश मानिहोतेहिदिनआई । पूजा चलो चढ़ावहिं जाई ॥

मँझ पद्मावतका जो विवानू । जनु परभातें उठै रतिमानू ॥

आस पास वाजत चौडोली । दंदं मृदंगे भांफ डफ ढोला ॥

एक संग सब सोधी भरी । देव दुवारे उतर भई स्वरी ॥

अपने हाथ देव अन्हवावा । कलशसहसं इकघृत्तभरवावा ॥

पोता मँडफ अगर औ चन्दन । देवभराअरगजें औ बिन्दन ॥

दो० कै प्रणाम आगे भई, विनय कीन्ह बहुभांति ।

रानी कहा चलहु घर, सखी होत है राति ॥

भइनिश धन जसशशि परकैसी । राजेंदेखिभूमि फिरवसी ॥

किसम कपड़ा १ शिर २ तलचीर के बराबर ३ छोटे नखत ४-६ कोका-  
बेली ५-१२ खाविंद ७ जेवर ८ चाँद ९-२७ बराबर १० हाथ ११ बीच १३  
भोर १४ लाल सूर्य १५ नाम वाजा १६-१७-१८ सहेली १९ हज़ार २०  
घीव २१ खुशबू २२ दंडवत् २३ आजजी २४ रात २५ पद्मावत २६  
रोशनी २७ ज़मीन २८ ॥

भइकटकई शरद शशिआवा । फेर गगन रविचाही छावा ॥

मुनि धन धनुष भौहकरफेरी । काम कटाक्ष मकोरतहेरी ॥

जानहुँ न कै बीच पै खाचौ । पितासप्त हों आज न वाचौ ॥

काल्ह न होय रहे सुख रामा । आज करों रावणसंग्रामा ॥

सैन शिंगार मुहूँ है सजा । गजंगतचालअचलगतधुजा ॥

नयनसमुद्र खड्ग नासिका । सरबर जूझको मोसोजिता ॥

दो० हों रानी पद्मावती, मैं जीता सुख भोग ।

तू सरबर कर तासों, जसयोगी तोहियोग ॥

हौ असयोगी जान सब कोऊ । बीर शृंगार जिते मैं दोऊ ॥

वहँ तो हनुँ बीर घट माहीं । यहँतो कामकटक तुम्हपाहीं ॥

वहांतो हयचढ़के महि मंडों । यहां तो अधर अमीरसखंडों ॥

वहांतो खड्ग नरन्दहि मारों । यहां तो बिरहतुम्हार संहारों ॥

वहांतो गज पैलों होय केहर । यहांतो कुचकाभिनकरहेहर ॥

वहां तो लूटौ कटक खंडारू । यहांतो जीततुम्हार शिंगारू ॥

वहां तो कुम्भस्थल गजनाऊँ । यहांतो मजकलशहिकरलाऊँ ॥

दो० पड़ा बीच तब धर धर, प्रेम राज के टेक ।

मानौ भोग ब्रह्म ऋतु, मिल दोनों होय एक ॥

खरडचौबीसवाँ ब्रह्म ऋतु बारहमास ॥

प्रथम बसन्त नवल ऋतु आई । सुऋतु चैत वैशाख सुहाई ॥

हुकम १-आसमान पर सूर्य तथा कोठे पर जाना २-पद्मावत ३-गमजा  
४-कोर से देखना ५-भौह चढ़ाके न बचोगे ६-कसम ७-रावण की तरह  
लड़ो ८-फौज ९-१७-२४ हाथी १०-२१ तलवार ११-नाक १२-वराबरी  
१३-१४ मैदान लड़ाई वा भोग १५-हनूमानजी १६-घोड़ा १७-जमीन १८  
होठ १९-शेर २०-औरत की छाती से काम २१-नाम हाथी २२-प्रेमने  
बीचबचाव कर दिया २३-पहिले २४ ॥

चन्दन चीर पहिर धन अंगा । सेंदुर दीन्ह बेहंसि भरसंगा ॥  
 कुसुमहार औ परबलंबासू । मलयगिरि छिड़का कैलामू ॥  
 सूर सपेती फूलन दासी । धनऔ कन्तामिले सुखवासी ॥  
 पियसँयोग धन यौवन बारी । भँवर पुहुपँसंग करहि धमारी ॥  
 होय फाग भल चाचर जोरी । बिरह जरायदीन्ह जसहोरी ॥  
 धनशंशि सीशैलपी पियसूरुं । नखतशिगार होंहि सबचूरु ॥  
 दो० जेहि घर कंता ऋतुभली, आव बसन्ता नित्त ।

सुखभर आवहिं देवहरे, दुःखन जाने कित्त ॥  
 ऋतु ग्रीष्मकी तपननहिं तहां । जेठ असाढ़ कन्तघर जहां ॥  
 पहिरे सुरंग चीर धन भीना । परमल मेदरहीं तन भीना ॥  
 पद्मावत तन सीर सुवासा । नैहर राज कन्त घर पासा ॥  
 औ बड़ जुड़ तहां सोनारों । अगर पोत सुखे नन्तउहारा ॥  
 सेत विद्यावन सूर सपेती । भोग बिलास कराहमुखसेती ॥  
 अर्धरे तँचोर कपूर भीउसैना । चन्दनचरच लाव नितबैना ॥  
 भा अनन्द सिंहल सब कहूँ । भागवन्त कहूँ सुख ऋतुछहूँ ॥  
 दो० दाड़िम दाखं लेहिरस, बरसहिं आंब छुहार ।

हरिय रतन सोटीं कर, जो अस चाखनहार ॥  
 ऋतुपावसँ बरसै पिव पावा । सावन भादों अधिकसुहावा ॥  
 पद्मावत चाहत ऋतु पाई । गर्गन सुहावनभूमि सुहाई ॥  
 कोकिल वैन पांत बग छूटी । धन निसरी जनु बीरवहूटी ॥

पद्मावत १-२७ सुशबुद्धार २ चन्दन ३ तोशक लिहाफ ४-१७ मुला-  
 क्रांत ५ फूल ६ चाँद ७ टंडा ८-१३ गर्म ९ सूर्य १० महादेवजी ११  
 बहुतखुशबू १२ रात के रहने का मकान १४ फर्श १५ सफेद १६ हाँठ १८  
 अनार १९ अंगूर २० तोता २१ बरसात २२ बहुत २३ आसमान २४ जमीन  
 २५ बगुला २६ ॥



चमकबीज वरसै जल सोना । दादुरे मोरशब्दै सुठलोना ॥

रंगरातीपियसँगनिशं जागी । गरजेगगन चौक कँठलागी ॥

शीतल बुन्द ऊँच चौपारा । हरियर सब देखै संसारा ॥

मलयसमीर वास सुखबासी । बेल फूल सेज सुख दासी ॥

हरियर भूमि कुसुम्भी चोला । औधनपियसँग रचो हिंडोला ॥

दो० पवन भकौरे है हरषै, लागै शीतल बास ।

धनजानी यहि पवनहै, पवनसो अपनेपास ॥

आयशरदऋतुअधिकपियारी । नाउँकुवारकातिकउजियारी ॥

पद्मावत भइ पूनोकली । चौदह चांद उई सिंहला ॥

सोरह किरण शृंगार बनावा । नखतभरासूर्यशशि पावा ॥

आ निर्मल सब धति अकासू । सेज सँवार कीन्ह बलदासू ॥

श्वेत विद्धावन औउजियारी । हँसहँस मिलहिंपुरुषऔनारी ॥

सोने फूलहिं पृथ्वी फूली । पियधनसों धनपियसोंभूली ॥

वषे अंजनदेखँजन दिखावा । होय सारस जोरी रस पावा ॥

दो० यहिऋतु कन्थापासजेहि, सुखतिनकेहियमांह ।

धन हँस लागीपियगले, धनगलपियकेवांह ॥

आयशिशिरऋतुं तहां न सीऊ । अग्रहन पूष जहां घरपीऊ ॥

धन औपियमहँसीव सुहागा । दुहँअंग एकै मिललागा ॥

मनसों मन तनसों तन गहा । हिय सोंहिय विचहारनरहा ॥

जानहुँ चन्दन लाग्यो अंगा । चन्दन रहे न पावे संग्गा ॥

भोगकरहिं सुख राजा रानी । वहँ लेखे सबसृष्टि जुडानी ॥

विजुली १ मेढक २ आवाज़ ३ रात ४ आसमान ५ हवा ६ ज़मीन ७-  
१४ खुश ८ बहुत ९ पूर्णमासीका चाँद १० चाँद ११ साफ १२ सफ़ेद १३  
आँख १४ ममोला १५ जाड़ेका मौसिम १७ पद्मावत १८ जाड़ा १९ वदन  
२० छाती २१ सारी दुनियां २२ ॥

जूम दुहूँ यौवन सों लागा । बिचहुतसीवै जीवलै भागा ॥

दुइ घट मिल एकै है जाहीं । ऐसिमिलहिं तबहीं न अघाहीं ॥

दो० हंसा केल करहिं ज्यों, सरवर, कंदनहि दोउ ।

सेव पुकारे पारभा, जस चकवीक बिछोउ ॥

ऋतुहेमन्त संग पियोपियाला । मानहुँ फागुनसुखसेवसाला ॥

सूर संपेती महँ दिन राती । दगल चीरपहिरहिं बहुभांती ॥

घरघर सिंहल है सुख भोजू । रहा न कतहुँ दुखकर खोजू ॥

जहँ धनपुरुष शीतनहिलागा । जानहुँ काग देख सर भागा ॥

जाय इन्द्र सों कीन्ह पुकारा । हों पद्मावत देश निसारा ॥

यहि ऋतु सदासंग मैं सोवा । अब दरशनते भरा बिछोवाँ ॥

अब हँसके शशि सूरहँ भेटा । अहाजो शीत बीचहुत भेटा ॥

दो० भयो इन्द्रकर आयसुं, परसे हावहिं भइसोय ।

काहु काहुकी परिभा, कोहि काहु की होय ॥

नागमती चितौर पँथहेराँ । पिययोगीपुनि कीन्ह न फेराँ ॥

नागर नारि काहु बस परा । तें बिमोहँ मोसों चित हरा ॥

सुवा काले होय लैगा पीव । पीव न जात जातपर जीव ॥

भयो नरायण बावन किरा । राज करत नलराजा छरा ॥

करणै बान लीन्हों कै छंदू । भरथहिं भयो भिलभिलाँ नंदू ॥

मानत भोग गोपिचंदँ भोगी । लैअपसँवाँ जलधर योगी ॥

लैकेकथं भाकुरराँ लोपी । कठिनबिछोहजियहिकिमिगोपी ॥

दो० सारस जोरी किमिहरी, मारगयो किन खाग ।

लड़ाई १ जवानी २ जाड़ा ३ तालाव ४ सुख से कलोल ५ तोशक लि-  
हाफ़ ६ अलग ७ चाँद न सूर्य ८ हुकम १० तसवीर ११ राह देखना १२  
मोह लेना १३ मौत १४ नाम राजा १५ नाम योगी १६-१८ दुख पाया १७  
छिपना १६ खाविन्द २० कौआ २१ ॥

भुरभुरमांजरधनं भई, विरहकी लागी आग ॥

पिय बियोगं अस बावर जीव । पपिहा जस बोलै पिय पीव ॥

अधिकं कामदर्शे सो कामा । हरिलै सुवागयो पिय नामा ॥

विरहबाण तस लागन डौली । रक्कपसीज भीज तनचोली ॥

संगही हीरहार हिय वारी । हरहर प्राण तंजी अवनारी ॥

खनं इक आव पेटमहँश्वासा । खनहिजाय जिवहोयनिरासा ॥

पवन डुलावहिंसीचहिंचोला । फिरकेनारि समुभमुखवोला ॥

पान पयानं होत को राखा । कोयलओचातृकं मुखभाखा ॥

दो० आह जो मारी विरहकी, आग उठी तेहि हाग ।

हंस जो रहा शरीर महँ, पांख जरे तव भाग ॥

पाटं महादेव हिये<sup>१</sup> निहारू । समभजीव चितचेत सँभारू ॥

भँवर कमलसँग होयमिलावा । सँवरनेह मालति पुनिआवा ॥

जैसी पपीहा स्वातिहिप्रीती । टेक प्यास बांधे जिय सेती ॥

धर्ती जैसि गगनं सों नेहा । पलट फिरै वर्षाऋतु मेहा ॥

पुनिबसन्तऋतु आव्रनवेली । सुरससुमधुकरं सारस वेली ॥

जन अस जीवकरेसि तू बारी । वहतरवरं पुनि उठहिं सँवारी ॥

दिनदशविनजल सूखाकांसा । पुनि सोइ सरवर सोई हांसा ॥

दो० मिलाहिं जो बिलुड़े साजन, कैकी भेंट कहन्त ।

तपन मिरगासर जिनिसहँ, ते अद्रापल हन्त ॥

चढ़ाअसाढगगनं धनं गाजा । साजा विरह दुंददल बाजा ॥

धूम श्याम धौरी<sup>१</sup> धन धाये । श्वेतध्वजाँ वकँपाति देखाये ॥

नागमती १ दुख २ बहुत ३ जलना ४ छोड़ना ५ पल ६ कूच ७ पपीहा  
८ तइत ९ दिल १० आसमान ११-१४ भँवर १२ पेड़ १३ बादल १५ भूरी  
काली सफ़ेद १६ सफ़ेद पताका १७ बगुला १८ ॥

खड्ग बीज चमकें चहुँ ओरा । बुन्दवान वरसहिं घन घोरा ॥

उनई घटा आय चहुँ फेरी । कंत उबार मदन हौं घेरी ॥

दादुर मोर कोकिला पीउ । गिरहि बीज घट रहै न जीउ ॥

पुष्य नक्षत्र शिर ऊपर आवा । हौंविननाहँ मँदिरको छावा ॥

अद्रा लाग बीज भुईं लेई । मो पिय बिन को आदर देई ॥

दो० जेहिं घर कंता ते सुखी, तेहिं गारू तेहिं गर्व ।

कन्त पियारे बाहरे, हम सुख भूला सर्व ॥

सावन वरस मेह अतवांनी । मरन परीहौं विरह भुरानी ॥

लाग पुनरवसु पीउ न देखा । भइवावर कहँ कन्त सरेखाँ ॥

रक्त की आंशुपरहिं भुईं टूटी । रंग चलीं जनु बीरबहूटी ॥

सखिन रचा पियसंगहिंडोला । हरियरभूमि कुसुम्भी चोला ॥

हिये हिंडोल जस डोलै मोरा । विरह भुलावै देइ भकोरा ॥

वाँट असूक्त अथाह गँभीरी<sup>१</sup> । जिव बावरभा फिरै भँभीरी ॥

जगजल बूड जहां लग ताकी । मोरनाव खेवकें बिन थाक्री ॥

दो० पर्वत समुद्र अगम बन, औ बीहड़ घन ढंस ।

किमकर भेंटँ कन्ततुम, नामो पांव न पंख ॥

भरिभादौं दुपहर अति भारी । कैसें भरो रयनि अधियारी ॥

मँदिरसून पिय अन्तहि वसा । सेज नागभइ दाहिदाहि डसा ॥

रहौं अकेल गहें इक पाटी । नयन पसार मरो हियफाटी ॥

चमकबीज घन गरजत त्राशा । विरहकालहोय जीवनिराशा ॥

वरसै मघौं भकोर भकोरी । मोरदुइनयन चुवै ज्यों ओरी ॥

तलघार १ विजुली २ कामदेव ३ मेढक ४ ल्लाविन्द ५ गरूर ६ तुला-  
हृआ ७ होशियार ८ लोह ९ जमीन १० दिल ११ राह १२ गहरी १३  
मल्लाह १४ नामनखत १५ ॥

धनं सूत्रै भर भादौ माहां । अबहुँन आयनसीचेसिनाहां ॥  
 पुरबां लाग भूमि जल पूरी । आक जवास भईहों भूरी ॥  
 दो० जलथल भरे अपूरसब, धर्ति गगन मिल एक ।

धनयौवन अवगाहंमहँ, वय बूढी पिय टेक ॥  
 लाग कुँवार नीरं जस घटा । अबहुँ आवरे प्रीतम लुटां ॥  
 तुहि देखों पिय पलुहेकर्या । उतरा चीतं बहुस्कर मर्या ॥  
 उये अगस्त हस्तं तन गाजा । तुँरी पलान चढै रण राजा ॥  
 चित्रां प्रीत मीनं घर आवा । कोकिल पीव पुकारत पावा ॥  
 स्वाति बूढ चातुकं मुखपरी । सीप समुद्र मोति बहुभरी ॥  
 संखरें संवरि हंस चलिआये । सारस कुरलें खँजनं देखाये ॥  
 भई निराश कास वन फूले । कन्त न फिरे विदेशहि भूले ॥  
 दो० विरहहस्तिं तन शालै, घाय करै नितचूर ।

आय बचाओ वेगें पिय, गाजहुहोय सेंदूर ॥

कातिक शरदचन्द उजियारा । जगशीतल मोविरहिनजारा ॥  
 चौदह किरण चन्द परकाशुँ । जनहु जरै सवधर्ति अकाशू ॥  
 तन मन सेज करै इक दाहँ । सबकहँ चन्दभयो मोहिराहू ॥  
 चहँ खगड लागै अंधियारा । जो घर नाही कन्त पियारा ॥  
 अबहुँ निहुर आव यहिबारा । पर्व देवारी हो संसारा ॥  
 संगभुमकगावहिँ अँग मोरी । हों भुरवों बिछुरीजेहिजोरी ॥  
 जेहिघर पियसोमनोरथं पूजा । मोकहँ विरह सौतदुखदूजा ॥  
 दो० सखि मानै त्योहार सब, गाय देवारी खेल ।

श्रीरत तथा नागमती १ खाविन्द २ नामनखत ३-१०-१२-१३-१५  
 जमीन ४ आसमान ५ गहिरा ६ पानी ७ लौटके ८ वदन हरा होजाय ९  
 मेहेरवानी ११ घोडा १४ मछली १६ पपीहा १७ तालाव १८ ममोला १९  
 हाथी २० छेदना २१ जखद २२ शेर २३ रोशन २४ जलाना २५ कामना २६ ॥

हों का खेलों कन्त बिन, रही धारं शिर मेल ॥

अगहनदिवसं घटानिशं बाढी । दुपहरस्येनि जायकिमिगाढी ॥

अव धन दिवस विरहभारती । जरो विरह जस दीपकबाती ॥

कांपा हियां जनावा सीव । तौ पै जाय होय संग पीव ॥

वर घर चीर रचे सब काहू । मोर रूप सब लैगा नाहू ॥

पलटन बहुरा गाजो बिछोई । अबहूँ फिरै फिरै रँग सोई ॥

बजांगिन विरहिन हियजारा । मुलगमुलगदग्धै भइ धारा ॥

यह दुख दग्ध न जानै कन्तू । यौवन जन्म करै भसमन्तू ॥

दो० पियसों कहो सँदेशरा, ये भँवरा ये काग ।

सो धन विरहिन जरगई, तेहिकधुवांहमलाग ॥

पूपजाड थर थर तन कांपा । सूर्यजुड़ायलंकदिशं तापा ॥

विरह चाटभा दारुन सीव । कँप कँप मरों लेइ हर जीव ॥

कन्त कहां हो लागों हियरे । पन्थे अपारसूफनहिं नियरे ॥

मूरसंपेती आवै जूड़ी । जानहु सेज हिमचले बूड़ी ॥

चकईनिश विछुडेदिन मिला । हों दिनरात विरह कोकिला ॥

रयनि अकेल साथ नहिं सखी । कैसे जिये बिछोही पखी ॥

विरहमुजानु भयो तन जाड़ा । जियतलायत्रौमुयेहिनधांड़ा ॥

दो० रक्तदुरा माँसू गिरा, हाड भये सबशांख ।

धन सारसहोइ रुमुई, आय समेटहिं पंख ॥

लाग्यो माघ परे अति पाला । विरहा कालभयो जड़काला ॥

पहलपहलतन रुईजो भांपों । अहलअहलअधिकोहिय कांपों ॥

श्लोक १-६ दिन २ रात ३-४ दिवस ५-१८ जाड़ा ६ खाविन्द ७  
जखाना ८ उत्तरतरफ १० टेढ़ा ११ छाती १२ राह १३ तोशकलिहाफ १४  
पालाकी तरह १५ तथा नागमती १६ बहुत १७ ॥

आय सूर है तपरे नाहो । तुहि विन जाड़ न छूटे माहा ॥

यही माह उपजी रस मूलू । तो सुभँवर मोर यौवन फूलू ॥

नयनचुवहिं जसमहवट नीरू । तेहि विन आगलागशिरचीरू ॥

टपटप बूंद परहिं जनु ओला । विरहपवन है मारै भोला ॥

केहिकशिंंगारको पहिरपटोरौ । ग्रीव न हार रहे है डोरौ ॥

दो० तुम विन कन्ता धनहरवी, तृण तृणवरभा डोल ।

तेहि पर विरह जरायके, चहै उड़ावा भोल ॥

फागुन पवन भूकोरे महा । चौगुन सीवै जायनहिं सहा ॥

तन जस पियर पात भा मोरा । तेहि पर विरह देइ भूकभोरा ॥

तरवर भरहिं भरहिं वनटांखा । भई उपन्त फूल फलशाखा ॥

करहिं बनाफरत कीन्ह हुलासू । मोकहँ जगभा दून उदासू ॥

फाग करहिं सब चांचर जोरी । मोतनलाय दीन्हजस होरी ॥

जो पै पिये जरत अस भावा । जरत मरत मोहिं रोसन आवा ॥

रात दिवसै निरभै जिय मोरें । लग्यो निहारै कन्तजो तोरें ॥

दो० यह तन जारों छोरें कै, कहीं कि पवन उड़ाव ।

मगै तेहि मारग है परै, कन्त धरै जहँ पांव ॥

चैत वसन्ता होय धमारी । मो लेखे संसार उजारी ॥

पंचम विरह पनच शर मारी । रक्त रोय सगरे वन दारी ॥

बूड़उठे सब तरवर पाता । भीज मँजीठ टेसु वनरातां ॥

वौरे अम्ब फरे अब लागी । अबहुँसँवरि घर आवसभागी ॥

सहसँ भाव फूली वनपती । मधुकर फिरै सँवरि मालती ॥

सूर्य्य १ खाविन्द २ पानी ३ कपड़ा ४ जोड़ा ५ गरदन ६ हलकी तिनका  
से ७ जाड़ा ८ पेड़ ९-११ पैदा १० दिन १२ तथा न्योछावरहो १३ राख १४  
शायद १५ राह १६ तीरखींच के १७ पेड़ १८ लाख १९ लाल २०  
हजार २१ भँवर २२ ॥

मोकहँ फूल भये सब कांटे । दृष्टिहरी जनु लागहि चांटे ॥

भर यौवन भइ नारंग शाखा । सो अब बिरह तातहै चाखा ॥

॥ दो० घरन परेवाँ आवजस, आय परो पिय टूट ।

॥ नारि पराये हाथ है, तुम बिन पावन बूट ॥

भा बेशाख तपन अति लीगी । चोला चीर बदन भा आगी ॥

सूरज जस्त हिमचल ताका । बिरहविजार्ग सोहै रथहाका ॥

जस्त बचासि होय प्रिय व्याहा । आय बुझाव अंगारहि माहा ॥

तोहि दर्शनहै शीतल नारी । आय आग सो कर फुलवारी ॥

लागे जरै नरै जस भाख । फिर फिर भूजेसित ज्योन बारू ॥

सरवर हिया घट नित जाई । तरक तरक है है भर आई ॥

बेहिरत हियां करहु पिय टेकी । दृष्टि मया कर मिलवहु एका ॥

॥ दो० कमलजो विकसत मानसर, बिन जल गयो सुखाय ।

॥ अबहुँ ध्वेल फिर पल्लवे, जो पिय सींचहु आय ॥

जेष्ठजरो जग सुनहि लुवारा । उठहि बौडरा पुरहि अंगारा ॥

बिरह गाँज हनुमत है जागा । लंका दाह करै तनलागा ॥

चारो पवन भकोरै आगी । लंका दाह पलका लागी ॥

दह भइ श्यामनदी कालिन्दी । बिरहकी आग कठिन असमुन्दी ॥

उठै आग औ आवै आधी । नयन न सूझ मरो दुख बाधी ॥

अधजर भई मांस तन सूखा । लाग्यो बिरह काल है भूखा ॥

मांस खाय अब हाडहि लागा । अबहुँ आव आवित सुनि भागा ॥

॥ दो० गिरिसमुद्र शशि मेघरवि, सहि न सकै यह आग ।

चौदी १ जवानो २ कवच ३ भारी ४ सामने ५ ठंडा ६ दरवाजा ७ तालाब न दिला ८ छातीफटना १० मदद ११ तिगाह १२ खिलना १३ बिजली १४ जलाना १५ समुना १६ चांद १७ सूख १८ ॥



मुहमद सती सराही, जैँ जो अस पिय लाग ।

तपै लाग अब जेठ असाढी । भइमोकहँ यहिछाजन गादी ॥

तृण तृण बर भा भूरो खरी । भा वर्षा दुख आगर जरी ॥

बंध नाहिँ औ खण्ड न कोई । नाग न आव कहों कहि रोई ॥

सांठे नांठ लग बात को पूँछा । विनजिय फिरै मूँजतन छूँछा ॥

भई दुहेली टेक बहूनी । थांभ नाहँ उठ सके न थूनी ॥

बरषहिँ मेह चुवहिँ नयनाहा । छपर छपर होई विन नाहा ॥

कोरो कहां ठाठ नव साजा । तुमविनकंतनछाजन छार्जा ॥

दो० अबहूँ टाँटि मयाँ कर, नाथ निठुर घरआव ।

मँदिर उजाड़ होत है, नवके आय बसाव ॥

रायँ गँवाई बारह मासा । सहसँ सहसदुखइकइकरवासा ॥

तिल तिल बरषबरषपर जाई । पहरपहर युग युगन सराई ॥

सौहँ आव पिय रूप मुरारी । जासों पाव सुहाग सुनारी ॥

सांभ भई मुरमुरपँथ हेरी । कौन सो घरी करी पिय फेरी ॥

दहिँ कुइला भइकन्तसनेहा । तोला मांस रहा नहिँ देहा ॥

रक्त न रहा बिरह तन गिरा । रती रती है नयनहिँ दुरा ॥

पांय लगी जोरै धनँ हाथा । जोरा नेह जोराये नाथा ॥

दो० बरस दिवसँ धनरोयके, हारपरी चित भंख ।

मानुष घर घर बूझके, पूँछी निसरी पंख ॥

भई पुँछारँ लीन्ह वन वासू । बैरिनसौत दीन्ह चिलवांसू ॥

होखँरि वान बिरहतन लागा । जो अबहूँ आवै घर कागा ॥

छावना १ तिनका के बराबर २ पत्ती ३ रुपया पास नहीं ४ दुबली ५  
वेसहारा ६ खाविन्द ७ छावनी ८ निगाह ९ मेहरवानी १० हजार ११  
मालूम होना १२ सामने १३ राह १४ जलना १५ नागमती १६ दिन १७  
जानवरपरिन्द १८ मोर १९ चिह्नाना २० तिनका २१ ॥

पद्मावत ।

हारलै भई पंथ में सेवा । अब तुहि पठवों कौन प

धौरी पांडुकें कहि पियठाऊँ । जो चितरोखँ न दूसरना

जाय विवाही पिय कँठ लुवा । करै मिलाव सोई गौरवाँ ॥

कोकिलै भई पुकारत रही । महरं पुकार लीन्ह लै दही ॥

पेड़तिलोरी औ जलहंसी । हिरदय बैठि बिरहलगनंसा ॥

दो० जेहि पंखीके नेर होय, कहै बिरहकी बात ।

सोई पंख जर तखरै, जाय होय नहि पात ॥

कुहुककुहुक जस कोयल रोई । रक्त आंश घुँघची बन बोई ॥

भइकर मुखी नयन तन राँती । को सिराव बिरहादुख ताँती ॥

जहँ जहँ ठाढ़ होय बनवासी । तहँतहँहोइघुँघचिन्हकीरासी ॥

बूँद बूँद महँ जानौ जीव । गूँजागूँज करहि पिय पीव ॥

तेहि दुखभई पलास निपाती । लोहू बूड़ उठी होय राँती ॥

राती विभ्यँ भये तेहि लोहूँ । परवर पाक फटे हियँ गोहूँ ॥

देखों जहाँ सोइ है राता । जहँ सो रतन कहैको बाता ॥

दो० नापावसँ वह देशरा, नहि हेवंत न बसन्त ।

ना कोकिल न पपीहरा, जेहि सुनि आवेंकन्त ॥

फिरिफिरि रोयकोई नहि डोला । आधीरात विहंगमँ बोला ॥

तुइफिरिफिरिदाँहे सब पांखी । केहिगुनरयनि नलावेसिआंखी ॥

नागमती केहि कारनँ रोई । कासोंकहूँ जो कन्त बिछोई ॥

मन चित हिये न उतरै भोरे । नयन कजल चंपरहे न मोरे ॥

कोइ न जाय तेहि सिंहलदीपा । जेहिसेबात कह नयनासीपा ॥

नामचिड़िया १-३-४-५ जानवर परिन्द २ गले लगाया ६ तथा  
मर्द ७ नामचिड़िया ८-९-१०-११-२० दिल १२ पेड़ १३ लालआँख १४  
जलीहुई १५ लाल १६ कुंदरू १७ छाती १८ बरसात १९ जलाना २१ रात २२  
घास्ते २३ अलग २४ आँख २५ ॥

योगी होय निसरा सो नाहूँ । तवहुन कहा सँदेशन काहूँ ॥

नित पूँछों सब योगी जंगम । कहै न कोइ निजवात विहंगम ॥

दो० चाँखो चक्र उजारभये, सकल सँदेशा ठेक ।

कहों बिरह दुख आपन, बैठसुनहु दँड एक ॥

तासों दुख कहिये हों वीरा । जेहि सुनके लागै परपीरा ॥

कोहोय भिम दिनको लै रहा । को सिंहल पहुँचावै चहा ॥

जहां सो कन्त गयेहोय योगी । हों किंगरी भइ भूरवियोगी ॥

वह सुनके पूरी कर भेटाँ । हों भइ भस्म न आय समेटा ॥

कथा जो कहै आय पियकेरी । पाँवर होहुँ जन्म भर चेरी ॥

वहके गुन सँवरत भइ माला । अबहुँ न बहुरा उड़गा आला ॥

बिरह गुरुइ खपर के हियाँ । पवन अधार रहै सो जिया ॥

दो० हाड भई भुर किंगरी, नसैं भई सब तांति ।

रोमरोम तन धुनउठै, कहो विथा तेहिभांति ॥

पद्मावत सों कयो विहंगम । कन्त लुभाय रहे जेहि संगम ॥

तूँ घर घरन भई पिउ हस्ता । मोतन जप दीन्हीं औ वस्ता ॥

रावन कनक सो तोकहँ भयो । रावट लङ्क मोहिं कै कियो ॥

तोकहँ चैन मुख मिलै शरीरा । मोकहँ हिये द्रंद दुख पीरा ॥

हमहूँ व्याह तोर संग पीऊ । आपहिपाय जान पर जीऊँ ॥

अबहुँ कर माया जिव फेरो । मोहिं जियाव देहु पिय मेरो ॥

मोहिं भोगसों काज न प्यारी । सौह दृष्टि की चाहनहारी ॥

दो० सौत न होस तू बैरिन, मोरकन्त जेहि हाथ ।

आनमिलाव एकबेरकैसे, तोरपांय मोरमाथ ॥

खाविन्द १ चारोतरक्र २ नामपहलवान ३ दुखी ४ मुलाकातकर ५  
जूती ६ दिल ७ नामविहिया ८ घरवाली ९ सोना १० राख ११ अपना पैर  
जानके मेरो जिन्दगी चाह १२ सुधी निगाह १३ ॥

रतनसेन की मा सरस्वती । गोपिचन्द जस मैनावती ॥

अंधरी बूढ़ी सुठ दुख रोवा । यौवन रतन कहां होय खोवा ॥

यौवन अहा लीन्हसो कादी । भइ बिनटेक करै को ठादी ॥

विन यौवन भइ आश पराई । कहां सुपूतखम्भ होय आई ॥

नयन दृष्टि नहिं दिया बराहीं । घर अधियार पूत जो नाही ॥

कोरी चला श्रवण की ठाउँ । टेक देह वह टेकों पाउँ ॥

तुम श्रवण है काँवर सजी । डार लाय सो काहे वजी ॥

दो० श्रवण श्रवणके रुसुई, माता काँवर लाग ।

तुमबिन पानि न पावे, दशरथ लावै आग ॥

लै सुसँदेश विहंगम चला ॥ उठी आग सगरी सिंहला ॥

विरह विजाग वीजको ठेगा । धूम सो उठी श्याम भयेमेघा ॥

भरिगा गगन लूक तस छूटी । ह्वै सो नखत गिरहिं भुईं टूटी ॥

जहँ जहँ भूमि जरी भा रेहू । विरहकिदग्ध भई जनु खेहू ॥

राहु केत जस लंका जरी । औ उड़चिनग चांदमहँ परी ॥

जाय विहंगम समुद्र डफारौ । जरे मच्छ पानी भा खारा ॥

दाँदी वन बीहड़ जल सीपा । जाय नेरभा सिंहल दीपा ॥

दो० समुदतीर इक तरवर, जाय बैठ तेहि रूख ।

जबलग कहिन सँदेशा, तबलग प्यासन मूख ॥

रतनसेन वन करत अहेरां । कीन्ह वही तरवर तरि फेरा ॥

शीतल वृक्ष समुद्र के तीरा । अतिउतंग औ छाह गँभीरा ॥

१ जवानी २ वेसहरि ३ निगाह ४ नामब्राह्मण जो अर्धा अन्धामा बाप  
को काँवरमें लिये रहताथा ५ छोड़ना ६ राजादशरथ ७ नामचिड़िया ८-१६  
जहाँ विरहकी विजुली वहाँ विजुली क्या दुश्मनी करै ९ धुवाँ १०  
काला ११ आसमान १२ जमान १३ जलना १४ राख १५ चिह्नाना १७  
जलाना १८ पेड़ १९ शिकार २० ऊँचा २१ ॥

तुरी बांधिके बैठि अकेला । साथी और करहिं सवकेला ॥

देखत फिरै सो तरवर शाखा । लाग सुनै पंखिनकी भाखा ॥

पंखिनमहँ जो बिहंगम अहा । नागमती जासों दुख कहा ॥

पूँछहिं सबै बिहंगम नामा । अहो मीत काहे तुम श्यामा ॥

कहेसि मीत मासिकदुई भये । जम्बूद्वीप तहां हम गये ॥

दो० नगर एक हम देखा, गढ़ चितोर वह नाउँ ।

सोदुखकहूँ कहाँलग, हम दाढ़े तेहि ठाँउँ ॥

योगी है निसरा सो राजा । सुननगरजानहु धुन्दवाजा ॥

नागमती है ताकर रानी । जरे विरह जस कोयल बानी ॥

अबलग जरभइ होयहै धारा । कहीन जाय विरहकी भारा ॥

हियाँ फाट वह जबहीं कुहके । परै आंशु सब होय होय लूके ॥

चहूँखण्ड छिद्रकी वह आंगी । धर्ती जरत गर्गनकहँ लागी ॥

विरह दवानँ को जरत बुझावा । चही लाग सोहेरे धावा ॥

हों पुनि तहां सो दाढ़ेलागा । तनभा श्याम जीव लैभागा ॥

दो० कातुम हँसो गर्व<sup>३</sup> के, करहु समुद्रमहँ केल ।

मतिअन्हविरहीवशपरहिं, दहीअग्निजलमेल ॥

सुनि चितोर राजै मन गुना । विधि सँदेश में कासों सुना ॥

को तरवरें पर पंखी बेशा । नागमती कर कहै सँदेशा ॥

को तुम मीत मन चेतबसेरु । देव कि दानव पवन पखेरु ॥

रुद्र ब्रह्म शिव बाचा तोहीं । सो निजवातअन्त कहुमोहीं ॥

कहो सो नागमती तुइ देखी । कहेसिविरहजस मरोंविशेखी ॥

० थोडा १ नामचिड़िया २ दोस्त ३ दोमहीना ४ जलना ५ जगह ६ अधि-  
याय ७ राख ८ लूक ९ छाती १० आसमान ११ आग १२ सरूर १३ पेड़ १४  
महादेवजी १५ ॥

हों राजा सोई भा योगी । जेहिकारणवहऐसोवियोगी ॥

जस तू पंखी हों दिन भरों । चाहों कबहिं जाय उड़ परों ॥

दो० पलकआंख तेहिमारगै, लागीडुनहुरहाहिं ।

कोउ नसँदेशी आवहिं, तेहिकसँदेशकहाहिं ॥

पूँछहि कहा सँदेश वियोगी । योगी भया न जानहि भोगी ॥

धनी संग न संगे पूरे । पानी बूड़ रात दिन भूरे ॥

तेल बैल जस बायें फिरे । परै भँवर महुँ सोहै न टरे ॥

तुरी नाउँ दाहिन रथ हांका । बायें फिरै कुम्हार का चाका ॥

तुहिअसनाहिंजोपंखभुलाना । उड़ै सो आव जगतमहुँजाना ॥

एक दीप का आयों तोरे । सब संसार पांयतर मोरे ॥

दहनेफिरै सोअसउजियारा । जस जग चांदसूर्य औ तारा ॥

दो० मुहमदबायेंदिशैं तजी, एकश्रवणै इकआंख ।

जबते दाहिनहोयमिला, बोल पपीहा पांख ॥

हौध्रुवअचल सोदाहिनलावा । फिरसुमेरुं चितोरगढ़ आवा ॥

देखों तोरे मंदिर घमोई । मात तोर आंधर भंड रोई ॥

जस श्रवणै विनअन्धीअन्धा । तसरुमुई तोहिं चितबन्धा ॥

कहेसि मरों को कांवर लेइ । पूत नाहिं पानी को देइ ॥

गई प्यास लाग तुहि साथी । पानी देह दशरथ के हाथी ॥

पानी न पिये आग पै चाहा । तोहिअसपूत जन्मअसलाहा ॥

भागीरथी होहु कर फेरा । जाय सँवारि मरनकी बेरा ॥

दो० तू सपूत मन ताकर, अस परदेश न लेहि ।

अबताई मुइ होयही, मुयहिं जाय कत देहि ॥

नागमती दुख विरह अपारा । धर्ती स्वर्ग जरै तेहिं भारा ॥

नगरकोट घर बाहेर सूना । न्योज होय घरपुरुषवहनां ॥

तू कामरू परा बश टोना । भूला योग छरा तोहि टोना ॥

वह तुहि कारन मरुभइ मारा । रही नाकहोय पवन अधारा ॥

कहुँ बोलहिं लै मोकहुँ खाहू । मांस न कार्या जो रुच काहू ॥

विरह मयूरें नाग वह नारी । तू मँजारें कर वेगें गुहारी ॥

मांस गिरा मांजर है परी । योगी अबहुँ पहुँचलै जरी ॥

दो० देख विरह दुख ताकर, मैं सो तर्जा बनबास ।

आयोभाग समुद्र महँ, तोह न छाँड़े पास ॥

अस पुनि जरा विरहकरगठाँ । मेषश्याम भये धूम जो उठा ॥

दादाँ राहु केतु गा दाधा । सूरज जरा चांद जर आधा ॥

औ सब नखत तराँई जरी । दूटहिं लूक धर्ति महँ परी ॥

जरै सो धर्ती ठावहिं ठाउँ । दहक पलारी जरे तेहिं दाउँ ॥

विरह श्वासतस निकसीभारा । दहिदहि परवतहोहिं अंगारा ॥

भँवर पतंग जरे औ नागा । कोकिलभुजयल आवनकागा ॥

बन पंखी सब जिवलै उड़े । जल पक्षी जलमहँ दुख बुड़े ॥

दो० हमहुँ जरत तहँ निकसा, समुद्र बुभायों आय ।

समुद्र जरा पनिभा खारा, धूमरहा जग छाया ॥

राजें कहा रे स्वर्ग सँदेशी । उतरआव मोहिं मिलप्रदेशी ॥

पांयटके तहिं लावों हियरे<sup>१०</sup> । परम सँदेश कहो है नियरे ॥

कहा बिहंगमैं जो बनबासी । कितक गृहीते होहि उदासी ॥

परमेश्वर न करे १ खाली २ बदन ३ मोर ४ बिह्वी ५ जल्द ६ मदद ७  
बूटी ८ छोट्टना ९ डेर १० जलना ११ छोट्टेनखत १२ दाख १३ दिल १४  
नामाच्छिडिया १५ ॥

जेहितरुं तरितुमआसनकोऊ । कोकिल काग बरावर द्रोऊ ॥

धर्ती महँ विष चारा परा । हारलँ जानि भूमिपरिहराँ ॥

फिरोँ वियोगी डारहि डारा । करोँ चले कहँ पंख सँवारा ॥

जहवां घरी घटत नित जाहीं । सांभ जीवहै दिवसँहि नाहीं ॥

दो० जो लहि फेरे मुकँ है, परोँ न पिंजरमाह ।

जाउँ वेगथल आपने, है जेहिबीच निबाह ॥

कहि संदेश विहंगमँ चला । आग लाय सगरे सिंहला ॥

घड़ी बीत राजा घर आवा । भाअलोपँपुनिहँटिन आवा ॥

पंखी नाउँ न देखा पांखू । राजा रोय फिराके साखू ॥

जस हेरतँ वह पंख हेराना । दिनकहमहिँअसकरवपयानाँ ॥

जोलहिप्राणपियँहँ इकठौँऊँ । एकत्रार चितोरसाहू जाऊँ ॥

आवाभँवर मँदिर जहँ केवौँ । जीव साथ लेगयो परेवौँ ॥

तन सिंहल मनचितोर वसा । जिव वेसँभरनागिनजिमडसा ॥

दो० जेतनारि हँस पूँछी, अभीवचनँ जिमि निन्त ।

रसउतरा विप चढरहा, नावह चिन्तन भिन्त ॥

त्रस एक तहँ सिंहलरही । भोग विलास कीन्हजसत्रही ॥

भा उदास जो सुना सँदेशू । सँवरिचला मन चितोर देशू ॥

कमल उदासी देखा भँवरा । थिरँ नरही मालातिमन सँवरा ॥

योगी औ मन पवन परावा । कित थिररहै जोचित्तउचाहा ॥

जो जिव काढदे आवन कोई । योगी भँवर न आपन होई ॥

चलाकमलमालँतिहिर्यँ घाली।अवकितथिरआछीअलँआली॥

पेड़ १ यह चिड़िया पेड़ नहीं छोंड़ती पानी पीते में भी लकड़ी पंजे में लिये रहतीहै २ ज़मीनछोड़ी ३ दिन ४ नजात ५ नाम चिड़िया ६ सायब ७ निगाह ८ देखना ९ कूच १० वदन ११ जगह १२ कमल तथा पद्मावत १३ जानवर परिन्द १४ मोठी घात १५ कायम १६ तथा पद्मावत १७ दिल १८ भँवर १९ ॥



गन्ध्रवसेन आय सुनि वारी । कसजिवभयो उदास तुम्हारा ॥

दो० में तुमहीं जिवलावा, दीन नयनमहँ वास ।

जो तुम होहु उदासी, यहिका कर कैलास ॥

स्तनसेन विनवा कर जोरी । अस्तुति योग जीभिनामोरी ॥

सहसँ जीभ जो होहिं गुसाई । कीनजाय अस्तुति जहँताई ॥

कांच किरा तुम कञ्चन कीन्हा । तवभारतनज्योति तुम्हदीन्हा ॥

गंगजो निरमल नीर कुलीना । नारमिले जल होय मलीना ॥

तसहों अहा मलीनी कला । मिलाआय तुमभानिस्मलाँ ॥

पान समुद्र मिला होय सौती । पापहरा निरमल भइज्योती ॥

तुम मन आवा सिंहलपुरी । तुमते चढा राज औ कुँरी ॥

दो० सात समुद्र तुम राजा, सरन पांव कोउखाट ।

सबैआय शिर नावहिं, जहां तुम्हारा पाँट ॥ १ ॥

औ मोबिनयँ अबकरोँ गुसाई । तवल्लग कर्योँ जीव तवताई ॥

आवा आज हमार परेवाँ । पाती दीन्ह आन पति देवा ॥

राज काज औ भुईँ उपराहीं । शत्रुँ भाय अस कोऊ नाही ॥

आपन आपन करहिँ सुलीकाँ । एकहि मार एकचहि टीका ॥

भई अमावस नखतहि राजू । हमकहँ चन्दचला वह आजू ॥

राज हमार जहां चलिआवा । लिखिपठई अब होय परावा ॥

वहानेर देहली सुलतानू । होयहै भोर उठै जो भानू ॥

दो० रहहुअमरँ महिगगँन लग, औजोलहहमआव ।

शीशँ हमार तहां नितँ, जहां तुम्हारा पाँव ॥ ३ ॥

दरवाज़ा १ हज़ार २ सोना ३ पाकसाफ़ ४—७ पानी ५ बेरोशनी ६  
सोता ८ साफ़ ९ इफ़ज़त १० बराबर नहीं कोई ११ तख़्त १२ अर्ज़करना १३  
बदन १४ क़ासिद १५ दुश्मन १६ हद १७ सूर्य १८ हमेशा ज़िन्दा १९  
ज़मीन आसमान २० शिर २१ हमेशा २२ ॥

राजसभा पुनि उठी सँवारी । अनविनती राखी पत भारी ॥

भाइन मांझ होय जनफूटी । धरके भेद लंक अस टूटी ॥

विश्वा लाय न सूखन दीजे । पावै पान दंष्टि सो कीजे ॥

अन राखी तुम दीपक लेसी । पै न रहै पाहुन परदेसी ॥

जाकर राज जहां चलिआवा । वही देश पै ताकहँ भावा ॥

हम दोउनयन घालके राखहिं । ऐसो भाखयहिजी भन भाखहिं ॥

दिवसदेहुँ सँकुशल सिधावहिं । दीरघआयुँ होय पुनि आवहिं ॥

दो० सवहिं विचार परा अस, भा गवने कर साज ।

सिद्धगणेश मनावहिं, विधिँ पुरवे मन काज ॥

धिनय करै पद्मावत बारी । होंपिय कमलसों गोद नेवारी ॥

मोहिँ असकहाँ सोमालतिवेली । कदम सेवती चम्प चँवेली ॥

श्री शृंगार हार जस तागा । पुहुप कलीअसहिरदयँलागा ॥

हौं सुवसन्त करों नित पूजा । कुसुम गुलालसुदरशनगूजा ॥

बकचन विनवों रोसविमोही । मुनि बकाव तज जाहीजूही ॥

नागोसर जो मन है तोरी । पूज न सके बोलसर मोरी ॥

हों सदवर्ग लीन्ह मैं शरना । आगेकर जो कन्ततुहिकरना ॥

दो० केतेनारि समुझावै, भँवरं न काटै बेध ।

कहै मरों पै चित्तोर, यज्ञ करों अश्वमेध ॥

गवन चार पद्मावत सुना । उठाधसक जिवऔशिरधुना ॥

गहवर आय नयनभर आंगू । छाँड़व यहि सिंहल कैलाशू ॥

छाँड़यो नैहर चल्याँविछोही । यहे दिवसँ होहूँ तहँ रोई ॥

छाँड़यों आपन सखी सहेली । दूगवन तजचल्याँ अकेली ॥

निगाह १ दिन करारदो २ बड़ीउमरहो ३ ईश्वर ४ अर्जकरना ५ फूल ६ छाती ७ तारोफ़खुनि गुस्ता नहीं आता ८ तथा नागमती ९ तथा राजा १० अलग ११ दिन १२ ॥

जहां न रहनभयो निज चालू । होतहि कस न तहांभा कालू ॥  
 नैहर आय काहि सुख देखा । जनु हैगयो स्वपन करलेखा ॥  
 राखतपार सो पिता निछोहो । कितविवाहके दीन्हविछोहो ॥  
 दो० हिये आय दुखवार्जा, जिवजानहुगाछेक ।  
 मन तेवान के रोवै, हर मँडारकर टेके ॥

पुनि पद्मावत सखी बोलाई । सुनिके गवनमिलीं सबआई ॥  
 मिलहु सखी हमतहँवांजाहीं । जहांजाय पुनि आवन नाहीं ॥  
 सात समुद्र पार वह देशू । कितरोमिलनकितआवसँदेशू ॥  
 अगमपंथ परदेश सिधारी । नजनो कुशलकिविथांहमारी ॥  
 पितानेछोहो कीन्ह हिर्यमाहां । तहँ को हम राखै गहि वाहां ॥  
 हम तुम एक मिले संगखेला । अन्तविछोहो आनगेयँमेलीं ॥  
 तुमअसहितू संगतपियारा । जियत जीव नहिकरोनिरारो ॥

दो० कन्त चलाई काकरो, आयसुं जाय न मेट ।

पुनिहममिलहिंकिनामिलै, लेहुसहेलीभेटा ॥  
 धने रोवत रोई सब सखी । हम तुम देख आपकहँभखी ॥  
 तुम ऐसी जहँ रही न पाहीं । पुनिहमकाहिजोआहिपराहीं ॥  
 आदिपिता जो रहा हमारा । वहूँनयहिदिनहिये विचारा ॥  
 छोहो नकीन्ह निछोहो ओहूँ । का हमदोष लगाइक गोहूँ ॥  
 मँके गोहूँकर हिया चरानो । पै सो पिता न हिये छोहानो ॥  
 औहम देखा सखी सरेखे । यहि नैहर पाहुन कर लेखे ॥  
 तब तेहि पिय नैहर नाचाहा । जेहिससुरारअधिकहोयलाहो ॥

वेदद १ जुदाई २-१० दिल ३ पहुँचा ४ ईश्वर का नाम, ले ठीककरके ५  
 मुश्किलराह ६ दुख सुख का हाल ७ बेमेहरी ८ दिल ९-१६गरदनमें डाला  
 ११ अलग १२ हुकम १३ पद्मावत १४ आदम १५ मेहरवानी १७ वेददो १८  
 पाप १९ शायद २० छाती फटी २१ मेहरवान २२ बहुत फायदा २३ ॥

दो० चलन कहँ हम अवतरी, चलनसिखातहँ आय ।

अब सो चलन चलावै, को राखै गहिपायँ ॥

तुम बारी पिय भोजकै राजा । गर्वक्रोध बोही पै छाजा ॥

सब फल फूल वही की शाखा । चहै सो तोड़ै चहै सो राखा ॥

आयसु लहे रहो नित हाथा । सेवा करहु लाय भुइँ माथा ॥

बर पीपर शिरऊभँ जो कीन्हा । पाकर तिन सूखी फर दीन्हा ॥

बंवरँ बोड़ शीशँ भुइँ लावा । बड़फल मुफर वही पै पावा ॥

आँव जो फरके नवै तराहीं । तब अमृतभा सब उपराहीं ॥

सोइ पियारी पियहिँ पिरिती । रहै जो आयसु सेवा जीती ॥

दो० पोथीकाढ़ गवन दिन देखै, कौने दिन है चाल ।

दिशाशूल औबक्रयोगिनी, सौहँन चलिये काली ॥

अदितँ शुक्रपरिचमदिशराहू । बेफै दक्षिन लंकदिशँ दाहू ॥

सोमँ शनीचर पुरुब न चालू । मंगर बुद्ध उतरदिश कालू ॥

आवशँ चला चहै जो कोई । औषधि कहूँ रोग नहिँ होई ॥

मङ्गल चलत मेल मुखधनियां । चलै सोम देखै दरपनियां ॥

शूकहिँ चलत मेल मुखराई । बेफै चलै दक्षिन गुड़ खाई ॥

अदित तँबोल मेल मुखगुण्डी । वायवरंग शनीचर खण्डी ॥

बुधदधि किये चलहु भोजना । औषधियहि न आनखोजना ॥

दो० अबसुनि चक्र योगिनी, ते भुइँ थिरँ न रहाहिँ ।

तीसोदिनँ सचन्द्रमा, आठो दिशा फिराहिँ ॥

बारह उनइस चार सताइस । योगिनपच्छमदिशागिनाइस ॥

पैदा १ पैरपकड़के २ राजाभोज ३ गरूर ४ हुकम ५-६ चलन्द ६ कहूँ ७  
शिर-सामने १० इतवार ११ उत्तर तरङ्ग १२ सोमवार १३ जरूरत १४  
दही १५ कायम १६ दिन १७ ॥

नौ सोरह चौबिस औ एका । पूरव दक्षिन कोन तेहि टेका ॥

तीनइ ग्यारह छबिस अठारा । योगिन दक्षिनदिशा विचारा ॥

दुइ पचीस सत्रह औ दसा । दक्षिन पश्चिमकोन विचवसा ॥

तेइस तीस आठ पन्द्रहां । योगिन होहि पूर्व सामहां ॥

चौदह बाइस उनइस सात । योगिन उत्तरदिशा कहँजात ॥

बीस अठाइस तेरह पांच । उत्तर पश्चिमकोन तहँवांच ॥

दो० इकइस औ छह योगिनि, उत्तर पुरव के कोन ।

यह गुनचक्रयोगिनी, वांच जो चहे सिधिहोन ॥

परिवा नवें पूर्व परँ भाँये । दूइज दसमी उत्तर अँदाँये ॥

तीज एकादश अगनू मारी । चौथ दुवादश नैऋत वारी ॥

पंचमी तेरस दक्षिन रमेशरी । छठचौदश पश्चिमपरमेशरी ॥

सतमी पून्यो वायव अँळें । अठै अमावस इशान लौहें ॥

तिथि नक्षत्र गुरवार कहीजे । सुदिन साध प्रस्थान धरीजे ॥

सगुन दुघड़िया गिन साधना । भद्रा औ दिशाशूल वांचना ॥

वक्र योगिनी गिने जो जाने । परवर जीत लच्छ घर आने ॥

दो० सुखसमाध आनन्दधर, कीन्ह पयानां पीव ।

थरथरात तन काँपे, धरक धरक जाय जीव ॥

मेष सिंह धन पूरव बीसी । वृष कन्या मकर यमदिसी<sup>१२</sup> ॥

मिथुन तुला औकुम्भपछाँहां । कर्कमीन विरल्लिक उतराँहां ॥

गवन करे कहँ उँगरै कोई । सनमुखसोम लौभँवहु होई ॥

परेवा और नवमी को पूरव जाना मना १ दुइज दशमी उत्तर मना २  
तिथि ३-११ आग्नेयमना ३ तिथि ४-१२ नैऋत्यमना ४ तिथि ५-१३ दक्षिण  
वुरा ५ तिथि ६-१४ पश्चिममना ६ तिथि ७-१५ वायव्यमना ७ तिथि ८-३०  
ईशानमना ८ दिन अंच्छा ९ कूच १० मेष सिंह धन पूरव अंच्छा ११ वृष  
कन्या मकर उत्तर अंच्छा १२ मिथुन तुला कुम्भ पश्चिम अंच्छा १३ कर्क  
मीन वृश्चिक उत्तर अंच्छा १४ निकलना १५ चांद १६ फ़ायदा १७ ॥

दहिन चन्द्रमा सुख सरबदा । बायें चन्द्रायत दुख आपदा ॥

अदित होय उत्तर कहँ कालू । सोमकाल बायब नहिं चालू ॥

भूमि कालपञ्चमबुधनैऋता । गुरु दक्षिनशुक्रअग्नेयता ॥

पूरब काल शनीचर बसे । पीठ दे काल चले सब हँसे ॥

दो० धन नक्षत्र औ चन्द्रमा, औ ताराबल सोय ।

समय एक दिन गवने, लक्ष्मी केतक होय ॥

पहिले चाँद पूर्व दिश तारा । दूजे बसे इशान बिचारा ॥

तीजे उत्तर सो चौथे बायब । पँचैसोपश्चिमदिशागिनायब ॥

छठयें नैऋत दक्षिन सतें । बसे जाय अग्नेय सो अठें ॥

नवें चन्द्र जो पृथ्वी बासा । दशयें चन्द्र जो रहै अकासा ॥

ग्यारें चन्द्र पूर्व फिर जाय । बहुकलेश में दिवसभँवायें ॥

अशुन भरनँ खेती भली । मृगशिर मूल पुनरबसुं बली ॥

पुष्य जेधौ हस्त अनुराधा । जो सुख चाहै पूजे साधा ॥

दो० तिथिनक्षत्रऔ बारडक, अष्टसातखण्ड भाग ।

आदिअर्न्तें बुधसो यह, दुखसुखअंकमत्ताग ॥

परेवाछठ एकादश नन्दा । दुइजसप्तमी द्वादश मन्दा ॥

तीज अष्टमी तेरस जया । चौथचतुरदश नौमीरिया ॥

पूख पूना दशमी पांचे । शुक्रें नन्दे बुध भा नाचे ॥

अदितसोहस्तनखतसिधिलेहिये । बीफेपुष्यश्रवणशशिकहिये ॥

भरणि खेती बुध अनुराधा । भई अर्मावस रोहिणि साधा ॥

इतवार १ मंगल २ बीफे ३ नवमीको चाँदका वास जमीन पर ४ दिन  
वीते ५ नाम नक्षत्र ६-७-८-९-१०-११-१२-१३-१४-१५ सातों मुलक १६  
अब्बलसे आखिर तक खुशी १७ परेवा छठ एकादशी सफ़र करना अच्छा  
१८ दुइज सप्तमी द्वादशी बुराहै १९ तीज अष्टमी तेरस जीत २० चौथ  
चतुर्दशी नवमी में देरी २१ पूर्णमासी दशमी पंचमी अच्छा २२ खुशी २३  
इतवार को हस्तनक्षत्र अच्छा २४ नामनक्षत्र २५-२६-२७ ॥

राहु चन्द्र भूमि संपति आये । चन्द्रग्रहण तब लाग सजाये ॥

सुनि रक्तागज आज्ञा लीजे । सिद्धि योग गुरपरवा कीजे ॥

दो० जेहि नक्षत्रहोय रवि, वही अमावस होय ।

वैच परेवा जब मिलै, सूर्यग्रहण तब होय ॥

चलहुचलहु भा पियेकरचालू । घड़ी न देखलेत जिवकालू ॥

समुदलोक धन चढी वेवाना । जोदिनडरे सो आयतुलाना ॥

रोवहिं सात पिता औ भाई । कोउ न टके जो कंत चलाई ॥

रोवहिं सब नैहर सिंहला । लै वजाय के राजा चला ॥

तर्जा राज रावनका गयो । छांडा लंक विभीषण लियो ॥

फिरी सखी भेंट तज फेरा । अन्त कन्त सो भयो गुरेरा ॥

कोइ काहु का नाहिं नियानी । मया मोह बांधा उरभाना ॥

दो० कञ्चनकायो लोरिकी, रही न तोला मांस ।

कन्त कसौटी घालके, चूरी गढ़ै कि हांस ॥

जो पहुँचाय फिरी सब कोऊ । चलासाथगुनअवगुन दोऊ ॥

औ संगचला गवन सबसाजा । वही दई अस पारैराजा ॥

डोली सहस चलीसंग चेरी । सबै पद्मिनी सिंहल केरी ॥

भल पटोर खर वार सँवारी । लाख चारइक भरी पेठारी ॥

रतनपदारथ माणिक मोती । काढ़ भँडार दीन्ह रथजोती ॥

परख सो रतन पारखहिं कहा । इकइकनग सृष्टिखर लहा ॥

सहस पांति तुर्यन की चली । औसौपांति हस्ति सिंहली ॥

जमीन १ श्वासका विचार २ सूर्य ३ रत्नसेन ४ मौत ५ पद्मावत ६  
पहुँचा ७ रोकना ८ छोड़ना ९ मुलाकात १० आखिर ११ सोने की तरह  
बदन १२ पद्मावत १३ नाम जेवर १४ पाप और पुण्य १५ ईश्वर पार ल-  
गावे १६ हजार डोली लौंडी १७ कपड़ा १८ छात १९ हीरा जवाहिर २०  
जौहरा २१ सारी दुनियाकी क्रोमत २२ हजार कतार घोड़ा २३ हाथी २४॥

दो० लिखनी लाग जो लेखा, कहे न पारहि जोर ।

अर्बु खर्व औ नीलशंख, साहस पदम करोर ॥

देख दर्व राजा गर्बानां । दृष्टि माहि कोइ और न आना ॥

जो मै होव समुद्र के पारा । को है मोहि जगत संसारी ॥

दर्व गर्ब लोभ विष मूरी । दत्त न रहे सत्य हो दूरी ॥

दत्त सत्य पै दोनों भाई । दत्त न रहे सत्य पुनि जाई ॥

जहां लोभ तहँ पाप सँघाती । संवै मरे आनकी थाती ॥

सिद्ध दर्व आगके थापा । कोइ जरा जार कोइ तापा ॥

काहँ चांद काहुभा राहू । काहँ असुत विष भा काहू ॥

दो० तस भूला मन राजा, लोभ पाप अंधकूपी ।

आय समुद्र ठाढ़भा, है दानी के रूप ॥

बोहित भरी चला लै रानी । दान मांग संतदेखी दानी ॥

लोभ न कीजे दीजे दानू । दानहि पुण्यहोय कल्याणू ॥

दर्व दान देई विधि कहा । दान मोक्ष है दुख नहि रहा ॥

दान आहि सब द्रव्यकि जूरू । दान लाभ है बाचै मूरू ॥

दान करै रक्षा मँफ नीरा । दान गहे लै लावै तीरा ॥

दान करनँ दै दुइ जगतरा । रावन सँचौ अग्निमहँजरा ॥

दानमेरु वड लाग अकारा । सैत कुबेर बूड मँफधारा ॥

दो० चालिस अंश द्रव्य जहँ, एक अंश तहँ मोर ।

नाहित जरै कि बूडै, की निशँ मूसहि चोर ॥

मुनि सुदान राजै रिसमानी । कै बोरायस बौरै दानी ॥

गहर किया १ निगाह २ वरावर ३ देना ४ सचाई ५ जोड़ना ६ लाघू  
७ अन्धाकुवां ८ नाव ९ दान देनेवाला १० भलाह ११ ईश्वर १२ नजात १३  
न्योछावर १४ असिल जमा १५ पानी में बचाव १६ नाम राजा १७ जोड़ना  
१८ नाम पहाड़ १९ आसमान २० जमा करना २१ रात २२ ॥



सोई पुरुष द्रव्य जो सैंतें । द्रव्यहुतें मुनि वातें ऐतें ॥  
 द्रव्य ते गर्व करै जो चाहा । द्रव्यते धर्ती स्वर्ग निवाहा ॥  
 द्रव्य ते हाथ आव कैलामू । द्रव्यते अप्सर छांड न पामू ॥  
 द्रव्यते निरगुन हो गुनवन्ता । द्रव्य ते कुञ्जरूपे रुपवन्ता ॥  
 द्रव्य रहै भुईं दिपै लिलारां । अस मन द्रव्य हिये को पारा ॥  
 द्रव्य ते धर्म कर्म औ राजा । द्रव्यते सुद्धिबुद्धि बलकाजा ॥  
 दो० कहा समुद्र रे लोभी, बड़ी द्रव्य नहिं भांप ।

भयो न काहू आपन, मूँद पटोरी सांप ॥

आधे समुद्र आय सो नाहीं । उठी वायु आंधी उपराही ॥  
 लहरें उठीं समुद्र उलथानों । भूला पंथें स्वर्ग नियराना ॥  
 अदिन आय जो पहुँचै काहू । पहन उडाय वहे सो वाऊ ॥  
 बोहित भई लंकदिशिं ताकी । मारगं छांड कुमारग हांकी ॥  
 जो लै भार निवाहन पारों । सो का गर्व करै कन्धारों ॥  
 द्रव्य भार सँग काहि न ऊठा । जें सैंतों ताही सों रूठा ॥  
 गहि पखान लै पंख न ऊड़ा । मोर मोरजें कीन्ह सो बूड़ा ॥

दो० द्रव्य जो जानहि अपना, भूलहि गर्व में नाहिं ।

जेरि उठाय न लैसकहिं, बूढ़ चलहि जलमाहिं ॥

केवट्ट एक विभीषण केरा । आव मच्छकर करत अहेरां ॥  
 लंकाकर अति राक्षस कारा । आवै चला होय अंधियारा ॥  
 पांच मूढ़ दश बाहीं ताही । धड़भाश्याम लंक जवदाही ॥  
 धुवां उठै मुख श्वाससँघातां । निकसै आग कहै जो वाता ॥

गुरू १ बदसूरत २ माथा ३ उलटना ४ राह ५ घुरोदिन ६ पत्थर ७-१५  
 नाव ८ लंका की तरफ ९ राह १० जयतक होसका ११ गुरू १२ मल्लाह १३  
 जोड़ना १४ मल्लाह १५ शिकार १६ काला १७ जलना १८ श्वासके साथ २० ॥

फेकरे मूँड़ चँवर जनु लाये । निकस दांत मुख बाहेर आये ॥  
 देह रीछकी रीछ डेराई । देखत हंष्टि धाय जनु खाई ॥  
 रातेनयन निडर जो आवा । देख भयावन सब डरखावा ॥  
 दो० धर्ती पायँ स्वर्ग शिर, जानु सहसावाहुँ ।  
 चांद सूर्य्य औ नखतमहँ, अस देखैजनुराहु ॥  
 वोहित वही न मानहि खेवा । राक्षस देखि हँसा जनु देवा ॥  
 बहुते दिनहिवार भइ दूजी । अजगरके आय मुखपूजी ॥  
 यहि पद्मिनी विभीषण पावा । जानहु आज अयोध्याछावा ॥  
 जानहु रावन पाई सीता । लंका बसी राम रन जीता ॥  
 मच्छ देख जैसे बक आवा । टोयटोय भुई पांव उठावा ॥  
 आय नेर होय कीन्ह जोहारू । पूँछा क्षेम कुशल ब्योहारू ॥  
 जो विश्वासघात का देवा । बड़ विश्वास करैकी सेवा ॥  
 दो० कहां मीत तुम भूलेहु, औ जायहु केहि घाट ।  
 हों तुम्हार अस सेवक, लाय देऊँ तुहि बाँट ॥  
 गाँठ परे जिव बावरहोई । जो भल वात कहै भल सोई ॥  
 राजें राक्षस नेर बोलावा । आगे कीन्ह प्रन्थै जनु पावा ॥  
 बहुवसावै राक्षसकहँ बोला । गैगटेकँ भूमिँ सब डोला ॥  
 तू खेवकँ खेवक उपराहीं । वोहित तीरलाव गहिवाहीं ॥  
 तुहिते तीर घाट जो पाऊँ । नौगिरही तोडर पहिराऊँ ॥  
 कुण्डल श्रवण देऊँ नग लाई । महराकी सौंपों महराई ॥  
 तस राक्षस तोर पूरों आसा । राक्षसाइन की रहै न बासा ॥

निगाह १ लाल आंख २ नाम राजा जिसके हज़ार हाथ थे ३ नाव ४  
 खुशहुआ ५ पेट भरा ६ बगुला ७ खैरियत ८ दगावाज़ ९ यक्रीन १०  
 राह ११—१३ कुंख १२ खुशी १४ खड़ाहुआ १५ ज़मीन १६ मल्लाह १७  
 नाव १८ नाम ज़ेवर १९ कान २० ॥

दो० राजें बीड़ा दीन्हों, नहिं जानों विश्वास ।

इक अपनी मुखकारन, होय मच्छकर दास ॥

राक्षस कहा गुसांइ विनाती । भल सेवक राक्षसकी जाती ॥

छीना लंकदही श्रीरामा । सेवन छांड देह भइ श्यामा ॥

अबहूँ सेवकरे संग लागे । मानुष भूल होहिं नहिं आगे ॥

सेतबन्धराघव जहँ बांधा । तेहिते चढो भारे ले कांधा ॥

पै अब तुरत दान कुछ पाऊँ । तुरतगही बहँ बांध चढाऊँ ॥

तुरत जो दान पान हँस दीजे । थोरा दान बहुत पुनि कीजे ॥

सेवक राय जो दीजे दानू । दान नाहिं सेवाँ वर मानू ॥

दो० दै बाचाँ सत ना रहा, हत निरमल जेहिरूप ।

आंधीबहुत उडायके, मारगयो अन्धकूप ॥

जहां समुद्र मँफधार भँडारू । फिरै पानि पाताल दुआरू ॥

फिरफिर पानि वही ठाँवमरे । फेर न निकसै जो तहँ परे ॥

वही ठाँव महिरावन पुरी । हलकातर यमकारतरेँ चुरी ॥

वही ठाँव महिरावन मारा । परे हाड़ जनु पड़े पहारा ॥

परी रीढ़ जेहि ताकर पीठी । सेतबन्ध अस आवै दीठी ॥

राक्षस आन तहां के जुड़े । बोहित भँवर चक्र महुँ पड़े ॥

फिरेलाग बोहित जस आई । जस कुम्हार घर चाकफिराई ॥

दो० राजें कहा रे राक्षस, जान बूझ वौरास ।

सेतबन्ध यह देखै, कसेनतहां लैजास ॥

मुनिबावर राक्षस तब हँसा । जानहु स्वर्ग टूटिभुङ्गसा ॥

पत्रवारः १ भूखवास्ते २ जलानां ३ काला ४ चोक्र लै जासक्या ५ खिद-  
मत ६ खिदमत का हृक् ७ कौल ८ वीचोवीच ९ यमफांस १० पुल ११  
नाव १२ आसमान १३ ॥

को वावर तुम वौरहि देखा । जो वावर भुख लागि सरेखा ॥

वावर तुम जो भूख कहँ आनी । तोहिन समभी पंथमुलानी ॥

पंख जो वावर रहि धर माटी । जीम चढ़ाय भखै सब आँटी ॥

महिरावन क्रीरीर जो परी । कहो सी सेतुबन्ध बुधि हरी ॥

यहि सो आहि महिरावनपुरी । जहँवाँ स्वर्ग नेर घर दुरी ॥

अब पढताव द्रव्यजस जोरा । करहु स्वर्ग पर हाथ प्ररोरा ॥

दो० जोहि जियत महिरावन, लेत जगतकर भार ।

जो मरहाड न लैगा, अस होय परा पहार ॥

बोहिते भवहिं भवे सब पानी । नाचै राक्षस आशतुलानी ॥

बूढहिं हस्ति घोर मानवाँ । चहुँदिश आयजुरे मँसखवा ॥

ततखनै राजपंख एकआवा । शिखर टूटजसडहनडुलावा ॥

पराँदंष्टि वह राक्षस खोटा । ताकेसिजैमुहस्ति बडमोटा ॥

आय वही राक्षस पर टूय । गँहिलेउडा भँवरजल छूय ॥

बोहिते टूक टूक सब भई । ऐसोन जाना वह कहँगई ॥

भये राजा रानी दुइ पाय । दोनोँ बहे चले दुइ वायँ ॥

दो० कार्याँ जीव मिलायके, मारकियो दुइ खरड ।

तन रोवत धरतीचला, जीव चला ब्रह्मरंड ॥

मुख परी पद्मावत रानी । कहँजिव कहँपिव ऐस न जानी ॥

जानु चित्र मूर्ति गहि लाई । पाया परी वही तस जाई ॥

जन्मन पवन सही सुकवारा । तेहिसोपरादुखसमुद्र अपारा ॥

लक्ष्मी माय समुद्र की बेटी । ताकहँ लच्छे होय जेँ भेटी ॥

भूख के पास आये १ राह २ चीटी ३ नाव ४ उम्मेद पूरी हुई ५ हाथी  
६—१३ आदमी ७ तुरंत ८ सामुग्री ९ पहाड १० बाजू ११ निगाह १२  
पकड़ना १४ नाव १५ राह १६ धदन १७ आसमान १८ तसवीर १९  
दौलत २० ॥

खेलत रही सहेली सेती । पाद्यजाय लाग तेहि रेती ॥  
 कहेसि सहेली देखो पाद्य । मूरतिआय लागि वहि घाद्य ॥  
 जो देखहिं त्रिया है श्वासा । फूलमुवां पै मुई न वासा ॥  
 दो० रंग जो रांती प्रेमकी, जानहु वीरवहूट ।

आयवही दधि समुद्रमें, पै रंग गयो नछूट ॥  
 लक्ष्मी लक्षण बतीसों लखी । कहेसि न मरी सँभारहु सखी ॥  
 कागद प्रतिरी जैसो शरीरा । पवन उड़ाय परीं मँभनीराँ ॥  
 लहरभकोर उड़हिं जलभीजा । तौह रूप रंग नहिं छीजाँ ॥  
 आप शीशं लै वैठी कोराँ । पवनडुलावे सखि चहुँओरा ॥  
 यारकी समुझ परा तन जीउ । मांगेसि पानिं वोल कै पीउ ॥  
 पानि पियाय सखी मुखधोई । पद्मिनजान कमलसँग कोई ॥  
 तव लक्ष्मी दुख पूँछ मिलोही । त्रिया समुझ बात कहु मोही ॥

दो० देख रूप तोर आगर, लाग रहा चितमोर ।

केहिनगरीकी नागर, काहि नाउँ धनतोर ॥

नयन पसार चेत धर्न चेती । देखी काह समुद्रकी रेती ॥  
 आपन कोउ न देखेसि तहां । पूँछेसि को तुम को हम कहां ॥  
 अहै जो सखी कमलसँगकोई<sup>१</sup> । सानाहीं मोहिकहाविछोई<sup>२</sup> ॥  
 कहांजगत मन पिया पियारा । जससुमेरु<sup>३</sup> विधि<sup>४</sup> गरूसँवारा ॥  
 ताकर गरबी प्रीति अपारा । चढेहिये<sup>५</sup> जनु चढे पहारा ॥  
 रहै न गरबी प्रीतिसो भांषी । कैसे जियों भार दुख चांपी ॥  
 कमलकरी की जोरी नाँहीं । दीन्हबहायउदधि जलमाँहा ॥

मुरझाना १ लाल २ सब गुन जाननेवाली ३ पानी में ४ नुक्रसान ५  
 शिर ६ गोद ७ कोकावेली ८-१० पद्माचत ६ अलग ११ पहाड़ १२ ईश्वर  
 १३ दिल १४ खाविन्द १५ समुद्र १६ ॥

दो० आवा पवन बिछोहकां पातिपरा विकरार ।

तरवरं तजी जो बूरकै, लागै केहिकी डार ॥

कहनिन जानहिं हमतोर पीउ । हम तू पाइरहा नहिं जीउ ॥

पाटा परी आय तू बही । ऐसोन जानहिं धौकहँ अही ॥

तब सुधि पद्मावत मन भई । संवरि बिछोहँ मुरझमर गई ॥

नयनहिं रक्त मुराही डारा । जनहु रक्त शिरकाट पयारा ॥

खनहिं चेत खनहो विकरारा । भा चन्दनबन्दन सबधारा ॥

बावर होय सो परी पुनि पाटा । देहु बहाय कन्त जेहि घाटा ॥

को मोहिं आग देय रच होरी । जियत न बिछुडै सारसजोरी ॥

दो० जेहिसर मार बिछोगा, देहु वही शिर आग ।

लोग कहै यहि सरं चढी, हों सो जरो पियलाग ॥

कायो उदधि चितों पिय पाहां । देखोरतन सो हिरदयं माहां ॥

जनहु आहि दरपन ममहिया । तेहि मँहँ बैठि देखावे पिया ॥

नयननीरं भीजत मुठ दूरी । अब तेहि लाग मरो सुठ भूरी ॥

पिय हिरदयमँहँ भेंट न होई । कोरे मिलाव कहीं केहि रोई ॥

श्वास पास नित आवे जाई । सो न संदेश कहै मोहिं आई ॥

नयन कौड़िया भइ मँडराहीं । थिरक सार पै आवहि नाहीं ॥

मन भँवरी वहँ कर्मल बसेरी । ह्वै मरजिया न आवे हेरी ॥

दो० साथी आथं नियाथ जो, सके न साथ निबाहि ।

जो जिय जारे पिय मिले, भँदरे जिय जर जाहि ॥

सती होय कहँ शीश उधारी । घनँ मँहँ बीजँ घाव जिमिमारी ॥

अलग १-३ पेहु, २- जानवर-जिह्वहकर छोड़ दिया ४ कभी ५ राख ६ चिता ७ वदन ८ समुद्र ९ दिल १० आँसू ११- मुलाकात १२- जो माल के साथी थे १३ शिर १४ वादल १५ बिजुली १६ ॥

सँदुर जरै आग जनु लाई । शिरकी आग सँभार न जाई ॥  
 छूट मांग सब मोति परोई । वारहिंवार गिरहिं जनु रोई ॥  
 दूटहिं मोति बिछोह के भरे । श्रावण बँद गिरहिं जनु भरे ॥  
 फेर फेर कर यौवन कर । जानहु कनक अग्निमहँजरा ॥  
 अग्नि मांग पै देइ न कोई । प्राहुनँ पवनपान सम होई ॥  
 खीनलंक दूटी दुख भरी । विनरावनँ केहिवरँ होयखरी ॥  
 दो० रोवत पंख विमोही, जनु कोकिला अरमँ ॥

जाकर कनक लुटासो, विछुड़ी प्रीतम खम्भ ॥  
 लक्ष्मी लाग बुभावे जीव । नामरवहिनमिलाहि तोरपीव ॥  
 पियोपानि होवपवन अधारी । जस हौतुहसमुद्रकीवारी ॥  
 मैं तोहिं लाग लेत पट्वाटू । खोजव पितै जहाँलगघाटू ॥  
 हौं जेहि मिलौं ताहि बड़भागू । राज पाट औ देउँ मुहागू ॥  
 कहि बुभाय के मँदिर सिधारी । भइज्योनार न जेवै नारी ॥  
 जेहिरे कन्तकर होय बिछोवौं । कातेहि नींद भूख सुखसोवा ॥  
 जीव हमार पीव ले आहा । दरशन देव लेव चितचाहा ॥  
 दो० लक्ष्मी जाय समुद्र पहुँ, ये बातें सब चाल ।

कहा समुद्र अहे घटमोरे, आनमिलावोंकाल ॥  
 राजा जाय तहाँ बहि लागी । जहाँ न कोइ संदेशी कागी ॥  
 तहाँ एक परबत हा धूँगा । जहवां सब कपूरऔ मूँगा ॥  
 तहँ चढ़ हेरौं कोइ न साथी । द्रव्यसमेटकुछ लाग न हाथा ॥  
 रहा जो रावण केर बसेरौं । गोहराये कोइ मिले न हेरा ॥

विरह १ जवानी २ सोना ३ महिमान ४ हवा पानी देते हैं ५ पतली  
 कमर ६ तथा राजा रतनसेन ७ ताकत ८ मोहजाना ९ बेक्रार १०  
 सोना ११ लड़की १२ वाप १३ पद्मावत १४ जुदाई १५ ऊँचा पहाड़ १६  
 देखना १७ मकान १८ ॥

डाढ़ मारके राजा रोवा । कै चितौरगढ़ राज बिछोवा ॥

कहां मोर सब द्रव्य भंडारू । कहां मोर सब कटककंधारू ॥

कहां तुरंग मोर बांकावली । कहां मोर हस्ति सिंहखोली ॥

दो० कहँ रानी पद्मावत, जीव ब्रसे जेहि माहिं ।

मोर मोर के खोयो, भूल गवँ औगाहिं ॥

चम्पा भँवरागुरु जोमिलावा । मांगे राजा बेगँ न पावा ॥

पद्मिनि चाह जहां सुन प्राऊँ । परों आग औ पानि धसाऊँ ॥

ढूँढों पर्वत मेरुँ प्रहास । चढ़ों स्वर्ग औ परों पतारा ॥

कहां सो गुरु पाऊँ उपदेशी । अगमपन्थ कर होय संदेशी ॥

पत्नों आय यह समुद्र अथाहा । जहां न वार न प्रार न थाहा ॥

सीता हरण राम संग्रामा । हनुमत मिला जिता तब रामा ॥

मोहिं न कोइ विनवों केहिरोई । को सहाय उपदेशिक होई ॥

दो० भँवर जो पावै कमल कहँ, मन आरत बहुकेल ।

आयपरा कोइ हस्ति तहँ, चूरकिये सो बेल ॥

कासों पुकारों कापहँ जाऊँ । गाढ़ेमील होय तेहि ठाँऊँ ॥

को यह समुद्र मथे बल वाढा । को मथ रतन पदारथ काढा ॥

कहां सो ब्रह्मा विष्णु महेशूँ । कहां सुमेरुँ कहां वह शेषूँ ॥

को अस साजदेइ मोहिं आनी । वासुंकि दामँ सुमेरुँ मथानी ॥

को दधिसमुद्र मथै जस मथा । करनी सार न कहिये कथा ॥

जौलहि मथ न कोइ दै जीव । सूधी अंगुरि न निकसै धीव ॥

लै नग मोर समुद्र भा बय । गाढ़ परै तौ लै परगय ॥

अलग १ कौजमारी २ घोड़ा ३ हाथी ४ गरुरगहिरा ५ जल्द ६ ब्रीहङ्ग ७  
आसमान ८ राह वतानेवाला ९ मुशिकलराह १० मिन्नत ११ दुख १२  
हाथी १३ पियारादोस्त १४ जगह १५ महादेवजी १६ प्रहाड़ १७-२०  
नामराजासाँपोंका १८ रस्सी १६ ॥



दो० लीलरहा अब ढील है, पेटपदारथं मेल ।

को उजियार करै जग, भांपा चन्द उधेला ॥

ए गुसाईं तू सिरजनं हारू । तुइशिरजायहि समुद्रअपारू ॥

तुइअसगगनं अन्तरिक्षराखा । जहां न टके न थूनि नखांभा ॥

तुइ जल ऊपर धरती राखी । जगत भार लै भार न थाकी ॥

चांद सूर्य्य औ नखतहिंपाती । तोरे डर धावहिं दिन राती ॥

पानी पवन आग औ माटी । सबकी पीठ तोरहैं सांठी ॥

सोइ मूरुख औ वावर अन्धा । तोहिंछांड चितऔरहिवन्धा ॥

घट घट जगत तोरहै दीठी । हौं अन्धा जेहि सूफ न पीठी ॥

दो० पवनं हिये भापानी, पानि हिये भइ आग ।

आग हिये भइ माटी, गोरखधन्धे लाग ॥

तुइ जिवतन गिल बसदैआऊ । तुहींविछोवसं करेसि मिलाऊ ॥

चौदहभुवनं सो तोरे हाथा । जहँलगिविछुड़ीआवइकसाथा ॥

सब कर भैम भेदतोहिपाहां । रोम जमावसि दूरी जाहां ॥

जानेसि सबै अवस्थां मोरी । जस विछुड़ी सारसकी जोरी ॥

एक मुई रुर मुई सो दूजी । रहा न जाय आयुं अब पूजी ॥

भूरत तपत दरंधं का मरों । कलपोंमाथ वेगं मिसंतरों ॥

मरों सो ले पद्मावत नाऊं । तुइ कैंतारं करेसि इकठाऊं ॥

दो० दुख तो प्रीतम देखिये, सुख नहिं सोवे कोय ।

यही ठांउं तन डरपै, मिलन विछोवां होय ॥

वेडर १ लाल जवाहिर २ ईश्वर ३ पैवा करनेवाला ४ आसमान ५  
बीचोबीच में लटकाहुआ ६ सहारा ७ कोड़ा ८ निगाह ९ हवा १० दिल ११  
जुदाई १२ सात परदा आसमान सात परदा ज़मीन १३ भेद १४ हाल १५  
उमरतमाम १६ जलाना १७ शिरकटाना १८ जल्द १९ नजात २० ईश्वर २१  
जगह २२ जुदाई २३ ॥

कहिके उठा समुद्रमहँ आवा । काढ़ि कटार ग्रीवं लै लावा ॥

कहा समुद्र पाप अब घटा । ब्राह्मण रूप आय परगटाँ ॥

तिलक दुवादशमस्तक दीन्हे । हाथ कनकबैशांखी लीन्हे ॥

मुद्राश्रवणं जनेऊ कांधे । कनकपत्रं धोती तरिबोधे ॥

पांवरं कनक जडाऊ पाऊँ । दीन्ह अशीशआयतेहिठाऊँ ॥

कहो कुँवर, मोसे सत वाता । काहे लागकरेसि अपघाताँ ॥

परहेसि मरेसि किकौनेलाजा । आपनजिव देइसकेहिकाजा ॥

दो० जन कटार गर लावसि, समझदेख मन आप ।

सकत जीव जो कादेसि, महादोष औ पाप ॥

को तुम उतरें देइ हो पांड़े । सो बोलै जाकर जिवमैंाँड़े ॥

जम्बूद्वीप केर हौं राजा । सोमैंकीन्हजो करतनबाजाँ ॥

सिंहलद्वीप राज घर वारी । सो मैं जाय विवाही नारी ॥

लाख बोहित दायज ते भरी । नग अमोलऔसबनिरमैरी ॥

रतन पदारथ माणिक मोती । हती न खांगीसम्पतिओती ॥

बहल घोड़ हँस्ती सिंहली । औसँग कुँवर लाख दुइबली ॥

तेहि गोहँन सिंहल पद्मिनी । इक सो एक चाह रुपमनी ॥

दो० पञ्चावत जग रूप मन, कहँलग कहँ उहेल ।

ते समुद्र महँ खौयों, हौं का जियों अकेल ॥

हँसा समुद्र होय उठा अजूरौ । जगजोबूडसबकहिकहिमोरा ॥

तोर होय तोहि परै न वेरा । बूझ विचार तुहीं कहु केरा ॥

हाथ मरोर धुनै शिर मांखी । पैतोहिये न उघरेआंखी ॥

गरदन १ जूहिर २ सोने की लाठी ३ कानमें वाली ४ सोनकी पट्टरी ५ खडाऊं ६ खुदकुशी ७ निन्दासे हँसी ८ पाप ९ जवाब १० बदल में जान ११ सजावार १२ नाव १३ साफ १४ दौलत १५ हाथी १६ साथ १७ रोशनी १८ तरेपास रहती १९ दिल २० ॥

बहुतें आय गये शिर मारा । हाथ न रहा भूठ संसारा ॥  
जोपै जगत होत थिर माया । सैततें सिद्धि न पावत राया ॥  
सिद्धै द्रव्य न सैता गाड़ा । देखा भार चूव कै छाड़ा ॥  
पानी की पानी महँ गई । तुँइ जोजिया कुशलँ सबभई ॥

दो० जाकर दीन्ह जीव औ कार्याँ, लेहि चाह जव चाव ।

धन लक्ष्मी सब ताकर, लिये तो का पछताव ॥

अनपाड़ै पर कहि का हानी । जो पाऊँ पद्मावत रानी ॥

तप के पावा मिलके फूला । पुनि तेहि खोइसोईपथ भूला ॥

पुरुषन आपन नारि सराहीं । मुये गये सँवरा पै चाहा ॥

कहँ अस नारि जगत उपराहीं । कहँ अस जीव मिलन मुख छाहीं ॥

कहँ अस रहस भोग अवकरना । ऐसे जिये चाहि भल मरना ॥

जहँ अस परी समुद्र नगदियाँ । तेहि किम जिया चहै मर जिया ॥

जस ये समुद्र दीन्ह दुख मोका । दैहत्या भगरोँ शिव लोकाँ ॥

दो० का मैं यहिक नशावा, का मैं सँवरा दाव ।

जाय स्वर्ग पर होय है, यहिकर मोरनियाव ॥

जो तु मुवा कित रोवस खरा । नामुँरँ मरै न रोवै मरा ॥

जो मरभा औ छाँडेसि कार्याँ । बहुरँ न करै मरन की दाया ॥

जो मर भयो न बूडै नीराँ । बहत जाय लागे पै तीराँ ॥

तुहों एक मैं वावर भेटाँ । जैस राम दशरथ कर वेटा ॥

वहूँ नारि कर पड़ा विधोवै । वही समुद्र महँ फिरि फिरि रोवा ॥

दुनियाँ १ क्रायम २ दौलत ३ फ़कीर जमा न करता ४ राजा ५ खरि-  
यत ६ वदन ७-१८ ऐत्राहण ९ तुकसान १० मेहनतसे १० राह ११ ता-  
रीफ़ १२ मरन पीछे १३ जवाहिरचिरागकी तरह रोशन १४ ईश्वर के  
सामने १५ आसमान १६ हिलना १७ फिर १८ पानी २० किनारा २१  
मुलाक़ात २२ जुदाई २३ ॥

पुनि जो राम खोई भां मरा । तब एकान्त भयो मिल तरा ॥

तस मर होहु मूँद अब आंखी । लावों तीरं टेकै बैशाखी ॥

दो० बावर अन्ध प्रेमका लुब्धो सुनत वही भां बाट ।

निमित्त एक महँ लेगा, पद्मावत जेहि घाट ॥

पद्मावत कहँ दुख तस बीता । जिस अशोक बिरवांतरि सीता ॥

कनकलता दुइ नारंग भरी । तेहि कभार उठसकै नहि खरी ॥

तेहि पर अलकमुअग्नि डसा । शिरपर चढ़े हिये परगसा ॥

रहि मरनालं टेकँ दुख दाधी । आधी कमल भई शंशि आधी ॥

नलिन खण्ड दुइ तस कर हाऊँ । रोमावली बिछूक कहाऊँ ॥

रही दूट जिमि कंचन तागू । को प्रिय मिलवे देई सुहागू ॥

पान न खावै करै उपासू । फूल सूखत न रही न बासू ॥

दो० गगन धँति जल बुड़गये बूडत होय निसास ।

पिय पिय वातुकै ज्योररी मरै सेवात प्रियास ॥

लक्ष्मी चंचल नारि परेवा । जेहि सत होय छरै कै सेवा ॥

रतनसेन आवै जेहि वाटी । अगमन जायवै ठतेहि घाटा ॥

अरौ भई पद्मावत रूपा । कीन्हैसि छांह जरै जेहि धूपा ॥

लखसोकमल भँवर होय धावा । श्वास लीन्ह वह बासन पावा ॥

निरखत आय लक्ष्मी दीठी । रतनसेन तब दीन्हीं पीठी ॥

जामल होत लक्ष्मी नारी । तजमहेश कित होत भिखारी ॥

पुनि धनं फिर आगे है रोई । पुरुष पीठ कस दीन्ह निछोई ॥

बहुत कोशिश किया १ किनारा २ लाठी पकड़ ३ मस्त ४ पल ५ सोने की डाली तथा छाती ६ यालनागिन की तरह ७ छाती ८ क्रमर पकड़के ९ चाँद १० कमल ११ छाती के याल १२ सोना १३ आसमान जमीन १४ पापीहा १५ लम्बे को छजती १६ राह १७ पहिले १८ देखना १९ देखा २० महादेवजी २१ पद्मावत रूप लक्ष्मी २२ बेदर्द २३ ॥

दो० हों रानी पद्मावत, रतनसेन तुई पीउ ।

आय समुद्रमहँ छांडे, अबरोयदेत में जीउ ॥

मैं हों सोई भँवर औ भोजू । लेत फिरों मालतिकर खोजू ॥

मालति नारि भँवर अस पीउ । कहँ वह वासरहै थिरँ जीउ ॥

कातुई नारि करेसि अस रोई । फूल सोई पै वासन होई ॥

भँवर जो सब फूलनकर फेरा । वासन लेइ मालतिहि हेरा ॥

जहां पाव मालति कर वासू । वृत्ती जिव दै होवै दासू ॥

कित वह वास पवन पहुँचावे । नवतन होय पेट जिव आवे ॥

हों वह वास जीव बल देऊँ । और फूलकी वास न लेऊँ ॥

दो० भँवर मालतिहि पै चहै, काँटन आवे दीठ ।

सौहँ भाल खाये हिये, पै फेरे नहिं पीठ ॥

तब हँस कह राजा वह ठाऊँ । जहां सो मालति चललै जाऊँ ॥

लै सो आय पद्मावत पासा । पानि पियाई मरत पियासा ॥

पानी पिया कमल जस तपा । निकसामूर्यसमुद्रमहँ छिपा ॥

मैं पावा पिय समुद्र के घाटा । राजकुँवर मनदिपे ललाटा ॥

दर्शन दिपै जस हीराज्योती । नयन कचूर भरेजनु मोती ॥

भुंजी लङ्का उर केहरि जिता । मूरति कान्ह देखि गोपिता ॥

जस नलतपतै दर्मनेहि पूंछा । तसविनप्राणपिंड है छूँछा ॥

दो० जस तुई पदकँ पदारथ, तैसरतन तुहिं योग ।

भिला भँवर मालतिकहँ, करहुदोउदिशि भोग ॥

पदक पदारथ खीन जो होती । सुनतहिरतनचढ़ीमुखज्योती ॥

राजभोज १ पता २ कायम ३ देखना ४ न्योछावर ५ नयाबदन ६ तिगाह ७ सामने काँटा-न छाती ८ शिर ९ दाँत १० कटोरी ११ बाहु कमर छाती चीताक्रीसी १२ रानी दमन १३ बदन १४ खाली १५ लाल जवाहिर १७ ॥

जानहु सूर्य कीन्ह परकाशू । दिनबहुराभाकमल बिकाशू ॥

कमलजोविहँससूर्यमुखदरसा । सूर्य कमल दृष्टि सो परसा ॥

लोचने कमल श्रीमुखसूरू । भयो अत्यंत दुहूँ रस रू ॥

मालति देख भँवरै गा भूली । भँवर देख मालति बनफूली ॥

देखा दरश भये इक पासा । वहवहकी वह वहकी आसा ॥

कंचनदाह दीन्ह जनु जीव । उगा सूर्य छूटगा सीव ॥

दो० पांयपरी धन पीयके, नयनन सों रज मेट ।

अचरजभयोसवनकहँ, भईशैशिकमलहिभेंटा ॥

जन काहकहँ होय विछोऊँ । जस वेमिले मिलैसबकोऊ ॥

पद्मावत जो पावा पीऊ । जनु मरजियेपरातन जीऊ ॥

कै न्योझावर तन मन वारे । पांयन परी घाल कै नारे ॥

नैवँअवतारदीन्हविधि' आजू । रही छारँ मानुष भइ साजू ॥

राजा रोय घालँगरेपागा । पद्मावत के पांयन लागा ॥

तनजियमहँविधि' दीन्हविद्योऊअसनगरीतवचीन्हनकोऊ ॥

सोई मार छारँ के मेट । सोइ जियाय करावे भेंटा ॥

दो० मुहमदमीतजोमनवसै, तेही मिलाविधिआन ।

संपति विपति पुरुषकहँ, काहलाँभ का हानँ ॥

लक्ष्मी सों पद्मावत कहा । तुम प्रसाद पायों जो चहा ॥

जो सब खोय जाहिं हम दोऊ । जो देखै भल कहै न कोऊ ॥

जे सब कुँवर आय हम साथी । औजितहस्ति' घोरआवाथी ॥

जो पावे सुख जीवन भोगू । नाहित मरनभरन दुखरोगू ॥

रोशनी १ विलना २ निगाह ३ आंख ४ सूर्य ५ दोनों खुशहुये ६ तथा  
पद्मावत ७ तथा राजा ८ सोना औटाहुआ ९ जाड़ा १० चांद ११ जुदाई १२  
गरदन १३ नई पैदायश १४ ईश्वर १५-१६ राख १६ गल्लेमें पगड़ी १७  
धूर १८ फ्रायदा २० लुकसान २१ हाथी २२ ॥

तब लक्ष्मी गइ पिता के ठाऊँ । जो यहिकर सबबूढ़सो पाऊँ ॥  
 तब सो जरी अमृत लै आवा । जो मरहतसो छिड़कजियावा ॥  
 एक एक कै दीन्ह सो आनी । भा सतोषे मन राजा रानी ॥  
 दो० आय मिले सब साथी, हिलमिलकरहिं अनन्द ।

भई प्राप्त मुख संपति, गयो छूट दुख धन्ध ॥१॥

और दीन्ह बहुरतन पषानाँ । सोनरूपजो मनहिं न आना ॥  
 जे बहु मोल पदारथ नाऊँ । कातेहि वरन कहुं तुमठाऊँ ॥  
 तेहिकर भाव रूप को कहा । इकइक नग सृष्टि बरलहा ॥  
 हीर फार बहु मोल जो अही । ते सब नग चुनचुनके गंही ॥  
 जो इक रतन भुनावै कोय । करै सोई जो मनमहँ होय ॥  
 द्रव्य गर्ब मन गयो भुलाई । हमसमलच्छमनहिं नहिं आई ॥  
 लघुदीर्घ जो द्रव्य बखाना । जो जेहिचही सोई तेहिमाना ॥

दो० बड़ औ छोट दोउसम, स्वामिकारजी सोय ।

जोचाही जेहि काजकहँ, वही काज सो होय ॥

खण्ड उनतीसवां समुद्र और लक्ष्मीखण्ड ॥

दिन दश रही जाय पहुनाई । पुनि भइविदा समुद्रसोजाई ॥  
 लक्ष्मी पद्मावत सो भेंटी । जो सो कहा अपनी सोवेटी ॥  
 समुद्र न दीन्ह पानकर वीरा । भरके रतन पदारथ हीरा ॥  
 और पांचनग दीन्ह विशेषी । श्रवण सुनी नयननहिं देखी ॥  
 एक सो अमृत दूसर हंसू । औ तीसर पंखी कर बंसू ॥  
 चौथ दीन्ह शावकसादरू । पांचों परस जो कंचनमूरू ॥

वाप १ सजीवनमूर २ जो मरगये थे ३ सन्न ४ पत्थर ५ जवाहिर ६  
 रंग ७ दुनियाँ का मोल ८ लेना ९ गारूर १० हमारे बराबर कोई नहीं ११  
 छोटे बड़े १२ जवाहिर १३ कान १४ शेरका बच्चा १५ सोना १६ ॥

तुरत तुरङ्गमं दोउ चढ़ाई । जल मानुष अंगवासंगलाई ॥

दो० भेंटं समुंदिन तव कियो, फिरे नायकै माथ ।

जलमानुष तवहींफिरे, जबसो आयजगनाथा ॥

जगन्नाथ दरशन कहँ आये । भोजन रीधा भात पकाये ॥

राजें पद्मावत सों कहा । साँठ नाँठ कछुगाँठ न रहा ॥

साँठ होय जासों सो बोला । नष्ट जोपुरुष पातज्योंडोला ॥

साँठें रङ्ग चलै मौराई । नष्ट रावँ सब कहँ बौराई ॥

साँठें आव गँव तन फूला । नष्टहि बोल बुद्धिबलभूला ॥

साँठें जागनीद निशि जाई । नष्टे कहै होय आँघाई ॥

साँठें दृष्टि ज्योति होनयना । नष्टहिये मुखआव न बैनी ॥

दो० साँठें रहै सिधँ न तन, नष्टहि आगँर भूख ।

बिनगाँठें वृक्ष निपत्रज्यों, ठाढ़ठाढ़पैसूख ॥

पद्मावत बोली सुनु राजा । जीवगयेधन कौनेकाजा ॥

रहा द्रव्य तव कीन्ह नगाँठी । पुनिकितमिलेलच्छेजोनांठी ॥

मुक्तीसाँठें गाँठ जो करे । साँकरँ परै सोई उपकरे ॥

जेहि तन पंख जाय जहँताका । पैगँ पहार होय जो थाका ॥

लक्ष्मी रही दीन्ह मोहिं वीरा । भरके रतन पदारथ हीरा ॥

काढ़ एक नग वेगँ भुजाऊ । बहुरे लच्छेफेर दिन पाऊ ॥

द्रव्य भरोस करै जन कोई । साँठ सोई जो गाँठी होई ॥

दो० जोरकटक पुनि राजा, घरकहँ कीन्ह पयान ।

घोड़ा १ मुलाकात २ लक्ष्मी ३ दौलत गई ४ दौलत ५ वेदौलत ६-१२  
मई ७ कमीनामालदार ८ अकड़के ९ राजा १० गकर ११ मालदार १३  
रात १४ गरीब १५-२० निगाह १६ दिल १७ आवाज़ १८ दिलजमई १९  
बहुत २१ बेरुपया २२ बेपत्ता २३ दौलत जातोरही २४ दौलत होनेके  
समय २५ संगी २६ काम आवे २७ क्रदम २८ जद २९ दौलत ३०  
फौज ३१ कूच ३२ ॥



दिवसहिं भानुं अलोपभा, वासुकिइन्द्रसकान ॥

चितोर आय नेर भा राजा । फिरा जियत इन्द्रासनगाजा ॥

वाजन बाजे होय अडोरों । आवहिं वहलहस्तिं औ घोरा ॥

पद्मावत चंडोल जो वैठी । पुनि गई उलटस्वर्गसों दीठी ॥

यहि मन ऐंठा रहै न सूधा । विपतिनसँवरै सम्पतिलुब्धा ॥

सहसं वरस दुखसहै जो कोई । घड़ी एक सुख विसरै सोई ॥

योगिन यही जान मन मारा । तेहुँ न यह मन मरै अपारा ॥

रहै न बांधा वर भा जेही । तेलियाँ मार डार पुनि तेही ॥

दो० मुहम्मदयहिमनअमरं है, कहुकितमाराजाय ।

कहां सदाशिव आवैं, घटते घटत विलाय ॥

कुँवर जो वहिवहि घाटनलागी । बहु बेकरार सोय जनुजागी ॥

विकल अचेत चेत तिनकहा । सङ्ग साथ नहीं दूसर रहा ॥

कहां रहे आये हम कहां । जानी नहीं किजायहिकहां ॥

जागहिं दयादृष्टि कै आपी । खोलसोनयनदीन्हविधिभांपी ॥

जेहि के सङ्ग पद्मिनी बांची । बहुतअनन्दैवहुतनृतं नाची ॥

अवमर्ग मिले आयजगनाथा । सबै आयके नावहिं माथा ॥

अतिदुख मिले आयके राजा । सोई ते गये उँनकेकाजा ॥

दो० सो हीरामन रतन रवि<sup>०</sup>, सो पद्मावत लाल ।

सो पद्मावत सो कुँवर, सो प्रीतम प्रतिपाल ॥

नागमती कहँ अर्गमैजनावा । गई तपन वर्षा जनु आवा ॥

रही जो मुड़नागिनिजसतुर्चा । जिव पायें तिनकी भइसुचा ॥

दिन १ सूर्य २ नामराजासांप ३ शेर ४ हाथी ५ आसमान ६ निगाह ७  
दौलत में दीवाना ८ हजार ९ संख्या जहर १० हमेशा ज़िन्दा ११ मेहरबानी  
की निगाह १२ खुश १३ नाच १४ शायद १५ राजा के काम को १६ सूर्य १७  
आगम १८ चमड़ा १९ ॥

सब दुख जस केंचुलगा छूटी । होय निसरी जस वीरबहूटी ॥

जंस भुईँदहि असाढ़ पलहाई । परहिँ बूँद औ सोँध बसाई ॥

वहीभाँति पलही सुखबारी । उठी करलिनइकोपसँवारी ॥

हुलस गंग जिमि वाढे लेई । यौवन लाग हिलोरे देई ॥

काम धनुषशरँ दै भइ ठाढ़ी । भाग्यो विरह रहै जो बाढ़ी ॥

दो० पूँछहिँ सखी सहेली, हृदयँ देख आनन्द ।

आज बदनँ तुम निरमल, कहाँउवाहैचन्द ॥

अबलगसखीपवनरहि ताताँ । आजलागमोहिँशीतलगाताँ ॥

मँहि हुलसी जसपावसँझाँहां । तसहुलासँउपजाँजियमाहां ॥

दशौ दावकै गा जो दशहरा । पलटा सोई नावलै महरा ॥

अब यौवन गङ्गा होय बाढ़ा । औठन कठिन मार सबकाढ़ा ॥

हरियर सब देखे संसारा । नई चारँ जनुभा अबतारा ॥

भाग्यो विरह करत जो दाहँ । भासुख चन्द छूटगा राहू ॥

लहिकहिँनयनहारहियँ खिला । को धौँ हितू आयके मिला ॥

दो० कहतहिँ बात सखिनसो, ततखनँ आवा भाट ।

राजा आय नेर भा, मँदिर विछायो पाँट ॥

मुनतहि खन राजा कर नाऊँ । भा हुलास सबठावहिँ ठाऊँ ॥

पलटा जनु वरपाऋतु राजा । जस असाढ़ आवै दरँ साजा ॥

देख से छत्र भई जगझाहां । हस्तिँ मैघ उनये जगमाहां ॥

सैनँ पूर आई घनघोरा । रहस चाव वरपे चहुँओरा ॥

धतिँस्वर्ग अब होय मिलावा । भरहिँपुखरऔतालतलावा ॥

उलीतरह १ बाजीचाँ २ कमान-तीर ३ दिल ४-१५ मुँह ५ पाकसाक ६ गर्म हवा ७ टण्डावदन ८ जमीन ९ बरसात १० खुशी ११ पैदा होना १२ नईतरह १३ जलाना १४ तुरन्त १५ तात्त १७ फौज १८-२० हाथी १६ जमीन-आसमान २१ ॥

उठीलहकमहिमुनितेहिनामा । ठांविहिं ठांवि दूव असजामा ॥

दादुरं मोर कोकिला बोले । हतजोअलोपैजीभसवखोले ॥

दो० भये असवार प्रथमें, मिले चले सब भाय ।

नदीअठारह खण्डा, भिली समुद्रकहँजाय ॥ -

बाजत गाजत राजा आवा । नगर चहँदिश वाजवधावा ॥

बिहँस आय मातासों मिला । रामहि जनु भेंटी कौशिला ॥

साजे मन्दिर बन्दनवारा । औ बहुहोय सो मंगलचारा ॥

पद्मावत कर आव विमानू । नगमतिदहकउठी तसभानू ॥

जनहु छाँह महँ धूप देखाई । तैसे भाँर लाग जो आई ॥

सही न जाय सौतकी भारा । दुसरे मन्दिर दीन्ह उतारा ॥

भई उहां चौखण्डवखानी । रतनसेन पद्मावत आनी ॥

दो० पुहुप सुगन्ध संसार महँ, रूप वखान न जाय ।

हेमसेतं उग्रगाजना, जगत पात पहिराय ॥

बैठ सिंहासन लोग जोहारा । निर्धनीनिरगुणेंद्रव्यबोहारा ॥

अगनिर्त दाननिष्ठावस्कीन्हा । मँगतन दानबहुतकै दीन्हा ॥

तुरी हस्तिं लै महावतमिले । तुलसी लै उपरोहित चले ॥

बेटा भाय कुँवर जेत आवहिं । राजा हँसहँस गलेलगावहिं ॥

नेगी गेजँ मिले अरकाना । पंवरथ वाजे घर मसयाना ॥

मिले कुँवर कापर पहिराये । दैकर द्रव्य तिनघरहिं पठाये ॥

सबकी दर्शा भई पुनि दुनी । दानं दांग सबै जग सुनी ॥

जमीन १ मेढक २ गायव ३ पहिले ४ चंडोल ५ सूर्य्य ६ आग ७ चारों  
तरफ मशहूर ८ फूल ९ मिस्त बर्फसफेदबहार के मोसिम में हरेहरे पत्ते  
लहराते हैं - १० सरीय ११ वेहुनर १२ जमा करना १३ वेहिस्ताव १४  
घोड़ा १५ हाथी १६ हकदार १७ मस्त १८ शकल १९ खैरात और  
इनआम २० ॥

दो० बाजै पाँचशब्द नित, सिद्ध बखाने भाट ।

इत्तिस गौरीपटदरशन, आय जुरे वहपाट ॥

सब दिन राजा दान देवावा । भईनिश नागमतीपहँआवा ॥

नागमती मुख फेरिकै बैठी । सोनहिंकरहिपुरुषसोदीठी ॥

श्रीभमँ जरत छोड़ कै जाय । सो मुख कौन देखावे आय ॥

जोह जै परबत वन लागी । उठी झरै पंखी उड़भागी ॥

अब शाखा देखी औझांहां । कौने रहस पसारेसि बांहां ॥

कौन्यो थिरक बैठि तेहिडारा । कौन्यो कली केलिकुरबारा ॥

तू योगी होयगा बैरागी । हौंजरझारँ भयों तुहिलागी ॥

दो० काह हँसो तुम मोसों, कियो और सो नेह ।

तुहिं मुख चमकै बीजुली, मुहिंमुखवरषे मेह ॥

नागमती तू पहिल विवाही । कठिनँ सुप्रीतिदही जसदाही ॥

बहुते दिनन आव जो पीउ । धनँ न मिलै धनपाहनँ जीउ ॥

पाहन लोह पोढ जग दोऊ । सोऊ मिलै जोहोय बिछोऊ ॥

भलाहिं सेतगङ्गाजलँ दीठा । यमुनजोर्यामँनरिअतिमीठा ॥

काह भयो तन दिनदर्शंदहा । औ बरषा शिर ऊपर अहा ॥

कोइ कहि पास आरँके हेरा । धनवहदरश निरारँनफेरा ॥

कण्ठ लायके नारि मनाई । जरी जो बेल सींच पलहाई ॥

दो० सहसँ अठारहशाखफर, दाड़िमँदाखँ जँभीर ।

सबै पंखमिलआयजोहारे, लौटवही भइभीर ॥

नगरा-शहनाई-करनाल-तुरही-झांझ १ तारीक २ योगी-जंगम-से-  
वरा-संन्यासी-ब्राह्मण-दरवेश ३ तख्त ४ मंद ५ शीख ६ घड़ीगरमी ७  
आग ८ किसकली के लिये कुलेल मचाते थे ९ राख १० तख्तमुहब्बत  
जली जैसा जलना चाहिये ११ नागमती १२ पत्थर १३ जुदाई १४ संक्रंद  
गंगाजल तथा पद्मावत १५ सिंघाह पानी १६ थोड़ेदिन जली १७ उम्मेद १८  
ना उम्मेद न करना चाहिये १९ हजार २० अनार २१ अंगूर २२ ॥

जो भा मेरु भयो रँग राता । नागमती हँसि पूँछी वाता ॥

कहु जो कन्त परदेश लुभाने । कसधन मिलीभोगकसमाने ॥

जो पद्मावत सुठ है लोनी । मोरे रूप कि सरवर होनी ॥

जहां राधिका अप्सर माहां । चन्द्रावल सरपूजें न छाहां ॥

भँवर पुरुषे असरही न राखा । तजै दाखँ महुवा रस चाखा ॥

तज नागेसर फूल सुहावा । कमल वसेंधी सो मन लावा ॥

चौ अन्हवाय भै अरगजाँ । तौहु विसायँध वहिनहिंतजा ॥

दो० काह कहूँ हूँ तोसों, कुछ नहिं तोरे भाव ।

यहां वात मुखमोसों, वहां जीव वह ठाँव ॥ -

दुखकिकथाकहिरयनिविहानी । भयो भोर जहँ पद्मिन रानी ॥

भानुं देखशीशिवदन मलीना । कमलनयनराँती तनखीनाँ ॥

रयनिनखतगिनकीन्हविहानू । विमलँ भई देखी जस भानू ॥

सूर्य्य हँसा शैशि रोय डफारा । टूटआंसु जस नखतहिं माराँ ॥

रही न राखी होय निसासी । तहँवाँजाउ जहांनिशि वासी ॥

हौं कै नेह कुवाँ महँ मेली । सींचहि लाग भुरानी बेली ॥

भये दुइ नयन रहँट की घरी । भरहिं लै दारें बूझी भरी ॥

दो० शुभ्र सरोवरँ हंसजल, घटातो होयविद्योयँ ।

कमल प्रीति नहिं परँहरे, सूख बेल पर होय ॥ -

पद्मावत तुँ जीव पराना । जियते जगतपियारन आना ॥

तुँजिमकमलवसीहियँ माहां । हौं होय अलि वेधातोहिं पाहां ॥

मालति कली भँवर जो पावा । सोतज आनफूल कितभावा ॥

हमविस्तरों में मस्त १ खूबसूरत २ बराबरी ३-४ मर्द ५ अंगूर ६ चोवा ७ खुशबू ८ रातविताई ९ सूर्य्य १० चांद ११-१५ लाल १२ पतली कमर १३ रंजयादा हुआ सूर्य्य को देखके १४ माला १६ रात १७ तालाब १८ जुदाई १९ छोड़ना २० दिल २१ भँवर २२ ॥

मैं हौं सिंहल की पद्मिनी । सरन पूज जम्बू नागिनी ॥  
 हौं सुगन्ध निरमल उजियारी । वह बिष भरी डेगवन कारी ॥  
 मोरी वास भँवरसँग लागहिं । वह देखत मानुष डर भागहिं ॥  
 हौं पुरुषन की चितवनदीठी । जेहिके जिय असआहोंपीठी ॥  
 दो० ऊँची ठाँव जो बैठे, करै न नीचै संग ।

जहां सो नागिन धरगई, कालाकरै सो अंग ॥

पलही नागमती की बाँरी । सोने फूल फूल फुलवारी ॥  
 जानवन्त पङ्क रहि सब देहे । सबै पङ्क बोलत कहकहे ॥  
 सारोगुवा महर कोकिला । रहसत आय पपीहा मिला ॥  
 हारल शब्द महोक सुहावा । कागकुराहर करहिसोआवा ॥  
 भोगविलास कीन्ह अतिफेरा । बासहिं रहसहिं करहिं बसेरा ॥  
 नाचहिं पांडुकें मोर परेवा । निफल न जाय काहुकीसेवा ॥  
 है उजियार बैठ जस तपै । खूसट मुख न देखावे छिपै ॥  
 दो० सङ्ग सहेली नागमति, अपनी बारी माहिं ।

फूलजुनहिं फलतोड़हिं, रहसकूदमुखझरिहिं ॥

जाही जूही तेहि फुलवारी । देख रहस रहसकी न बारी ॥  
 इते न बातन हिये समानी । पद्मावत सो कही सो आनी ॥  
 नागमती है अपनी बाँरी । भँवर मिला रस करै सँवारी ॥  
 सखी साथ सवरहसहिंकूदहिं । और शृंगारहार सब गूँदहिं ॥  
 तुम जोबकावलतुमसोलड़ना । बकचनकहोचहो जसकरना ॥  
 नागमती नागसर रानी । कमलन आधी अपनीबानी ॥

चरबरी १ पांकाका २ मर्द ३ देखना ४ जिसकीहों उसकेदिलमेंवैठी  
 ५ जंगह ६ वादीचा ७-१६ चिड़िया ८ जलना ९ तोता मैना १० नाम  
 चिड़िया ११-१२-१४ कौवा की बोली १३ दिल १५ तुमको जो कहना  
 या करना है सो करो १७ ॥

जस सेवती गुलाल चमेली । तैसि एकजन वहू अकेली ॥

दो० अब सुदरशन गूजा, तव सत वरगै योग ।

मिलाभँवरनागेसरसेते, वहीदेहिमुखभोग ॥

मुनि पद्मावत रिस न सँभारी । सखिनसाथ आई फुलवारी ॥

दोउ सौत मिल पाँट जो बैठी । हियविरोधँ मुख बातें मीठी ॥

बारीदँष्टि सो रँग सो आई । पद्मावत हँस. बात चलाई ॥

बारी सुफल अहै तुम रानी । है लाई पै लाय न जानी ॥

नागेसर औ मालति जहां । सुगन्धराव नहिं चाही तहां ॥

रहा जो मधुकरँ कमल पिरीता । लाग्यो जाय करीलकी रीता ॥

जहँ इमली बांकी हियँ माहाँ । तहँ न भाव नारँगकीआहाँ ॥

दो० फलहि फूलके फरजहां, देखहु मनहिं विचार ।

अम्य लाग जेहि बारी, चम्प लाग तेहिवार ॥

अनतुम कही नीकयहशोभा । पै फलसोई भँवर जेहिलोभा ॥

श्यामँजाम्ब कस्तूरी चोवा । अम्यजोऊँचहृदयँ तेहिरोवा ॥

तेहिगुन असभइ जाम्बनेवारी । लाई आन मांभ केवारी ॥

जल बाढै वहिया जो आई । है वांकी इमली शिर नाई ॥

तु कस पराई वारी दोखी । तँजै पानि धावहु मुख सूखी ॥

उठै आग दोउ डार अभैसा । कौन साथ तुहिं वैरी केरा ॥

जो देखी' नागेसर वारी । लाग मरी अब मूर्गोंसारी ॥

दो० जो सरवरँ जल बाढे, रहै सो अपनी ठाउँ ।

तथा नागमती वा राजा १ तथा पद्मावत २ तखत ३ दुश्मनी ४ फुल-  
वारी खुशरंग देख ५ भँवर कमलका आशिक ६ दिल ७-८ कालीजामुन  
मुषक ८ जो मैं जवाबदों तौ पानी छोड़दो और मुँह सूखजाय १० जो मेरे  
वागको नागेसर देखै ११ तोता मैना १२ तालाब १३ ॥

तज नागसर को वहि, जाउँ न तुहि अँबराउँ ॥

तेहि अँबराउँ लीन्हकाजूरी । काहे भई नीव सुख मूरी ॥

भई बेर कित कुटिल कटीली । तेंदू कीन्ह चाह बकसीली ॥

नारंगदाखँ न तुम्हरी बारी । देखमरहिं जेहि सूगाँसारी ॥

औ न सदाफर तुरँज जँभीरा । कटहर बड़हर लौका खीरा ॥

कमल के हिरदयँ रोवाँ केसर । तोहू न सरँ पूजी नागसर ॥

जहँकटहरकोउँ बरहिं न पूँछी । बड़ पीपर का बोलहि छूँछी ॥

जो फल देखी सोई फीका । ताकर काह सरीहे नीका ॥

दो० रहू तू अपनी बारी, मोसों जूफ न बाझ ।

मालतिउपमन पूँजी, पुनि करखोजाखाज ॥

जो कटहर बड़हर बड़बेरी । तोहिअसनाहिंजोकोकाबेरी ॥

श्यामजानमोर तुरँज जँभीरा । कडुइ नीव तू छाँह गँभीरा ॥

नरियर दाखँ बिही कहँ राखों । गलगलजाउँसौतँ नहिंभाखों ॥

तेरें कहे होय मोर काहा । फरे बृक्ष कोउ ढेल न बाहा ॥

वै सदाफर सो नित फरै । दाँडिम देख फाटहिँयँ मरै ॥

जाफर लौंग सुपारि छुहारा । मिर्च होय जो सहे न पारा ॥

हौँ सुपान रंग पूजन कोई । बिरह जो जरे चून जँरँ होई ॥

दो० लाजहिबूड़ मरोसिनहिं, ऊँभँ उठावसबाहँ ।

हौँ रानी पियँ राजा, तो कहँ योगी नाँहँ ॥

हौँ पद्मिनी मानसरँ केवाँ । अँवर मरालें करहिँमोरसेवा ॥

नागसर छोड़ तेरेवाग न जाउँ १ बाघ २ सुकाविल ३ नीव ऐसी  
कडुवी ४ बैंगन जंगली से ५ बेर कांटादार अच्छाहागा ६ अंगूर ७ तोता  
मैना ८ दिल ९ बरावर १० कटहर बलद १० तारीफ़ ११ बरावर १२ अंगूर  
इसी वास्ते रक्खा है १३ सौतका सुँह से नाम न लौं १४ अनार १५ छाती १६  
खाविंद के बिरह में जलके चूना हुई १७ बलन्द १८ खाविन्द १९ नाम  
तालाव २० कमल २१ हंस २२ ॥



पूजा योग दई हौं गढ़ी । मन महेशके माथे चढ़ी ॥

जानी जगत कमल की करी । तोहि असनहिं नागिनविपभरी ॥

तुई सब लिये जगतके नागा । कोयलवेष न छांडेसिकागा ॥

तू भुजैल हौं हंसकी जोरी । मोहितोहिं मोतिपोतकी चोरी ॥

कंचनकली स्तन नग बिना । जहां पदारथसोहनहिं पना ॥

तुई तोराहु हौं शंशि उजियारी । दिनहिन पूजीनिशि अंधियारी ॥

दो० ठाढ़ होसि जेहि ठाई, मँसि लागै तेहि ठाँ ।

तेहि डर रांधन वैठों, जनु साँवर होय जाउँ ॥

कमल सो कौन सुपारी रोठा । जेहिके हिये सहसदश कोठा ॥

रही न भापै आपन गटा । सखँति उधेल चहै परगटा ॥

कमलपत्र दाँड़िम तोर चोली । देखेसि मूरँ देश है खोली ॥

ऊपर रातौ भीतर पियरा । जँरों वही हरद अस हियरा ॥

यहां भँवर मुखवातहि लावसि । वहां मूर्य कहँहँसहँसलावसि ॥

सबनिशितपतपमरेसि पियासी । भोर भये पावसि पिय वासी ॥

सेजवा रोय रोय निशि भरसी । तू मोसों का सरवरँ करसी ॥

दो० सूर्यकिरण तेहि राँवी, सरवरँ लहर न पूज ।

भँवर यहां तोह पावै, धूपँ देह तोर भूज ॥

मैंहों कमल सूर्य की जोरी । जोपिय आपन तेहिका चोरी ॥

हौं वह आपन दरपन लेखों । करों श्रृंगार भोर मुख देखों ॥

भोर विकारँसँ वहक परकाशू । तुईजरमरेसि निहारअकाशू ॥

सोने की अँगूठी १ लाल २ पन्ना ३ चाँद ४ बराबर ५ रात ६ सियाही ७  
सुपारी सख्त के सामने कमल की क्या हकीकत ८ कमल अपना गढ़ा  
नहीं छिपासका ९ सखती उधेरडालो तब जाहिर हो १० अनार ११ सूर्य  
१२ लाल १३ हल्दी की तरह जलाता हूँ १४ रात १५ बराबर १६-१७-१८  
सूर्य से जल १९ खिलना २० ॥

हैं वह सों वह मोसों राता । तिमिर बिलाय होत परभाता ॥

कमल के हिरदय महँ जोगटा । हरियर हार कीन्ह का घटा ॥

जाकर दिवस तेही पै आवा । कार रयनि कित देखै पावा ॥

तुइ उदुम्बर जेहि भीतर माँखी । चाहहिं उठहिं मरनकी पाँखी ॥

दो० धूप न देखीं विषभरी, अमृत सो सर पाव ।

जेहि नागिन डससोमरै, लहरसूर्यकी आव ॥

फूलहिं कमल भानु के उये । पानी मेल होय जड़ छुये ॥

फिरहिं भँवरजिम तो नयनाहाँ । नील विषायँध सबतो प्राहाँ ॥

मच्छकच्छदादुरै तोहिं आसा । बँके औ पंख बसहिं तोहिं पासा ॥

जे जे पंख बास तोहिं लये । पानी महँ सो विषायँध भये ॥

जो उजियार चांद होय उई । बदन कलंक डोंम लै छुई ॥

औ मोहिं तोहिं निशिं दिन करबीचू । राहुके हाथ चांदकी मीचू ॥

सहसै बार जो धोवै कोई । तोहु विषायँध जाय न धोई ॥

दो० काहकहूँ वह पियसों, मोहिं शिरधरोसि अंगार ।

तेहि के खेल भरोसें, तू जीती मैं हार ॥

तोर अकेल का जीत्यों हारू । मैं जीता जग केर शृंगारू ॥

बदनजित्यों जो शशिं उजियारी । बेनीजित्यों भुँवगिनिकारी ॥

औ मैं जीते मृग के नैना । कण्ठजित्यों को किलके बैना ॥

भौह जित्यों अर्जुनधनुकारी । श्रीवँ जित्यों तमचोर पुछैरी ॥

नासिकं जित्यों पुहुँपतिलसुवा । शूकं जित्यों बेसरहोय उवा ॥

सुश १ अधियारी २ ओर ३ दिल ४ हरे कमलगट्टा का हार पहिने से क्या लुकासान ५ दिन ६ रात ७-१४ गूलर ५ सूर्य ६ हिलाने से पानी मिला होता १० मेढक ११ बगुला १२ चांद में सियाही १३ मौत १५ हजार १६ चांद १७ नागिन १८ गर्दन १९ सूर्य-मोर २० नाक २१ फूल २२ नाम नक्षत्र २३ ॥

दांमिनिजित्योदशनचमकाहीं । अर्धरं रंगरविजीत्यो साहीं ॥  
केहरं जित्यो लंकं मै लीन्हीं । जित्यो मरालं चालवैदीन्हीं ॥

दो० पुहुपुं बासमलयौगिरि, निरमलअंग वसाय ।

नागिनममआशालुबुध, मारेसिकेहरको जाय ॥

का तोहिं गर्व शृंगार पराये । अवहीं लेह लौट सव ठाये ॥

हौं सांवर सलोन मोर नैना । श्वेतं चीरमुखचातुकं वैना ॥

नासिक स्वर्ग फूल ध्रुवतारा । भौहैं धनुष गर्गन काहारा ॥

हीरादर्शनं श्वेतं अरु श्यामा । छिपै बीजं जो विहंसैरामा ॥

बिद्धुमं रंगअर्धरं रसरंती । जोदांमिनि असरंविमहँताती ॥

चाल गयंदं गर्व अतिभरी । विसालंकं नागेसर करी ॥

सांवर जहाँ लवनसुठ नीकी । का सरवरं तूकरेसि जो फीकी ॥

दो० पुहुपुं वासहोंपवनअहारी, कमलमोरनिरहेलैं ।

वहाँ केशैं धर नाऊँ, तोर मरन मोर खेल ॥

पद्मावत सुनि उतरैं नहिंसही । नागमतीनागिनजिमकही ॥

वैं वह कहि वंह वैं कहँ कहा । काह कहों तसजाय न कहा ॥

दोउ नवल भर यौवन गाजें । अप्सरं जानु अखारें वाजें ॥

भा बाहुन बाहुन सो जोरा । हियसोहियकोइत्रागतमोरा ॥

कुचैं माँ कुच भइ सोहैं अनी । नवहिं ननाये टूटहिं तैनी ॥

कुंभस्थल द्वौ गर्जें मैमन्ता । दोनों उफर परे चौदन्ता ॥

विजुली १ दांत २ होंठ ३ चीता ४ कमर ५ हंस ६ फूल ७ चन्दन ८  
आरजू खाविंद के पास जानेकी रखती ९ गरूर १० सफ़ेद ११ पपीहा १२  
आसमान १३ दांत १४ सफ़ेद-काला १५ विजुली १६ मूंगा १७ होंठ १८  
लाल १९ विजुली २० सूर्य २१ हाथी २२ गरूर २३ भँवराकी कमर २४  
बराबर २५ फूल हवाके सहारें २६ तरताजा २७ बाल २८ जघाव २९ परी  
इन्द्रलोक ३० छाती ३१ नाक सामने ३२ अंगियाके बन्द ३३ नाम हाथी  
मस्त ३४ ॥

देवलोक देखत हुत ठाढ़े । लागवान हिये जाहिनकाढ़े ॥

दो० जनहु दीन्ह ठगलाड, देख आय तस मीच ।

रहा न कोइ धरहरियाँ, करै जो दोउमहँवीच ॥

पवन श्रवणें राजा के लागे । कहेसिलडहिंपद्मिनअनागा ॥

दोनों सौत श्याम औ गोरी । भरहितोकहँपावसिअसजोरी ॥

चल राजा आवा तेहि वारी । जरत बुझाई दोनों नारी ॥

एक वार जेहिपिय मन बूझा । सो दूसरे सों काहेक जूझा ॥

पेसो ज्ञान मन जान न कोई । कवहँ रात कवहँ दिन होई ॥

धूप छँह दोऊ इक रंगा । दोनों मिले रहँ इक संगे ॥

जूझवँ छँडहु बूझौ दोऊ । सेव करहु सेवाफल होऊ ॥

दो० गंग यमुन तुम नारि दोउ, लिखीमुहम्मदयोग ।

सेव करहु मिल दोनों, तो मानहु सुख भोग ॥

अस कहि दोनों नारि मनाई । विहँसिदोउतबकण्ठ लगाई ॥

लै दोउ संग मँदिर महँ आई । सोन पलंग तहँ जायबिछाई ॥

सीमी पांच अमृत ज्योनारा । औ भोजन बावन परकारा ॥

हुलसी सरस घचिचर्याँ खायें । भोग करत विहँसीं रहसायें ॥

सोनमँदिरनगमतिकहँदीन्हा । रूप मँदिर पद्मावत लीन्हा ॥

मन्दिर रतन रतन के खंभा । वैठा राज जोहारे सभा ॥

सभा सो सवै शुभ्र मन कहा । सोईअसं गुरु जो भलकहा ॥

दो० बहु सुगन्ध बहु भोगसुख, कुरलहिं केलकराहिं ।

दोहु सो केल नितमानी, रहसअनन्ददिनजाहिं ॥

जाई नागमती नगसेनी । ऊँच भाग ऊँची दिन रेनी ॥

दिल १ मौत २ पढ़नेवाला ३ कान ४ लड़ना ५ खिदमत ६ गल्लेगाया  
७ अंगूर ८ अच्छी बात कही ९ वह अच्छा जिसको गुरु पसन्दकरै १०  
नागमती से नगसेन पैदाहुआ ११ ॥

कमलसेन पद्मावत जाई । जानहु चन्द्र धर्ति महँ आई ॥  
 परिडत बहु बुधवन्त बुलाये । राशि वर्ग औ गिरहगिनाये ॥  
 कहेन बड़े दोउ राजा होहीं । ऐसे बूत दैसे सब तोहीं ॥  
 नवें खरडके राजा जाहीं । औ कुब्जदण्ड होयदलमाहीं ॥  
 खुल भँडारकुब्ज दान देवावा । दुखी सुखी कर नाम बढ़ावा ॥  
 याचक लोग गुनीजन आये । अरु आनँदके बजे वधाये ॥  
 दो० अतिकुब्ज पावाज्योतिपिन, औ दैचले अशीस ।

पुत्र कलत्र कुटुम्ब सब, जीवहिं कोटि वरीस ॥

राघव चेतन चेतन महा । आय जरकें राजा यहँ रहा ॥  
 चितचिन्ता जानै बहु भेउं । कविव्यासँ परिडत सहदेउं ॥  
 बरनी आय राज की कथा । पिँगल महँ सब सिंहलमथा ॥  
 जो कवि सुनै शीशँसो धुना । श्रवणँ नाद वेद कवि सुना ॥  
 दृष्टिँ सो धर्मपन्थ जेहि सूभा । ज्ञानँ सो परम अर्थ मनबूभा ॥  
 योग जो रहै समाधि समाना । भोग जो गुनीकेर गुनजाना ॥  
 बीरँ सुरिस मारै मन कहा । सोइ शृङ्गार कन्त जो चहा ॥  
 दो० वेद भेद जस बरँरुँचि, चितचिन्ता तस चेत ।

राजा भोजँ चतुरदश, भा चेतन सो हेत ॥

घड़ी अचेतँ होय जो आई । चेतनकी सब चेत भुलाई ॥  
 भादौँ एक अमावस सोई । राजँ कहा दुइज कव होई ॥

पद्मावत से कमलसेन १ बलमें दशगुना २ आपस में फरेव ३ बेटा-  
 औरत-खान्दान ४ पास ५ दिलका हाल ६ भेद ७ कविताई में व्यासजी  
 ८ परिडताई में सहदेव ९ बयान १० छन्द ११ शिर १२ कान में वेदनाद  
 की तरह सुना १३ निगाह १४ अकिल से मुश्किल बात दरियाप्त क-  
 रता १५ बहादुर १६ नाम परिडत १७ चौदह विद्या-जाननेवाला राजा  
 भोजकी तरह १८ बुरी १९ ॥

राघवके मुख निकसा आजू । पण्डितनकहाकाल्ह बडराजू ॥  
 राजें दुहँ दिशा फिर देखा । पण्डित बावर कौनसरेखाँ ॥  
 भुजा टेक के पण्डित बोला । छाँड़हिं देशबचन जो डोला ॥  
 राघव करी जाघनीपूजा । चहै स्वभाव देखावै दूजा ॥  
 तेहि ऊपर राघव बरै खाँचा । दुइज आजतौ पण्डितसाँचा ॥  
 दो० राघव पूज जाघनी, दुइज देखायस साँझ ।  
 वेदपन्थ जेनहिंचलहिं, ते भूलहिं बनमाँझ ॥  
 पण्डित कहाँ परानहिं धोखा । कौनअगस्तसमुद्र जेहिसोखा ॥  
 सोदिन गयो साँझ भइ दूजी । देखी दुइज घड़ी वह पूजी ॥  
 पण्डितनराजा दीन्हअशीशा । अब कस ये कंचन औशीशा ॥  
 जो यह दुइज काल्हकी होती । आजतेजदेखतरशिं ज्योती ॥  
 राघव दृष्टिवन्द कलह खेला । सभाँ माँझ घेठकँ अस मेला ॥  
 यहिकर गुरुचमारिन लोना । सिखा कामरू पाठत ठेना ॥  
 दुइजअभावसमहँजो देखावै । दिन इकराहु चाँद कहँ लावै ॥  
 दो० असगुणिं नहिंचहिनृपसभा, जेहिदोनाकरखोज ।  
 यही छन्द ठग विद्या, छला सो राजा भोज ॥  
 राघव वैनं जो कंचन रेखा । कसे बान पीतर अस देखा ॥  
 अज्ञाँ भई रिसान नरेशूँ । मारों काहि निसारों देशू ॥  
 भूठ बोल थिरँ रहै न राचा । पण्डित सोई वेदमति साँचा ॥  
 वेदवचनं मुखसाँचजो कहा । सो युगयुगइस्थिरँ थिर रहा ॥  
 खोटँ रतन सोई फटकिरा । केहिघररतनजोदारिदँ हरा ॥

कौन पंडित नादान १ होशियार २ वात ३ भारी पूजा ४ क्लम ५  
 चाँद ६ दरवार ७ जादू ८ राजदरवारमें पेसा जादुगर न चाहिये ९ वात १०  
 सोना ११ हुकम १२ राजा १३ इज्जत नहीं रहती १४ वेद के मुक्ताविल १५  
 क्लायम १६ भूटा जवाहिर फिटकरी की तरह १७ दारिद दूर नहीं करता १८ ॥

बैह लक्ष बावर कवि सोई । जहँसरस्वती लक्षकित होई ॥

कवितासंगदारिद्र मतिभंगी । कांटे कुटिल पुहुप के संगी ॥

दो० कविता चेला विधि गुरु, सीप सेवाती बुन्द ।

तेहि मानुषकी आश का, जो मरजियासमुन्दा ॥

यहि सो बात पद्मावत सुनी । देश निसारा राघव गुनी ॥

ज्ञानदृष्टि धनअगम विचारा । भलनकीन्हअसगुनीनिसारा ॥

जे जावनीपूज शशिकाढी । सूर्यकी ठांवरै पुनि ठाढी ॥

कबकी जीभ खड्ड हरवानी । इकदिशआगदुसरदिशपानी ॥

जन अयुक्त मुख काढै भोरे । यश बहुते अपयश है थोरे ॥

रानी राघव बेग हँकारा । सूर्य गदतरि लेहु उतारा ॥

ब्राह्मण जहां दक्षिणा पावा । स्वर्गजाय जो होय बोलावा ॥

दो० आवा राघव चेतन, धौराहरै के पास ।

ऐसि न जानी तेहिहृदयै, विजुलीवसे अकास ॥

पद्मावत जो भरोखे आई । नेहिकलङ्कजसशशि देखराई ॥

ततखन राघव दीन्हअशीशा । भयो चकोर चन्दमुख दीशा ॥

पहिरेशशि नखतनकीमारै । धरंती स्वर्ग भयो उजियारा ॥

औ पहिरे कर कंकन जोरी । नग जोलागतेहितीसकरोरी ॥

कङ्कन एक काढ दै डारी । काढत नारट्ट गयै हारी ॥

जानहुँ चाँद टूटलै तारा । छूट्यो स्वर्ग काल कर धारा ॥

जनहुँ टूट विजुली भुँ परी । उठा चौध राघव चित हरी ॥

दो० परा आई भुँकङ्कन, जगतभयो उजियार ।

दौलत १ इकवाल २ कविदारिद्र्य होता है ३ फूल ४ ईश्वर ५ उम्मेद ६  
अकिल ७ भारीपूजा ८ चाँद ९ तलवारतेज १० वेमौक्त ११ जल्द १२  
महल १३ दिला १४ वेपथ १५ चाँद १६-१८ तुरन्त १७ माला १८ जमीन  
२० आसमान २१ ॥

राघव विजुली मारा, बेसँभरकुछ न सँभार ॥

पद्मावत हँस दीन्ह भरोखा । अब जो गुनीमरैसुहिं दोखी ॥

सबै सहेली देखी धाई । चेतन चेत जगावै आई ॥

चेतन परा न आवै चेतू । सबहिं कहा यहि लाग परेतू ॥

कोइ कहि कांपं कोइसम्पातू । कोइकहि अहि मिरगाँ बातू ॥

कोइकहि लागपवनं करभोला । कैसहिं समुझन चेतनबोला ॥

पुनि उठाय बैठारो छाहां । पूँछहिकौन पीर जिय माहां ॥

धौं काहू के दरशन हरा । कै ठग धूत भूत जेहि हरा ॥

दो० कै तोहि काहू दीन्ह कुछ, कैरे डसातोहि सांप ।

कहो सो चितहोय चेतन, देह तोर कस कांप ॥

भयोसो चितचेतनजब चेत । नयन भरोखें जीव सकेताँ ॥

पुनिजो बोला मीत बुधिखोवा । नयन भरोखा लायें रोवा ॥

बावर फेर शीश पै धुना । आपन कहि न पराई मुना ॥

जानहु लाई काहुँ ठगोरी । खनं पुकार खन बांधै बोरी ॥

होरे ठगा यहि चितोर माहां । कासों कहों जाऊं केहि पाहां ॥

यहि राजा शठ बड़ हत्यारा । जें राखा यहि ठग बटपारी ॥

नाकोइ वरजन लाग गुहारी । अस यहि नगर होय बटपारी ॥

दो० दृष्टि रही ठगलाडू, अलकै फाँस पर श्रीव ।

जहां भिखारि न बाचै, तहां बचै को जीव ॥

कित धौराहँ आय भरोखें । लैगयो जीव दखनाके धोखें ॥

स्वर्गमूर शीशि करै अँजोरी । तेहिते अधिकदेउं केहिजोरी ॥

पाप १ जुद्धो २ मिरगाँ का रोग ३ कालिज ४ किसीठग या दशावाजने  
मन्त्र चलाया ५ खिलादिया ६ कुंभलाया ७ शिर न जादू ८ कभी १०  
शुप ११ राहलटनेवाले १२ मनाकरनेवाला १३ मिगाह १४ बाल १५ गर्दन  
१६ महल १७ सूर्य १८ चाँद १९ रोशनी २० बहुत २१ ॥



शशि सूरहि जो होत वह ज्योती । दिन पहाड़ हतर यनि न होती ॥

ते हँकारे मोहि कङ्कन दीन्हा । दृष्टि जो पड़ी जीव हरलीन्हा ॥

नयन भिखार डीठें सत छुड़ी । लागे तहां वान हिय गड़ी ॥

नयनहिं नयन जो बेध समाने । शीश धुनहिं निसरे नहिं ताने ॥

नवहिं ननाये निलज भिखारी । तवहूँ बुरी लाग मुखगारी ॥

दो० कित करमुखी नयन भै, जीव हरा तेहि वाट ।

सरवर नीर बिछोह ज्यों, तरकतरक हिय फाट ॥

सखिन कहा चेतन बे सँभारा । हिये चेत जिव जाय न मारा ॥

जो कोइ पावै आपन मांगा । ना कोइ मरै न काहू खांगा ॥

वह पद्मावत ऐसी सुरूपा । बरन न जाय काहके रूपा ॥

जें चीन्हीं सो गुप्तं चल गयऊ । परगट गुप्तं जीव विन भयऊ ॥

तुम अस बहुत विमोहित भये । धुन धुन शीश जीव दै गये ॥

बहुतहिं दीन्ह नाय के श्रीवाँ । उतरै न देइ मारके जीवा ॥

तुई पुनि मरत होय जर भुई । अबहिं उधेल कानकी रुई ॥

दो० कोइ मांग मार ना पावै, कोइ विन मांगा पाव ।

तू चेतन औरहि समभावे, बहु तुहिंको समभाव ॥

भयो चेत चित चेतन चेत । बहुर न आय सहाँ दुख एता ॥

रोवत आय परे हम जहां । रोवत चले कौन सुख तहां ॥

जहँवां बहुसामूँ जिय केरा । कौन रहन पर चलौं सवेरा ॥

अब यहि भीख तहां होय मांगों । यतना दे जगजन्म न खांगों ॥

औ अस कंकन जो पाऊँ दूजा । दारिद है आश मन पूजा ॥

देहली नगर आव तुरकानू । शाह अलाउद्दीं सुलतानू ॥

चाँद १ सूर्य २ वोलांना ३ शोख ४ ईमान छोड़ानेवाले ५ दिल ६ शिर ७

तालाब का पानी घटे से ८ कमी ९-१६ छिपा १० ज़ाहिर वां छिपा ११

आशिक १२ गर्दन १३ जवाब १४ अंदेशा १५ ॥

सोन जरी जेहि की टकसारा । वारहबानी परहिं दिनारा ॥

दो० कमलबखानों जायतहँ, जहँ अलि अलाउद्दीन ।

सुनिके चढ़ैभानुं होय, स्तन होय जलमीन ॥

खण्ड बत्तीसवां देहली गवनराघव चेतन ॥

राघव चेतन कीन्ह पयानां । देहली नगर जाय नियराना ॥

आय शाह के द्वार जो पहुँचा । देखा राज जगतपर ऊँचा ॥

अतिसलाख तुरुक असवारा । तीससहस्र हस्ती दरबारा ॥

जहँतक तपै जगतपर भानू । तहँलग राजकरै सुलतानू ॥

वहँखण्ड के राजा आवहिं । ठाढ़भुराहिंनुहारें न पावहि ॥

मनतेवान कै राघव भूरा । नाहि उबार जिया डर पूरा ॥

जहां भुरानदिये शिर छाता । तहँ हमार को चालै बाता ॥

दो० वारपार नहिं सूझै, लाखन उमर अमीर ।

अब खुरखेहँ जात्र मिल, आयपरे यहिभीर ॥

बादशाह सब जाना बूझा । स्वर्गपतारें हिये<sup>१</sup> में सूझा ॥

जो राजा अस सजगं न होई । काकर राज कहाँकर कोई ॥

जगत भार वह एक सँभारा । तौथिर<sup>२</sup> रहै सकल संसारा ॥

अब असबहक सिंहासन ऊँचा । सब काहँपर दृष्टिजो पहुँचा ॥

सबदिन राजकाज सुखभोगी । रात फिरे घरघर है योगी ॥

रावरकें जहँतक सब जाती । सबकी चाहँ लेइ दिनराती ॥

पंथी<sup>३</sup> परदेशी जत्र आवहिं । सबकीचाहँ दूतपहुँचावहिं ॥

चारह तरह १ पद्मावत की तारीक २ अँवर ३ सूर्य ४-१० मङ्गली ५ कूच ६ दरवाजा ७ इजार ८ हाथी ९ चारों तरफ ११ सलाम १२ टापकी धूर १३ जमीन-आसमान १४ दिल १५ होशियार १६ कायम १७ निगाह १८ अमीर यरीब १९ खबर २०-२२ मुसाफिर २३ ॥

दो० यहू बात तहँ पहुँची, सदा छत्र सुख छाथ ।

ब्राह्मण एकहार है ठाढ़ा, कंकन जड़ाऊ हाथ ॥

मयाँ शाह मनसुनत भिखारी । परदेशी कहँ पूँछ हँकौरी ॥

हम पुनि जाना है परदेशा । कौन पन्थँ गवनव केहि भेशा ॥

देहली राज चिन्तमनँ काढ़ी । यहि जग जौसि दूधकी साढ़ी ॥

सैंतँ मिलाय छाँछ के फेरा । मथ धिवलीन्ह महि उकहँ केरा ॥

यहि देहली कित ह्वै ह्वै गये । कै कै गर्व खेहँ मिल गये ॥

यहि देहली की रही ढिलौई । साढ़ी काढ़ ढील जव ताई ॥

रावण लङ्क जार सब तापा । रहा न यौवन औ तरुनापाँ ॥

दो० भीख भिखारी दीजिये, का ब्राह्मण का भाट ।

अज्ञाँ भई बोलावहु, धरती धरा ललाटे ॥

राघव चेतन हत जोनिरासाँ । ततखनँ वेगँ बोलावा पासा ॥

शीशँ नायके दीन्ह अशीशा । चमकतनग कंकन करदीशा ॥

अज्ञा भई सो राघव पाहां । तुई मंगनँ कंकन का बाहां ॥

राघव फेर शीशँ भुईँ धरा । युगयुग राज भानुँ की करा ॥

पद्मिनि सिंहल द्वीप किरानी । रतनसेन चितोरगढ़ आनी ॥

कमलन सँ पूजी तेहि बासा । रूप न पूजी चन्द अकासा ॥

जहां कमल शंशि सूरँ न पूजा । केहि सूरँ देउँ औरँ को दूजा ॥

दो० सो रानी संसार मन, दखना कङ्कन दीन्ह ।

अंसँ रूप देखायके, जीव भरके लीन्ह ॥

सुनिके उतरँ शाह मन हँसा । जानहु बीजँ चमक परगसा ॥

मेहरबानी १ बोलावा २ राह ३ अन्देशाँ ४ नरमी ५-८ घरूर ६ धूर ७  
जवानी ८ हुकम १० माथा ११ नाउम्मेद १२ तुरन्त १३ जल्द १४ शिर १५-  
१७ मांगनेवाला १६ सूर्य १८-२१ चराचरी १६-२२ चाँद २० परीन्द्र-  
लोक २३ जवाब २४ विजुली २५ ॥

कांच योग जो कंचन पावा । मंगन ताहि सुमेरु चढ़ावा ॥

नाउँ भिखार जीभ मुख बांची । अब्रहिसँभार बात कहु सांची ॥

कहँ अस नारि जगत उपराहीं । जेहिके सर मूरज शशि नाही ॥

जो पद्मिनि तुँई मन्दिर मोरे । सातों द्वीप जहां करे जोरे ॥

सप्तद्वीप महँ चुन चुन आनी । सो मोरे सोरहसै रानी ॥

जो उनमहँ देखेसि इक दासी । देख लोन है लोन बिलासी ॥

॥ दो० चहुँ खण्ड हों चक्रवे, जसरै वि तपै अकाश ।

जो पद्मिनि मोरे मंदिर, अप्सर तौ कैलाश ॥

तुम बड़राज छत्रपति भारी । अन ब्राह्मणहों अहाँ भिखारी ॥

चारहुँ खण्ड भीखका बाजी । उदय अस्त तुम्हरे सो न राजा ॥

धर्मराज औ संतकुल माहां । भूठ जो कही जीभ गहि बाहां ॥

कुछ जो चार सबकुछ उपराहीं । सो यहि चहुँ द्वीप महँ नाही ॥

पद्मिनि अमृत हंस सद्गुरू । सिंहल द्वीप भलाहि सो मूरू ॥

सातों द्वीप देख हों आवा । तब राघव चेतन कहवावा ॥

अज्ञो होय न राखों धोखा । कहों सो सब नारिन गुण दोखों ॥

॥ दो० यहां हस्तिनी सिंहिनी, औ चित्रिनि बनबास ।

कहों पद्मिनी पद्म शिर, भँवर फिरै चहुँ पास ॥

खण्ड तैंतीसवां स्त्री वर्णन ॥

पहिले कहों हस्तिनी नारी । हस्ती की परकीरति सारी ॥

शिर औ पांय सुभ्रं गँयें छोटी । उर की खीन लोड्डी की मोटी ॥

कुम्भस्थल गज अमित अमाहीं । गर्वन गयन्द ढाल जनु बाहीं ॥

सोना १ नामपहाड़ २ यरावरी ३ चाँद ४ हाथ ५ चारों तरफ ६ सारी  
दुनियाँका राजा ७ सूर्य ८ पहुँजा ९ लालशेर १० असिल ११ हुकम १२  
पेय-हुनर १३ कमल १४ हाथी १५ स्वभाव १६ मोटा १७ गर्दन १८ छाती  
१९ पतली २० कमर २१ नाम हाथी २२ चाल २३ ॥

दृष्टि न आवै आपन पीउ । पुरुष पराये ऊपर जीउ ॥

भोजन बहुत बहुत रतिचाऊ । अछवाई सो थोर सुमाऊ ॥

मधुं जस मन्द वसाय पसेऊ । औ विश्वास धरै जसदेऊ ॥

डर औ लाज न एको हिये । रहै जो राखें आंकुश दिये ॥

दो० गर्जगतचलैहूँदिश, लायजगत कहँ चोखँ ।

कही हस्तिनी नारि ये, सव हस्तिनि के दोखँ ॥

दूसर कहौं सिंहीनी नारी । करै बहुतवल अल्प अहारी ॥

उरँ अतिसुअखीनँ अतिलङ्गौं । गर्वभरी मनधरै न शङ्का ॥

बहुत रोषँ चाही पिय हना । आगे घालन कहँ गिना ॥

अलंकारँ अपनी वह भावा । देख न सकै शृंगार परावा ॥

सिंहकी चाल चलै डरा डीली । रोवां बहुत जाघ औ फीली ॥

मोट मांस रुच भोजन तामू । औ सुख आव विपायँधवामू ॥

दृष्टि तराहीं हेरै आगे । जन मथवाह रहै शिरलागे ॥

दो० सेजवां मिलत सो स्वामी, लावे उरनख वान ।

यहि गुण सबै सिंहके, वह सिंहन सुलतान ॥

तीसर कहँ चित्रिनी नारी । महाचतुर रस प्रेम पियारी ॥

रूप स्वरूप शृंगार सवाई । अपसरँ जैसि रही अछवाई ॥

रोषँ न जानै हस्ता मुखी । जहँ असनारिकन्तँ सोसुखी ॥

अपने पुरुषकी जानै पूजा । एक पुरुष के जान न दूजा ॥

चन्द्रबदनँ रंगकुमुँदिनि गोरी । चाल सुहाय हंस की जोरी ॥

खीरँ खांडकुछ अल्पअहारँ । पान फूल से बहुत पियारू ॥

निगाहः १ चाह २ सफ़ाई ३ शहद ४ खयाल ५ हाथी ६ पियार ७ पैव =  
थोड़ा ८ खुराक १० छाती ११ चौड़ी १२ वारीक १३ कमर १४ गरूर १५  
गुस्सा १६ सरत १७ नजर १८ इन्द्रलोककी परी १९ सफ़ाई २० गुस्सा २१  
खाविन्द २२ मुँह २३ कोकावेली २४ दूध २५ थोरी खुराक २६ ॥

पद्मिनि चाह घाट दुइकराँ । और सबै वह गुण निरमराँ ॥

दो० चित्रिनि जैस कुमुद रँग, और बासना अँग ।

पद्मिनि बासचन्दन जस, भँवरफिरहिँ तेहिसँग ॥

चौथे कहौ पद्मिनी नारी । पद्म गन्ध शशिँ दईसवाँरी ॥

पद्मिनि जात पद्मरँग ओई । पदमबास मधुकरँ सँग होई ॥

नासुठ लांबी नासुठ छोटी । नासुठ पातर नासुठ मोटी ॥

सोरहौँ करन रंगहै बनी । सो सुलतान पद्मिनी गुनी ॥

दीरघँ चारु बार लघुँ सोई । शुभ्रँ चार चहुँ खीनीँ होई ॥

औशँशि बदनदेख सबमोहा । चालमराँलँ चलतगत सोहा ॥

खीर अहार न कर सुकवारा । पान फूलके रहै अधारा ॥

दो० मोह फिरन मम बूरन, औ सोरहौँ शृंगार ।

अव यह भाँति बरनके, जस बरनै संसार ॥

प्रथमँ केशँ दीरघँ शिरसोहँ । औ दीरघँ अँगुरी करँ सोहँ ॥

दीरघ नयन तीख तहँ देखा । दीरघ ग्रीव कण्ठ त्रयरेखा ॥

पुनिलघुँ दशनँ होहिँ जनुहीरा । औ लघुकुँच उतंगजम्भीरा ॥

लघु ललोटँ दुइज परकामू । औ नाभी लघु चन्दन बासू ॥

नासिकँ खीनँ खँहँ की धारा । खीनलँक जनु केहरँ हारा ॥

खीन पेट जानहु नहिँ आंता । खीनअधरँ बिडुमँ रँगराताँ ॥

शुभ्रकपोलँ देख सुख शोभा । शुभ्रनितम्बँ देख मन लोभा ॥

दो० शुभ्र कलाई अति बनी, शुभ्र जंघ गजचौल ।

ज्यादा १ दोहिरुखा २ पाकसाऊ ३ कोकावेली ४ कमल ५ चाँद ६-१२  
भँवर ७ बड़े ८-१६-१७ छोटे १८-१९ मोटा १० पतला ११ हंस १३ पहिले १४  
चाल १५ हाथ १८ दांत २० छाती २१ माथा २२ नाक २३ पतली २४  
तलवार २५ पतली कमर २६ चीता २७ होठ २८ मूँगा २९ लाल ३० मोटा  
गाल ३१ चूतर ३२ हाथी की चाल ३३ ॥

सोरहशृंगार वरन के, करहि देवता लाल ॥

यहिपद्मिनिचितोर जो आनी । कुन्दन कार्या द्वादश बानी ॥

कुन्दनकनकताहि नहिं वासा । बहुसुगन्धजसकमलविकासों ॥

कुन्दनकनककठोर सो अङ्गा । वह कोमलरंग पुहुपुं सुरङ्गा ॥

वह लुइ पवन वृक्ष जेहिलागा । सोइमलयगिरि भयोमुभागा ॥

काह न मूठ भरी वह देही । अस मूरति केहि दर्ई उरेही ॥

सवै पठेतर चित्र के हारीं । वहक रूपकोइलखी न पारीं ॥

कया कपूर हाड़ सब मोती । तेहितेअधिकं दीन्हविधिज्योती ॥

दो० सूर्य किरण जस निरमलं, तेहितेअधिक शरीर ।

सोहँदोष्टि नहिं जाय कर, नयनहिं आवै नीरं ॥

शशिमुखजबहिकहैकलुवाता । उठततन्त मूरज जस राता ॥

दर्शनदशनसोकिरणीफूटहिं । सबजगजानिफुलभरी चूटहिं ॥

जानहुँशशिमहँ बीजदेखावा । चौधपखो कुट्ट कहै न आवा ॥

कौंधत रहि जस भादों रैनी । श्यापरंयनिजनुचलैउडेनी ॥

जनु बसन्तऋतुकोकिलबोली । सरस सुनाय सारसरं डोली ॥

जनु अमृतहै वचन बिकासों । कमल जोवासवासधनवासा ॥

यहिसरशीश जो नाग बेहरा । जाय शंख बेनी है परा ॥

दो० सवै मनोहरं जायमर, जो देखै तस चारं ।

पहिलेसोदुख वरनके, वरनो वहकशृंगार ॥

कितहों रहा कालकर काटा । जाय धौरहरं तर भा ठाटा ॥

कित वह आयभरोखेभांकी । नयनकुरंगिनि चितवनवांकी ॥

वदन १ खालिस २ सोना ३-५ खिलना ४-६२ फूल ६ चन्दन ७  
बनाना ८ दूती ९ बहुत १० पाकसाफ़ ११ निगाह सामने १२ पानी १३  
चाँद १४-१७ लाल १५ दांत १६ थिजुली १८ रात १९ जुगुनू २० तीर २१  
उम्मेद २३ चाल २४ महल २५ हिरनी २६ ॥

विहँसी शंशि तरङ्गं जनुपरी । कैसो रयनि छटे फुलभरीं ॥

चमक वीजं जस भादों रैनी । जगत दृष्टि भररही उँडेनी ॥

काम कटाक्षं दृष्टि विब बसा । नागिनअलकैपलकमहँडसा ॥

भौह धनुष पर्ल काजल वूड़ी । वहभइधानुकं हौं भइ ऊँडी ॥

मार चली मारतहँ हँसा । पाछे नाग रहा हौं रसा ॥

दो० काल घाल पीछे रखा, गरुड़ न मन्तर कोय ।

मोर पीठ वह बैठा, कासों पुकारों रोय ॥

वेनी छोर झोर जो केशा । रयनि होयजगदीपकलेशा ॥

शिरहत विषहरं परी भुँइ वारा । सगरे देश भयो अंधियारा ॥

सकपकाहिं विष भरे पसारे । लहरहिं भरलहकहिंअतिकारे ॥

जानहुँ लोटहिं चढे भुअङ्गा । वेधी बासमलयगिरि अङ्गा ॥

लरहिं मुरहिं जनुमानहिंकेली । नाग चढे मालति कै बेली ॥

लहरै देइ जानहु कालिन्दी । फिरफिरभँवरभये चितबन्दी ॥

चँवर धरत आञ्जी चहुँपासा । भँवर न उड़हिंजोलुँडेबासा ॥

दो० होयअंधेयनविचुँचमक, जबहिंचीरगाहिभांप ।

केशों नाग कित देख मै, संवरिसँवरिजियकांप ॥

मांग कनकं जो सेंदुर रेखा । जन बसन्त रातों जग देखा ॥

गइ पत्रावलं पाटी पारी । औ रचि चित्रविचित्रं सँवारी ॥

भई उरेह पुहुँपे सब नामा । जनुबकं बितररहेघनश्यामां ॥

यमुना मांभ सरस्वती मांगा । दुहुँदिश दिये तरंगनं गांगा ॥

चांद १ छोटे नखत २ विजुली ३-२२ निगाह ४-७ जुगनु ५ तिरछी  
चितवन ६ बाल ७-२३ पलक ८ तीरअन्दाज ९ निशाना ११ चोटी १२  
रात १३ चिरान रोशन १४ सांप १५-१६ चन्दन १७ यमुना १८ दिल  
फँसाना १९ लपटना २० वादल २१ सोना २४ लाल २५ नाम दाया २६  
बहुत अञ्जी २७ फूल २८ वगुला २९ वादल सियाह ३० लहर ३१ ॥



सेंदुर रेख सो ऊपर रांती । बीरबहूटिन की जस पांती ॥

बैलि देवताभये देख सेंदूरु । पूजी मांग भोर उठ मूरु ॥

भोरसांभरैबि होय जो राता । वही देख राता भा गाता ॥

दो० बेनीकारी पुहुप ते, निकसी यमुना आय ।

पूजइन्द्र आनन्द सो, सेंदुर शीश चढ़ाय ॥

दुइजललाट अधिक मनकरा । शङ्कर देख माथ भुइ धरा ॥

यहि नितदुइजजगतमहँदीशा । जगत जोहारे देइ अशीशा ॥

शीशजोहोयनहिंसरवरैछाजै । होयसोअमावसद्धिपमनलाजै ॥

तिलक सँवारिजो चन्दन रचे । दुइजमांभ जानहुँ कच वंचे ॥

शीश परकरवट सारा राहू । नखतहि भरा दीन्ह परदाहू ॥

पारसज्योतिललाटहिं ओती । हँष्टि जोकरै होयतेहिज्योती ॥

श्री जो स्तन मांग बैठारा । जानहु गगन टूट निशतारा ॥

दो० शीश औरजो निरमल, तेहिकीललाटकीरूप ।

निशेदिनचलहिंसरवर पावै, तपतपहोहिअलूप ॥

भौहें धनुष श्याम जनु चढ़ा । पनचँ करे मानुष कहँ गढ़ा ॥

चन्द कि मूठ धनुष वहताना । जाकरबीजै बरनि धियवाना ॥

जासों हेर जाय सो मारी । गिरिवर टरहिंसो भौहहिं टारी ॥

सेतुबन्ध जे धनुष बिडारा । वहू धनुष भौहहिं सो हारा ॥

हारा धनुष जो बेधा राहू । और धनुष कोइगिनेन काहू ॥

कित सो धनुष भौह मै देखा । लागबान तित आव नलेखा ॥

लाल १-५-६ कुरवान २ सूर्य ३-४-२२ चन्दन ७ फूल ८ शिर ९ माथा  
१० ड्यादा ११ चांद १२-१५-२१ बराबर १३-२५ नामनखत १४ रोशनी  
१६ पेशानी १७ निगाह १८ टीका १९ आसमान २० साफ २३  
रात २४ गायब २६ निशाना २७ बिजुली २८ पलक के बाल २९ अर्जुन की  
कमान ३० ॥

तितबानहिं भांभरभा हिया । जो असमारसो कैसें जिया ॥

दो० सोत सोत तन बेधा, रोम रोम सब देह ।

नसनसमहँ भइसालहि, हाड़हाड़भये बेहँ ॥

नयन चित्र वे रूप चितेरे । कमलपत्रपर मधुकर फेरे ॥

समुद्रतरंग उलटहिं जनरांती । डोलहिं औ घूमहिं मदमाती ॥

शरदचन्द मँ खञ्जन जोरी । फिरफिर लरहिं अहोर बहोरी ॥

चपल विलोल डोलवहलागी । थिर न रहहिं चंचल बैरागी ॥

निरखँ अघाहिं न हत्या हते । फिरफिर श्रवणहिं लागे मते ॥

अंगश्वेत मुखश्यामसो ओही । तिरछचलहिं खनसूधनहोही ॥

सुरै नर गन्धर्व लालँ कराही । उलटेचलहिं स्वर्गकहँ जाही ॥

दो० अस वै नयन चक्र दुइ, भँवर समुद्र उलथाहिं ।

जनु जिव घालहिं डोले, लै आवहिं लै जाहिं ॥

नासिकखड्ग हरी धनकीरूँ । योगशृंगार जिता औ वीरूँ ॥

शशिमुखसौहँ खड्गगहिरामा । रावण सो चाहै संग्रामा ॥

दुहँ समुद्र मँ जनु रचि वीरूँ । सेतबन्ध बांधा नलनीलूँ ॥

तिलकफूल असनासिक तामू । औसुगन्धदीर्हीविधि बासू ॥

करनफूल फेरै उजियारा । जनहुशरदशशिसोहिलबारा ॥

सोहिल चाँहँ फूल वह ऊँचा । धावहिं नखतन जाई पहुँचा ॥

नजनो कैसो फूल वह गढा । विकसँ फूलसबचाहहिंचढा ॥

दो० असवहफूलवासकाआगर, भानासकौ समुन्द ।

दिल १ सुराख २-३-४ भँवरा ५ लहर ६ लाल ७ पूर्णमासी का  
चांद ८ ममोला ९ चंद्रल १० कायम ११ देखना १२ कानसे सलाह १३  
सक्रेद १४ देवता १५ आरज १६ आसमान १७ नाक १८ तलवार १९  
तोता २० सामने २१ पेड़ २२ पुल २३ नामवन्दर २४ ईश्वर २५ ज्यादा २६  
खिलना २७ नाक २८ ॥

जेति फूल वह फूलहिं, ते सब भये सुगन्द ॥

अधरं सुरङ्गपान अस खीनी । राती सुरंग अमी रसभीनी ॥

आछहि बिहँसैत बोलसो राती । जनु गुलाल देखै विहँसाती ॥

माणिक अधरं दर्शन जनुहीरा । वैनं रिशालखांडमुख वीरा ॥

काठी अधरं डाभसों वीरी । रुधिरं चुवै जो खावै वीरी ॥

दारे दर्शन रसहि रस कोली । रक्त भरी बहु सुरंग रंगीली ॥

जनु प्रभात राति रवि रेखा । बिकसैबदन कमलजनुदेखा ॥

अलकभुवङ्गिन अधरहिं आखा । गहै जो नागिन सो रसचाखा ॥

दो० अधरं अधररस प्रेमका, अलकं भुवङ्गिन बीच ।

तब अमृत रस पावै, जब नागिन कहँ खीच ॥

दर्शन श्याम पानहि रंगपाके । बिकसतं कमलफूल अतिताके ॥

ऐसि चमक मुख भीतर होई । जनु दाडिमं औ श्यामनकोई ॥

चमकहि दर्शन बिहँस जो नारी बीजं चमकजसनिशं अधियारी ॥

श्वेतश्यामं अस चमकतदीठी । श्याम हीर दहुँ पांयत बैठी ॥

कैसो गढी अस दर्शन अमोला । मारै बीज बिहँस जो बोला ॥

स्तन भीजरंग मसि भइश्यामा । ओही छात पदारथं नामा ॥

कित वे दर्शन देख रंगभीने । लैगइ ज्योतिनयन भये खीने ॥

दो० दर्शन ज्योतिहै नयनमंगं, हृदयं मांफ सो पैठ ।

प्रकटं जगत अधियारजनु, गुप्त वही में दीठ ॥

होठ १-८-११-१७ पतला २ लाल ३-६ अमृत ४ हँसना ५ मूंगा ७  
दांत ८-१३ मीठी बोली १० खून १२ भारके समय लालसूर्य १४ मुँह १५  
जुलफों को नागिनी होठों तक पहुँच रही १६ चाल १८ दांत १९-२२  
खिलना २० अनार २१ विजुली २३ रात २४ सफ़ेद सियाह २५  
मिस्सी २६ लाल नाम उसी को सजावार २७ हत २८ राह २९ दिल ३०  
जाहिर ३१ छिपा ३२ ॥

रसना सुनहिजोकहिरसवाता । कोकिलबैनै सुनतमनराता ॥

अमृत कोप जीभ जनु लाई । पान फूल अस वात सुहाई ॥

चातुकै वैन सुनतहो शांती । मुने सो परै प्रेम मधुमाती ॥

विरवासूख प्राव जस नीरू । सुनत वैन तस पलहिशरीरू ॥

बोल सेवात बुन्द जनु परहीं । श्रवन सीप सुखमोती भरहीं ॥

धनवै वैन जो प्राण अधारू । भूखे श्रवणहि दीन्ह अहारू ॥

उन्हवैनहिंकी काहिनआसा । मोहहिंभिरगविहंसतेहिशवासा ॥

दो० कश्यप शारदा मोही, जीभ सरस्वती काहि ।

इन्द्रचांदरवि देवता, सबै जगत-मुखचाहि ॥

श्रवनैसुनहिजोकुन्दनसीपी । पहिरे कुण्डल सिंहलदीपी ॥

चाँदसूर्यदुहुँदिशिचमकाहीं । नखतहिंभरीनिरखै नहिंजाहीं ॥

क्षणक्षणैकरहिंवीजै असकांपी । अमरमेघमहँ रहहिं न भांपी ॥

सूक शनीचर दुहुँ दिश मते । होहिं निरारै न श्रवणहिहुते ॥

कांपतरहहिं बोल जोवैना । श्रवणहिंजनुलागहिंफिरनयना ॥

जो जो वात सखिन सोंसुना । दुहुँदिशकरहिंशीश वै धुना ॥

खूँट दोउ ध्रुव तरैई खूँटी । जानहु परहिं कचपंची टूटी ॥

दो० वेद पुराण ग्रन्थ जित, सबै सुनै सिख लीन्ह ।

नाँदविनोदरागरसवंदक, श्रवणवहीविधिदीन्ह ॥

कमल कपोलै वहीअस छाजे । औरन काहि दई अस साजे ॥

पहुँपै पंग रस अमी सँवारी । सुरंग गेंद नारंग रतनारी ॥

पुनि कपोलै बायें तिल परा । सोतिलबिरह चिनगके करौ ॥

जीभ १ आवाज़ २-७-६ लाल ३ पपीहा ४ पानी ५ कान ६-८-१२  
गला १० सूर्य ११ देखना १३ हरसाइत १४ विजुली १५ अलग १६ वाली १७  
नखत १८ छोटै नखत जो चाँद के आसपास होते हैं १९ गाने-बजाने  
का शौक ईश्वरने दिया २० गाल २१-२४ फूल २२ लाल २३ मानिन्द २४ ॥

जो तिल देख जाय जर सोई । बायें दृष्टि काह जन होई ॥

जानहुँ भँवर पद्म पर दूटा । जीव दीन्ह औ वहीं न छूटा ॥

देखत तिल नयनहिं गाकाटे । और न सूभे सो तिल छाँटे ॥

तेहिपरअलकै मंजरी डोला । छुवैसोनागिनसुरंगकपोलाँ ॥

दो० रक्षा करै मयूर वह, नागिन हियँ पर लोट ।

केहिरेजगँकोउछुइसकै, दुइपरवर्तकी ओट ॥

ग्रीवँ मयूर केर जस ठाढ़ी । कोड़े<sup>१</sup> फेर कँडेरे<sup>२</sup> काढ़ी ॥

धनि वह ग्रीव का बरनो करा । बांक तुरंगँ जान गहि धरा ॥

घरन परेवाँ ग्रीव उठावा । चहै बोल तमचोरँ सुनावा ॥

ग्रीव सुराही के अस भये । अमी पियाला कारन नये ॥

पुनि तेहि ठाँवँ परी त्रयरेखाँ । तेहिसो ठाँउँ होय जो देखा ॥

कनकँ तार सोने की करा । साज कमल तेहि ऊपर धरा ॥

सूर्यकिरनहतग्रीवँ निरमैली । देइ पैगँ जात हियँ चली ॥

दो० नागिन चढ़ी कमलपर, चढ़के बैठ कमठ ।

करँ पसार जो कालकहँ, सो लागै वह कंठ ॥

कनकदंडेँ दुइ बनी कलाई । डांडी फेर कमल जनु लाई ॥

चँदन गाभकी भुजा सँवारी । जन सो बेल कमल पौनारी ॥

तेहि डांडी सँग कमल हतौरी । एक कमल की दोनों जोरी ॥

सहजहिं जानहुँ मेहँदी रची । मुक्काँहल लीन्है जनु धुँधुची ॥

करपल्लवँ जो हथोरिन साथी । वै सब रक्त भरीं तेहिं हाथी ॥

निगाह १ कमल २ बाल ३ लालगाल ४ निगाहवानी ५ मोर ६ छाती ७ दुनिया ८ तथा छाती ९ गर्दन १०-२० खराद ११ खरादी १२ घोड़ा १३ कवूतर १४ चिड़िया १५ जगह १६-१८ तीन लकीर १७ सोना १८ साफ़ २१ क्रम २२ दिल २३ जान से गुज़र जाय २४ सोने की दरडो २५ नाल २६ मोती २७ अंगुली २८ ॥

देखत हिया काढ़ जिव लेई । हिया काढ़ के जान न देई ॥

कनक अंगूठी औ नग जड़ी । वह हत्यारिन नखतहिं भरी ॥

दो० जैसी भुजा कलाई, तेहि विधि जाय न भाख ।

कङ्कन हाथ होय जेहि, तेहि दर्पण का साख ॥

हियोथार कुच कनकचूरी । जानहुँ दोऊ श्रीफल जूरा ॥

एक पाट वे दोनों राजा । श्यामछत्र दूनहुँ शिर छाजा ॥

जानहु दुइलडू इकसाथा । जग भा लडू चढ़ै न हाथा ॥

पातर पेट आहि जनु पूरी । पान अधार फूल अस गोरी ॥

रोमावलि तेहि ऊपर भूमा । जानहुँ दोउ शाम औ रूमा ॥

अलक भुअंगिन तेहिपर लोटा । हिय कर एक खेल दुइ गोटा ॥

वाने पुकार उठे कुच दोऊ । नाग शरन वह पाव न कोऊ ॥

दो० कैसहि नवहिं न नाये, यौवन गर्ब उठान ।

जो पहिले कर लावे, सो प्रावे रत मान ॥

भुंग लंक जनु मांभनलागा । दुइखंडनलिन मांभजनुतागा ॥

जव फिर चलै देख वह पाछे । अपसर इन्द्रकर जनु काँछे ॥

जोह चलै मन भा पछताऊ । अबहुँ दृष्टि लाग वह भाऊ ॥

वही गवन छिप अपसर गई । भई अलोपे ना परगट भई ॥

हंस लजाय समुद्र कह खेली । हंस्ती लाज धूर शिर मेली ॥

जगत में स्त्री देखी मोहूँ । उदय अस्त नारि ना कहूँ ॥

महिमण्डल तौ ऐसौ न कोई । ब्रह्मण्डल जोहोय तो होई ॥

दिल १ सोना २ तथा नाग ३ सोना ४ छाती ५-१२-१५ सोनेकी  
कटोरी ६ नारियल ७ तखत ८ दुनिया ९ नाममुलक १० चाल ११ नागिज १२  
तीर १४ घरर १६ हाथ १७ सुख १८ गंभीरी १९ कमर २० कोका-  
बेली २१ परी २२ सारीप्रदिने २३ निगाह २४ रायब २५ जाहिर २६  
हाथी २७ स्वर्गलोक २८ ॥

दो० बरनों नारि जहां लग, दृष्टि भरोखें आय ।

और जो अहै अदृष्टि धन, सो मोहिं वरनि न जाय ॥

काधन कहों जैसो सुकुमारा । फूलके छुये होय विकरारा ॥

पखुरी काढ़ै फूलत सेती । सोई डांसी सोरें सपेती ॥

फूल समूचा रहै जो पांवा । व्याकुल होय नींद नहिं आवा ॥

सहै न क्षीरै खांड औ घीव । पान अधार रहै तन जीव ॥

नस पानन की काढ़ै हेरी । अधरन गढ़ै फांस वहकेरी ॥

मकरिक तार ताहिकर चीरूं । सो पहिरे जर जाय शरीरूं ॥

पालंग पांव कि आछे पाटां । नेतं विद्याय चलै जो वाटा ॥

दो० कहां नयन जो राखों, पलक न लाऊँ ओट ।

प्रेमक लुब्धां पावै, काहि सो बड़ का ओट ॥

जो राघव धन वरन सुनाई । सुना शाह मुरछा गत आई ॥

जनु मूरति वह परगटं भई । दरश देखाय ताहि छिपगई ॥

जो जो मंदिर पद्मिनी लेखे । सुनासोकमल कुमुदं जो देखे ॥

होय मालती धनं चित पैठी । और पुहुपंकोइ आव न दीठी ॥

मन होय भँवर भयो वैरागा । कमल छांड चित और न लागा ॥

चांदकी रङ्ग सूर्य जस रातां । और नखत सो पूँछन वाता ॥

तब अलि अलाउदी जगसूरूं । लेऊँ नारि चितौर कै चूरूं ॥

दो० जो वहमालतिमानसर, अलि न मँली नहीं जात ।

चितौर महँ जो पद्मिनी, फेरवही कहु वात ॥

ये जगसूरं कहूँ तुम पाहां । और पांचनग चितौर माहां ॥

नजर १ नजर में नहीं २ विज्ञाना ३ विज्ञाना ४ दूध ५ होंठ ६ कपड़ा ७  
बदन ८ तखत ९ जेरअन्दाज १० आशिक ११ जाहिर १२ कोकावेली १३  
पद्मावत १४ फूल १५ लाल १६ भँवर १७-१८ सूर्य १९-२१ ताम्बुल २० ॥

एक हंस है पंख अमोला । मोती चुने पदारथ बोला ॥

दूसर नग जो अमृत बसा । सब विष हरै जहाँलग इसा ॥

तीसर पाहनपरस बखाना । लोहछुये होय कञ्चन बना ॥

चौथ अहे सांदूर अहेरी । जेहि बन हस्ति धरै सब घेरी ॥

पांचो है सो तहां लागना । राजपंख पंखी गरजना ॥

हरनिरोम्ह कोइवाचन आगा । जैसे शचान तैस उडभागा ॥

दो० नग अमोल अस पांचो, भान समुद्र वह दीन्ह ।

इसकन्दर नहि पाई, जोरे समुद्र धस लीन्ह ॥

पान दीन्ह राघव पहिरावा । दश गजमत्त घोर सो पावा ॥

अरु दूसरि कङ्कन की जोरी । स्तनजोलागवह तीसकरोरी ॥

लाख दिनार देवाई जेवो । दारिद हरा समुद्रकी सेवो ॥

हो जेहि दिवसे पद्मिनी पाऊं । तोहि राघव त्रिचौर बैठाऊं ॥

पहिले कर पांचो नग मूठी । सोनगलेउँजोकनक अंगूठी ॥

सुरजा वीर पुरुष वर्याह । नाजन नाग सिंह असवारू ॥

दीन्हपत्रिलिख वेग चलावा । त्रिचौरगढ़ राजापह आवा ॥

दो० राजें पत्रि वँचावा, किरपां लिखी अनेक ।

सिंहलकी जो पद्मिनी, पठैदेव तेहि बेग ॥

खण्डचौंतीसवां लड़ाई राजा और बादशाह ॥

सुन अस लिखा उठाजरराजा । जोनौदेवतड़प धन गाजो ॥

का मोहि सिंहदेखावस आई । कहां तो शारदूल धरखाई ॥

लाल १ पारसपत्थर २ सोना-३ शेरसुख ४-२३ हाथी ५ सीमुर्ग ६ नाम  
जानवर ७ शिकरा ८ जिलअत ९ हाथीमस्त १० अशरफ़ी-११ दक्षिणा-१२  
त्रिदमत-१३ दिन १४ राजपर बैठाऊं १५ सोना १६ जवरदस्त १७ क्रीडा  
१८ जलद १९ मेहरवानी २० बादल २१ बिजुली २२ ॥



मलहिंजोशाहभूमिपति भारी । मांग न कोऊपुरुषकी नारी ॥  
 जो सो चक्रवे ताकहँ राजू । मन्दिरँ एकअपनकहँ साजू ॥  
 अप्सरँ जहां इन्द्र पै आवै । और जो मुनै न देखै पावै ॥  
 कंसका राजजिता जो गोपी । कान्हँन दीन्ह काहुँकहँगोपी ॥  
 कोम्बहिंते अस शूर अगारा । चढै स्वर्ग घुसपरै पतारा ॥  
 दो० का तोहिं जीव मराऊं, सकत आनका दोष ।

जोतसबुँभैनसमुद्रजल, सोबुभाय कितओस ॥

राजा अस न होहु रिसराताँ । सुनहुन जूड़ नजरकहुवाता ॥  
 मैं हों यहां मरे कहँ आवा । बादशाह अस जानपठावा ॥  
 जोतोहिभारन औरहिलीन्हा । पुनिसोकाले उतरँवहिदीन्हा ॥  
 बादशाह कहँ ऐस न बोलू । चढै तौ परै जगत महँ डोलू ॥  
 सूरँहि चढत लाग नहिं वारा । दहक आग तेहि स्वर्गपतारा ॥  
 परवत उड़हिं सूरँके फूकें । यहि गढ़ क्षरँहोइ यक भोंकें ॥  
 धसै सुमेरुँ समुद्र गा पाटा । भूँमी डोल शेष फण फाटा ॥  
 दो० तासों कौन लड़ाई, वैठ न चितौर खास ।

ऊपर लेहु चंदेरी, का पद्मिन इक दास ॥

जो पै धरँनि जाय घरकेरी । का चितौर का राज चंदेरी ॥  
 जेईलेई घर कारनँ कोई । सो घरदेइ जो योगी होई ॥  
 रनथंभोरँ हों नाथ हमीरूँ । कल्पे माथ जे दीन्ह शरीरूँ ॥  
 होंसो रतनसेन शकवन्धी । राहुँ वेध जीते सरवन्धी ॥

जुमान का मालिक १ तमाम दुनिया का राजा २ क़िला ३ परी ४  
 श्रीकृष्णचन्द्रशरमा ६ आसमान ७ पापन प्यासबुके ८ लाल १० दुश्मन ११  
 जवाब १२ सूर्य १३ नामवाजा १४ धूर १५ नामपहाड़ १६ जुमान १७ कौ-  
 रत १८ जो कोई किसी की औरत लैले १९ नामक़िला २० नामराजा २१  
 शिरफताना २२ बदन २३ मशहूर २४ निशानाजीत द्रौपदी व्याही २५ ॥

हनुमतसरसं भारं जें कांधा । राघव सम समुद्र जें बांधा ॥

विक्रम सरस कीन्ह जें शाका । सिंहलद्वीप लीन्ह जो ताका ॥

जो असलिखाभयो नहिं ओछा । जियत सिंहकी गहिको मोछा ॥

दो० द्रव्यलेइ तो मानो, सेवकरो गहि पांव ।

चाहै नारी पद्मिनी, सिंहलद्वीपहि जांव ॥

बोलन राजा आप जनाई । लीन्ह उदयगिरि और छिताई ॥

सप्तद्वीप राजा शिर नावहिं । सेना चली पद्मिनी आवहिं ॥

जाकर सेव करै संसारा । सिंहलद्वीप लेत कित बारा ॥

जनिजानेसियहगांठतोपाहीं । ताकर सबे तौर कुछ नाहीं ॥

जेहिदिन आय गढ़ीको छेकी । सर्वस लेइ हाथको टेकी ॥

शीशं भार खेहं के लागे । सो शिरभार होय दुख आगे ॥

सेवाकर जु जियन तोहिं भाई । नाहित फेर माखं होय जाई ॥

दो० जाकर जीव दीन्ह पै, अगमनं शीशं जोहारि ।

तेहि करैणी सब जानै, काह पुरुष का नारि ॥

तुरुकं जाय कहि मरै न धाई । होये इसकन्दरं की नाई ॥

मुन अमृत कजैलीबन धावा । हाथ न चढ़ा रहा पछतावा ॥

औतेहि दीपपतंगं होय परा । अग्नी भाड़ पांव दै जरा ॥

धर्ती लोह स्वर्ग भा तांबा । जीवदीन्ह पहुँचत करै लांबा ॥

यह चितौरगढ़ सोइ पहारू । मूर उठै होय दहक अंगारू ॥

जेंवर इसकन्दरं सरकीन्हीं । समुद्र लियोधसजसवेलीन्हीं ॥

बराबर १ वोक्र २ औरामचन्द्रजी ३ राजा विक्रमादित्य ४ अपनी ता-  
रोक्र ५ नाममुद्रक ६-७ सातों मुद्रक ८ फौज ९ किलाको घेरे १० सब  
११ रोकना १२ शिर १३-१७ धूट १४ गुस्तादिली १५ पहिले १६ किया  
हुआ १७ बादशाह १८ नाम बादशाह २० जहां अमृत है २१ पांखी २२  
आसमान २३ हाथ २४ सूर्य २५ जैसे सिकन्दर ने दुःख पाया २६ ॥

जो चढ़ आनीजाय जिताई । तब का भै सो जीत जिताई ॥

दो० महुँसमुझ यहि आगमनं, सजराखा गढ़साज ।

काह् होय जेहि आवन, सोचलआवै आज ॥

शुरजाँ पलट शाहपहँ आवा । देव न मानै बहुत मनावा ॥

आग जु जरै आग पै सूझा । जरत रहै न बुझाये बूझा ॥

ऐसे माथ न नावै देवा । चढै सुलेमाँ मानै सेवा ॥

मुनके अस राताँ सुलतानू । जैसे तपै जेठ कर भानू ॥

सहसँ किरानरोष तस भरा । जेहिदिशिदेखैतेहिदिशिजरा ॥

हिन्दू देव काह बरँ खाँचा । सरकनँ आपआगसों वाँचा ॥

यहिजंगआगजुभरमहिलीन्हा । सोसँगआग दुहुँजगक्रीन्हा ॥

दो० रनथँभोरँ<sup>२</sup> जसजरबुझा, चितौरपरै सो आग ।

फेर बुझाये ना बुझै, जरै दिवसँ के लाग ॥

लिखी पत्रि चारहुँदिशिधाये । जहँ तहँ उमरा वेगँ बुलाये ॥

दुन्दै घाव भा इन्द्र सकाना । डोला मेरुँ शेषँ अकुलाना ॥

धर्ती डोल कूर्म खरभरा । महनामथँ समुद्र महँ परा ॥

शाह बजाय चढाजगजाना । तीसकोसभा पहिल पयानाँ ॥

चितौर सौहँ<sup>३</sup> बारगह तानी । जहँलगमुना कूचसुलतानी ॥

उठसरवानँ गगनँ लहि छाई । जानहु रँते मेघ दिखाई ॥

जो जहँ तहँ सोता असजागा । आयजुहारकटकँ सब लागा ॥

दो० हस्तिँ घोर औदरँ पुरुष, जहँ तक्र वेसरँ ऊँट ।

जवं बादशाह आयेंगे १ पहिले २ नामपहलवान ३ नामबादशाह ४ लाल ५ सूर्य ६ हजार ७ गुस्ता ८ घमराड ९ भागना १० दुनियामें आगसे जलाया जायगा ११ नाम किला १२ दिन १३ जल्द १४ नामबाजा १५ नामपहाड़ १६ नामराजासाँप १७ कलुवा १८ उलटपलट १९ कूच २० सामने २१ खोमा २२ आसमान २३ लाल २४ फौज २५-२७ हाथी २६ खच्चर २८ ॥

जहँ तहँ लीन्ह पलाने, कटक सुरहँ अस छूट ॥

चले सहसंबेसक सुलतानी । तीरुतुरंग बांक कनकानी ॥

पखरो चली जो पाँतिहि पाँती । वरण वरण औ भाँतिहि भाँती ॥

काँले कुंमते नीले संपेती । खिंगं कुंरंगं बीजं दोरं कतीती ॥

अबलकँ अबरसँ लखी शिराँजी । चौधरँ वाचसमुँदसबताजी ॥

किरमजँ नुकराँ जरदाँ भले । रूपकगनँ बोलसरँ चले ॥

पँचकल्यानँ संजावँ बखानी । महि<sup>२६</sup> सायरसबचुन २ आनी ॥

मुशँकी औहिरमँजी इराँकी । तुरँकी कही भुयारँ बुलौँकी ॥

दो० शिर औ पूँछ उठाये, चहुँदिशि श्वास उनाहिं ।

रोषँ भरे जस बावरे, पवन की बाँसँ उड़ाहिं ॥

लोहे सारँ हस्तिँ पहिराये । मेघश्यामँ जनु गरजत आये ॥

मेघहि चाह अधिकँ वैकारे । भयो अमूक देख अधियारे ॥

जस भादौ निशिँ आवै दीठी । स्वर्ग जाय हरके तेहि पीठी ॥

सोरहलख हँसती जब चाला । परवत सरस चले जगहाला ॥

चले गँड़ माते मद आवहिं । भागहिं हस्तिँ गन्धजोपावहिं ॥

ऊपरजाय गगनँ शिर घिसा । औ धर्ती तरिकहँ धस मसा ॥

भाँ भूचाल चलत गजगानी । जहँ पग धरहिं उठै तहँ पानी ॥

दो० चलत हस्ति जगकाँपा, चाँपा शेष प्रतार ।

कूर्म जे धर्ती ले रहा, बैठ भयो गजभार ॥

चले सो उमर अमीर बखाने । का बरणों जस उनके बाने ॥

कौज १ टीढ़ी २ हज़ार कुरसी ३ तेज़ घोड़ा ४ निशान ५ घोड़ों की  
जात ६ से २५ तक सब दुनिया २६ घोड़ों की जात २७ से ३२ तक  
गुस्सा ३३ डर ३४ भूल लोहे की ३५ हाथी ३६-४१-४२ काले  
बादल ३७ बहुत ३८ रात ३९ आसमान ४०-४३ कछुवा जिसके  
ऊपर ज़मीन है ४४ ॥

खुरासानं औ चला हरेऊं । गोरं बँगाल रहा नहिं केऊ ॥  
 रहा न रूमं शामं सुलतानू । काशमीरं ठट्टां सुलतानू ॥  
 जहंतक बड़वड़ तुरुवा जाती । मांडोवाली अरु गुजरांती ॥  
 पटनां उड़ीसां के सब चले । लै गजहस्ति जहांलग भले ॥  
 कर्मरूँ कर्मते औ पँडवाँई । देवगढ़लेतउदयगिरि<sup>१०</sup> आई ॥  
 चलासो परवत और कर्मऊँ । घिसर्यानगर जहांलग नाऊँ ॥  
 दो० उदयअस्तं लहिदेश जो, को जाने तेहिनाऊँ ।

सातोंद्रीपं<sup>१</sup> नवो खँड, जुरे आय इक ठाँउँ ॥

धनि सुलतान जेहिक संसारा । वही कटक अस जुरी अपारा ॥  
 सबै तुर्क शिरताज खसौने । तवल वाज औ बांधे वाने ॥  
 लाखन मीर बहादुर जंगी । चित्रं कमानी तीर खदंगी<sup>२६</sup> ॥  
 जीमा खोल राग सो भँडे । लेज्जम घाल इराकैहि चढे ॥  
 चमकै परवरी सारिसँवारी । दरपण चाँहि अधिक उजियारी ॥  
 वरण बरण औ पाँतिहि पाँती । चलीसो सेनां भाँतिहि भाँती ॥  
 बीहर बीहरें सब की बोली । त्रिधि<sup>३</sup> यहिक हांक हांसो खोली ॥  
 दो० योजनं सप्त सप्तकर, इक इक होय पयानं ।

अगिलहिंज हांपयान होय, पछिलहिं तहां मिलान ॥

डोले गढ़ गढ़पति सब कांपे । जीवन पेट हाथ हियँ चांपे ॥  
 कांपा रनथँभोरें डर डोला । तरवरें गयो भुराय तँवोला ॥  
 चूनागँढं औ चंपा तेरी<sup>४३</sup> । कांपा मोंडो लेत चँदेरी<sup>४३</sup> ॥

नाम मुल्क १ से १६ तक पूर्व से पश्चिम तक २० सातोँ मुल्क २१ जगह  
 २२ फ्रौज २३ बयान २४ तसवीर २५ नामतीर २६ मूठ ताँत से मदी २७  
 घोडा २८ निशान २९ ज्यादा ३० फ्रौज ३१ अलग ३२ ईश्वर ३३ कोस ३४  
 कूच ३५ क़िलादार ३६ दिल ३७ नामक़िला ३८ पँड ३९ नाममुल्क ४० से  
 ४३ तक ॥

गवालियरगढ़महँपरीमथानी । औ कन्धार मथाहोय पानी ॥

कालिंजर महँ परा भगाना । भाग उजेगढ़ रहा न थाना ॥

कांपा वांदा नरदुरीनी । डररुहतासँ विजयगिरिमाना ॥

कांप उदयगढ़ देवगढ़ डेरा । तबसो छिपाय आपकहँ घेरा ॥

दो० गढ़ गढ़पति जहँतकसवै, कांपडोल जसपात ।

काकहँ बोल सौहँ भा, वादशाह करछात ॥

चितौर गढ़ औ कंभलनेरी । साजे दोनों जैसि सुमेरी ॥

दूतन कहा आय जहँ राजा । चढ़ा तुर्क आवै दरँ साजा ॥

मुनि राजा दौड़ाई पाँती । हिन्दूनाउँ जहाँलग जाती ॥

चितौर हिन्दुनकर अस्थानाँ । शत्रु तुर्कहठकीन्ह पयानाँ ॥

आदि समुद्र रहे ना बांधा । मैं हों मेड़ भारँ शिर कांधा ॥

पुरबहु साथ तुम्हार बड़ाई । नाहित सबकहँ मार चढ़ाई ॥

जौलहि मेड़ रहै सुख साखा । दूधहि वारँ जायनहिं शखा ॥

दो० सती जो जियमहँ सतधरै, जरै न छोड़े साथ ।

जहँ बीड़ा तहँ चून है, पान सुपारी काथ ॥

करत जो रहे शाहकी सेवा । तिनकहँ पुनिअसभावपरेवाँ ॥

सबहोय एकमैते जु सिधारे । वादशाह कहँ आन जुहारे ॥

है चितौर हिन्दुन की माता । गाँढ़ परें तजजायँ न नाता ॥

स्तनसेन है जून्हरँ साजा । हिन्दुनमाँभ आहि बड़राजा ॥

हिन्दुन केर पतँग कर लेखा । दौर परहिं अग्नी जो देखा ॥

कृपाँ करहु तौ करहु समीराँ । नाहित हमहिं देहु हँस बीरा ॥

नाममुलक १ से १० तक सामने ११ नाम पहाड़ १२ वादशाह १३  
 फौज १४ मकान १५ दुश्मन १६ कूच १७ बोझ १८ दरवाजा १९ दूत २०  
 पकसलाह २१ मुश्किल २२ छोड़ना २३ मौत का सामान २४ मेहरबानी  
 २५ माफ़ २६ ॥

पुनिहमजाहिं मरहिं वह ठाँऊँ । मेठ न जाय लाजकर नाऊँ ॥

दो० दीन्ह शाह हँस वीरा, और तीन दिन बीच ।

तेहिं शीतलको राखे, जिन्हें अगिनमहँ मीचँ ॥

रतनसेन चितोर महँ साजा । आय वजाय बैठ सब राजा ॥

तोमर बैस पनवारँ सर्वाई । औगोहलौत आयशिरनाई ॥

क्षेत्री औबचवानँ वधेली<sup>१२</sup> । अग्रवारँ चौहानँ चँदेली<sup>१४</sup> ॥

गहरवारँ परहारँ सूकरे<sup>१५</sup> । कर्लहँस औ ठकुरायजुरे<sup>१०</sup> ॥

आगे ठाढ़ वजावहिं दाँदी । पाछे ध्वजा मरण की गादी ॥

बाजहिं संग शंख औ तूरँ । चन्दन खोरी<sup>१३</sup> भरे सेंदूर ॥

सज संग्रामँ बांध सब शाका । छाँड़ाजियन मरणसवताका ॥

दो० गगनँ धर्ति जो टेकाँ, तेहि कागरू पहार ।

जौलहिजिवकायँमहँ, परैसो अँगवै भार ॥

गढ़ तस सजा जो चाहै कोई । बरप सातलग खांगँ न होई ॥

बांकीचाहँ बांकगढ़ कीन्हा । औसवकोटँ चित्रँ समलीन्हा ॥

खण्ड खण्ड चौखण्ड सँवारे । धरे विपम गोलन के मारे ॥

ठांवहिंठांवं<sup>११</sup> लीन्ह सब बांटी । रहा न बीचजोसँचरे<sup>१६</sup> चांटी ॥

बैठे धानुकै कँगुरन कँगुरा । भूमि<sup>१७</sup> नआंटीअँगुरिनअँगुरा ॥

औ बांधे गढ़ गढ़मत वारे । फाटै भूमि<sup>१८</sup> होहिं जो ठारे ॥

बिच बिच बुर्ज बने चहुँफेरी । वाजै तवलँ ढोल औभेरी<sup>१९</sup> ॥

दो० भागदराज सुमेरु<sup>२</sup> जस, स्वर्ग छुवैपै चाह ।

जगह १ तीनदिन की मोहलत २ ठण्डा ३ मौत ४ राजपूतों की ज्ञात ५ से. २० तक नामवाजा २१-२२-३६-४० कटोरी २३ लड़ाई २४ आसमान २५ उठाना २६-२८ बदन २७ कमी २६ पंचदार खाई ३० किला ३१ तसवीर ३२ जगह ३३ चाँटी न जासके ३४ चौकीदार ३५ ज़मीन ३६-३८ हाथी मस्त ३७ नाम पहाड़ ४१ आसमान ४२ ॥

समुद्र न लेखें लावै, गंग सहस्र मुखनाह ।

बादशाह हठ कीन्ह पयाना । इन्द्र भँडार डोल भयमाना ॥

नव्वे लाख सवार जुचढ़ा । जो देखा सो लोहे मढ़ा ॥

बीस सहस्र घुमरहहिनिशाना । गुल कञ्चन फेर असमाना ॥

वैरख ढाल गगन का छाई । चला कटक धर्ती न समाई ॥

सहस पांति गजभक्त चलावा । घुसतअकाशधसतभुईआवा ॥

बृक्ष उचार पेड़ि सो लीन्ही । मस्तक भार तारमुखदीन्ही ॥

चढ़हिं पहाड़हिं भयगढ़लागू । बनखँडखोह न देखहिं आगू ॥

दो० कोउ काहू न सँभारे, होत आव दर चांप ।

धर्ति आप कहँ कांपै, स्वर्ग आपकहँ कांपा ॥

चलीं कर्मनिं जेहिमुखगोला । आवहिं चलीधर्ति सबडोला ॥

लागे चक्र वज्रके गढ़े । चमकहिं रथ सोने के मढ़े ॥

तेहिपर विपम कमानै धरीं । सांचे अष्टधातु की भरीं ॥

सौसौ मनै पियहिं वै दारू । लागहिं जहां सो टूट पहारू ॥

माती रहहिं रथहिं पर परीं । शत्रुनँ कहँ सौहँ उठ खरीं ॥

जो लागै संसार न डोलहिं । होयभुईकम्पजीभजो खोलहिं ॥

सहसँ सहसहस्तिनकी पाँती । खांचहिंरथडोलहिं नहिंमाँती ॥

दो० नदी नार सब पानी, जहां धरै वै पाँव ।

ऊँच खाल वनवीहर, होत बराबर आव ॥

कहों शृंगार जैसि वै नारी । दारू पियहिं जैसि मतवारी ॥

उठै आग जो छाँड़हिंश्वासा । धुवां सो लोगै जायअकासा ॥

हजार १ कूच २ हजार ३ चींटी ४ आसमान ५ फौज ६ हाथीमस्त ७  
जड़ ८ आसमान ९ तोपें १० पहिया ११ भारी १२ तथा बारूद १३ दुश्मन  
१४ सामने १५ हजार १६ हाथी १७ ॥



सेंदुर आग शीश उपराहीं । पहियातरवन चमकत जाहीं ॥

कुच गोलादुइ हिरदे लाई । अञ्जलध्वजा रहहि छिटकाई ॥

रसना लूक रहहि मुखखोलें । लङ्का जरै सो उनके बोलें ॥

अलक जँजीरबहुतगयेंवाधे । खीचहि हस्ती टूटहि कांधे ॥

बीर शृंगार दोउ इकठाँऊँ । शत्रुशाल गढमँजैन नाँऊँ ॥

दो० तिलक पलीता माथे, दर्शन वज्रके वानें ।

जेहिहेरहिं तेहिमारहिं, चुरकुसकरैनिदानें ॥

जेहिं जेहिंपंथ चलीवेआवहिं । आवहिंजरतआगतसलावहिं ॥

जरहिंजोपरबतलागअकासा । बनखँडधकहिंपलाशकोपासा ॥

गँडा गयँद जरे भे करे । आवें मृगी रोजँ सनकारे ॥

कोयलनाग काग औ भँवरा । औरजुजरे तिनहिंको सँवरा ॥

जरा समुद्र पानिभा खारा । यमुना श्यामभई तेहि भारा ॥

धूमँ श्यामअंत्रक्षं भे मेघाँ । गगनँ श्यामभा धुवाँजु भेघाँ ॥

सूरज जरा चांद औ राहू । धर्ती जरी लङ्क भा दाहू ॥

दो० धर्ती स्वर्ग असूभभा, तवहुँ न आग बुझाय ।

उठहिं बज्र जर डंगैवे, धूमँ रही जगछाय ॥

आवै डोलत स्वर्ग पतारू । कांपे धर्ति न अँगवे भारू ॥

टूटहिं परपत मेरूँ पहारा । होयहोयधूरउड़हिं होयक्षारौं ॥

सतखँड धर्ती भइ खँडखण्डा । ऊपर अष्ट भये ब्रह्मण्डौं ॥

इन्द्र आय तेहि खँडहोयछावा । चढसबकटकँ घोर दौड़ावा ॥

शिर १ छाती २ सीना ३ जवान ४ बाल ५ गरदन ६ हाथी ७ जगह ८  
दुश्मन को मारनेवाली ९ किला तोड़नेवाली १० दांत ११ तीर १२ देखना  
१३ बहुत १४ दाँख १५ हाथी १६ नाम जानवर १७-१८ धुवाँ १९-२६  
बीच २० बादल २१ आसमान २२-२४-२७-३१ जलना २३ ढेर २५  
बोझ न उठाना २८ नाम पहाड़ २६ धूर ३० फौज ३२ ॥

जेहिपैयं चल ऐरावतं हाथी । अबहिंसोडगरगर्गनमहँआती ॥

औ जहँ जामरही वह धूरी । अबहुँ बसे सो हरिचंद पूरी ॥

गगन में छिपा खेहँ तसब्दाई । मूरज छिपा रयनिहोय आई ॥

दो० गयोसिकंदरकजलिबन, भयो सो तस अंधियार ।

हाथ पसार न सूके, बरै लाग मसयार ॥

दिनहि रात असपरीअचाका । भारवि अस्तचन्द्ररथ हांका ॥

मंदिरन जगत दीपपरगंसी । पंथकं चलत बसेरें बसी ॥

दिनके पंख जरत उड़ भागे । निशि<sup>१</sup> केनिसचरेसबलागे ॥

कमल सुकेता कुमुदिनिफूले । चकई विछुरा चकमन भूले ॥

चला कटक अस चढा अपूरी । अगलहिंपानी पिछलहिंधूरी ॥

महि<sup>२</sup> उजड़ीसायरेंसबसूखा । वनखंड रहे न एको रूखा ॥

गढं गिरि<sup>३</sup> फूटभयेसब माटी । हस्ति<sup>४</sup> हेरान तहांको चांटी ॥

दो० खेहँ उड़ानी जाहिघर, हेरत फिरत सो खेह ।

पियआवहिअबहुँष्टितोहिं, अंजननयनउरेह ॥

यहिविधिहोतपयानं सोआवा। आय शाह चितौरनियरावा ॥

राजा राउ देख सब चढा । आव कटकें सब लोहे मढा ॥

चहुँदिशिदृष्टि परी गजजूहाँ । श्यामघटां मेघा जस रूहा ॥

औरो उरुकुछ सूक्त न आना । स्वर्गलोकधुमरहनिनिशाना ॥

चढ धौराहरं देखहिं रानी । धनतुइँ असजाकरसुलतानी ॥

कै धन रतनसेन तुइँ राजा । जाकहँतुर्ककटकें यहिसाजा ॥

राह १ नाम हाथी २ आसमान ३ खाक ४ रात ५-११ सूर्यद मकान ७  
दुनियां ८ रोशन ९ मुसाफिर १० कोकावेली १२ फौज १३-२४-३२ ज-  
मान १४ तालाब १५ जंगल १६ किला १७ पहाड़ १८ हाथी १९ चांटी २०  
धूर २१ निगाह २२-२५ कूच २३ हाथियोंका हलका २६ काली घटा  
छाई २७ चार पार २८ आसमान २९ महल ३० पद्मावत ३१ ॥

बैरख ढालकर परछाहीं । रयनि होत आवै दिनमाहीं ॥

दो० अन्धकूप भा आवै, उड़त आव तसक्षारै ।

ताल तलावा पोखर, धूर भरी ज्योनार ॥

राजै कहा कीन्ह जस करना । भयोअसूभसूभ अव मरना ॥

जहँलग राज साजसवहोज । ततखन भयो सँजोउसँजोऊँ ॥

बाजे तबल अकोट जुभाऊ । चढ़ा कोप सब राजा राज ॥

करहितुखारै पवनसों रीसाँ । कन्ध ऊँच असवार न दीसा ॥

का बरणों अस ऊँच तुखारा । दुई वें पहुँचे असवारा ॥

बांधे मोरछाँहँ शिर सारहिं । भीजहिं पूँछ चँवरजनुदारहिं ॥

राग सँधाहाँ पहुँचो तोपा । लोहे सार पहिर सब कोपा ॥

दो० तैसे चँवर बनाये, औ घाले गलभस्पर्प ।

बांध सेतँ गजगाँहँ तहँ, जो देखे सोकम्प ॥

राज तुरङ्गमें बरनों काहा । आनी छोर इन्द्र रथवाहा ॥

ऐसो तुरङ्गम परी न दीठी<sup>३</sup> । धनअसवाररहहिं तेहि पीठी ॥

जात बालका समुद्र थहाये । श्वेतँ पूँछ जनु चँवर बनाये ॥

बरण बरणपखुरी अतिलोनी<sup>१०</sup> । जानहुँ चित्रँ सँवारे सोनी ॥

माणिकँ जड़े शीशँ औ कांधे । चँवर लाग चौरासी बांधे ॥

लागे रतन पदारथ हीरा । बरहिंदिनहिं दीपकचहुँ फेरा ॥

चढ़हिं कुँवरमनकरहिं उछाँहँ । आगे घाल गिनै नहिकाहू ॥

दो० सेंदुर शीश चढ़ायें, चन्दन खौरें देह ।

सो तन काह लगाई, अन्त होय जो खेहँ ॥

रात १ खाक २ तुरन्त ३ सामान ४ घोड़ा ५ गुस्ता ६ मोरछल ७ तेज-चालाक ८ गलखोद ९ सफेद १० नाम जेवर ११ घोड़ा १२ नजर १३ सफेद १४ रङ्गवरङ्ग निशान १५ बहुत १६ खवसूरत १७ तसवीर १८ जवाहिरात १९-२१ शिर २० खुशी २२ धूर २३ ॥

गर्ज मैमत्त पुखरी नृपवारों । देखै जानहुं मेघ पहारा ॥

श्वेतगयन्द पीत औ रौते । हरे श्याम घूमहिं मदमाते ॥

चमकहिं दरपन लोहें सारी । जनु परवतपर परी अंबारी ॥

श्री मेल पहिराये मूँड़ें । कनक नभायँ पाँयतरौदें ॥

सोने मेल सो दांत सँवारे । गिरिवरँ द्यहिसो उनके दारे ॥

परवत उलटि भूमिसों मारहिं । परै जो भीरतीर अस भारहिं ॥

ऐस गयन्द सजे सिंहली । कोटि कूर्म पीठी कलमली ॥

दो० ऊपर कनक मँजूषाँ, लाग चँवर औ दार ।

भलपति बैठ भालँ लै, औ बैठे धन्कारें ॥

अश्वदलँ गजदलदोनोंसाजे । औघनतवल जुभारू बाजे ॥

माथे मुकुट छत्र शिर साजा । चढ़ावजाय इन्द्रअस राजा ॥

आगे रथ सेनाँ सब ठाढ़ी । पाछे ध्वजा मरन की काढ़ी ॥

चढ़े वजाय चढ़ा जस इन्दू । देवलोक गोहँनँ भा हिन्दू ॥

जानहुँ चांद नखत लै चढ़ा । सूरजकटँकँ रयनिमँसँ मढ़ा ॥

जौलहिं भूरँ जाहि दिखरावा । निकस चाँदँ घर बाहरआवा ॥

गगनँनखतजसगिनेनजाहीं । निकसआयतसभुँदनसमाहीं ॥

दो० देखअँनी राजाकी, जग होयगयो असूभ ।

वहिं कस होय चहतहै, चाँदसूर्यसों जूभ ॥

यहां राज अस साज बनाई । वहां शाहकी भई अवाई ॥

अगलें दौड़े आगे आई । पिछले पाछे कोस दश ताई ॥

हाथी १-२० राजाका दरवाजा २ सक्रेद हाथी ३ लाल ४ चारआइना ५  
टीका ६ सोना ७ पहाड़ ८ जमीन ९ कछुवा ११ सोने की अंबारी १२  
नेजा १३ तीरअन्दाज १४ घोड़े की फौज १५ फौज १६ साथ १७ तथा  
सुलतानी फौज १८ रातकी स्याही में १९ सूर्य २० तथा राजा २१  
आसमान २२ फौज २३ ॥

शाह आय चितोरगढ़ बाजा । हस्ती सहसवीस सँगगाजा ॥  
 उनई आय दोउ दल गाजे । हिन्दू तुरुक दोउसम वाजे ॥  
 दोउसमुद्रदधि उदधि अपारा । दोनों मेरु खखण्ड पहारा ॥  
 कोप जो भार दुहुँदिश मेली । औ हस्ती हस्तहिं सो पेली ॥  
 आंकुशचमकबीज असवाजहिं गजहिं हस्तिमेघजनुगाजहिं ॥  
 दो० धर्ती स्वर्ग दोऊ दल, जूहहिं ऊपर जूह ।  
 कोई टरै न टरै, दोनों वज्र समूह ॥

खण्डपैतीसवा सुलह राजा और बादशाह ॥

हस्तिहिं सोहस्ती हठगाजहिं । जनु परवत परवतसोंवाजहिं ॥  
 कोउ गयंदै न टरें टरहीं । दूयहिं दांत सूँड़ गिरपरहीं ॥  
 परवतआय जो परहिं तराहीं । दल महँचांपखेहँ मिलजाहीं ॥  
 कोइ हस्ती असवारहिं लेहीं । सूँड़ समेट पांय तर देहीं ॥  
 कोइअसवारसिंह है मारहिं । हनमस्तक सोँ सूँड़ उतारहिं ॥  
 गर्ब गयंदै तनगगनँ पसीजा । रुधिरँ चले धर्ती सबभीजा ॥  
 कोइ मैमत्त सँभारहिं नाहीं । तवजानै जब गुदशिरँखाहीं ॥  
 दो० गगन रुधिर जसवरसे, धर्तीभीज मिलाय ।

शिरधरदूटविलाहिंतस; पानी वेगँ विलाय ॥

उठो बज्रजूभँ जस सुना । तेहिते अधिक भयो चौगुना ॥  
 बाजेहिं खँड उठी डर आगी । भुँडैर चही स्वर्ग कहँ लागी ॥  
 चमकहिं बीज होय उजियारा । जेहि शिरपरै होय दुइ फारा ॥  
 सेनमेघँ अस दुहुँदिशि गाजा । खड्गजोबीचबीजँ असवाजा ॥

पहुँचा १ हाथो २-६-७-८ वरावर ३ समुद्र दही का ४ पहाड़ ५ फौज ६  
 घूर १० शेर ११ गकर १२ हाथो १३ आसमान १४-२१ खून १५ भेजा  
 शिरका १६ जलद १७ भारी लड़ाई १८ बहुत १९ तलवार २० बांदल सी  
 फौज २२ विजुली २३ ॥

बरसहिं सेल बान होय कांदों । जस बरसै सावन औ भादों ॥  
 लपटहिं कोप परहिं तस्वारी । औ गोला ओला जस भारी ॥  
 जूमे बीर लिखों कहँ ताई । लै अप्सर कैलास सिधाई ॥  
 दो० स्वामि काज जो जूमे, सोइगये मुख रातै ।

जो भागे सत धांड के, मँसिसुखचढ़ै बरातै ॥

भा संग्राम नभा अस काऊ । लोहे दुहुँदिशि भयो अगाऊ ॥  
 कन्दहि कोदहिपुर भुँइपरे । रुधिरसलिल होय सायर भरे ॥  
 आनंद व्याह करै मसखावा । अब भख जन्मजन्म कहँ पावा ॥  
 चौंसठ योगिन खप्पर पूरा । बृकंजम्बुक घर बाजहिं तूरा ॥  
 गृध्र चील्ह सब मगडपद्यावहिं । काक कलोल करहिं औ गावहिं ॥  
 आज शाह हठ अनी बिवाही । पाई भुक्ति जैसि मन चाही ॥  
 जेहिं जस मांसू भखा परावा । तस तेहिकर लै औरहिं खावा ॥  
 दो० काहू साथ न तनकौं, सकत भुवे सब पोष ।

ओखे पूरजू जानत, जो नहिं आवत जोष ॥

चांद न टरै मूर सो कोपा । दूसरि छत्र सौहि के रोपा ॥  
 सुना शाह अस भयो सयूहौं । पेले सब हस्तिन के जूहा ॥  
 आज चन्द्र तोर करौं निपातूँ । रहै न जगमहँ दूसर छातू ॥  
 सहस्र किरन होय किरन पसारा । छँका चांद जहाँ लग तारा ॥  
 दै लोहे दरपन भा आवा । घटघट जानों भौनु देखावा ॥  
 बहु क्रोधित सेना हलधाई । अग्नि पहार जरत जनु आई ॥

एन्द्रलोक की परी १ गालिक २ लाल ३ सियाही ४ ईश्वरके सामने ५ लड़ाई ६ तलवार की विलुली से बहुत लोग जमीन में गिरे ७ पानी ८ तालाब ९ भेड़िया १० सियार ११ क्रौज १२-२३-२५ खुराक १३ तनसाध नहीं जाता चाहे मोटाहो १४ ओछा पेट करता-जोदाना है अन्दाज़ रखता १५ सूर्य १६ सामने १७ मुस्सा १८ हाथी १९ नाश २० हजार २१ तथा राजा २२ तलवार २४ ॥

खड्ग बीज सब तुर्क उठाई । ओढ़न चन्दकमल करपाई ॥

दो० जग मग अनी देखके, धाय दृष्टि तेहि लाग ।

छुवे होय जो लोहे, मांभ आव तेहि आग ॥

सूरज देख चांद मन लाजा । विकसतकमलकुमुद भाराजा ॥

पहिलहिचन्दआवनिशिपाई । दिनदिनेर सो कौन बड़ाई ॥

अहै जो नखतचांदसंग तपी । सूर की दृष्टिगर्नमह छिपी ॥

की चिंता राजा मन बूझा । जेहिंसो स्वर्ग न धर्तीजूझा ॥

गढ़पति उतरलड़े नहिं धाई । हाथपरें गढ़ हाथ पराई ॥

गढ़पतिइन्द्रगगनगढ़ काजा । दिवसैननिसररयनिकरराजा ॥

चन्द्ररयनिरहिनखतहिंमांभा । सूर्यनसौहि होयचहिसांभा ॥

दो० देखा चन्द्र भोर भा, सूरज के बड़ भाग ।

चांदफिराभागढ़पति, सूर्यगगनगढ़लाग ॥

कटक असूभअलावलशाही । आवत कोइ न सभारै ताही ॥

उदह समुद्रं जस लहरे देखी । नयनदेख मुखजाय नलेखी ॥

केते बजावत उतरे थांटी । केते बजावत मिलगये माटी ॥

केतेहिं नितहिं देइनवसाजा । कबहुं न साज घटै तस राजा ॥

लाखजाहिंआवहिंनवलाखा । फरै भरै उंपनी नइशाखा ॥

जो आवै गढ़ लागै सोई । थिर है रहै न पावै कोई ॥

उमर अमीर रहे जहँ ताई । सबही वांट अलंगै पाई ॥

दो० लाग कटक चारहुं दिशि, गढ़सोपराइकदाहुं ।

सूर्यगहन भा चांदहि, चांदभयोजसराहु ॥

सूर्य १-११-१२ ढाल २-हाथ ३ झौज ४-१६-२५ निगाह ५ बीच ६  
तथा बादशाह ७ खिलना ८ कोकावेली ९ रात १०-१७ नज़र १३ आस-  
मान १४-१५ दिन १६ सामने १८ दरिया आगका २० हमेशा २१ पैदा  
होना २२ किला तथा दुनिया २३-हद २४आग २६ तथा राजा २७ ॥

अथवादिबसं सूरें भा बासा । परीर्यैनि शंशिउवाअकासा ॥

चांद छत्रं दय बैठो आय । चहुँदिशनखतदीन्हछिटकाय ॥

नखत अकाशहिं चढे दिपाई । तततत लूका परहिं बुभाई ॥

परहिंसेलं जसपरहिं विजांगी । पहनैहिंपहनवाजउठआगी ॥

गोलापर गोला ठरकावहिं । बूनकरतचारहुँदिशिआवहिं ॥

उनई घटा वर्ष भर लाई । ओला टपकै परे बुभाई ॥

तुरकन मुख फेरै गढ़ लागी । एक मरै दूसर होय आगी ॥

दो० नृपति वानं सनमुखपरहिं, सकै न कोई गाँदं ।

उनई शाह सेनै सब, रही भोर लग ठाढ़ ॥

भयो विहान भानुं पुनि चढा । सहसैकिरनजैसोविधि गढ़ा ॥

भा धावा गढ़ लीन्ह गरेरी । कोपा कठकं लाग चहुँफेरी ॥

वान करोर एक मुख छूटहिं । बाजैहिं जहांफोकलहिफूटहिं ॥

नखत गर्गनं जस देखे घने । तस गढ़ फाटहिं बानहिं हने ॥

वानवेध साही किये राखा । गढ़ भा गरुड़ फुलावै पांखा ॥

उड़गाकीरै कठिनं हियवाता । तोपै लहें होय मुखरातां ॥

पीठ दीन्ह तेहिं बानहिं लागे । चांपतजाहिपगहिंपग आगे ॥

दो० चार पहर दिन जूझ भा, गढ़ न टूट तस बांक ।

गरु होत पै आवै, दिन दिन नाकहिं नाक ॥

छेंका कोटं जोर अस कीन्हा । घुसानगर सुरंग तहँ दीन्हा ॥

गरगजं बांध कमानै धरीं । बज्र अगिन मुख दारुभरीं ॥

हवशी रूमी और फिरङ्गी । बड़ बड़ गुनी औरतेहिसङ्गी ॥

दिन १ सूर्य २ रात ३ चांद ४ तथा रतनखेन ५ गोला ६ आग ७  
पदथर ८ राजा के तीर ९ सामने १० फौज ११-१५ सूर्य १२ हजार १३  
ईश्वर १४ पहुँचना १६ आसमान १७ राजा के हवास का तोता उड़  
गया १८ मुशकिल १९ मुँह लाल २० घेरा किला २१ भरहला २२ तोपें २३ ॥



जेहिकी ज्योतिजाहिं उपराहीं । जहँताकहिं चूकहिं तहँनाहीं ॥  
 अष्टधात के गोला छूटहिं । गिरि पहाड़ चूनहोय फूटहिं ॥  
 इकवारहिं सब छूटहिं गोला । गरजै गगन धर्तिसबडोला ॥  
 फूटे कोटे फूट जनु शीला । उड़हिं बुर्ज जायँ सब पीसा ॥

दो० लंका रावटै जस भई, दाह पड़ा गढ़ सोय ।

रावणभालेंजो जरलिसो, कहुकिमअजरसोहोय ॥

राजाकेर लाग गढ़ धुई । फूटे जहां सँवारहि सोई ॥

बांकी वरसहिं वानकं करेइ । रातहिं कोट चित्र कै लेइ ॥

गाजे गगनं चढ़ा जस मेघा । वरसहिं वज्रं सलिलको ठेघा ॥

सौसौ मनकें वरसहिं गोला । वरसहिं टपकतीरजसओला ॥

जानहु परी स्वर्ग हत गार्जा । फाटी धर्ति आय जो नार्जा ॥

गरगर्जं चूर चूर होय परहीं । हस्तिं घोर मानुप संहरहीं ॥

सबहिं कहा अब परैलै आवा । धर्ती स्वर्ग जूझ तस लावा ॥

दो० उठो वज्रं सनमुख जरे, होय इक उड़ोई लाग ।

जगत जरै चारहुँदिशा, कोरे बुझावै आग ॥

तबहुँ राजा हिये न हारा । राजपँवरै पर रचा अखारा ॥

सौहँ शाह कर बैठक जहां । सामहिं नाच करावै तहां ॥

जंत्रपखावजं आदिजोवाजा । सुरमन्दिर रवाँवै भलसाजा ॥

बीनै निपातककमायजें गहे । बाजउमरंती अति कहकहे ॥

चंगै उपंगै नादें सुर तूरा । सुहरं वंसै वाजे भलतूरा ॥

आसमान १-७किला २ राख ३ माथा ४ घांक बनानेवाला ५ तसवीर ६  
 कड़े पत्थर के गोले ७ आसमान से विजुली गिरी ८ पहुँचना ९ मर-  
 हला ११ हाथी १२ मरना १३ क्रयामत १४ पत्थर १५ इकतरफा १६ दिल्  
 १७ खासमहल १८ सामने १९ नाम वाजा २०-२१-२२-२३-२४-२५-२६-  
 २७-२८-२९-३०-३१-३२ ॥

हुडुर्कवाज डफवाज गंभीरा । औ वाजहिं भलभां भमंजीरा ॥

तन्तं वितन्त शुभ्रं धनतारा । वाजहिं शब्द होय भनकारा ॥

दो० जग शृंगार मनमोहन, पातुर नाचहिं पांच ।

बादशाह गढ़ छेका, राजा भूला नांच ॥

बीजा नगर केर सब गुनी । करहिं अलाप बुद्धि चौगुनी ॥

प्रथम रागभैरों तेहि कीन्हा । दूसरे मालकोस पुनि लीन्हा ॥

रागहिंडोलें सो तिसरे गाई । चौथे मेष मलार सोहाई ॥

पंचयेशिरी राग भलकिया । छठयें दीपक उठा बरदिया ॥

छत्रो राग गाये भल गुनी । औ गाई छत्तिस रागिनी ॥

ऊपर भई सो पुतली नाचहिं । तर भये तुर्क कमानें खंचहिं ॥

काढ़ा माथा घुमरां छुमरा । तर भये देख मीर औ उमरा ॥

दो० मुनमुन शीशें धुनहिं सब, करमलिमलिपद्धिताहिं ।

कव हम हाथ चढ़हिं यहि, कै तब यहदुखजाहिं ॥

छत्रों राग गावें पातुरनी । पुनि तेहि कीन्हा लिये रागिनी ॥

भाकल्यानं कान्हरां कीन्हीं । रागविहागं किदारं लीन्हीं ॥

ललितें वंगालों गीतहिं सोई । आसावरी भयो सब कोई ॥

धनाशिरी सोहो सोकीन्हीं । भयो बिलावल मांरु लीन्हीं ॥

रामकली गुनकली सोहाई । सारंग औ विभासं मुंहआई ॥

नितमलारं जौ मिला सुनाई । श्यामं गूजरी पुनि भलगाई ॥

पुरंधी औ देसाखं कुरारी । टोड़ी गोंड सो भई निरारी ॥

दो० गौरी गौरां तरवनें, सिद्ध अलापहिं ऊंच ।

नामराजा १-२-३ मोटे बहुत तार ४ पहिले ५ नाम राग ६-७-८-९-  
१०-११ मुखमानलोग तावें मारते थे १२ जिलने राजा की फौजसे शिर  
निकाला वह वहाँ रहा १३ शिर १४ हाथ १५ तवायक १६ नाम राग  
रागिनी १७ से ४० तक ॥

तहांतीर कहँ पहुँचहिं, दृष्टि जहां न पहुँच ॥

पतुरिन नाच दीन्ह जो पीठी । पड़गइसोंहँ शाहकी दीठी ॥

देखत शाह सिंहासन गूँजा । कवलगमिर्गचन्द्रें तेहिभूँजा ॥

झांडहि वान जाहिं उपराहीं । गर्व केर शिर सदा तराहीं ॥

बोलत वान लाख भा ऊंचा । कोईकोट कोई पँवरँसो पहुँचा ॥

जहांगीर कन्नौज का राजा । वहक वान पातुरिके लागा ॥

बाजाँ वान जांध जस नाचा । जिवगा स्वर्ग परामुई सांचा ॥

उड़साँ नाच नचिनया मारा । रहेसे तुर्क वाज कै तारा ॥

दो० जो गढ़ साजहि लाखदश, कोटिसँवारहिं कोट ।

बादशाह जब चाँहें, वनै न एको अोट ॥

राजें पँवरँ अकाश चलाई । पराँ वाँध चहुँफेर ललाई ॥

सेतबन्धें जस राधवँ बांधा । परा फेर भुईँ भार न कांधा ॥

हनुमत है सब लाग गुहारा । आवहिंचहुँदिशिचलेपहारा ॥

श्वेतफट्कें जस लागे गढ़ा । बांध उठाय चहुँ गढ़ मढ़ा ॥

खँड खँड ऊपर होय पटाऊ । चित्रँ अनेक अनेककटाऊ ॥

सीढ़ी होत जाहिं बहु भांती । जहां चढ़ै हस्तिनकी पांती ॥

भागरगजँ कसकहत नआवा । जनहुँउठाय गगनँलैलावा ॥

दो० राहुलाग जस चांदहि, गढ़ लागा तस बांध ।

सब धड़ लील ठाढ़भा, रहा जाय गढ़ कांध ॥

राजसभा सब मन्त्री बैठी । देखनजायमुन्दभइ दीठी ॥

उठा बांध तस सब गढ़ बांधा । कीजे वेगँ भार जस कांधा ॥

निगाह १-३-२१ सामने २ हिरनका बच्चा ४ गहर ५ किला ६ दरवाजा ७  
पहुँचा ८ आसमान ९-२० मौकुफ़ १० खुश ११ फ़ौज से बादशाह की तोपें  
चलीं १२ राजा के किला में भूँचालपड़ा १३ पुल १४ श्रीरामचन्द्रजाँ १५  
सफ़ेद पत्थर १६ तसवीर १७ हाथी १८ मरहला १९ जल्द २२ ॥

उपजी आग आग जस बोई । अब मर्तक्षीनआननहिंहोई ॥

भा त्योहार जो चांचर जोरी । खेल फाग अब लाई होरी ॥

समन्द फागमेल शिर धूरी । कीन्ह जो शाकां चाही पूरी ॥

चन्दनअगर मलयगिरि काढा । घरघरकीन्ह सरां रचठाढा ॥

जून्हरै कहँ साजा रनवासू । जेहिंसतहियेँ कहांतेहिआंसू ॥

दो० पुरुषन खड्डँ सँवारी, चन्दन खौरीं देह ।

मेहरिनि सँदुर मेला, चहहिं भई जर खेहँ ॥

आठ बरष गढ़ छँका रहा । धन सुलतान कि राजामहा ॥

आय शाह अँवरँउँ जोलाई । फरे भरे पै गढ़ नहिं पाई ॥

हठ जोरी तब जून्हर होई । पद्मिनँ पावन मिन्नतँ सोई ॥

यहि विधिढील दीन्ह तबताई । देहलीकी अरदाँसँ आई ॥

पछम हरेवँ दीन्ह जो पीठी । सो अबचढा सौँहँ कैदीठी ॥

जेहिभुइँमाथगगनँ शिरलागा । थाने उठे आवसव भागा ॥

वहाँ शाँहँ चितोरगढ़ छावा । यहाँ देश अब भयो परावा ॥

दो० परत दृष्टि जेहि पंथँ में, बाढा बेर बबूर ।

निशिँ अँधियारीजायतव, वेगँ उठै जो सूरँ ॥

मुनाशाह अरदाँसँ जो पढी । चिन्ता आन आनचिंतचढी ॥

तब आगो मन चीते कोई । जो आपन चेता कुछ होई ॥

मन भूठा जिव हाथ पराई । चिन्ता एक भई दुइ ठाई ॥

गढ़ सो उरभ जाय तब छूटा । होय मिलावकि सोगढ़ दूटा ॥

हरपोक १ फागखेलों २ बहादुरी ३ चिता ४ मौत ५ दिल ६ मरदों ने  
तलवारली ७ औरत ८ खाक ९ बाग १० शाह समझा कि वे मरे ११ मुश-  
किल १२ अरज्जी १३ नाममुल्क १४ सामने १५ आसमान १६ अलाउद्दीन १७  
निगाह १८ राह १९ रात २० जल्द २१ सूर्य २२ अरज्जदास्त २३ ॥

पाहन कर रवि पाहन हीरा । वेधों<sup>१</sup> स्तन पान दे वीरा ॥  
 सुरजाँ सेतें कहा यहि भेजै । पलट जाहु अब मानहु सेऊ ॥  
 कहु तोसों पद्मिन ना लेऊँ । जो राकहि छांड गढ़ देऊँ ॥  
 दो० आपनदेशखाहु निहचलें, और चँदेरी<sup>२</sup> लेहु ।

समुद्र समन्दन<sup>३</sup> कीन्ह तोहि, ते पांचोनग देहु ॥

सुरजापलट सिंह चढ़गाजा । आनी जाय कही जहँराजा ॥  
 अबहूँ हिये<sup>४</sup> समभरे राजा । बादशाह सो जूझन छाजा ॥  
 जाकर देहिरी पृथ्वी सेई । वहे तो मारे औ जिव लेई ॥  
 पिंजर मँहूँ तू लीन्ह परेवाँ । गर्दपति सोवात्रै कै सेवाँ ॥  
 जवलग जीभ अहे मुस्तोरे । सँवर उघेल विनय करजोरे ॥  
 पुनि जो जीभपकड़ जिवलेई । को खोले को बोले देई ॥  
 आगे जस हँमीर मैमन्ती । जो तस करेसितोर भायन्ती ॥  
 दो० देख काल्ह गढ़ टूटे, राज वही कर होय ।

कर सेवा शिरनाय के, घरन घाल दुधि खोय ॥

सुरजाँ जस हँमीर मनताका । और निवाही आपनशाकी ॥  
 वह अस हों शकवन्दी नाहीं । हों सो भोजे<sup>५</sup> धिक्कर्म उपराहीं ॥  
 वरस सात मँहूँ अन्न न खांगौ । पानि पहासचुवे विन मांगा ॥  
 तेहि ऊपर जो पै गढ़ टूटा । सत शकवन्दी केर न बूटा ॥  
 सोरह लाख कुँवर हँ मारे । पतँग परहिं जसदीपअजोरे<sup>६</sup> ॥  
 जेहि दिन चांचर चाहों जोरी । समदो<sup>७</sup> फागमेल के होरी ॥

पत्थर १ सूर्य २ मारडाबना ३ नाम पहलवान ४-६ भेद ५ मुलाजात ६  
 यज्ञान ७ नाम मुल्क ८ तुहफा ९ शेर १० हुकूम ११ दिल १२ जानवरप-  
 रिन्द १३ किलादार १४ खिदमत १५ ताघेदारी १६ नामराजा १७-२०-  
 २३-२४ अहङ्कारी २५ बहादुरी २१ बहादुर २२-२६ कमी २७ रोशनी २७  
 फागखेलों २८ ॥

दौके धरनि जो राखत जीउ । सोकस आवहिं भोसकपीउ ॥

दो० अबहूँ जून्हरे साजके, कीन्ह चहूँ उजियार ।

होरी खेलों रन कठिन, कोउन समेटहि छार ॥

अन राजा सो जरै नियारो । बादशाह की सेवै न माना ॥

बहुतहिं असगढ़ कीन्ह सँजोना । अंत भई लंका जस रवना ॥

जेहि दिन वह छेकै गढ़घाटी । होय अब ओही दिन माटी ॥

तू जानेसि जल चुबै पहारू । वह रोवै मन सँवर सँहारू ॥

सोतहि सोत ऐस गढ़ रोवा । कस होइहै जो होइहै धुवा ॥

सँवर पहाड़ सो दारै आंशू । पै तोहि सूक न आपन नाशू ॥

आज काल्ह चाहे गढ़ टूटा । अबहूँ यान जो चाहस बूटा ॥

दो० हे जो पाँच नग तोसों, लै पाँचों कर भेट ।

मकुँ सो एकगुन मानै, सब आगुन कर भेटा ॥

अन सुरजा को भेटे पारा । बादशाह बड़ अहे हमारा ॥

आगुन भेट सकहि पुनि सोई । औजो कीन्ह चहै सो होई ॥

नग पाँचों का देऊँ भँडारों । इसकन्दर सो वाचै दारों ॥

जो यह वचन तुहिं याथे मोरे । सेवै करों ठाढ़ करै जोरे ॥

पै विन सँस न असमनमाना । सस बोल बार्चापरमाना ॥

कीन्हजो गुल्लिनीन्हजगभारू । तेहिक बोल नहिं टै पहारू ॥

नायत माँक भँवर हत ग्रीवा । सुरजहिं कहां सुन्द भइजीवा ॥

दो० सुरजै ससकीन्ह छल, बैनहिं प्रीठी मीठ ।

राजा कर मन माना, यानी तुरत बसीठ ॥

... क्या किसी को मुँह देखावेंगे १ मौत २ राख ३ आखिर ४ खिदमत ५-  
१३ नाश ६ सुराख ७ शायद न सख है ८ खजाना १० नाम बादशाह ११-१२  
हाथ १४ कसम १५ मजबूत १६ भारी १७ नामपहलवान १८ वात १९  
कासिद २० ॥

हंस कनक पींजर हत आना । औ अमृतनग परसपपानां ॥  
 और सुनां सोने की डांडी । शार्दूल रूपेकी कांडी ॥  
 दीन्ह वसीठ सुरजा लै आई । बादशाह पहुँ आन मिलाई ॥  
 ऐ जग सूर भूमि उजियारी । बिनतीकरहिकागमंसिकारी ॥  
 बड़ परताप तोर जग तपा । नवां खरड तुहिके न छिपा ॥  
 कोहँद्योह दोनों तोहि पाहां । मारोसि धूप जियावसिछाहां ॥  
 जनमनसूर चांद सो रूसों । गहनगिरासा पड़ा मँजूसों ॥

दो० भोर होय जो लागै, उठै रोरे किये काग ।

मसि छूटै सवरयनि की, काग जायँ अभाग ॥

कर बिनती आजाँ असपाई । कागहिंसै आपहिंसिलेई ॥  
 पहिले धनुष नवै जब लागी । काग न लेइदेख सुरभागी ॥  
 अबहूँ तेहिमु सौहँ न होहीं । देखहिधनुषचलहिंफिरओहीं ॥  
 तेहि कागहिकी कौन बैसीठी । जो मुख फेर चलहिंदैपीठी ॥  
 जो सरसौहँ होहिं संग्रामाँ । कितबकँ होतखेत वैश्यामा ॥  
 करहिं न आपन ऊजर केशाँ । फिरफिर कहहिं परारसँदेशा ॥  
 काग नाग पै दोनों बांकी । अपनीचलतश्यामभयआंकी ॥

दो० मेटजाय नहिं मंसि कबहुँ, भये श्याम वे अङ्क ।

सहसँ बार जो धोवहु, तहू न मेट कलङ्क ॥

सोना १ पारसपत्थर २ हाविन्ददस्ता ३ लाल शेर ४ पिंजरा ५-१४  
 सूर्य ६ जमीन ७ कालाकौआ तथा राजा ८ गुस्ता-मेहरवानी ९ सूर्य  
 तथा बादशाह १० तथा राजा ११ गुस्ता १२ पकड़ाहुआं १३ हाज़िर १५  
 सियाही १६-२०-३१ रात १७ कौआ की सियाही दूर होजायगी १८  
 हुकम १९ निशानेपर २१ देवता २२ मुक्ताचिल २३ वकालत २४ सामने २५  
 लड़ाई २६ वगुला २७ सक्रेद २८ बाल २९ आपही काले होते ३०  
 हज़ार ३२ येव ३३ ॥

अब सेवां जो आय जोहारी । अबहूँ देख श्वेत कहिकारी ॥

कहो जाय जो सांचन डरना । जहवांशरणनाहितहंमरना ॥

काल्ह आव गढ़ ऊपर भानू । जो दै धनुष सौह हिय बानू ॥

पान बसीठ मया कर पाई । लीन्ह पान राजा पहुँ आई ॥

जस हम भेंट कीन्ह गा कोहूँ । सेवा सांभू प्रीति अरु छोहूँ ॥

काल्ह शाह गढ़ देखै आवा । सेवां करहु जैसो मनभावा ॥

गुनं सोचलैसोबोहित बोभा । जहवांधनुषवान तहँ सूभा ॥

दो० भा आर्यमुँ अस राजघर, वेगैहिकरो रसोय ।

तस सँभार रस मिलवहु, जेहि सुप्रीतिसहोय ॥

खरड पैतीसवां ज्याफत बादशाह ॥

आगँरं मेढा बड़ औ छोटी । धरधर आनी जहँजहँ मोठी ॥

हिरनरोछँ लगनां वनवसी । चत्रं कोन छाँसँ औसँसी ॥

तीतर बढई लवा न वाची । सारसगुंजं पुछारं जोनाची ॥

धरी परेवां पांडुकं हेरी । केहां कंदरी उतरं बगेरी ॥

हारलँ चरजँ आय वन्दपरे । वन कंकरी जलकंकरी धरे ॥

चकई चकवा केपं विदारे । नकई लेदीं सोन सलारे ॥

मोट बड़े सब टोइ टोइ धरे । ऊनर दूवर खडगँ न चढे ॥

दो० कंठपरी जब भूरी, रक्त दुरा होय आंस ।

कित आपन तनपोपां, भखा परावा मांस ॥

धरे मच्च पढ़ना औ रोहू । धीमर धरतकरै नहिं छोहूँ ॥

खिंदमत १-६ सफ़ेद २ पनाह ३ सूर्य ४ कमान तीरधरदे ५ कासिक दे  
गुस्ता ७ मेहरबानी ८ रस्सी १० नाच ११ हुकम १२ जंद १३ चकरा १४  
पादा १५ नाम जानवर १६ से ३४ तक । तलवार ३५ पालना ३६  
दया ३७ ॥



संघं सुगंधं धरे जल बाँदे । टोर्न सुँवे टोय सब काढ़े ॥

सींगं मँगोर बीन सब धरे । पतराँ बहुतवाँबं वनगँरे ॥

मारेचरकं चाल्हें परहाँसी । जलतज कहाँजायजलवासी ॥

मनहोय मीनँ चरा सुखचारा । परा जाल को दुख निरवारा ॥

माठी खाय मच्छ नहिं बाची । बाचहिं काहभोग सुखनाची ॥

मारे क्रहँ सब अस कै पाले । को उबार तेहि सरवरँ घाले ॥

दो० यहि दुख कंतहिं सारकी, अगमनरक्क न देह ।

पंथं मुलाय आयजलपाछे, छूटे जगत सनेह ॥

देखत गोहूँ कर हिय फाट । आनी तहां होय जेहिआटा ॥

तब पीसै जब पहिले धोय । कापर छान माडँ भल होय ॥

करलँ चढहि तेहि पाकहिंपूरी । सूठी माँफ रहै सौ जोरी ॥

जानहु तँ श्वेतँ अरु उजरी । नयनूचाहि अधिकवहकुंदरी ॥

सुख मेलतखन जाहिं बिलाई । सहसँ स्वाद सो पावजोखाई ॥

लुचई पोय पोय धिव भेई । पाछे चहन खाँड सो जेई ॥

पूरी सुहारी करे धिव चुवा । छुवत बिलायडरहिं को छुवा ॥

दो० कही न जाय मिठाई, कहत मीठ सत बात ।

खात अघात न कोई, हेबरँ जाय सिरात ॥

रींधे चावल बरन न जाहीं । बरन बरनँ सबसुगँधबसाहीं ॥

रायभोगँ औ काजँरँ रानी । फिनवौँ रुदवौँ दाउदखाँनी ॥

कपूरँ काटकँजरी रतनौरी । मधुकँरँ देलौँ जीरौँ सारी ॥

किस्म जानवर दरियायी १ से १३ तक । मछली १४ तालाव १५ खा-  
विन्द न सुख डालके पहिलेसे खून बदन में नरकखा १६ राह भूलके पानी  
में फँसे भूठीदुनिया की सुहृवत में १७ रोटी १८ कराही १९ गर्म २०  
लफ़ेद २१ मुलायम २२ हजार २३ बर्फ २४ तरहवतरह २५ किस्मचावल  
२६ से ३६ तक ॥

घोखांडो औ कुँवरं विरामू । रामदासं आवै अतिबामू ॥

कही सो सोधी लाँची वाकी । सुगँदी बगँरी बरहनँ पाकी ॥

कड़हनँ चड़हनँ बँद मनमिला । औसँसारं तिलक खँडवलाँ ॥

राजहँसँ और हँसी भोरी । रूपँ मंजरी औगुनँ गोरी ॥

दो० सोरह सहँसँ बरनअस, सुगंध बासना छूट ।

मधुकरं पुहुँपँ सुजानके, आयपरे सब टूट ॥

निरमलँ मास अनूपँ वधारा । तेहिके अब बस्तो परकाराँ ॥

कटवाँ वटवाँ मिला सो वासू । सीमा आनो भाँति गिरासू ॥

बहुती सोधी घृतहि वधारा । औ तहँ कडँहि पीस उतारा ॥

सँधा लोन परा सब हाँडी । काटी कन्दमूलँ की आँडी ॥

सोवा सौँफ उतारहि धनियाँ । तेहितेअधिकँ आववासनियाँ ॥

पानि उतारहि ताकहि ताका । घृत परेह रहा तस पाका ॥

और लीन्ह मांसू के खाँडा । लागे चढे सो बड़बड़ हाँडा ॥

दो० छागर बहुत समूची, धरी सराँगहि भूँजी ।

जो अस जेवन जेवै, उठै सिँहँ अस गूँज ॥

भूँज समोसा घी महँ काढे । लौंग मिर्च तेहि भीतर ठाढे ॥

औ जो मांस अनूपँ सो बाँटा । भयेफँरँ फूलआँव औ भाँटा ॥

नारँग दाडिमँ तुरँज जँभीरा । औ हिन्दवाना बालम खीरा ॥

कटहर बड़हर तेउ सँवारे । नारियल दाखँ खजूर छुहारे ॥

औ जानवन्त खचीचाँ होहीं । जो जेहि बरन स्वादसोओहीं ॥

सिरका भेय काढ जनु आने । कमलजोभयेरहिबिकसाँने ॥

क्रिस्मन्चावल १ से १७ तक । हज़ार १८ अँवरा १९ फूल २० साफ़ २१

धैमानिन्द २२-२६ क्रिस्म २३ केसर- २४ अदरक व पियाज वरौरह २५

बहुत २६ लोहे की सीख २७ शेर २८ फल-फूल आँव और वैगन मांसके

बनायेगये ३० अनार ३१ अंगूर ३२ नाम मेवाफ़सली ३३ खिलना ३४ ॥

कीन्ह मसूरो धनं सो रसोई । जो कछु सब मांसू सो होई ॥

दो० बारी आय पुकारी, लिये सबैकर छूँछ ।

सब रस लीन्ह रसोई, अब मो कहँ को पूँछ ॥

काठी मच्छ मेल दधि धोई । औ बघार चहुँ वार निचोई ॥

कड़वे तेल कीन्ह बसँ बारू । मेथी घृतसों दीन्ह बघारू ॥

युक्त युक्त सब मच्छ उतारे । आव चीर तेहिमांफँ उतारे ॥

औ परेहँ तेहि चटपट राखा । सोरस सुरस पाव जो चाखा ॥

भांति भांति तहँ खांडा तरे । अंडा तल तल बीहड़ँ धरे ॥

कहँकहँ परा कपूर बसाई । लौंग मिरच तेहि ऊपर लाई ॥

धीवटांक महि सौध सिरावा । पंखँ बघार कीन्ह अरदावाँ ॥

दो० घृत परेहँ रहा तस, हाथ पहुँच लहि बोड़ ।

बूढ़खाय नौ यौवन, सौ मेहरी की ओड़ ॥

भांति भांति सीम्ही तरकारी । कयो भांति कुम्हड़े के फारी ॥

भइ भुंजी लौका परबती । रौता कीन्ह काटकै रँती ॥

चूक लायके-रींधे भांटा । अरवी कहँ भल अरहँनँ बांटा ॥

तुरइ चचेड़े ढेढस तरे । जीर धुंगार मेल सब धरे ॥

परवर कुँदुरू भुंजे ठाढ़े । बहुते धिव चुरचुरे के काढ़े ॥

कड़ई काढ़ करेला काटे । अदरक मेल तरे के खाँटे ॥

रींधे ठाढ़ सेवके फारे । झौंक साग पुनि सौंध उतारे ॥

दो० सीम्ही<sup>१०</sup> सबतरकारी, भा जेवन सब ऊँच ।

धौंकारुचै शाह कहँ, केहिपर दृष्टि पहुँच ॥

मसूरकी खिचड़ी १ पद्मावत २-३ दही ४ भूनना ५ बीच ६ इससयब  
से ७ अलगा ८ केसर ९ चिड़िया १० गलाना ११ बहुत घीडाला १२ कड़-  
कंश १३ तलना १४-१५ खटाई डाल के १६ तय्यार १७ निगाह १८ ॥

घृत कराही भीतर परा । भांति भांति सब पाकहिबरा ॥

एकहि आदि मिर्च सों पीठी । औ जो दूध खांड सो मीठी ॥

भई मुंगौछै<sup>३</sup> मिरचहिं परी । कीन्ह मुंगौरौ औ करपरीं ॥

भई मिथौरी<sup>१</sup> सिरका परा । सोंठ लायके खरसां धरा ॥

मीठ महीवै औ जीरा लावा । भीज बरा नैनू जनु खावा ॥

खरढाहि कीन्ह आव चरपरा । लौंग इलाची सों खरढबरा ॥

कटी सँवारी और फुलौरी । औ खंडवांनी लाय-बरोरी<sup>०</sup> ॥

दो० पान कतर छौके रुकौछ, हींग मिर्च औ आद ।

एक खरढ जो खावै, पावै सहसं सवाद ॥

तहरी पाक बोन<sup>३</sup> औ गरी । परी चिरौजी औ खरहरी ॥

औ घृत भूज के पाका पेठा । भाअमृत कर्मब कर मीठौ ॥

चंबक लोहड़ा औटा खोवा । भा हलुवा धिक्करे नित्रोवा ॥

शिखरन सौंध छनाई काटी । जामा दही दूध सों सादी ॥

और दही के मुसंडौ बांधे । औ संधाने बहुभांती सांधे ॥

भइ जो मिठाई कही न जाई । मुख मेलतखन जाय बिलाई ॥

मतलई छालं और मरकौरी । माठ पराकै और बुंदोरी ॥

दो० फेनी पापर भूजे, भय अनेक परकौरे ।

भइजावरैभिजियावर, सीम्ही सब ज्योनार ॥

जेत प्रकार रसोई बखानी । तब भइ सबपानी सो सानी ॥

पानी मूले परेखो<sup>३५</sup> कोई । पानी बिना स्वाद नहिं होई ॥

अमृतपान यहि अमृतआना । पानी सो घटै रहै पराना ॥

तरहबतरह १-२२ अदरक २-११ किस्मखाने की ३-४-५-६-६-१०  
पियाला ७ दही ८ हज़ार १२ नाममेवा १३-१४ शकर का किमाम बनाके  
पकाया १५ लोहे की कराही १६ लाह १७ अचार १८ किस्म मिठाई १९-  
२०-२१ खीर २३ जड़ २४ देखना २५ वदन २६ ॥

पानी दूध सो पानी घीव । पानि घटै घटै रहै न जीव ॥  
 पानी मांझ समानी ज्योती । पानी उपजै माणिक मोती ॥  
 पानीसहँ सब निरमल कृत्वा । पानी जोछुवै होय निरमला ॥  
 सो पानी मन गर्व न करेइ । शीशौ नाय घालें पै धरेइ ॥

दो० मुहमद नीरु गंभीरजो, सोतेहिमिलहिसमन्द ।

भरै ते भारी होरहे, छूछहिं वाजहिं छन्द ॥

सीक रसोई भयो विहानू । गढ़ देखे गवने सुलतानू ॥

कमल सुहाय शूरसंग लीन्हा । राघव चेतन आगे कीन्हा ॥

ततखन आयबेवाने जोपहुँवा । मनसो अधिकगर्गनसे ऊँचा ॥

उधरी पँवर चला सुलतानू । जानहुचलागर्गन कहँ भानू ॥

पँवरी सात सात खण्ड वांके । सातो खण्ड गाढ़े दुइनाके ॥

आज पँवर मुख भा निरमरा । जो सुलतान आय पंगधरा ॥

जानु उरेह काठ सब काढ़े । चित्र मूरत विनवहिं ठाढ़े ॥

दो० लख लख बैठ पँवरयाँ, जेहिते नवहिं करोर ।

जेहिं सब पँवर उघारे, ठाढ़भये करै जोर ॥

खण्डअडतीसवां किला बर्णन बादशाह ॥

सातो पँवरी कनक केवारा । सातहुँपर वाजहिं घरियारा ॥

सातहिं रंग सो सातो पँवरी । तब तहँ चढै फिरै नव भँवरी ॥

खंड खंड साज पलंग औपीढी । जानहु इन्द्रलोककी सीढी ॥

चन्दन वृक्ष सुहाई छाहा । अमृत कुण्ड भरा तेहिमाहा ॥

चन्दन १ चीच २ पैदा होना ३ जवाहिरात ४ पाकसाफ ५-६ गरूर ७ शिर ८ पानी ९ ढोल १० बहादुर ११ नाममाद १२ तुरत १३ हवादार १४ बहुत १५ आसमान १६-१८ दरवाजा १७ सूर्य १९ कदम २० तखवीर २१ दरवान २२ हाथ २३ सोना २४ पेड़ २५ ॥

फरे खजीजां दाड़िम दाखा । जो वह पर्थे जाय सो चाखा ॥

कनकं अत्र सिंहासन साजा । पैठत पँवरं मिला लै राजा ॥

चढ़ाशाह चढ़ चितौर देखा । सब संसार पायँतर लेखा ॥

दो० देखा शाह गगनं गढ़, इन्द्रलोक के साज ।

कहीराज फिरताकर, स्वर्ग करै जो राज ॥

चढ़ गढ़ ऊपर सङ्गत देखी । इन्द्रपुरी सो जान विशेषी ॥

ताल तलावा सरवरं भरे । औअम्बराँऊं चहुँदिशिफरे ॥

कुवां बावरी भांतिहि भांती । गढ़मण्डप तहँतहँ चहुँपांती ॥

रायँ राग घरघर मुख चाऊ । कनकंमँदिरनगकीन्हजड़ाऊ ॥

निशिं दिनबाजहिंमन्दिरतूरीं । रहसकूद सब लोग सँदूरा ॥

स्तनँ पदारथ नग जो बखाने । घूरन भहँ देखे अहिराने ॥

मँदिर मँदिर फुलवारी बारी । बारबारँ तहँ चित्रँ सँवारी ॥

दो० पांसासारीकुँवरसबखेलहिं, श्रवणँहिंगीतउनाहिं ।

चैन चाउ तस देखा, जनु गढ़ छेका नाहिं ॥

देखत शाह कीन्ह तहँ फेश । जहँ मँदिर पद्मावत केरा ॥

आसपास सरवरं चहुँ पासा । मँदिरमाँभँजनुलागअकासा ॥

कनकं सँवार नगहिसबजरा । गगनँचन्द जनु नखतहिंभरा ॥

सरवरँ चहुँदिशि पुरइनफूली । देखा वारँ रहा मन भूली ॥

कुँवरिलाख दुइबार अंगीरे । दुहुँदिशि पँवरँ ठाढ़ करँजोरे ॥

शाखदूलँ दुहुँ दिशि गढ़काढ़े । कलकँजहिं जानहुँ रिसठाढ़े ॥

जानवन्त लिये चित्रँ कटाऊ । वहँतकपँवरँ सोलागजड़ाऊ ॥

नाममेवा १ अनार २ अंगूर ३ राह ४ सोना ५-१२-२२ दरवाजा ६-  
१६-२५-२७-३२ आसमान ७-२-२३ तालाब ६-२०-२४ बागीचा १०  
अमीरउमरा ११ रात १३ नामवाजा १४ जवाहिरात १५ तसवीर १७-३१  
चौसर १८कान १९बीज २१ पेशवाई २६ हाथ २८न्ताल शेर २६ डकारना ३०॥

दो० शाह मँदिर अस देखा, जनु कैलास अनूप ।

जाकर अस धौराहरै, सो रानी केहिरूप ॥

नांघत पँवरै गये खण्ड साता । सतयै भूमि विधावन राताँ ॥

आंगन शाह ठाढ़ा आय । मँदिरआँहअतिशीतलँ पाय ॥

चहूँ पास फुलवारी वारी । मांऊँ सिंहासनधरा सँवारी ॥

जनु वसन्त फूला सब सोने । हँसाहिँफूलविकसँहिँ फरलोने ॥

जहांजो ठाँव दृष्टियहँ आवा । दर्पन भाव दरश देखरावा ॥

तहां पाँटँ राखा सुलतानी । बैठ शाह मन जहां सो रानी ॥

कमल सुभाय सूरँ सों हँसा । सूरका मन चाँदँ पहँ वसा ॥

दो० सोपै जानै नयन रस, हिरदयँ प्रेम अँगूर ।

चन्द जो वसै चकोरचित, नयनहिआवनसूरँ ॥

रानी धौराहरै उपराहीं । करहिँ दृष्टि नहिँकरहितराहीं ॥

सखी सरेखी<sup>०</sup> साथहिँ वैठी । तपैसूरँशशि<sup>०</sup> आवनदीठी<sup>०</sup> ॥

राजा सेव करै करँ जेरे । आज शाह घर आवा मोरे ॥

नट नाटक पतुरनि औ वाजा । आय अखाड़ सवैमहँ साजा ॥

प्रेमकलुवँधँ वहिर औ अन्धा । नाचकूद जानहु सब धन्धा ॥

जानहु काठ नचावै कोई । जोजँ नाच न परगँटँ होई ॥

परगट कहि राजा सों वाता । गुँसँ प्रेम पद्मावत राताँ ॥

दो० गीत नाद जस धन्धा, दहकँ विरहकी आँच ।

मनकीडोरलागतहँठाई, जहांसो गँहिपुनि<sup>०</sup> खाँच ॥

बेमिसाल १ महल २-१५-१८ दरवाजा ३ ज़मीन ४ लाल ५-२५ टंडा ६  
वीचोवीच ७ खिलना ८ खूबसूरत ९ तरुत १० सूर्य ११-१४-१८ तथा पद्मा-  
वत १२ दिल १३ निगाह १६-२० होशियार १७ चाँद १६ हाथ २१ भरा-  
हुआ २२ ज़ाहिर २३ छिपा २४ जलना २६ पकड़ना २७ रत्नी २८ ॥

गोरो बादल राजा पाहां । शवतं दोऊ दोउ जनुबाहां ॥

आय श्रवणं राजाके लागी । मूसि न जाहिंपुरुषजो जागी ॥

बाचा पुरुषे तुर्क हम बूझा । परगटं मेरें गुप्तं छलं मूझा ॥

तुव नहिं करो तुर्क सो मेरूं । छलपै करहिं अंतके फेरूं ॥

बेरी कठिनं कुटिलजसकांठा । सोम कोपरहिं जारहिं आंठा ॥

शंभु कोटं जो पाय अंगोटी । मीठी खांड जेंवाये रोटी ॥

हम सो ओझं कै पावा छातू । सुलं गये सँग रहे न पातू ॥

दो० यहिसोकृष्ण बलराजजस, कीन्हचहै अरबांध ।

हम विचार अस आवहिं, मेरहिं दीजे न कांधा ॥

सुन राजा यहि वात न भाई । जहां मेर तहँ नहिं असमाई ॥

मन्दहि भल जो करे भलसोई । अन्तहिं भलाभली कर होई ॥

शंभु जो विष दय चाहै मारा । दीजे नोन जान विष सारा ॥

विष दीन्हें विषघर होय खाय । लोन देखहों लोन बिलाय ॥

मारै खड्ग खड्ग कर लिये । मारै लोन नाय शिर दिये ॥

कंवरो विषजो परडवनं दीन्हा । अन्तहिंदांव परडवन लीन्हा ॥

जो छल करै वही छलबाजो । जैसे सिंहं मँजूषा साजा ॥

दो० राजें लोन सुनावा, लाग दोहों जस लोन ।

आयकुहाय मँदिर कहँ, सिंह जान औगोन ॥

नाममन्त्री १ सरदार २ कान ३ चोरी होजाना ४ क्रोल बादशाह ५ जा-  
हिर ६ मेल ७-१०-१७ छिया न दया ११ सख्त ११ दुश्मन १२-१८ किला १३  
घेरना १४ तथा बादशाहको वे मुरखत पाया १५ जड़ १६ तलवार १६  
दुर्योधन २० राजा युधिष्ठिर आदिक २१ पहुँचना २२ एक ब्राह्मण ने शेर  
को जो पिंजरे में बन्ध्या निकाल लिया शेर ने उसको खाने चाहा उसने  
कहा कि भलाई के बदले वदी न करना चाहिये जब तकरार होनेलगा  
तब एक गीदर ने आके पंचाशत की और कहा कि हम सुरत असली देखें  
तब फैसला करें जब शेर पिंजरे में चलागया ब्राह्मणने खिड़की बन्द कर  
ली गीदर ने कहा कि ये ब्राह्मण अब घरजाउ यही फैसला है २३ ॥



राजा की सोरहसै दासी । तिनमहँ चुन काढी चौरासी ॥

बरण बरण सारी पहिराई । निकस मँदिर ते सेवा आई ॥

जनु निसरीं सब बीरबहूटी । रायमुनी पिंजर हुत बूटी ॥

सबै प्रथमाँ यौवन सोहें । नयन बानें औ सारंगभौहें ॥

मारहिं धनुष केर शिर ओहीं । बनघंटघाट धनुषजित ओहीं ॥

कामंकटाक्ष हनहिं चितहरणी । एक एकते आगरें बरंणी ॥

जानहुँ इन्द्रलोक ते काढी । पांतहि पांत भई सब ठाढी ॥

दो० शाह पूँछ राघव पहँ, सवते कही वैनाहिं ।

तुइजोपद्मिनी बरंणी, कहुसोकौनइनमाहिं ॥

दीरघआयुं भूमिपति<sup>२२</sup> भारी । इन्हमें नाहिं पद्मिनी नारी ॥

यहि फुलवारसोवहुकी दासी । कहँ केतकी भँवर सँग बासी ॥

वह सो पदारथं ये सब मोती । कहँ वहदीपपतंगजहँज्योती ॥

ये सब तरई सेव कराहीं । कहँ वहशैशिदेखतछिपजाहीं ॥

जबलगसूरकीदृष्टि<sup>१९</sup> अकाशू । तवलगशैशिनहिंकरैप्रकाशू ॥

सुनके शाह दृष्टि<sup>२०</sup> तर नावा । हम पाहुन यहिमँदिरपरावा ॥

पाहुन ऊपर हेरै<sup>२१</sup> नाहीं । हना राहु अर्जुन परछाहीं ॥

दो० तपै बीज जस धरती, सूख बिरह के घाम ।

कबसोदृष्टि<sup>२२</sup> करवरसहि, तनतरवरहोयजाम ॥

सेव करै दासी चहुँ पासा । अप्सरें जानु इन्द्र कैलासा ॥

कोउ परात कोउ लोटां लाई । शाह सभा सब हाथ धोवाई ॥

कोइ आगे पनवार बिछावहिं । कोई जेवन लैलै आवहिं ॥

रंगबरंग १ नाम जानवर २ नौजवान ३ तीर ४ कमान ५-६ तिरछी  
निगाह ७ ज्यादा ८ बयान करना ९-१० बड़ीउमर ११ जमीनका मां-  
लिक १२ जवाहिरात १३ छोटैनखत १४ चांद १५-१८ सूर्य १६ निगाह १७  
रोशनी १६ नज़र २०-२२ देखना २१ पेड़ २३ इन्द्रलोककी परी २४ ॥

कोई माड़ जाहिं धरि जूरी । कोई भात परोसहिं पूरी ॥

कोई लैलै आवहिं थारा । कोई परसहिं बावन परकारा ॥

पहिरजो चीरं परोसहिं आवहिं । दुसरी और बरन देखावहिं ॥

वरण वरण पहिरहिं हर फेरा । आव भुंड जस अपसरं केरा ॥

दो० पुनिसंधाने बहुआनी, परसहिं बूकहिं बूक ।

करै सँवार गुसाई, जहां परी कछु छूक ॥

जानहु नखत करहिं सबसेवा । बिनशंशिसूरहिं भावन जेवा ॥

बहु परकारं फिरहिं हर फेरें । हेरां बहुत न पावा हेरें ॥

परी असूक्त सबै तरकारी । लोनी विना लोनसबखारी ॥

मच्छलुवहिं आवहिं गड़कांटी । जहां कमलतहं हाथ न आंटी ॥

मनलाग्यो तेहि कमलकी दंडी । भावै नहिं एको कनहंडी ॥

सो जेवन नहिं जाकर भूखा । तेहि बिनलाग जानु सबरूखा ॥

अनभावत चाखी बैरागी । पञ्चासृत जानहु विषलागा ॥

दो० बैठ सिंहासन गूँजै, सिंह चरै नहिं घास ।

जबलग मिरगंनपावै, भोजन करै उपास ॥

पानलिये दासी चहुँ ओरा । अमृत दानी भरे कचूरी ॥

पानी देहिं कपूरक बासा । सोनहिं पिये दरशकरप्यासा ॥

दरशन पान देयँ तौ जीऊँ । बिनरसनां नयनहिं सो पीऊँ ॥

पपिहा बूँद सेवातिह अघा । कौन काज जो बरसै मघा ॥

पुनि लोटा कोपरं लै आई । कै निराश अब हाथ धुवाई ॥

हाथ जो धोवै विरहको रोरा । सँवरि सँवरि मन हाथ मरोरा ॥

रोटी १ कपड़ा २ रंग ३ परी ४ अचार ५ राजा ६ चांद ७ सूर्य ८  
बहुत तरह ९ देखना १० तथा पद्मावत ११ पहुँचना १२ तरकारी १३ वे  
चाहना १४ शेर १५ हिरन १६ शरवत १७ कटोरा १८ जवान १९ सिल-  
क्रीची आफताया २० सताया २१ ॥

विधि मिलावजासोमनलागा । जोरहिं तोर प्रेम कर तागा ॥

दो० हाथ धोय जत्र बैठो, लीन्ह ऊत्र के श्वास ।

सँवरा सोई गुसाई, देय निराशहिं आस ॥

भइज्योनार फिरा खँडवांनी । फिराअरगजाँ कंकहि वानी ॥

नग अमोल सो थारहिं भरे । राजै सेवँ आन के धरे ॥

बिन्ती कीन्ह घालगैये पागा । येजगसूरँ सीवँ गुहिंलागा ॥

औगुन भरा कांप यहिजीऊ । जहां भाँनु तहँ रहान सीऊँ ॥

चारहुँखण्डभाँनुअसतपाजेहिकीदृष्टिँ रँयनिमसिँ छिपा ॥

औभाँनुहिँअस निरमलँकला । दरशजोपावै सो निरमला ॥

कमल भानु देखै पै हँसा । औ भातेहिं चाहै परकसा ॥

दो० रतँनश्यामतहँरँयनिमसिँ, येरविँ तिमिरँ सँहार ।

कर सो दृष्टिँ औ कृपा, दिवँसँ देह उजियार ॥

सुनबिन्तीँ बेहसाँसुलतानू । सहसँहि किरणदिपै जसभाँनुँ ॥

ऐ राजा तुइँ सांचँ जुड़ावा । भइसोदृष्टिअवसीवँ छुड़ावा ॥

भाँनु की सेवा जो कर जीव । तेहिमसिकहांकहांतेहिसीवँ ॥

खाउ देश आपन कर सेवा । और देउँ माड़ो तोहिं देवा ॥

लीकपपानँ पुरुषँ कर बोला । ध्रुवँ सुमेरुँ ऊपर नहिं डोला ॥

फेर बसावँ दीन्ह नग मूरू । लाभदेखायलीन्हचहिमूरू ॥

हँस हँस बोले टेके कांधा । प्रीतिभुलाय चाहै छल बांधा ॥

दो० माया बोल बहुत कर, शाह पान हँस दीन्ह ।

ईश्वर १-२ नाउममेद ३ शरवंत ४ अतर ५ नजर ६ अर्ज ७ गर्दन ८  
सूर्य ९-११-१३-१७-२२-२६-३१ जाड़ा १०-१२-३०-३२ निगाह १४  
रात १५-२० सियाही १६-२१ पाकसाफ़ १२ राजा १६ अधियंतरा नाश-  
कर २३ अञ्जी नजर २४ दिन २५ अर्ज २६ हँसा २७ हजार २८ पत्थर ३३  
मर्द ३४ नाम नखत ३५ पहाड़ ३६ लालच ३७ जड़ ३८ ॥

प्रहिले रतन हाथ कै; चहौं पदारथ लीन्ह ॥

माया मोह विवश भा राजा । शाह खेल शतरंजकरसाजा ॥

राजाहै जवलंग शिर घामू । हमतुमघड़िकैकरहिबिश्रामू ॥

दर्पन शाह भीत तहँ लावा । देखों जोह भरोखें आवा ॥

खेलहिं दोऊ शाह औ राजा । शाहक रुख दर्पनरहि साजा ॥

प्रेमकै लुब्ध पियादे पाउँ । चलै सौहिं ताके कहँठाउँ ॥

घोड़ा दै फरजी वँद लावा । जेहिं मुहरा रुखचहैसोपावा ॥

राजा पील देइ शह मांगा । शह दै चाहिमरैरथ स्वांगा ॥

दो० पीलहि पील देखावा, भयो दुहूँ चौदांतं ।

राजा चहै बुद भा, शाह चहै शहमात ॥

मूरें देख वै तरैइ दासी । जहँ शशितहांजायपरकौसी ॥

सुना जो हमदेहलीसुलतानू । देखां आज तपै जस भानू ॥

ऊंच छत्र ताकर जगमाहां । जगजोबांह सबवहकीछाहां ॥

बैठि सिंहासन गैर्वहि गूजा । एक छत्र चारहुँ खँड भूजा ॥

निरखिं न जायसौहिं वहपाहीं। सबै नवैकै दृष्टि तराहीं ॥

मन माथे वह रूप न दूजा । सबरूपवन्त करहिं वह पूजा ॥

हमअस कसा कसौटी आरसं । तुहूँ देख कस कंचनं पारस ॥

दो० वादशाह देहली कर, कित चितौर महँ आव ।

देख लेहु पद्मावत, जें न रहैं पछताव ॥

विकसंजोकुमुंदकही शशिताऊं। बिकसाकमलसुनतरबिं नाऊं

तथा राजा १ तथा पद्मावत २ एक घड़ी ३ आराम ४ दीवार ५ भरा-  
हुआ ६ सामने ७-१८ जगह ८ शह देके वाली जीतना चाहा ९  
मुक्ताविला १० सूर्य ११-१५-२५ नखत १२ चांद तथा पद्मावत १३-२४रो-  
शनी १४ गरूर १६ देखना १७ निगाह १८ आईना २० सोना २१ खिलना २२  
कोकावेली २३ ॥

भइनिशि शशिधौराहर चढी । सोरहकिस्नजैसिविधि गढी ॥

बेहँस भरोखें आय सँरेखी । निरखें शाह दर्पनमहँ देखी ॥

होतहि दरश परसँ भा लूना । धरती स्वर्ग भयो सब मूना ॥

रुख मांगत रुखँ तासों भयो । भा शहमात खेल मिटगयो ॥

राजा भेद न जानै भांपौ । भाद्विपनारि पवनविनकांपा ॥

राघव कहा किलाग सर्पांशी । लै पौढावहिं सेज सँवारी ॥

दो० रथनि वीतगइ भोरभा, उठा सूर तव जाग ।

जो देखै शंशि नाहीं, रही करौ चितलाग ॥

भोजन प्रेम सो जानिजो जेवा । अँवरहिंरुचहिवासरस केवा ॥

दरश देखायजायशंशि छिपी । उठा भाँतुँ जस योगी तपी ॥

राघव चेत शाह पहुँ गयो । सूर्य देख कमल विप भयो ॥

छत्रपती मन कहाँ सो पहुँचा । छत्र तुम्हार जगत पर ऊँचा ॥

पाँट तुम्हार देवतन पीठी । स्वर्गपतालरयनिदिनदीठी ॥

छोहते पलहँहि उघटे रूखा । कोहते महिसायैरसवमूखा ॥

सकल जगत तुम नावै माथा । सबकर जियन तुम्हारेहाथा ॥

दो० दिनननयनलावहुतुम, रयनि भावनहिं जाग ।

अबनिचिन्तअससोयं, कहँ विलम्ब असलाग ॥

देख एक कौतुक हौ रहा । रहअन्तरपेटें पैनिहिं अहा ॥

सरवरै एक देख मन सोई । रहापानि अब पानि न होई ॥

स्वर्ग आय धरती महँ छावा । रहा धरतिपै धरत न आवा ॥

रात १-११ महल २ ईश्वर ३ होशियार ४ देखना ५ पारसपरथर ६ मुँह ७ छिपा ८ नाम भाट ९ बुरीहवा १० सूर्य तथा बादशाह १२-१७ चाँद तथा पद्मावत १३-१६ ध्यान १४ कमल १५ तलत १६ आसमान १६-२६ निगाह २० मेहरवानी २१ हराहोना २२ गुस्ता २३ तालाव २४-२८ सब २५ तमाशा २६ परदा २७ ॥

तिन्हमहँ पुनिइकमन्दिरऊँचा । करनँ अहापै करनहिंपहुँचा ॥

तेहि मण्डप मूरत मन देखी । बिनतनबिनजिवजायविशेखी ॥

पूरणचन्द्र होय जनु तपी । पारसरूप दरश दै धिपी ॥

अबजहँ चतुर्दशी जिव तहां । भान अमावस पावै कहां ॥

दो० विकसाँ कमलस्वर्ग निशि, जनहुँलौकगाबीज ।

यहू राहुभा भानहिँ, राघव मनहिँ पतीजै ॥

अति विचित्र देखों सोठादी । चितकीचित्रलीन्हजिवकादी ॥

सिंहलङ्क कुम्भस्थल जोरू । आंकुश नाग महावत मोरू ॥

तेहिऊपरभा कमल विकसूँ । फिर अलिलीन्हपहुँपरसबासू ॥

दोहुँ खंजनँ विच बैठो सुवा । दुइजका चन्द धनुषलै उवा ॥

मिर्ग<sup>१</sup> देखाय गवन फिरगया । शँशिभा नाग सूर्यभादिया ॥

मुठ ऊँचे देखत वह उचका । दृष्टिपहुँचकरै पहुँच न सका ॥

पहुँचा भयो दृष्टि गत भई । गहि<sup>२</sup> नसका देखत वहगई ॥

दो० राघव हेरतै जो गयो, अच्छत हिये समाध ।

वहँ तन राघववाधभा, सके न कै अपराध ॥

राघव सुनत शीशै भुई धरा । युग युग राज भानैकी किरा ॥

वही किरान वहरूप विशेखी । निश्चय तुम पद्मावत देखी ॥

केहरलङ्क कुम्भस्थल हिया । श्रीवँ मयूरअलकरबि<sup>३</sup> दिया ॥

कमल वदन औ वाससमीरूँ । खंजनँनयन नासिका कीरूँ ॥

हाथ १ चौदहीरातका चांद्र २-३ खिलना ४-११ आसमान ५ रात ६ सूर्य ७-२४-२६ मुरझाना ८ चीताकी कमर ९-२५ हाथी १०-२६ भँवरा १२ फूल १३ ममोला १४-३१ हिरन १५ चांद्र १६ निगाह १७ हाथ १८ देखते ही चाहा कि आप को पहुँचाऊँ १९ पकड़ना २० देखना २१ तद्वार काम न आई शेरकी तरह मुस्ला किया २२ शिर २३ गर्दन २७ बाल २८ हवा ३० नाक तोताकी ३२ ॥

भौहधनुषशीशि दुइज ललाटू । सब रानिन ऊपर वह पाटू ॥  
 सोई मिरगं देखाय जो गयो । वेनी नागं दिया चितभयो ॥  
 दरपण महँ देखी परछाहीं । सो सूरति भीतर जिव नाहीं ॥  
 दो० सबै श्रृंगार वनी धनि, अब सोलीमति कीज ।

अलकँजोलटकीअर्धरपर, सोगहि'केसरलीज ॥

खण्ड उन्तालीसवां क्रैद होना राजा

रतनसेन का ॥

मीत' भा मांगा वेग वेवानू । चला सूर सँवरा अस्थानू ॥  
 चलत पंथ' राखा जो पाऊं । कहारहैथिर' चलत वंटाऊं ॥  
 पथिकँ कहँ कहवां ससताई । पंथ' चलै तव पंथ सेराई ॥  
 छल कीजे बल जहां न आंटां । लीजे फूल टारके कांटा ॥  
 बहुत मया सुन राजा फूला । चला साथ पहुँचावे भूला ॥  
 शाह हेत राजा सों बांधा । बातहिलायलीन्हगहि' कांधा ॥  
 धिव मँधुं सान दीन्ह रसरसोई । जो मुँह मीठ पेट विष होई ॥  
 दो० अमिय वचनँ औमाया, को न मुयो रस भीज ।

शत्रुँ भरै अमृत जो, तेहि विष काहे दीज ॥

चांद घरहि जो सूरज आवा । होयसोअलोपँ अमावसपावा ॥  
 पूछहिंनखँतँ मलीनसोमोती' ॥ सोरहकला न एकोज्योती ॥  
 चांद गहन आगाँहँ जनावा । राज भूलगहिशाहचलावा ॥  
 पहिले पँवरँ नाघ सो आई । ठाढ़े भये राज पहिराई ॥

चांद १ माथा २ तख्त ३ हिरन ४ चोटी ५ पद्मावत ६-२७ अकिल ७  
 जुलफ ८ होंठ ९ पकड़ना १० दोस्त ११ सवारी १२ बादशाह १३ मकान १४  
 राह १५-१६ क्लायम १६ मुसाफिर १७-१८ पहुँचना २० पकड़ना २१ श-  
 हद २२ मीठीवात २३ दुश्मन २४ छिपजाना २५ तथा सखी २६ खबर २८  
 दरवाजा २६ ॥

सौ तुषार तीस गज पावा । दुन्दुभिऔचौ घोड़ीदेवावा ॥  
 दूजे पँवर दिया असवारा । तीजे पँवरनगदीन्हअपारा ॥  
 चौथे पँवरदे द्रव्य करोरी । पँचये दुइ हीरा की जोरी ॥  
 दो० छठये पँवर माडो दियो, सतये दीन्ह चँदर ।  
 सात पँवर नाघत नृपति, लेगयो बांध गरेर ॥  
 सहिजग बहुत नदीजलजोडा । कौन पारभा कौन न बूडा ॥  
 कौन अन्धभा आग न देखा । कौन भयो डीठार सरेखा ॥  
 व्याध भई राजा कहँ माया । तजकैलास परी भुई पाया ॥  
 जेहिकारण गढ़कीन्ह अँगूठी । कित छोड़े जो आवै सूठी ॥  
 शत्रुहि कोउ पाव जो बांधे । छोड़ आपकहँ करै बियांधे ॥  
 चारा मेल धरा जस माछू । जलसे विकसमरै जसकाँछू ॥  
 शत्रुहि नाग पेटारी मूँदा । बांधामिर्ग पैगनहिँ खूँदा ॥  
 दो० राजा धरा आनके तन पहिरावा लोह ।  
 ऐसो लोह सोपहिरे, चेतँ श्यामकी ओह ॥  
 पांयन गाढी बेडी परी । सांकर श्रीव हाथ हथकड़ी ॥  
 औ धर बांध मँजूषा मेला । ऐसो शत्रु जनु होयदुहेला ॥  
 सुनि चितौरमहँ पड़ा बखाना । देश देश चारहुँदिशजाना ॥  
 आजनरायण फिर जग खूँदा । आजसोसिहँ मँजूषा मूँदा ॥  
 आज खँसे रावण दशमाथा । आजकान्हँकालीफणनाथा ॥  
 आजहिँ प्राणकंस कर दीला । आजमीने शंखामुरँ लीला ॥

बोड़ा १ हाथी २ डंका ३ वग्धी ४ राजा ५ होशियार ६ जिसलिये ७  
 बेरना ८ दुश्मन ९-१२ दुख १० कछुवा ११ पैरवँधा हिरन नहीं भागता १३  
 अक्रलतका फल उठाये १४ गर्दन १५ पिंजरा १६-२१ दुखी १७ बयान १८  
 सक्ती १९ शेर २० गिरना २१ श्रीकृष्णजी २३ मञ्जली २४ नामदेव्य २५ ॥



आज परे पाण्डव बँद माहां । आज दुशासन उतरी वाहां ॥

दो० आज धरा बलराजा, मेला बांध पतार ।

आज सूर दिनअथवा, भाचितौरअंधियार ॥

देव मुलेमां के बँद परा । जहँलग देव सवहिंसतहरा ॥

शाहलीन्ह गहिकीन्ह पयाना । जोजहँशत्रुसोतहांविलाना ॥

छुरासानं औ डरा हरेवै । कांपा विदुर धरा अस देव ॥

बंध उदयगिरि<sup>१०</sup> धौलीगिरी । कांपी सृष्टि दुहाई फिरी ॥

उवा सूर भइ सामहि करा । पालाफूट पानि होय दरा ॥

डँडवी दांड दीन्ह जहँ ताई । आय दण्डवत कीन्ह सवाई ॥

दंडदांड<sup>३</sup> सब स्वर्गहि गई । भूमि जो डोली इस्थिर भई ॥

दो० वादशाह देहली महँ, आय बैठ मुख पाँट ।

जेहिजेहिशीशँउठावा, धरती धरी ललाट ॥

हवँशी बन्दवान जिववर्धा । तेहि सौंपा राजा अगदहौं ॥

पीनि पवन कहँ आश करेई । सोजियवधिकँसांसवहुदेई ॥

मांगत पान आग लै धावा । मुंगरी एक आन शिरलावा ॥

पानी पवन तुँइ पियासोपिया । अबको आन देय पानिया ॥

तब चितौर जिय रहा न तोरे । वादशाह हँ शिर पर मोरे ॥

जोहि हँकारेही<sup>२०</sup> उठ चलना । सोकितकरोहोय करमलना ॥

करै सो भीत गाढ़ बँद जहां । पान फूल पहुँचावै तहां ॥

दो० जलँ अंजलमहँ सोवा, समुद्र न सँवराजाग ।

राजा युधिष्ठिर १ नाम बहादुर २ सूर्य ३ नामवादशाह ४ कूच ५  
दुश्मन ६ नाममुल्क ७ से ११ तक । दुनिया १२ आवाज़मनादी १३ आस-  
मान १४ ज़मीन १५ क़ायम १६ तज़त १७ शिर १८ माथा १९ हवशी  
दरोगा क़ैदखाना २० जल्लाद २१ जलाहुवा २२ जानमारनेवाले २३ बो-  
लाना २४ हाथ २५ पानीमहँ पियासा २६ ॥

अवधरकादामच्छज्यों, पानी मांगत आग ॥

पुनिचल दुइजन पूछन धाये । वै शठ दग्ध आय देखराये ॥

तुई मेरिपूरी न कवहू देखी । हाड़ जो बिथरे देखन लेखी ॥

जानी नहिं कि होव अस मुहू । खोजे खोज न पावव कहू ॥

अव हम उतरें देहुरे देवा । कौने गर्व न मानी सेवा ॥

तुई अस बहुत गाड़खन मूंदी । बहुरं न निकसबारहोयखूंदी ॥

जो जस हँसै सो तैसे रोवा । खेलै हँसै अभं भुई सोवा ॥

जस अपने मुहँ काढ़े धुवां । चाहेसि परा नरक के कुवां ॥

दो० जरेसि मरेसि अव बांधा, तैसो लाग तोहिदोष ।

अवहुँ मांग पद्मिनी, जो चाहेसिभा मोष ॥

पूछहिं बहुत न बोला राजा । लीन्हैसिजियेमीचमनसाजा ॥

खनं गड़वा चरनहिं लै राखा । नितउठ दग्ध होयनौलाखा ॥

ठाँव सो सांकर औ अधियारा । दूसर करवट लेइ न पारा ॥

पीछे सांप आय तहँ मेली । बांका आन छुवावहिं हेली ॥

धरहिं सँदासी छूटे नारी । रात दिवसँ दुखपहुँचै भारी ॥

जो दुखकठिन न सहै पहारू । सोअंगवाँ मानुषशिरभारू ॥

जो शिर परै आय सो सहे । कछु न बिसाय काहसों कहे ॥

दो० दुख जारै दुख भूजै, दुख खोवै सब लाज ।

काजहिं चाह अधिकदुख, दुखीजानजेहिबाज ॥

पद्मावत विन कंत दुहेली ॥ विनजलकमलमूखजसबेली ॥

गाढ़ी प्रीति सो मोसों लाई । देहिलीजायनिचितहोयध्वाई ॥

आदमी १ आग २ यमपुरी ३ जंबाव ४ गरूर ५ फेर ६ पाप ७ छूटना  
कैदसे ८ मौत ९ तंगपिंजरा में कैद किया १० जलाना ११ जगह १२  
डोम १३ संसारी १४ दिन १५ भारी १६ उठाना १७ दुखको वह जानै जिस  
पर पहुँ १८ दुखी १९ ॥

कोउ न बहुरा पुनि हर देश । केहि पूछहुँ को कहै संदेश ॥  
 जो कोइ जाय तहां कर होई । जो आवे कुछ जान न सोई ॥  
 अगम पथं पिय तहां सिधावा । जोरेगयो सो बहुरं न आवी ॥  
 कुवांढार जल जैसो बिछोवा । डोलभरा नयनहि धन रोवा ॥  
 लेजुरि भई नाहें बिन तोहीं । कुवां प्रीधर काटेसिमोहीं ॥  
 दो० नयन डोल भर टारै, हिये न आग बुझाय ॥  
 घड़ीघड़ी जिय आवै, घड़ी घड़ी जिव जाय ॥  
 नीर गंभीर कहां हो पिया । तुमबिन फाटै सरवर हिया ॥  
 गयो हेराय बिरह के हाथा । चलत सरोवर लीन्हन साथ ॥  
 चरत जो पंख केल कर नीरा । नीरकठिन कोउ आवन तीरा ॥  
 कमलसूख पखुरी बेहिरांनी । गलगलकेमिल छार हेरांनी ॥  
 बिरह रते कंचन तन लावा । चून चूनके खेह मिलावा ॥  
 कनकंजो कनकन है बेहिराई । पिय पै छार समेटो आई ॥  
 बिरह पवन यहि छार शरीरु । छारहि आनमिलावहुनीरु ॥  
 दो० अबहुँ जियावहु कै मया, बिथुरी छार समेट ॥  
 नइकायो अबतारै नव, दर्श तुम्हारे भेट ॥  
 नयन सीप मोती तस आशू । ततै ततपरहि करैतननाशू ॥  
 पदक प्रदारथे पद्मिन नारी । पियबिन भइकौड़ीबरबारी ॥  
 संगले गयो रतन सब ज्योती । कंचन कया कांचभइपोती ॥  
 बूड़तहो दुख दग्ध गंभीरा । तुमबिन कंत लावको तीरा ॥

मुश्किल राह १ लौट २ पद्मावत ३ रस्सी ४ खाविन्द ५ छाती ६-६  
 पानी गहिरा ७ तालाब ८-१० जानवर परिन्द ११ अलग १२-१६ धूर १३-  
 १६-२० मिलना १४-१५ सोना १७-२७ रेजारेजा १८ पानी २१ चदन २२  
 पैदाहोना २३ गर्म २४ लाल जवाहिर २५ मोल २६ आगमारी २८  
 किनारा २६ ॥

हिये<sup>१</sup> विरह होय चढ़ापहारू । जल यौवन सहसकैन भारू ॥  
जलमहँ अगिन सो जानि बूना । पाहनं जरहि होहि सब चूना ॥  
कौने यतन कंत तुम पाऊँ । आज आगहों जरत बुभाऊँ ॥  
दो० कौन खरहहों हेरो<sup>२</sup> ; कहां बन्धु हौ नाहं ।  
हेरे कतहुँ न पाऊँ, वसै तु हिरदय माहं ॥  
नागमती पियपिय रत्न लागी । निशि दिन तपै मञ्जु ज्यो आगी ॥  
भँवर भुजंग कहां हो पिया । हम ठगाँ तुम कानन किया ॥  
भूल न जाहि कमल के पाहां । बांधत बिलंबन लागै नाहां ॥  
कहां सो सूर पासहों जाऊँ । बांधा भँवर छोर कै लाऊँ ॥  
कहां जाऊँ को कहै सँदेशा । जाऊँ सो तहँ योगिन के भेशा ॥  
फार पदोरें सो पहिरो कथौ । जो मोहिं कोउ देखावै पंथौ ॥  
वह पंथै पलकन जाऊँ बुहारी । शीशे चरण के चलो सिधारी ॥  
दो० को गुरु अगवा होय सखि, मोहिलावे पंथमाहं ।  
तन मन धन बल बल करों, जोरे मिलावै नाहं ॥  
कै कै कारण रोवै वाला । जनु दूदहि मोतिन के माला ॥  
रोवत भई न खास सँभारा । नयन चुवहि जनु उरती धारा ॥  
जाकर रतन परे पर हाथा । सो अनाथ किमि जीवै नाथा ॥  
पांच रतन वह रतनहि लागी । बेगँ आव पियरतन सभागी ॥  
रही न ज्योतिनयन भये खीनी । श्रवण न सुनो बैनं तुमलीनी ॥  
सुनो रस नहिं एको भावा । नासिकें और वासनहिं आवा ॥  
तचतचतुमविन अंगै मोहिलागी पांचौ<sup>३</sup> । दरंध विरह अब जागी ॥

छाती १-प्रथम २-देखना-३-कैद ४-खाविन्द ५-८-१५ रात ६  
दुग्धमती ७-सूर्य ८-सारी १०-गुदड़ी ११-राह १२-१३-शिर १४-ताकत  
देखने, सुनने, खूबने, बोलने, छूने की १६-२४-जल्द १७-रोशनी कम १८  
कान १६ आवाज़ २०-जवान २१-नाक २२-बदन २३-आग २५ ॥

दो० विरह सो जार भस्मकै, चहै उड़ावा खेह ।

आयसो धन पियमिलवे, करलेवे नइ नेह ॥

पियबिनव्याकुलव्यापीनागां । विरहा तपनश्यामभयेकागा ॥

पवन पानि कहँ शीतल पीउ । जेहि देखे पलुँहै तनजीउ ॥

कहँसोबासमलयोंगिरि नाहीं । जेहि कलपरत देतगलवाहां ॥

पद्मिनि ठगनी भइकितसाथा । जेहिते रतन परा पर हाथा ॥

होय बसंत आवहु पियकेसर । देखै फिर फूलै नागेसर ॥

तुमबिन नाँहँ रहै हियँ तचा । अवनहिं विरहगडुरपै वचा ॥

अब अधियारपरामसिं लागी । तुमबिन कौन बुझावैआगी ॥

दो० नयनश्रवणं रसरसनां, सवैखीनं भयेनाँहँ ।

कौनसो दिन जेहिभेंटके, आयकरैमुखझाहँ ॥

कंभलनीरं राय देवपालू । राजा केर शत्रुँ हियँशालू ॥

उनपै सुनी कि राजा बांधा । पाछल बैरसँवर छल सांधा ॥

शत्रु शालू तव न्योरे सोय । जो घर आव शत्रुँकी जोय ॥

दूती एक बृद्ध तेहि ठाँऊँ । ब्राह्मणजाति कुमोदननाऊँ ॥

वह हँकारं के बीरा दीन्हा । तोरे बल में बलजिव कीन्हा ॥

तुइँ कुमदनी कमल के नेरे । स्वर्गजोचांदवसैतोहिहेरे ॥

चितोर महँ जो पद्मिन रानी । करवलछल सोदैमुहिँआनी ॥

दो० रूप जगत मनमोहन, जेहि पद्मावत नाउँ ।

कोटि द्रव्य तुहिँ देहों, आन करोसि इकठाउँ ॥

कुमदिन कहा देखहों सोहों । मानुष कहा देवता मोहों ॥

धूर १ रानी नागमती २-६ हराहोना ३ चन्दन ४ खाविन्द ५-७-१३  
दिल ८ सियाही ९ कान १० ज्ञान ११ कमजोर १२ नाममुक्त १४  
दुश्मन १५-१८ दिल दुख देनेवाला १६ दुश्मन दुख देनेवालेने चाहा कि  
जैसे बनपड़ै १७ जगह १८ बोलाया २० आसमान २१ नज़र २२ ॥

जस कामरू चमारिन लोना । कौनहि बल पादत के टोना ॥

विपहर नाचहि पादत मारी । औधर मूदे बाल पेठारी ॥

बृक्ष चलै पादत के बोला । नदीउलटवहि परबत डोला ॥

पादत हरि परिडत मतिधेरी । औरको अन्धगुंग औबहिरी ॥

पादत ऐसे देवताहि लागी । मानुष का पादत सौ भागी ॥

पादत कै हठ कादत पानी । कहां जाय पद्मावत रानी ॥

दो० दूती बहुत पैच कै बोली पादत बोल ।

जाकर सत सुमेरु है, लागे जगतन डोल ॥

दूती बहुत पकवान सांधी । सोतिन लडूँ खरोरा बांधी ॥

माठ पेराकै पेठे पापर । पहिर बूझ दूती के कापर ॥

लै पूरी भरडाल अडूती । चितौर चली पैच कै दूती ॥

बृद्ध बैस जो बांधे पाऊं । कहांसोयौवन कित बोसाऊं ॥

तन बूढ़ा मन बूढ़ न होई । बल न रहा लालच जे होई ॥

कहांसोरूप जगंतं सबराती । कहांसो गर्बहस्तिं जसमाता ॥

कहांसो तीर्थ नयन तनठादा । सबै भार यौवन पुनि कादा ॥

दो० सुहमद बृद्ध जो नइचलै, काह चलै भुईं टोइ ।

यौवन रतन हेरान है, मकुं धरती महुँ होय ॥

आय कुमोदनि चितौर चढी । जोहनं भोहन पादत पढी ॥

पूछ ली ह रनवास बरोठा । पैठ पँवर भीतर बहु कोठा ॥

जहुँ पद्मावत शशिउजियारी । लै दूती पकवान उतारी ॥

हाथ पसार धाय के भेंग्री । चीन्हीं नहि राजा की बेठी ॥

सां० १ मन्त्र २-४ पेड़ ३ कौलप्रकृत ४-८ ईमान ६ मोतीचूरक ल-  
डुवा ७ खरोदार ८ दुनिया ९० लाल ११ बरु १२ हाथी १३ कटली १४  
शायद १५ बहुत तरह के मन्त्र १६ दरवाजा १७ चांद १८ ॥

हौब्राह्मण जेहिकुमुदिनिनाऊँ । हम तुमउर्पजी एकहि ठाँऊँ ॥

नाउँ पिताँ कर दूवे वेनी । सोइ पुरोहित गन्धर्पसेनी ॥

तुम वारी तब सिंहल द्वीपा । लीन्हें दूध पियायाँ सीपा ॥

दो० ठाँऊँ कीन्ह मैं दूसर, कम्मलनी रहि आय ।

सुनितुमकहँचितौरमहँ, कहँ कि भेटें जाय ॥

सुनि निरञ्चै नैहरकी गौई । गरे लाग पद्मावत रोई ॥

नयनगगन रवि विनअधियारो । शंशिसुखआंशुदूटजनु तारे ॥

जगअधियार गहनदिनपरा । कवलगर्शशिनखतहितसभरा ॥

माय वाप कित जन्मी वारी । श्रीवँ तोड़ कित जन्मनमारी ॥

कित विवाहदुखदीन्हदुहेली । चितौर पंथँ कन्तँ वँदँ मेला ॥

अवयहिजियनचाहअलमरना । भयो पहार जन्म दुख भरना ॥

निकसनजायनिलजयहजीउ । देखों मँदिर मून वँद पीउ ॥

दो० कुहुकजोरोवे शंशिनखतँ, नयनहिंरांतचकोर ।

अवहूँ बोले तहँ कुहुक, चातृकं कोकिल मोर ॥

कुमुदिन कण्ठलाग सुठ रोई । पुनिलै रोग डारै मुख धोई ॥

तुईशंशिरूपजगतउजियारी । मुखनभांपनिशिं होयअधियारी ॥

सुनचकोर कोकिल दुखदुखी । घुँघची भई नयन करमुखी ॥

केतो धाय मरै कोई वाटा । सोइपावै जो लिखा लिलाटै ॥

जोविधिं लिखाआननहिंहोई । कित धावै कित रोवै कोई ॥

कितको इच्छाँ कर औ पूजा । जो विधिलिखाहोयनहिंदूजा ॥

पैदाहोना १ जगह २ वाप ३ पद्मावत का वाप ४ दूसरा साविन्द ५ यकीन ६ गुहयाँ ७ आसमान ८ सूर्य ९ चांद १०-११-२३ गर्दन २२ भारी १३ राह १४ साविन्द १५ कैंद १६ चांद तथा पद्मावत १७ तथा सखी १८ लाल १९ पर्याहा २० नामदूती २१ आकृताव २२ रात २४ माथा २५ ईश्वर २६ चाहना २७ ॥

जेते कुमुदिनि वयन करेई । तस पद्मावत उतरै न देई ॥

दो० सेंदुर चीर मैलतस, सूख रही तस भूल ।

जेहि शृंगारपियतेंजिगया, जन्मनपहिरेफूल ॥

तव एकवान उघारा दूती । पद्मावत नहिं छुई अछूती ॥

मोहिं अपने पियकेर खंभारू । पान फूल कस होय अहारू ॥

मोकहँ फूल भये जस कांठी । बांटे देहु जो चाहेसि बांठी ॥

रतनछुवे जेहि हाथहिं सेती । औ न छुआँ सो हाथ सकेती ॥

दमक रत्नभय हाथ मँजीठी । सुकँ लेउँ पै घुँघची दीठी ॥

नयन करसुखी राती काया । सोतीहोहिं घुँघची जेहिछाया ॥

आसकै औछ नयन हत्यारे । देखतगा पिउ गँहे न पारे ॥

दो० कातोर छुवाँ एकवान मै, गुड़कडुवा धिउ रूख ।

जेहिमिलहोतसवाद रस, लै पिय गयो सुभूख ॥

कुमुदिन रही कमलके पासा । बैरी सूर्य चांदकी आसा ॥

वह कुँभलान रही भै चूँख । बिकसै रँयनिवातहिकरभोरू ॥

कसतुँवौरिहेसि कुँभलानी । सूख बेल जस पाव न पानी ॥

अनहीं कमलकली तुम बारी । क्रोमलँ बैस उठत पौनारी ॥

वेनी तोर मैल शिर रूखी । सरवरँ माँह रहेसि कस सूखी ॥

पान बेल विधि कँयँजमाई । सींचत रही तोह पलहाँई ॥

कर शृंगार मुख फूल तँबोला । बैठ सिंहासन भूल हिंडोला ॥

दो० हार चीर नित पहिरो, शिरकी करो सँभार ।

भोगमानदिनदशलिये, यौवन गये न बरै ॥

नामदूती १-१० वात २ जवाब-३ छोड़ना ४ दुख ५ लाख क्षोभी ६  
लालचदन ७ एकदल न सके ८ तथा राजा ११ मुरमाई हुई १२ खिलना १३  
रात १४ लड़की १५ मुलायमउमर १६ छाती उठती हुई १७ चोटो १८  
लालाव १९ ईश्वर २० चदन २१ शरीर २२ चक्र २३ ॥



विहँसजोकुमुदिनियौवनकहा । कमलनविकसां सम्पुटरहा ॥  
 ऐ कुमुदिनि यौवनतेहिमाहां । जोआछे पियका मुखछाहां ॥  
 जाकर छत्र सो बाहेर छावा । सो उजार घर कौन वसावा ॥  
 अहा जो राजा रतन अँजूरौ । केहकसिंहासनकेहक पटोरौ ॥  
 को पलंग को पौढै माँढे । सोवनहार परा बँद गाढे ॥  
 चहुँदिशियह घरभाअँधियारा । सब श्रृंगारलै साथ सिधारा ॥  
 कायाँ वेल जान तव जामी । सींचनहार आव घरस्वामी ॥  
 दो० तौलहि रहों भुरानी, जौलहि आवसो कन्त ।

यही फूल यह सेंदुर, होय सो उटै वसन्त ॥  
 जन तुँई बौरिकरोसि असजीउ । जौलहि यौवन तौलहिपीउ ॥  
 पुरुष संग आपन कहु केरा । एक कुहाय दुसर साँ हेरा ॥  
 यौवन जल दिनदिनजसघटा । भँवर छिपान हंस परगटा ॥  
 शुभ्र सरोवर जौलहि नीरौ । बहु आदर पंखी बहु तीरौ ॥  
 नीरौ घटे पुनि पूछ न कोई । परसँजोलीजहाथरहि सोई ॥  
 जबलगकालिंद होय विरौसी । पुनिसुरसँरिहोयसमुद्रपरासी ॥  
 यौवन भँवर फूल तन तोरा । वर्ध पूँछ जस हाथ मरोरा ॥

दो० यौवन कृष्णतन करनै, मयाँ गोतनहिं साथ ।  
 छलकै जाय हिवानपै, धनुषै छाँड़दुइहाथ ॥  
 जो पिय रतनसेन मोर राजा । विनपिय यौवन कौनेकाजा ॥  
 जो नहिंजिव तो यौवन कहे । विनजिव यौवन काहसोअहे ॥

खिलना १ रोशनी २ कपड़ा ३ मोढ़ा ४ वदन ५ खाविन्द ६-७ लड़की-  
 जवानी ८ मर्द ९ देखना ११ जाहिर १२ भराहुआ तालाव १३ पानी १४-  
 १६ किनारा १५ मुख १७-१९ यमुना तथा जवानी १८ गंगा तथा  
 बुढ़ापा २० जवानी २१ नाम राजा दानी २२ मुहव्यत २३ तीर २४  
 कमान २५ ॥

जो जिवतौ यहि यौवनभला । आपहि जैसाकरै निरमला ॥

कुलकरपुरुष सिंहे जेहि केरा । तेहिथलै कैसिसियार बसेरा ॥

हियाँ फाड़ कूकुर तेहि केरा । सिंहे तजि सियार मुखहेरा ॥

यौवन नीरं घटेका घटा । सतके बेर न जाय हिये फटा ॥

सघनं मेघहै श्यामं वरीसहिं । यौवन नयेतरवरे ह्वै दीसहिं ॥

दो० रावणपाप जो जिवधरा, दोउ जगत मुँहकार ।

राम सत्य जो मन धरा, ताहि छलै को पार ॥

कित पावसि पुनि यौवनराता । मँमतेचढ़ा श्यामशिरछाता ॥

यौवन बिना वृद्धि हो नाउँ । बिन यौवन थाकै सब ठाउँ ॥

यौवन हेरत मिलै न हेरा । तेहिपुनिजाहिकरहिंनहिंफेरा ॥

अहहिजोकेशनगं भँवरजोवसा । पुनिबकँहोहि जगतसबहँसा ॥

सेवर सेवन चेत कर सुवा । पुनि पछतास अंतहो भुवा ॥

रूप तोर जग ऊपर लोनी । यहि यौवनपाहुनजलसोना ॥

भोग विलास केर यह बेरा । मानलेहु पुनिको केहिकेरा ॥

दो० उठत कोप जसतरवरं, तसयौवन तोहिरातं ।

तौलह रङ्ग लहो रच, पुनिसो पियरहो पात ॥

कुँभुँदिनि बैनं सुनतही जरी । पद्मिनि हिये<sup>३</sup> आगजनुपरी ॥

रंग ताकर हों जारों रचा । आपन तजें जो पराये लचा ॥

दूसर करै जाय दुँई वाटा । राजा दुइन होहिं इकपाटा ॥

जेहि जिय प्रेमप्रीतिदुँई होई । सुख सुहाग सों बैठौ सोई ॥

साक्र १ छाविन्द २ व्याहाडुआ ३ शेर ४ जगह ५ छाती ६-६ देखना ६ पानी ७ ईमान ८ बादल ९ छाविन्द ११ पेड़ १२-१६ लाल १३-२० मस्त १४ मुकाम १५ साँप १६ चगुला १७ खूबसूरत १८ नामदूती २१ बात २२ दिल २३ छोड़ना २४ दूसर राह तथा नरक २५ तलत २६ मजबूत २७ ॥

यौवन जाउ जाउ सो भँवरा । पियाकीप्रीतिनजायजोसँवरा ॥

यहिजगजोपियकरहिंनफेरा । वहजगमिलहिंजोदिनदिनमेरा ॥

यौवन मोर रतन जहँ पीठ । बल सोपियपर यौवन जीव ॥

दो० भरथरि बिद्योहँ पिंगलौ । आहकरत जिवदीन्ह ।

हों पापिन जो जियतहों, यही दोष हम कीन्ह ॥

पद्मावत सो कौन रसोई । जहँ प्रकारँ दूसर नहिं होई ॥

रस दूसर जेहि जीभहि बैठा । सोजाने रस खटा औमीठा ॥

भँवर बास बहु फूलहिं लेई । फूल बास बहु भँवर न देई ॥

तुँ रस पुरुष न दूसर पावा । तेहिजाना जेहिंलीन्हपरावा ॥

इक चुल्लू रसभर नहिं हियाँ । जौलहि नहिं फिर दूसर पिया ॥

तोर यौवन जससमुद्रहिलोरा । देख देख जिय बूड़े मोरा ॥

रंग और नहिं पाई वैसे । जन्म और तुँ पावत कैसे ॥

दो० देखधनुष तोर नयना, मोहिलागा विष वान ।

विहँसँ कमल जो मानै, भँवरँ मिलाऊँ आन ॥

कुमुदिनि तुँ बैरिन नहिं धाई । मोहिंसि<sup>१</sup> बोलछलाँवेसिआई ॥

निरमलँ जगतनीरँ करनामा । जोमसि<sup>२</sup> परैहोयसो श्यामाँ ॥

जहँवाँ धर्म पाप नहिं दीसा । कनकँ सुहागमाँ भजससीसा ॥

जो मसि परै होय शौशिकारी । सोहँसलाय देहेसिमोहिंगारी ॥

कापर महँ न छूट मसि अंकू<sup>३</sup> । सोमसिलायमोहिंदेसकलंकू ॥

श्याम भँवर मोर सूरज करा । औरजो भँवर श्याममसिभरा ॥

कमल भँवर रवि<sup>४</sup> देखै आंखी । चन्दन पास न बैठै मांखी ॥

मुलाकात १-कुरबान २-नामराजा ३-जुदाई ४-नामरानी ५-पाप ६-दुः-  
तरह ७-मजा ८-मर्द ९-दिल १०-तथा बुढ़ापा ११-हँसना १२-तथा दूखरा  
खाविन्द १३-नामदूती १४-कारिख १५-दगा १६-पाकलाफ १७-पानी १८-  
सियाही १९-काला २०-सोना २१-चांद २२-दास २३-पेव २४-सूर्य २५ ॥

दो० श्यामसमुद्रमोरनिरमल, रतनसेनजगसेन ।

दूसर सरै जो कहावै, सो बिलाय जस फेन ॥

पद्मिनिपुनिमसिबोल न बैना । सो मसि देख दुहू तोरनयना ॥

मसि शृंगार सब काजर बोला । मसकबुंदतिलसोहिंकपोला ॥

लौना सोई जहां मसि रेखा । मसिपुतरिनतोहिसेजगदेखा ॥

जो मसिघाल नयनदुहुलीन्हीं । सोमसि फेरजायनहिंकीन्हीं ॥

मसिमुद्रां दुइ कुच उपराहीं । मसिमवराजसकमलभवाहीं ॥

मसि केशहि मसिमौह उरेहीं । मसिबिनदशनशांभनहिंदेहीं ॥

सोकस श्वेत जहांमसि नाहीं । सोकसपिंड न जहंपरछाहीं ॥

दो० अस देवपाल राउ तस, छत्रधरा शिर फेर ।

चितौर राज विसरगा, गयोजोकंभल नेर ॥

सुन देवपाल जोकंभल नेरी । पंकजंनयन भौह धन फेरी ॥

शत्रु मोर पिय कर देवपालू । सो कितपूच सिंहसरं भालू ॥

दुखन भरा तन जेतन केशा । तेहेकसदेशसुनावसि बेश्या ॥

सोननदी असमोरपियगरवा । पाहन होय परै जो हरवां ॥

जेहि ऊपर असगरुआ पीउ । सो कस डोलाये डोलै जीउ ॥

फेरत नयन चीरं सो छूटी । भइ कूटन कुटनी तस कूटी ॥

नाक कान काटी मसिलाई । मूड मूडके गदहे चढाई ॥

दो० मुहमदगरुजोविधि लिखी, काकोई तोहिफूक ।

जेहिकभार जग थिर रहा, उडेनपवनकेभूक ॥

पाकलाक १ दुनिया का देखनेवाला २ चराचरी ३ बात ४ गाल ५ खूबसूरत ६ छाप ७ छाती ८ बाल ९ दांत १० सफेद ११ बदन १२ नाम मुत्क १३ कमल १४ पद्मावत १५ दुश्मन १६ शेरकी चराचरी १७ रीझ १८ पत्थर १९ वहिजाना २० लहंगा २१ सियाही २२ ईश्वर २३ कायम २४ ॥

रानी धर्म सार पुनि साजा । बन्द मोप जेहिं पावहिं राजा ॥  
 जहँ तक परदेशी चलिआवा । अन्नदान औ पानि पियावा ॥  
 योगी यती आव जित कंथो । पूछी पियाजान कोउ पंथी ॥  
 दान जो देत बांह भइ ऊंची । जायशाहपहँ वात जो पहुँची ॥  
 पातुरिइकहुतयोग सु आंगी । शाहँ उघारे हत वह मांगी ॥  
 योगिनवेष वियोगिनकीन्हीं । सुनके शब्द मोलततकीन्हीं ॥  
 पझिनिपहँ पठईकर योगिन । वेगँआनकरविहवियोगिन ॥

दो० चित्र कला मन मोहन, परकाया परवेश ।

आयचढ़ी चितौसगढ़ होययोगिनकरशेष ॥

खण्ड चालीसवाँ वेश्यागमन ॥

मांगत राज वार चल आई । फेर चेरि यह बात जनाई ॥  
 योगिन एक वार है कोई । मांगी जैसि वियोगिन होई ॥  
 अवहीं नवयौवन तपलीन्हीं । फार पटोरों कन्थी कीन्हीं ॥  
 विरह विभूत जटा वैरागी । छाला कांध जाँप कँठलागी ॥  
 मुदाँ श्रवणै नहीं थिरि जीउ । तन त्रिशूल आधारी पीउ ॥  
 छाता छाहँ धूप जनु मरै । पांयन पँवरी भूमल जरै ॥  
 श्रुंही शब्द धंधारी करा । जरै सो ठाँउँ जहां पैग धरा ॥

दो० किंगरी गहे वियोग वजावे, वारहि वार सुनाउ ।

नयनचक्रचुँदिशिँ निरखिँ, धौंदरगनकवपाउ ॥

खैरातखाना १ वेपथाले २ मुसाफिर ३ मकार ४ शाह ने बुलाया ५  
 पद्मावतको ल व इनाम पावेगी ६ ज२६ ७ त० ३४ ८ द० २४ ९-११-२४  
 दासी १० दुखी १२ नवजवान १३ सारी १४ गुंढही १५ माला १६  
 बाला १७ कान १८ कायम १९ खड़ाऊँ २० गृंही वजा को तरह आवाज  
 मस्ताना २१ जगह २२ पैर २३ तरफ २४ देखना २६ ॥

सुनि पद्मावत मंदिर बोलाई । पूछी कौन देश ते आई ॥  
 तरुणवैस तोहि छाजन योग । केहिकारण असकीन्ह बियोग ॥  
 कहेसि विरह दुख जान न कोई । विरहिन जान विरह जेहि होई ॥  
 कन्त हमार गयो परदेशा । तेहिकारण हमयोगिन भेशा ॥  
 काकर जिय यौवन औ देहा । जोपिय गयो भयो सब खेहो ॥  
 फारपटोर कीन्ह मन कन्था । जहाँपि उभिलै लेहुँ सो पन्था ॥  
 फिरो करौ चहुँ बक्र पुकारा । जटा परी को शीर्ष सँभारा ॥  
 दो० हिरदय भीतर पिय बसै, मिलै न पूछे काहि ।  
 मून जगत सब लागै, वह विन कलून आहि ॥  
 श्रवण छेदमें सुद्रो मेला । शब्द उनाउं कहाँ पिय गेलौ ॥  
 तेहि धियोग सिंही नितपूरी । बारवार किंगरी भइ भूरी ॥  
 को मोहिं लै पिय कंठ लगावै । परम अधारी बात जनावै ॥  
 पांवरें टूट चलतगा छाला । मन न सरे तन यौवनवाला ॥  
 गयो प्रयाग मिला नहि पीठ । करवट लीन्ह दीन्ह बलजीव ॥  
 जाय बनारस जाखों कयों । पारथों पिण्ड नहायो गया ॥  
 जगन्नाथ चक्रहिं के आय । पुनिसो द्वारका जाय नहाय ॥  
 दो० जायकेदारा दागतन, तहँ न मिला तन आक ॥  
 ढूँढि अयोध्या आय फिर, स्वर्गदारी भाक ॥  
 गउमुखें हरिद्वारें फिर कीन्हों । नगरकोटें कितरसनादीन्हों ॥  
 ढूँढें वालें नाथ कर दीला । मथुरामथ्योनसोपिय मेला ॥  
 मूर्यकुण्डें महँ जाखों देहा । वद्री मिला न जासो नेहा ॥

नवजवान १ दुख २-१४ वास्ते ३ धूर ४ सारी ५ गुदड़ी ६ राह ७  
 शिर ८ दिल ९ कान १० बालों ११ आवाज़ १२ जाना १३ शेर १४ नाम  
 बाजा १५ गले १७ खड़ाक १८ शिरकटाना १९ तप किया २० पता २१ नाम  
 तीर्थ २२ से २३ तक ॥

रामकुराड गोमति गुरुद्वारू । दाहिनवर्त कीन्ह कै भारू ॥

सेतुबन्ध कैलास सुमेरू । गयोअलखपुर जहांगंभीरू ॥

ब्रह्मवर्त ब्रह्मावर्त परसी । बेनी संगम सीमों करसी ॥

नीलकंठ मिश्रिष कुरुजेठो । गोरखनाथ अस्थान समेटा ॥

दो० पटना पूर्व सो घर घर, हाड़ फिखों संसार ।

हेरत कहूँ नपियमिला, नाकोइमिलवनहारा ॥

वन बन सब हेखों नवखण्डा । जलजलनदी अठारहगरडा ॥

चौसठ तीर्थ कीन्ह सब ठाऊँ । लेत फिखों वह पियकरनाऊँ ॥

देहली सब देख्यों तुरकानू । औसुलतान केर वंदवानू ॥

रतनसेन देख्यों बंद माहां । जरै धूप खन पावन छाहां ॥

सब राजा बांधे औ दागी । योगिनजान राजपंगलागी ॥

कासोंभोगे जहअन्त न गयऊ । यहदुखलैसोगयोसुखदयऊ ॥

देहलीनाउं न जानों ढीली । सठवँद गाढ़निकसनहिंगेली ॥

दो० देख दरुंध दुखताकर, अमो कयों नहिं जीउ ।

सो धनै कैसेवहजिये, जाकर अस वंदपीउ ॥

पद्मावत जो सुना वंद पीउ । पराअग्निनिमहँ जानहुधीउ ॥

दौर पांय योगिन के परी । उठी आग योगिनपुनिजरी ॥

पांय देहु दुइ नयन न लाऊँ । लैचल तहां कन्तजेहिठाऊँ ॥

जेहि नयनन तुइ देखा पीउ । मोहिं देखाय देव बल जीउ ॥

सत औ धर्म देउं सब तोहीं । पियकी बात क्रहै जो मोहीं ॥

तुइ मोर गुरु तोरहौं चेली । भूली फिरत पन्थ जें मेली ॥

नामतीर्थ १ से १४ तक । नामयोगी १५ मकान १६ दूढ़ना १७ कैद-  
खाना १८ कभू छाया नहीं पाता १९ पालागन राजाने किया २० लेकिन  
क्या अस्त्रियार जहां दखल औरका न हो २१ भारी कैदखाना जहां से नि-  
कलना मुश्किल है २२ जलना २३ वदन २४ औरत तथा पद्मावत २५ राह २६ ॥

दरदणकं मायां कर मोरे । योगिनहोउँ चलोँसँग तोरे ॥

दो० सखिन कहापद्मावतहि, प्रगट करोना भेशँ ।

योगी जुगवे गुप्त मन, लै गुरुकर उपदेश ॥

भीख लेहु योगिन फिर मांगू । कन्त न पाई खीन सुवांगू ॥

यह बड़योग वियोग जोसहा । जैसे पिय राखै तुम रहा ॥

घरही मँहँ रहु भई उदासा । अंचलखप्पर श्रृंगी श्वासा ॥

रहै प्रेम मन उरभा लटा । विरह हँदरै परहिँ शिरजटा ॥

नयन चक्र लावै लै पन्था । कार्यां कापर सोई कन्थां ॥

छालाभूमि<sup>२</sup> गगन<sup>३</sup>शिरछाता । रंगरङ्ग रहि हिरदें<sup>४</sup> रातां ॥

मनमाला पहिरे तंत ओहीं । पाँचौं<sup>५</sup> भूत भस्म तन होहीं ॥

दो० श्रवणै<sup>६</sup>कुंडलमुनिपियवचनं, पाँवरं पांयपरेह ।

दरदणकं गोरौं बादलहि, जाय अधौरी लेह ॥

सखिन बुझाई दग्ध अपारा । गइ गोरा बादलै केवारीं ॥

चरण कमल भुईंजन्मन धरी । जात तहां लग छाला परी ॥

निकस आय सुन क्षत्री दोऊ । तस काँपै जस काँप न कोऊ ॥

केश छोर चरणन रज भारी । कहां पाँउ पद्मावत धारी ॥

राखा आन पाँट सुन वानी । विरह वियोगन बैठी रानी ॥

चँवर दार है चँवर डुलावहिं । माथे छात रजायसु पावहिं ॥

उलट वहा गंगाकर पानी । सेवक बौरन आवहिं रानी ॥

दो० काअसकष्ट कीन्ह जिय, जो तुमकरतनछाज ।

पकघटी १-२१ नेहरवानी २ जाहिर ३ भेद ४ छिया ५ ओछों के फरेव  
से ६ नामराजा ७ भापे ८ राह ९ बदन १० सुवहो ११ जमीन १२ आस-  
मान १३ खून १४ दिल १५ लाल १६ आंख कान नाक जबान छूना १७  
कान १८ बात १९ खड़ाऊँ २० नाममंत्री २१-२५ सहारा २२ आंग २४  
दरवाजा २६-२६ सोने का तख्त २७ हुकूम २८ ॥



आज्ञां होय बेगें सो, जीव तुम्हारे काज ॥  
 खरडइकतालीसवां पद्मावत वा गौराबादल  
 संवाद ॥

कही रोय पद्मावत बाता । नयनहिं रक्त देख जगरतां ॥  
 उलट समुद्रजस माणिकं भरे । रोवसि रुधिर आंशुतस ढरे ॥  
 स्तनके रंग नयन पै वारों । रती रती के लोहू ढारों ॥  
 कमलहि ऊपर भँवर उड़ाऊं । लैचलि तहां सूर्यजहँ पाऊं ॥  
 हियँ कर हरद बदन कै लोहू । जियबलदेउँसोसँवर बिछोहूँ ॥  
 परहिं आंशुजस सावन नीरूँ । हरियरि भूमि कुसुंभी चीरूँ ॥  
 चढ़ी भुवंगिनं लट लटकेशा । भइ रोवत योगिन के भेशा ॥

दो० बीरबहूटी भै चलें, तोहू रहहि न आंस ।

नयनहिं पथं न सूमै, लाग्यो भादौं मास ॥

तुम गौराबादलें खँभ दौऊ । जस रणभारत और न कोऊ ॥  
 दुखबर्षा अब रही न राखा । मूलें पतार स्वर्ग भइ शाखा ॥  
 व्यापारही सकलें महि पूरी । बिरह बेल भइ बाढ़ खजूरी ॥  
 तेहिं दुख लेत बूझें बन बाढ़ी । शीशैं उघारें रोवहिं ठाढ़ी ॥  
 भूमि पूर सायरं दुख पाटा । कौड़ी भई फेर हियें फाटा ॥  
 बेहरि हिये खजूरकर बिया । बेहरिनाहिंमोर पाहेंन हिया ॥  
 पियजेहिं बँद योगिन ह्वै धाऊं । हों बंधूलों पियमकरौंऊं ॥

दो० सूर्य ग्रहण गरासा, कमल न बैठी पाँट ।

हुकम १ जलद २ लाल ३ जवाहिर ४ खून ५ छाती ६-२१ जुदाई ७  
 पानी ८ ज़मीन ९-१६-१६ नागिन १० राह ११ नाममंत्री १२ जड़ १३  
 आसमान १४ सब १५ पैड़ १७ शिर १८ तालाब २० फटना २२ दिल २३  
 पत्थर २४ छोड़ाना २५ तख्त २६ ॥

सुहूँ पंथ तहँ गवनब, कंत गये जेहि बाट ॥  
 गोरवादल दोऊ पसीजे । रोवतरुधिर शीश लहिभीजे ॥  
 हम राजा सों यही कुहाने । तुमनहिं मिलो धरे तुरकाने ॥  
 जोमंति सुन हम आयकुहाये । सो नियान हम माथे आये ॥  
 जवलगि जियेन भांगहिदोऊ । स्वामिनजियकितयोगिनहोऊ ॥  
 उये अगस्त्य हस्ति अवगाजा । नीर घटें घर आवैं राजा ॥  
 वर्षा गयो अगस्त्य की दीठी । परै पलान न तुरगन पीठी ॥  
 वेधों राहु हंडाऊ मूरु । रहै न दुखकर मूल अंगूरु ॥  
 दो० वह सूरज तुम शशिवदन, आनमिलाऊँ सोय ।  
 तसदुखमहँ सुख उर्पजै, रयनिमांफु दिनहोय ॥  
 लीन्ह पान वादल औ गौरा । गहि लैदेउपम तुम जोरा ॥  
 तुमसावन्तन सरवरं कोऊ । तुमहनुमत अंगदंसम दोऊ ॥  
 तुम अर्जुन औ भीम भुवारा । तुमबलवीर सो मन्दन हारा ॥  
 तुम दारन भान जग जानी । तुमसोंपुरुष औ कर्ण बखानी ॥  
 तुम अस मेरे वादल गौरा । काकर मुख हेरों बंदछोरा ॥  
 जस हनुमत राघव बंद छोरी । तस तुम छोर मिलावहु जोरी ॥  
 दो० जैसे जरत लक्ष घर, साहस कान्हा भीउ ।  
 जरत खम्भ तस काढो, कै पुरषारथ जीउ ॥  
 रामलपण सम दैत्य संहारा । तुमहीं घरबलभद्र भुवारा ॥  
 तुम द्रोनी औ पितागे गेऊ । तुम लेखो ईश्वर सहदेऊ ॥

नाममंत्री १ खून २ शिर ३ खफा होना ४ सलाह ५ आखिर ६ नाम  
 नखत ७-८ पानी ९ निगाह १० चारजामा ११ घोड़ा १२ सूर्य १३ जड़ १४  
 चांद १५ पैदा १६ रात १७ जोड़ी मिलादौ १८ बहादुर १९ बराबर २०-२६  
 नामशरवीर २१-२२-२३-२४-२५-२६-२७-२८-२९-३०-३१-३२-३३ देखना ३४ बहादुरी ३५  
 बलभद्रका घर खराब किया ३० ॥

तुमहु युधिष्ठिर औ दुयोधन । तुमहु भोजन लौ दोउसम्बोधन ॥

तुमराधर्व परशुराम औ योधा । तुमपरतज्ञा औ हत बोधा ॥

तुमहु शत्रुहन भरत कुमार । तुम कंसहि चाणूर संहार ॥

तुमप्रद्युम्न औ अनिरुध दोऊ । तुमअभिमन्यु बोलसवकोऊ ॥

तुम सर पूजनविक्रम शाके । तुमहरिचन्द हमीर सत माके ॥

दो० जस अतिसङ्कट पांढवन; भयोभीम वंदछोर ।

तस परवश पर काहहु, राखलेहु ब्रह्ममोर ॥

गोरा बादल बीरा लीन्हा । जसहनुमत अंगदवलकीन्हा ॥

साज सिंहासन ताना छातू । तुम माथे युग युग अहिवातू ॥

कमलचरण भुइधर दुखपावहु । चढ सिंहासनमँदिरसिधावहु ॥

सुनसूरजकमलहिजियजागा । केसर वरन पवन हियलागा ॥

जनुनिशि मुहअबदीन्हदेखाई । भाउदोत मसि गईविलाई ॥

चढी सिंहासन अमकतचली । जानहु चांद दुइज निरमली ॥

औ संग सखी कुँमोद तराई । ढारत चँवर मँदिर लै आई ॥

दो० देख दुइज सिंहासन, शंकर धरा ललाटे ।

कमल चरण पद्मावत, लै वैठारी पाँटे ॥

**खण्ड बयालीसवां गोराबादल गवन ॥**

बादल केर जसोदी माया । आय गही बादल के पाया ॥

बादल राय मोर तुइ वारा । काजानेसिकसहोयजुभारा ॥

नामशूरवीर १-२-३ श्रीरामचन्द्रजी ४ नाम महाशूरवीर ५-६-१०-२१  
 कौल ६ भाईश्रीरामचन्द्र ७-८ मारना ११ बेटा श्रीकृष्ण १२ पोता श्री-  
 कृष्ण १३ बेटा अर्जुन १४ बराबरी १५ विक्रमादित्य १६ नामराजा १७-१८  
 संचबोलनेवाले १९ राजा युधिष्ठिर २० उसीतरह इस वक्रमें मदकरो २२  
 नाममन्त्री २३ रंग २४ रात २५ रोशन २६ सियाही २७ साफ २८ कोका-  
 बेली २९ नखत ३० माथा ३१ तरुत ३२ लड़ाई ३३ ॥

बादशाह भूमीपति राजा । सन्मुख है न हमीरहिद्याजा ॥

अत्तिसलाखतुरी जेहिसाजहिं । बीससहसहस्तीदल गाजहिं ॥

जवहीं आय बदे दल ठया । देखत जैसे गगन घनघटा ॥

चमकहिं खड्ग जोबीजसमाना । डुमरहिंगलगाजहिंनिशाना ॥

बरसहिं सेल वान घनघोरा । धीरज धीर न बांधे तोरा ॥

दो० जहां दलपती दलमलहिं, तहां तोरका काज ।

आज गवन तोर आवै, बैठमान मुखराज ॥

मातन जानेसि बालकेंआदी । हौं बादला सिंह रन बादी ॥

मुनगजजूहें अधिकजिउतपा । सिंह जातकहुँरहैनहिं छिपा ॥

तवलग गाजन गाजसँडेला । सौहें शाहसों जुरों अकेला ॥

को मोहिं सौह होय मैमन्ता । फारों सँड उखारों दन्ता ॥

जरो स्वामें सकरे जस दारा । औ वलें जस डुर्योधन मारा ॥

अङ्गदकोप पांव जस राखा । टेकों कटकें छतीसों लाखा ॥

हनुमत सरस जङ्घपर जोरों । दहों समुद्र स्वामें बँद छोरों ॥

दो० जो तुम मात जसोदी, मोहिं न जानो बार ।

जहें राजा बलबांधा, छोरों पैठ पतार ॥

बादल गवन जूझकहेंसाजा । तैसहिं गवन आय घरबाजा ॥

लिये साथ गवने कर चारू । चन्द्रवदन रचकीन्ह शिंगारू ॥

मांग मोति भर सेंदुर पूरा । बैठ मयूर बांक तस जूरा ॥

भौहें धनुष टकोर परीखी । काजरनयनमारशरतीखी ॥

बोड़ा १ हाथो २ आसमान ३ तलवार ४ बिजुली ५ परहरा ६-१४ गोला ७ तार ८ बड़े राजा ९ छोटा लड़का १० शेर ११-१३ हाथियों का हलका १२ सामने १५ मस्त १६ मालिक का काम करों १७ नाम महाशूरवीर १८-१९ फौज २० राजा २१ पहुँचा २२ मोर २३ फमान २४ तार २५ कटीली २६ ॥

घाल कचबची टीका सजा । तिलकजो देखठाउं जिउतजा ॥

मणिकुण्डलडोलै दुइश्रवना । शीशधुनहि मुनिमुनिपियगवना ॥

नागिनअलकं भूलकउरं हारू । भयो भृंगार कंत विन भारू ॥

दो० गवन जो आयो पँवरं महं, पिय गवने परदेश ।

सखीबुभावहिं किमँअनलं, हुँसैसोकेहिउपदेश ॥

मान गवन जस घूँघट काढी । विनवै आय वारं भइ ठाढी ॥

तीषी हेरं चौर गँहि ओढा । कंतनहेरं कीन्ह जियपोढा ॥

तबधनं कीन्हबेहँसं चंपं दीठी । बादलँतवहिं दीन्ह फिरपीठी ॥

मुख फिराय मन अपने रीसा । चलतनतिरियाकरमुखदीसाँ ॥

भामिनं भेष नारिके लेखे । कसपिउ पीठ दीन्ह मुँहदेखे ॥

मँकुं पिय दँष्टि समानो बालू । हुँलँसे पीठ गढाऊँ सालू ॥

कुँचं तोवी अब पीठ गढोऊँ । गहेसिँ जोहूककाढरिसधोऊँ ॥

दो० रहूलजाय तोपिय चलै, कहाँतो कहिमुहिं दीठं ।

ठाढ तेवानी काकरो, भारी दोऊबसीठं ॥

लाजकिये जो पियनहिं पाऊँ । तजो लाज करं जोर मनाऊँ ॥

कर हठ कंत जायजेहिलाजा । घूँघट लाज आवकेहिकाजा ॥

तब धन बेहँसं कहा गहिफेठ । नारिजो विनवै कंत न मेठा ॥

आज गवन हूँ आई नाँहां । तुम न कंत गवनो रनमाहां ॥

गवन आव धनमिलनकिताई । कौन गवन जो विछुड़े साइँ ॥

नाम नखत १ कान २ शिर ३ बाल ४ छाती ५-२३ दरवाजा ६ जाना  
सिधारना ७ किसतरह ८ आग ९ ड्योढी १० कटीली निगाहसे देखा ११  
खींचना १२ देखना १३-१८ औरत बादल की १४ हँसना १५ आँख १६  
नाममंत्री १७ औरतका शकुन बदसमागया १८ शायद २० निगाह २१  
पीठ देख तसकीनकी २२ खींचाकि दिलका दुख निकल जावे २४ शोख २५  
दोनों छाती २६ हाथ २७ हँसना २८ अर्ज २९ खाविन्द ३०-३१ ॥

धन न नयन भर देखा पीऊ । पिया न मिल धनसो भरजीऊ ॥  
 तेहिसव आस भरा है केवा । भँवरन तँजै वास रस लेवा ॥  
 दो० पावनधरा ललाट धन, विनय सुनहु हो राय ।  
 अलक परा फँदवार है, कैसहिं तँजै न पाय ॥  
 झाड़ फेटे धन वादल कहा । पुरुषगवन धन फेट न गहाँ ॥  
 जो तुइँगवन आयगजगामी । गवन मोर जहँवाँ मोरस्वामी ॥  
 जब लग राजा छूट न आवा । भावै वीर श्रृंगार न भावा ॥  
 तिरिया भूमि खड्ग की चेरी । जीत जो खड्ग होय तेहिकेरी ॥  
 जेहिं घर खड्ग मूठ तहँ गाढी । तहां न अंडन मूछ न दाढी ॥  
 तव मुँह मूछ जीव पर खेलों । स्वामिकाज इन्द्रासन पेलों ॥  
 पुरुष के<sup>३</sup> बोल टै नहिं पावू । दर्शन गयन्द ग्रीव नहिंकावू ॥  
 दो० तुइँ अवलौ धन कुबुधं बुध, जानै कहाजुभारं ।  
 जेहि पुरुषहिं हिर्य वीररस, भावै तेहि न श्रृंगार ॥  
 जो तुमचहो जूफ पिय वाजा । कीन्ह श्रृंगार जूफ मैं साजा ॥  
 यौवन आय सौँह है रोपा । पिघला बिरहकामदल कोपा ॥  
 भयो वीररस सेंदुर मांगा । रातौरुधिर खड्गजस नांगा ॥  
 भौह धनुष नयन शर सांधे । बरनै वीज काजर विषबांधे ॥  
 दय कयसँ सौँ सान सँवारी । औ मुखसेलभाल अनयौरी ॥  
 अलक फासभिवँ मेलअमूभा । अधरँ अधरसों चाहहिंजूभा ॥  
 कुंभस्थल कुंच दोउ मैमन्ता । पेलों सौँह सँभारहु कन्ता ॥

कमल १ छोड़ना २ माथा ३ बाल ४ कमर ५ औरत ६ पकड़ना ७ हाथीकी चाल ८ लड़ना ९ ज़मीन १० तलवार ११ मर्द १२-१८ वांतहाथी के १३ गरदन कछुवाकी १४ नादान १५ कमअल १६ लड़ाई १७ दिल १८ सामने २० लालखून २१ तौर २२ पलक बिजुली की तरह २३ तिरछी निगाह २४ नाकाले २५ बाल २६ गर्दन २७ होंठ २८ हाथी मस्त २९ छाती ३० मुक्ताविल ३१ ॥

दो० कोप शृंगार विरह दल, दूटहोय दुइ आध ।

पहिले मोहि संग्रामकै, करहुजूभकी साथे ॥

कैसहुँ कंत फिरै ना फेरी । आग परी चितौर धन केरी ॥

उठी सो धूम नयन गरवानी । लागे परे आंशु महरानी ॥

भीजेहार चीरै हिये चोली । रही अन्नूत कंत नहिं खोली ॥

भीजेलाग चुवै कटमुण्डन । भीजे भँवरकमलशिरफुन्दन ॥

चुइ चुइ काजर अँचरा भीजा । तवहुँ न पियके रोवै पसीजा ॥

छाँड़चला हिरदयँ दयदाहूँ । निदुरनाहँ आपननहिकाहूँ ॥

सबै शृंगार भीज भुइँ चुवा । छारँमिलायकन्त नहिं छुवा ॥

दो० रोये कन्त न वहुरे, तेहि रोये का काज ।

कन्तधरामनजूभरन, धनँ साजीसबसाज ॥

खण्ड तँतालीसवाँ गोरावादलवर्णन ॥

मँते वैठ बादलँ औ गोरा । सोमत कीजे परनहिं भोरी ॥

पुरुषँ न करै नारिमत कांची । जसनौशावाँ कीन्ह न वांची ॥

चढा हाथ इसकन्दरँ वैरी । सकतँ छाँड़ के भई वँदेरी ॥

सजगँ जोनाहँमारवल कांधा । बुधँ कहियेहँस्ती कावांधा ॥

देवतनचले आय अस आंठी । सुरजनँ कञ्चनँ दुरजनँ माठी ॥

कञ्चन लुरै भये दश खाँड़ा । फूटन मिलै छोरँ कर भाँड़ा ॥

जस तुरकहिं राजा छलसाजा । तस हमसाजछुड़ावहिराजा ॥

दो० पुरुष तहांही छल करै, जहँवल कैसोन आँटँ ।

लड़ाई १ इरादा २ धुवाँ ३ सारी ४ छाती ५-७ कुरती ६ जलन ८ का-  
विन्द ९-११ धूर १० औरत १२ सलाह १३ नाममंत्री १४ हँसी १५ मर्द १६  
नामशाहजादी १७ नाम वादशाह १८ उसको छोड़ दिया १९ होशियार २०  
अकलमन्द २१ हाथी २२ दोस्त २३ सोना २४ दुश्मन २५ माटी २६  
पहुँचना २७ ॥

जहां फूल तहँ फूल है, जहां कांट तहँ कांट ॥

सोरह सै चण्डोल सवारी । कुँवर सजोयल तहँ बैठारी ॥

पद्मावत कर साज बेवानू । बैठ लुहार न जानै भानू ॥

रच बेवान सौ साज सँवारा । चहुँदिशि चमरकरहि सबदारा ॥

साज सबै चण्डोल चलाई । सुरंग उहार मोति बहु लाई ॥

भय संग गोरौ बादल बली । कहत चले पद्मावत चली ॥

हीरा रतन पदारथ भूलहि । देख बिमान देवता भूलहि ॥

सोरह सै संग चली सहेली । कमल न रहा और को बेली ॥

दो० राज छुड़ावन रानिचलि, आपहोय तहँ ओल ।

तीससहस्र तुरि खीचसंग, सोरहसै चण्डोल ॥

राजा बंद जेहिके सौपना । गागोरौ तापहँ अगमनी ॥

टका लाख दशदीन्ह अकोरौ । विनती कीन्हपांयगहिगोरा ॥

विनती बादशाह सौ जाई । अब रानी पद्मावत आई ॥

विनती करै आयहूँ देहिली । चितौरकी मोसौ है कीली ॥

विनती करै जहां है पूजी । सब अँडारौ की मोसौ कुँजी ॥

एक घड़ी जो अज्ञाँ पाऊँ । राजा सौंप मँदिर महँ आऊँ ॥

तब रखवारुँ गये मुलतानी । देख अकोरौ भये जसपानी ॥

दो० लीन्ह अँकोर हाथ जो, जीउ दीन्ह तेहि हाथ ।

जो वह कहै करैसो, कहीं छाँड नहिँ माथ ॥

लोभ पाप की नदी अकोरौ । सँत न रहै हाथ जो बोरौ ॥

जहँ अकोर तहँ नेकै न राजू । ठाकुरकेर बिनाशहिँ काजू ॥

बहादुर १ सूर्य २ चारोंतरफ ३ औरत ४ राजमंत्री ५-१० जवाहिरात ६ चण्डोल ७ तीसहजार ८ घोड़ा ९ पहिले ११ रिशवत-नजराना १२-२१-२२-२३ अज्ञ १३-१४-१५-१७ कुँजी १६ खजाना १८ हुकूम १९ दारोसा २० ईमान २४ राजअच्छा नहीं २५ खराब २६ ॥



भा जिव धिव रखवारी केरा । द्रव्य लोभ चौडोल न हेरा ॥  
जाय शाह आगे शिर नावा । ऐजग सूर चांदचलिआवा ॥  
जानवन्त सब नखत तराई । सोरहसै चणडोल जो आई ॥  
चित्तौर जेत राज की पुञ्जी । लैसो आय पद्मावत कुञ्जी ॥  
विनेती करै जोर करै खड़ी । लै सौंपों राजा इक घड़ी ॥  
दो० यहां वहां के स्वामी, दोहूँ जगत मोहिं आशं ।

पहिले दरश देखाव नृपै, तव आऊँ कैलाश ॥

अज्ञां भई जाय इक घरी । छूँछ जो घरी फेर विधि<sup>१०</sup> भरी ॥  
चलि विमान राजापहँ आवा । संग चौडोल जगत सबछावा ॥  
पद्मावत के वेप<sup>२</sup> लोहारू । निकसकाटिवँद<sup>३</sup> कीन्हजोहारू ॥  
उठा कोप जस छूय राजा । चढातुरङ्ग<sup>४</sup> सिंह असगाजा ॥  
गोरा बादल खाड़े<sup>५</sup> काढे । निकस कुँवरचढचढ भे ठाढे ॥  
तीर्ष<sup>६</sup> तुरङ्गगर्न शिरलागा । कौन जुगत कर टकै वागा ॥  
जो जिय ऊपर खड्ग सँभारा । मरणहार सो सहँसहिं मारा ॥  
दो० भइ पुकार शाहसों, शशि<sup>७</sup> औ नखत सो नाहिं ।

छलकै ग्रहन गिरासा, ग्रहन गिरासी छहिं ॥

लै राजा चितौर कहँ चले । छूटो मिरग<sup>८</sup> सिंह करवले ॥  
चढा शाह चढ लाग गुहारी । कटक<sup>९</sup> असूभपरी जगकारी ॥  
फिर गोरा बादल सो कहा । ग्रहन<sup>१०</sup> छूट पुनि<sup>११</sup> चाहै गहा ॥  
चहुँदिशि<sup>१२</sup> आवालोपत भानू । अब यह गोय यही मैदानू ॥

तलाशालिना १ सूर्य २ सखी-सहेली ३ अर्ज ४ हाथ ५ मालिक ६ उम्मेद  
७ राजा ८ हुकम ९ ईश्वर १० चणडोल ११ सुरत १२ वेदी १३ सलाम १४  
घोड़ा १५-१६ शेर १६-२४ नाममंजी १७ तलवार १८ आसमान २० हज़ार  
२१ चांद तथा पद्मावत २२ हरिण २३ फौज २५ राजा २६ फेर २७ चारोंतरफ़  
२८ सूर्य २९ ॥

तुँई अब राजा लैचल गोरा । हों अब उलटजंरों भाजोरा ॥

वहँ चौगान तुर्क कस खेला । है खिलार रणजरो अकेला ॥

तव पाऊँ बादल अस नाउँ । जब मैदान गोय लै जाउँ ॥

दो० आजखड्ग चौगान गँहि, करोंशीशै रण गोय ।

खेलों सौँहँ शाहसो, हाल जगत महँ होय ॥

तव अगमनँ है गोरों मिला । तुँई राजा लै चल बादलाँ ॥

पिताँ मरे जो सारी साथे । मीचँ न देय पूतके साथे ॥

मैं अब आँयुँ भरी और भूँजी । का पछताव आय जो पूँजी ॥

बहुतहि मार मरों जो जूभी । ताकहँ जन राखहु मनबूभी ॥

कुँवरसहसँ सँगगोरों लीन्हीं । और वीरवादलँ सँग कीन्हीं ॥

गोरहिँ समुद्र मेघअसगाजा । चला लीन्ह आगेकर राजा ॥

गोरों उलट खेतभा ठाढ़ा । पूरुपँ देख चाँउँ मनवाढ़ा ॥

दो० आवकटर्क सुलतानी, गर्गनँ छिपाँमंसि मांफ ।

परत आव जग करी, होत आव दिन सांफ ॥

है मैदान परी अब गोय । खेलहार वहँ काकर होय ॥

यौवन तुँरी चढी जो रानी । चलीजीत अति खेलसयानी ॥

कटिँ चौगानगोय कुँचँ साजी । हियँ मैदान चली लै बाजी ॥

हालँ सो करै गोयलै वाढ़ा । गोली दुहँ पैचकै काढ़ा ॥

भइ पहार वै दोनों गोरीँ । दृष्टिँ नेर पहुँचत सुठ दूरी ॥

ठाढ़े वाण चलहिँ अस दोऊ । शालीँहिँ हियेँ न काढ़ै कोऊ ॥

मुकाबिल १-पकड़ना २ शिर ३ सामने ४ आगे ५ नाममंत्री ६-७ वापकी  
जगह राजा साथे ८ मरना घंटेका न देखेगा ९ उमर १० हजार ११ नाम  
मंत्री १२-१३-१४-१५ मर्द १६ चाह १७ फौज १८ आसमान १९ सियाही २०  
घोड़ा २१ कमर २२ छाती २३ सीना २४ हलचल २५ तथा छाती २६ निगाह  
२७ सुराख २८ दिल २९ ॥

शालहिं तेहि जानेसि है ठाढ़ी । शालहिं तामु चहै उठ काढ़ी ॥

दो० मुहमंद खेल प्रेमका, गहिर कठिन चौगान ।

शीश नदीजे गोय जिमि, हलनहोय मैदान ॥

फिर आगे गोरै तब हाँका । खेलों करों आज रणशार्का ॥

हों खेलों धौलागिरि गोरा । टरों न टारे अङ्ग न मोरा ॥

सोहलै जैस गगन उपराहीं । मेघ घटा मोहिं देख विलाहीं ॥

सहसँ शीशशङ्करसम लेखों । सहसहिंनयन अन्धिभा देखों ॥

चारहुँभुजा चतुरभुज आजू । कसँ न रहा और को साजू ॥

हों है भीम आज रण गाजा । पाँखे घाल डँकोई राजा ॥

होय हनुमंत यमकातरें धाऊं । आजस्वामि शंकरैनियाऊं ॥

दो० है नलै नीलै आजहों, देउँ समुद्रमहिं भेड़ ।

कटकै शाहकर टेकों, है सुमेरु रण वेड़ ॥

उनई घटा चहुँ दिशि आई । छूग्रहिं वारै मेघ भरलाई ॥

डोलै भाहिं देवजस आँदी । पहुँची तुर्क चाँद कहँ वादी ॥

हाथन गहे खड्ग हरवानी । चमकहिंसेल बीजेके वानी ॥

साज बाण जनु आवै गाजाँ । वाँसुकि डरैशीश जनुवाजा ॥

नेजा उठे डरै मन इन्दू । आवहिं पाछजान कवहिन्दू ॥

गौरैसाथ लीन्ह सब साथी । जस मैमन्त सूँड़ विन हाथी ॥

सबमिल पहिलउठौनीलीनीहीं । आवतआय हांक सबकीनीहीं ॥

शिर १ बराबर २ ललकारना ३ बहादुरी ४ नामपहाड़ ५ नामनखत ६

हजार ७ बराबर ८ चारहाथ ९ नाम राजावैत्य १० नाम महाशरवीर ११

मंदद १२ महावीरजी १३ नामकोल्ह १४ मालिकको वचाऊं १५ नाममन्दर

जिन्होंने पुल समुद्र में बांधाथा १६-१७ फौज १८ नाम पहाड़ १९ चारों

तरफ २० तीर २१ पैदाइशी २२ बराबर २३ तलवार २४ विजुली २५-२६

नाम राजा सांप २७ शिर २८ इन्द्र २९ ॥

दो० रुएड मुएड अति टूटहिं, सहिबखतर औ कुंड ।

तुरी होहिं विनकांधे, हस्ति होहिं विनसुंड ॥

उनवतआय सेन सुलतानी । जानहु परलै आवतुलानी ॥

लोहे सेन सूझ सब कारे । तिल इक कहूं न सूझउघारे ॥

सह्न फोलाद तुर्क सब काढे । हरीवीज असचमकहिं ठाढे ॥

पीलवान गज पेलसों बांके । जानहु कालकरहिं जियमाके ॥

जनु यमकात करहिं सबभवां । जियपैचीन्हस्वर्ग अपसवां ॥

सेल सांप जनु चाहै डसा । लीन्हकाढ जियमुखविषवसा ॥

तिन्ह सामहिं गोरी रणकोपा । अंगद सारिस पाउंभुइरोपा ॥

दो० सपुरुष भाग न जाने, भुइं जो फिरफिरलेइ ।

शूर कहें दो कर, स्वामि काज जिउ देइ ॥

भइ वगमेल सेल घनघोरा । औगज पेल अकेलसोगोरा ॥

सहस्र कुंवर सहसहुंसत बांधा । भारपहाड़ जूझकहें बांधा ॥

लाग मरें गोराके आगे । बाग न मोर घावमुख लागे ॥

जैस पतंग आग धंस लीन्हीं । एकमुखै दूसर जिय दीन्हीं ॥

टूटहिं शीशैं उधर धरं मारी । टूटहिं कंधहि कंध निरारी ॥

कोई परहिं सधिरं ह्वै रांती । कोइ घायल घूमहिंमदमाती ॥

कोइ घरखेहै कीन्ह ह्वै भोगी । भस्म चढायवैठ जस योगी ॥

दो० घड़ी एक भारतें भई, भइ असचारहिं मेल ।

जूझिकुंवर सब बैठे, गोरा रहा अकेल ॥

गोरे देख साथ सब जूझा । आपन कालै नेरे भा बूझा ॥

घोड़ा १ हाथी २ फौज ३-५ पहुँची ४ बिजुली ६ हाथीमस्त ७ लेनेवाले ८ यमदूत ९ आसमान पर लेजाना १० नाम मंत्री ११ नाम बन्दर १२ बहादुर १३-१४ हाथ १५ हाथी १६ हजार १७ शिर १८ घड़फेकना १९ अलग २० खून २१ लाल २२ राख २३ लड़ाई २४ मौत २५ ॥

कोप सिंह सामहिं रण मेला । लाखन सौं ना मरै अकेला ॥

लियो हांक हस्तिन की ठटा । जैसे सिंह विदरै घटा ॥

जेहि शिर देइ कोप तरवारू । सें घोड़े दूटहिं असवारू ॥

दूटकंध शिर परै निरारी । माठ मँजीठ जानुरण दारी ॥

खेल फाग सेंदुर छिरकावे । चाचर खेल आग रणलावे ॥

हसंती घोड़ धाय जो धूका । औतेहि दीन्हसोरुधिरै भभूका ॥

दो० भइ अज्ञां सुलतानी, वेगं करहु यह हाथ ।

रतन जात है आगे, लिये पदारथ साथ ॥

सबै कटकै मिल गोरौं छेका । गूँजतसिंहें जायनहिं टेका ॥

जेहिदिशि उठै सोइ जनुखावा । पलटसिंहेंतेहिटाउंनआवा ॥

तुर्क बोलावहिं वोलै नाहां । गोरें मीचें धरी जियमाहां ॥

मुवे पुनि जूझजाज जगदेऊ । जियत न रहा जगतमहँकेऊ ॥

जन जानहु गोरा सो अकेला । सिंहकी मूछ हाथको मेला ॥

सिंह जियतनहिं आप धरावा । मुवे पीछ कोऊ घिसयावा ॥

करै सिंह मुँह सौँहें जो दीठी । जबलग जिये देयनहिंपीठी ॥

दो० रतनसेन जो बांधा, मसिं गोरके गाँतें ।

जब लग रुधिरें न धोऊँ, तबलग होयनराँतें ॥

सुरजाँ वीरसिंह चढ़ गाजा । आय सौँहें गोरा सौं वाजा ॥

पहलवान सो बखाने बली । मदद मीरहमजाँ औ अली ॥

मददअर्युँवै शीशं चढ़ कोपी । महाभारथी नाउँ अँलोपी ॥

शेर १-३ हाथी २-७ फाड़ना ४ अलग ५ लाख ६ लोहू = हुकम. ६ जहद

१० तथा पद्मावत ११ क्रौञ्च १२ नाममंत्री १३ शेर १४-१६-१६ तरफ १५

मौत १७ पेवादशाह वेमरे हाथ न आऊँगा १८ सामने निगाह २० सियाही

२१ बदन २२ खून २३ लाल २४ नाम पहलवान २५-२७-२८ सामने २६ शिर

२६ बड़े बहादुरों का नाम मिटानेवाले ३० ॥

औ तार्या सालार सो आये । जेहि कवरो पांडव बंद पाये ॥  
 लंधौर देव धरा जेहि आवे । औ कोमाल वाद कहँ पावे ॥  
 पहुँचा आय सिंह असवारू । जहां सिंह गोरा बर्यारू ॥  
 मारेसि सांग पेटमहँ धसी । कादेसि हुमुकआंतभुई खसी ॥  
 दो० भाट कहा धनगोरा, तुई महिरावण राउ ।  
 आंत समेटकर बांधे, तुरी देत है पाउ ॥  
 कहेसिअंत अबभाभुई परना । अंतकोनित्तं खेहँ शिरभरना ॥  
 कहिके गरज सिंह असधावा । सुरजा शार्दूल पहँ आवा ॥  
 सुरजें कीन्ह सांगपर घाऊ । परीखड्डं जनुपरा निहाऊँ ॥  
 वज्रकी सांग वज्र का डांडा । उठी आगतस बाजा खांडा ॥  
 जानहु वज्र वज्र सों बाजा । सबही कहापरी अबगाजाँ ॥  
 दूसर खड्डं कंधपर दीन्हीं । सुरजेंवह ओड़न परलीन्हीं ॥  
 तीसर खड्डं कूड़पर लावा । कांधगरज हत घावन आवा ॥  
 दो० तस मारा हतगोरें, उठी वज्रकी आग ।  
 कोउ नेरे नहि आवै, सिहँ सेंदूर लाग ॥  
 तस सुरजा कोपा वरबंडा । जान सेंदूर केर भुज दंडा ॥  
 कोप गरज मारेसि तब बाजा । जानहुपरी तुरतशिरगाजाँ ॥  
 टाटें टूट टूट शिर तामू । सैं सुमेरुँ जनुटूट अकामू ॥  
 धमक उठा सब स्वर्ग पतारू । फिर गइ दीठँ फिरा संसारू ॥  
 भा परलै अस सबही जाना । काटा खड्डं स्वर्ग नियराना ॥

नाम सिपहसालार १ नामदेव २ नामराजा ३ जवरदस्त ४-१६ घोड़ा

५ आखिर ६ हमेशा ७ राख ८ शेरखुर्च ९ नाम पहलवान १० तलवार ११-१४

निहाई १२ विजुली १३-२० ढाल १५ उल्लतलवार पर तलवार परी १६

शेर १७ शेरखुर्च १८ खुपड़ी २१ पहाड़ २२ आसमान २३-२६ निगाह २४

तलवार २५ ॥

तस मारोसि सैं घोड़े काय । धर्ती फांट शेष फणनाथा ॥

अतिजो सिंह वरी है आई । शार्दूल सो कौन वड़ाई ॥

दो० गोरापरा खेतमहँ, सुरै पहुँचावा पान ।

बादलै लैगा राजा, लै चितौर नियरान ॥

पद्मावत मन रही जो भूरी । मुनत सरोवरै हियँ गा पूरी ॥

अब्रँ महँ हुलासै जस होई । मुख मुहाग आदरभा सोई ॥

नयनजोकुमुदिनि लीन्हअँगूरु । उठाकमलअसउगवामूरुं ॥

पुरइन पूर सँवारी पाँठ । औशिर आनधरा शिरध्याता ॥

लाग्यो उदयहोय जस भोरा । श्यनि गईदिनकीन्हअजोरौं ॥

अस्तँ अस्तकै पाई कलौ । आगेवली कटकँ सब चला ॥

देख चाँद अस पद्मिन रानी । सखीकुमोदँ सवैविकसौनी ॥

दो० ग्रहन छूट दिनेरँ कर, शशिँ सो भयो मिलाव ।

मँदिर सिंहासन साजा, बाजा नगर वधाव ॥

बिहँस चाँद दय भांग सेंदूरु । आरत करन चली जहँसूरुं ॥

औगोहँनै शैशि नखत तराई । चितौरकी रानी जहँ ताई ॥

जनु बसन्तऋतु फली जो छूटी । की सावन महँ वीरवहूटी ॥

भा आनँद बाजा पँचतूरा । जगतरातँ है चला सेंदूरा ॥

अति मृदंग मन्दिर बहुवाजे । इन्द्रशब्दै सुन शब्दजोलाजे ॥

देखकन्त जस रविँ प्रकासौं । पद्मावतमनकमल विकासौं ॥

कमल पाँय सूरजके परा । सूरज कमल आनि शिरधरा ॥

दो० सेंदुर फूल तँबोल सो, सखी सहेली साथ ।

शेर १ शेरखुर्च २ देवता ३ नाम मंत्री ४ तालाव ५ छाती ६ नामनखत ७

खुशी ८ कोकावेली ९-१७ सूर्य १० तरुज ११ रात १२ रोशनी १३ रामराम

कर १४ कल १५ फ़ौज १६ खिलाना १८-२० सूर्य १६-२१-२६ चाँद २०-२३

साथ २२ लाल २४ आवाज़ २५ रोशनी २७ ॥

धनं पूजी पियपांय द्य, पियपूजी धनमाथ ॥

पूजा कवन देऊं तुम राजा । सबैतुम्हार आवमोहिं लाजा ॥

तनमय यौवन आरति करेऊं । जीव काह न्योछावर देऊं ॥

पन्थं पूरकर दृष्टि बिछाऊं । तुमपगं धरो शीशं मै लाऊं ॥

राखतपांयपलकनहिं मारों । बरुनिहिं सोंरजं चरणहिंभारों ॥

हिये सोमंदिर तुम्हरो नाहां । नयन पन्थं आवहुतेहिमाहां ॥

बैठोपाटं छत्र नव फेरी । तुम्हरे गर्व गबीं हों चेरी ॥

तुम जियमैतन जौ लहिमयीं । कहै जो जीय करै सोकर्यौं ॥

दो० जोसूरज शिर ऊपर, तबसो कमल शिरछात ।

नाहित भरी सरोवर, सूखी पुरइनपात ॥

परश पांय राजाके रानी । पुनआस्त बादल कहँआनी ॥

पूजे बादल के भुज दरडौं । तुरी केपांउ दाबकरै खरडा ॥

यह गजगवनं गर्व सो मोरा । तुम राखा बादलँ औगोरा ॥

संदुरतिलक जो आंकुश रहा । तुम राखा माथे तौ रहा ॥

कालश्यामं तुमजियपरखेला । तुमजियआनमँजूषों भेला ॥

राखाछात चमर औ दारा । राखा सुदघघटँ भुनकारा ॥

होय ध्वजा हनुमत तुम पैठी । तब चितौर लै आये बैठी ॥

दो० पुनि गजमर्त्त चढ़ावा, नेतँ बिछाई खाट ।

बाजतगाजत राजा, आय वैठ सुख पाटँ ॥

तस राजें रानी कँठलाई । पिय मरजियानारि जनु पाई ॥

पञ्चावत १ राह २-१० निगाह ३ पांड ४ शिर ५ पलक ६ धूर ७ दिल् ८ खा-  
विन्द ९ तफ्त ११-२० गरूर १२ मुहन्वत १३ वदन १४ तालाव १५ नाममंत्रो  
१६-२२ बाजू १७ घोडा १८ हाथ १९ हाथी की चाल २० गरूर २१ खाविन्द  
२३ सन्दूर २४ नाम जेवर २५ हाथी २६ जेरअन्दाज २७ गले लगाई २६ ॥



संझै राजा दुख उगसारा । जियत जीव नाकरो निरारा ॥

कठिनबन्द तुर्कहिं लैगहा । जो सँवरो जिय पेट न रहा ॥

घनगढ़ ऊपर मुहिलै मेला । सांकर औअँधियार दुहेला ॥

क्षणक्षण जीउसडासँहिं आंका । औनित डोमछुधावहिंवांका ॥

पीछे साप रहै चहुँ पासा । भोजन सोई रहे पर श्वासा ॥

पास न तहँवां दूसर कोई । नजनों पवन पानि कस होई ॥

दो० आंस तुम्हारी मिलनकी, तब सो रहा जियपेट ।

नाहितहोत निराश जिय, कितजीवनकितभेंट ॥

तुम पिय आय परे अस बेरा । अबदुखसुनों कमलधन केरा ॥

छोड़ गयो सरवरं महँ मोहीं । सरवर सूख गयो विनतोहीं ॥

केलँ जो करत हंस उड़गयऊ । भानुँ निपटसो बैरी भयऊ ॥

गइ तजँ लहरें पुरयन पाता । सुयो धूप शिर अहो न छाता ॥

भयो मीनँ तन तड़पै लागा । विरह आय वैठो द्वै कागा ॥

काग चोचतस सालँहिनांहां । जस वँदतोर घालहियँ माहां ॥

कहाँ काग अब तहँ लैजाही । जहँवां पिउदेसै मोहिं खाही ॥

दो० कागँ गृध्र नहिँ ऐसो, गढ़ का मारे बहुमंद ।

यह पछतायें सठमरोँ, गयोँ न पियसँगबंद ॥

खण्डचवालीसवां वृत्तांतदेवपाल ॥

तेहि ऊपर का कहीं जो भारी । विषमँ पहाड़ परादुखभारी ॥

दूती इक देवपाल पठाई । ब्राह्मण वेप छलै मोहिँआई ॥

अकेले में १ खोलना २ अलग ३ भारीकैद ४ पेचदार किला ५ बहुत ६ घड़ीघड़ी ७ शोशागम ८ पद्मावत ९ तालाच १० खुशी ११ सूर्य १२ छोड़ना १३ मछली १४ सूर्याख १५ खाविन्द १६ छाती १७ कौवे और गृध्रका वखल न था ऐसा किला रक्षाका था १८ देहा १९ ॥

कहै तोर हों आहि सहेली । चल लैजाउँ भँवर जहँबेली ॥

तब मैं ज्ञान कीन्ह सतबांधा । वहकर बोल लागि विषसांधा ॥

कहूँ कमल नहिं करत अहेरौ । जोहै भँवर करे सें फेरा ॥

पांचभूत आत्मा नेवाखों । बारहि बार फिरत मनमाखों ॥

रोय बुभार्यो आपन हियराँ । कंत न दूर अहै सुठ नियरा ॥

दो० फूल वास धिव क्षीर ज्यों, नीर मिलाय मिठाइ ।

तस नुकाँ घट जेवरी, हिय दुख नाहिं कहाइ ॥

सुनि देवपाल राय करचालू । राजा कठिन परा हियशालू ॥

दादरें पुनि सो कमलकर भेखा । गीदरमुख न शूरकर देखा ॥

अपने रंग कस नाचि मयूरुँ । तेहि सँ साधककरैतमँ चूरु ॥

जबलगाँ आय तुरुकँ गढ़बाजा । तबलगाँ धरिआनौ तौ राजा ॥

नीदनलीन्ह रयनि सबजागा । होतबिहान आय गढ़लागा ॥

कम्मलँ नेरअगमँ गढ़वांका । विषमँ पंथचढ़जाय न भांका ॥

राजा तहां गयो लै कालू । होय सामहिं रोपाँ देवपालू ॥

दो० दोउ लड़े होय सम्मुख, लोहे भयो अमूक ।

शत्रुँ जूकँ तब न्योरै, एक दोउ महँ जूक ॥

खण्ड पैतालीसवाँ देवपाल लड़ाई ॥

जो देवपालँ राउ रण गाजा । मोहितुहिंजुभएकाधौँ राजा ॥

मेलोसि आय सांग विष भरी । मेट न जाय कालकी धरी ॥

विचारा १ शिकार २ देखता ३ देखना-सुनना-बोलना-संघना-कूना  
४-रोकना ५-दरवाजा ६-दिल्ली आग ७-दूध ८-पानी ९-तुलना-यह कि-बदन  
ने खाया और दिल दुखी परन्तु जाहिर न किया १०-सूराख ११-मेढक १२-  
भोर १३-नाक १४-चिरौटा १५-बादशाह पहुँचे १६-रात १७-नामसुलक १८-  
जहाँजाना मुश्किल है १९-देहीराइ २०-आया २१-दुश्मन २२-लड़ाई २३-  
आखिर २४-नाम राजा २५-अकले २६ ॥

आय नाम प्रर सांग जो बैठी । नामवेध निकसी नृप पीठी ॥

चला मार तत्र राजा मारा । टूटकंध धड़ भयो निरास ॥

शीश कांठके पैरी बांधा । पावा दाउं वैर जस सांधा ॥

जियत फिर आयो बल भरा । मांझवाट होय लोहे धरा ॥

कारी घाउ जाय नहिं डोला । रहीजीभ यम गहेको बोला ॥

दो० सुधिबुधि तो सब विसरी, वारपरी मँझ पाट ।

हस्तिं घोर को काकर, घर आनी गइ खाट ॥

खण्ड त्रियालीसवां वैकुण्ठवासी राजा ॥

तौलहि श्वास पेट महँ अही । जौलहि दशा जीउकी रही ॥

काल आय देखलाई साँघी । उठ जियचला छाँड़के माठी ॥

काकर लोग कुटुंब घर वारू । काकर अर्थ द्रव्य संसारू ॥

वही घड़ी सब भयो परावा । आपन सोइ जो परसा खावा ॥

रहि जे हिंदू साथके नेगी । सबैलागि काटन तेहिबेगी ॥

हाथभार जस चलै जुवारी । तजौ राज है चला भिखारी ॥

जबलग जीउ रतन सब कहा । भा विनजीव न कौड़ी लहा ॥

दो० गढ़साँपा तेहि बादल, गयेटेकत वसुदेव ।

छोड़ी राम अयोध्या, जो भावै सो लेव ॥

पद्मावत पुनि पहिर पयोरी । चलीसाथ पियके है जोरा ॥

सूरज छिपा रयनि है गई । पूनोशशिं सो अमावस भई ॥

छोरे केश मोतिलर छूटी । जानो रयनि नखत सब दूटी ॥

राजा १ अलग २ शिर ३ शिकारबन्द ४ जैसा वैर किया ५ राह में ६  
हथियारबन्द ७ मौतने पकड़ी ८ मुरदा की तरह तरुतपर ९ हाथी १० छड़ी  
११ दौलत १२ दोस्त १३ जल्दनिकाला १४ छोड़ना १५ नाम मन्त्री १६ वैकुण्ठ  
गये १७ सारीरेशमी १८ रात १९ पूरनमासी का चांद २० बाल २१ ॥

सँदुरपरा जो शीशं उघारी । आगलाग चहि जगं अंधियारी ॥  
 यहादिवसैं हों चाहत नाहों । चलोसाथ पियदै गलबाहां ॥  
 सारसपंख नहिं जिये निरारे । हों तुम बिन का जियों पियारे ॥  
 न्योछावर कै तन छहराऊँ । छारं होउं सँग बहुरै न आऊँ ॥

दो० दीपक प्रीति पतंगज्यों, जन्मनिबाह करेउं ।  
 न्योछावर चहुँपास है, कण्ठलाग जियदेउं ॥

खरद सैतालीसवां सतीहोना

पद्मावत और नागमतीका ॥

नागमती पद्मावत रानी । दोउ महासत सती बखानी ॥  
 दोउं सौत चढ़ खाट जो बैठी । औ शिवलोक परातहँदीठी ॥  
 बैठो कोइ राज औ पाटी । अन्तें सबै बैठे पुनि खाटा ॥  
 चन्दन अगर काढसँ साजा । औ गँतें देय चले लैराजा ॥  
 बाजन बाजहिं होय अगोती । दोउ कन्तलै चाहै सोता ॥  
 एक जो बाजा भयो विवाह । अब दुसरे है और निवाह ॥  
 जियतजलै जो कन्तें कीआसा । मुये रहस बैठे इकपासा ॥  
 दो० आज सूरं दिन अथयो, आजरयैनि शशि बूढ़ ।

आजनाच जियदीजिये, आज अगिन हमजूड़ ॥

सँ रच दान पुरायबहु कीन्हा । सातवार फिरभांवर लीन्हा ॥  
 एक जो भांवर भयो बियाही । अब दूसर है गोहँन जाही ॥  
 जियत कन्तें तुम हमगललाई । मुये कण्ठ नहिं झाँड़हुसाई ॥

शिर १ दुनियां २ दिन ३ आविन्द ४ अलग ५ विधराना ६ राख ७ लोट  
 ८ पद्मावत-नागमती ९ नज़र १० तकल ११ आखिर १२ चिता १३ दाह १४  
 लड़का १५ आविन्द १६ सूर्य १७ रात १८ चांद १९ चिता २० साथ २१  
 आविन्द २२ ॥

लै सरं ऊपर खाट बिछाई । पौटी दोउ कन्त गल लाई ॥  
 और जो गांठ कन्त तुम जोरी । आदि अन्त लहि जाय न छोरी ॥  
 यह जग काह जो अर्थहि नयाथी । हम तुम नाहें दोहू जग साथी ॥  
 लागी कण्ठ आग दै होरी । छारं भई जर अंग न मोरी ॥  
 दो० रांती पियके नेहकी, स्वर्ग भयो रतनारं ।

जोरेउ वासो अथवा, रहा न कोइ संसार ॥

वै सहगवनं भई जिय आई । बादशाह गढ़ छंका आई ॥  
 तब लगें सो औरस है बीता । भये अलोप राम औ सीता ॥  
 आय शाह जो सुना अखारों । है गइ सत दिवस उजियारा ॥  
 छारें उठाय लीन्ह इक सूठी । दीन्ह उड़ाय पिरंथैवी फूठी ॥  
 सगरे कटक उठाई माटी । पुलबांधा जहँ जहँ गढ़ घाटी ॥  
 जौ लहि उपर छारं नहि परै । तौ लहि यह तृष्णा नहि मरै ॥  
 भा दहवां भा जूझ असूभा । बादल आय पँवर परजूभा ॥  
 दो० जून्हरे भई सब स्त्री, पुरुष भये संग्राम ।

बादशाह गढ़ चूरों, चितौर भा इसलाम ॥

मैं यह अर्थ परिडतन बूभा । कहा कि हम कुछ और न सूभा ॥  
 चौदह भुवन जो हत उपराहीं । सो सब मानुष के घट माहीं ॥  
 तन चितौर मन राजा कीन्हा । हियें सिंहल बुधिपद्मिनि चीन्हा ॥  
 गुरुमुवा जेहि पन्थ देखावा । बिन गुरुजगंत सो निरगुण पावा ॥

चिता १ अक्बल से आखिर तक २ आया था ३ खाविन्द ४ राख ५ बदन  
 ६ लाल ७-६ आसमान ८ जब खाविन्दके साथे जल गई १० गायब ११ हाल  
 १२ दिन १३ खाक १४ दुनियां १५ फौज १६ माटी १७ हवस १८ कोई वाकी  
 न रहा उस भारी लड़ाई में १९ नाम मंत्री २० दरवाजा २१ मरना २२ तथा  
 राजा २३ तोड़ा २४ सातपरदा आसमान-सातपरदा जमीन २५ भीतर २६  
 छाती २७ राह २८ दुनियां २९ ॥

नागमती यह दुनियां धन्धा । बांचा सोई नयहञ्जितबन्धा ॥

राघव दूत सोई शैतानू । माया अलाउदीं सुलतानू ॥

प्रेम कथा यह भांति विचारू । बूभलेहु जो बूभहि पारू ॥

दो० तुरकी अरबी हिन्दवी, भाषां जेती आहि ।

जामें मारग प्रेमका, सबै सराहै ताहि ॥

सुहमद कवि यह जोर सुनावा । सुना सो प्रेम पीर का पावा ॥

जोरे लाय रक्त लेगये । प्रेमप्रीति नयनहिं जल भये ॥

औ मै जान गीत अस कीन्हा । कीयहरीतिजगत्तमहँचीन्हा ॥

कहां सो रतनसेन अब राजा । कहांसुवा असबुधेउपराजा ॥

कहां अलाउदीन सुलतानू । कहँ राघवजेहिकीन्हबखानू ॥

कहँ स्वरूप पद्मावत रानी । कुञ्ज न रही जगरही कहानी ॥

धनसोई यश कीरति तामू । फूल मरै पै मरै न बामू ॥

दो० कैन जगत यश बेचा, कैन लीन यश मोल ।

जो यह पढ़ै कहानी, हम सँवरै दोइ बोलै ॥

सुहमद बृद्ध बैश जो भई । यौवन हत सो अवस्थी गई ॥

बल जो गयो कैक्षीण शरीरू । दृष्टि गई नयनहिं दैनीरू ॥

दर्शन गये कै बचा कपोली । बैन गये अनरुच दैबोला ॥

बुधि जो गई दै हिये बौराई । गर्व गयो तरिहत शिरनाई ॥

श्रवण गये ऊँच जो सुना । स्याही गये शीशे भा धुना ॥

भँवर गये केशहि दे भुवा । यौवन गयो जीत लै जुवा ॥

वृक्षसको १ बोली २ खून जिगर पीकर ३ दुनियां में निशानी ४ अञ्जल  
वताई ५ तारीफ़ ६ नेकनामी ७-९-१० करनी ८ दुआयलैर ११ बूढ़ी उमर १२  
जवानी १३-२७ उमर १४ दुबला बदन १५ निगाह १६ पानी १७ दांत १८ गाल  
१९ आवाज़ २० अञ्जल २१ दिल २२ गहर २३ कान २४ शिर २५ बाल २६ ॥

जोलहि जीवन यौवन साथा । पुनि सो मीच पराये हाथा ॥

दो० वृद्धि जो शीश डुलावै, शीशधुनहि तेहि रीसै ।

बूढी आयु होहु तुम, कै यह दीन अशीस ॥

मौत १ बूढा २ शिर ३ गुस्सा ४ उमर ५ ॥

इति श्रीपद्मावतभाषा मलिकमुहम्मदजायसीकृत समाप्त ॥







निम्नलिखित नवलकिशोर प्रेस की पुस्तकें  
अवश्य देखिये:-

नाम किताब	की०	नाम किताब	की०
अचरमे का वच्चा ....	७	वैतालपच्चीसी ....	१॥
अलीबाबा और चा- लीस चोर ....	७	वैतालपच्चीसी पद्य ....	१॥
कथा सरित्सागर भाषा	३)	मनोहर कहानी ....	७॥
क्रिस्ता सारंगा सदादृश	७॥	मर्द औरत का क्रिस्ता	७)
घराऊ घटना ....	१)	मसन्धी भीर हुसन	७॥
चहार दरवेश ....	॥	राजाभोज का स्वप्न	७
दास्तान अमीरहमजा	१॥७)	लतीफा वीरवल ....	७॥
दिल्ली का खजाना	७	त्रिचित्र चरित्र ....	२॥७)
तोता बैना आठोंभाग	॥७)	शकुन्तला उपाख्यान	७॥
दिल्ली का पिटारा ....	७॥	शाहनामा ....	॥७)
फिसाना अजायब ....	१॥	शुक्रवहचरी ....	७)
वक्रावलीसुमन ....	७)	सहस्ररजनीचरित्र ....	३॥७)
वचन्द्रांगिणी ....	७)	साढ़ेतीन थार का अपूर्व क्रिस्ता ....	१)
विक्रमविलास ....	७॥	सिंहासन वच्चीसी ....	१॥
त्रिरहवारीश साधवा- नल कामकंदला चरित्र ....	७)	सूरजपुर की कहानी	७)
		हंसजवाहिर भाषा ....	॥७)
		हातिमताई का क्रिस्ता	॥

मिलने का पता: -

शुशी विष्णुनारायण भार्गव,  
मालिक नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ.

